

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186371

UNIVERSAL
LIBRARY

राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(तृतीय भाग)

लेखक

उदयसिंह भटनागर

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

उदयपुर [राजस्थान]

प्रकाशक—

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

उदयपुर ।

Checked 1965

Checked 1968

प्रकाशक—

विद्यापीठ प्रिन्टिंग प्रेस

उदयपुर ।

प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान में प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास एवं कला-विषयक प्रचुर सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुई है। आवश्यकता है, उसे खोज कर संग्रह और सम्पादित करने की। राजस्थान विश्व विद्यापीठ [तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ] उदयपुर ने इस आवश्यकता को अनिवार्य अनुभव कर विक्रम सं० १९६८ में “साहित्य-संस्थान” (उस समय प्राचीन साहित्य शोध संस्थान) की स्थापना की और एक योजना बनाकर राजस्थान की इस साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक निधि को एकत्रित करने का काम हाथ में लिया। योजना के अनुसार “साहित्य-संस्थान” के अन्तर्गत विभिन्न प्रवृत्तियाँ निम्न छः स्वतन्त्र विभागों में विकसित हो रही हैं : (१) प्राचीन साहित्य विभाग, (२) लोक साहित्य विभाग, (३) पुरातत्व विभाग, (४) नव साहित्य-सृजन विभाग, (५) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग एवं, (६) सामान्य विभाग।

१. ‘साहित्य-संस्थान’ द्वारा सर्व प्रथम राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए हस्तलिखित हिन्दी के ग्रन्थों की खोज और संग्रह का काम प्रारम्भ किया गया। प्रारंभ में विद्वानों को इस प्रकार के ग्रन्थालयों को देखने में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी। राजकीय पुस्तकालय, जागीरदारों के ऐसे संग्रहालय एवं जहाँ भी ऐसी पुस्तकें थीं, देखने नहीं दी जाती थी, धीरे-२ इसके लिये वातावरण बना कर काम कराया जाने लगा। सबसे पहले साहित्य संस्थान द्वारा पं० मोतीलाल मेनारिया द्वारा सम्पादित “राजस्थान में हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज प्रथम भाग,

प्रकाशित कराया गया और उसके बाद बीकानेर के प्रसिद्ध विद्वान श्री अग्रचन्द नाहटा द्वारा सम्पादित उक्त ग्रन्थ का दूसरा भाग छपाया एवं प्रस्तुत तीसरा भाग श्री उदयसिंह भटनागर की देख-रेख और सम्पादन में 'संस्थान' ने तय्यार करवाया है; जो आपके हाथों में है। इसी प्रकार चौथा, पांचवा और छठा भाग भी क्रमशः श्री अग्रचन्द नाहटा, श्री नाथूलाल व्यास एवं श्री भोलाशंकर-व्यास द्वारा सम्पादित किये जा चुके हैं। इनका प्रकाशन शीघ्र ही किया जाने वाला है।

प्राचीन साहित्य विभाग में हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज के अतिरिक्त १२००० चारण गीत विभिन्न विषयों के एकत्रित किये जा चुके हैं।

२. लोक साहित्य विभाग द्वारा हजारों कहावतें, लोकगीत, मुहावरें, लोक-कहानियाँ, वात-ख्यात, ख्याल, पहेलियाँ, बैठकों के गीत आदि संग्रह किये जा चुके हैं। पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा सम्पादित-मेवाड़ी कहावतें और श्री रतनलाल मेहता द्वारा सम्पादित मालवी "कहावतें" पुस्तक रूप में प्रकाशित की जा चुकी हैं। कहावतों के दो भाग और प्रकाशन के लिये तय्यार हैं। 'लोक वार्ताओं' के दो संग्रह, गीतों के दो संग्रह प्रेस कॉपी के रूप में तय्यार हैं। आर्थिक सुविधा होते ही इनको प्रकाशित करा दिया जायगा।

३. पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत पट्टे, परवाने, ताम्र पत्र और ऐतिहासिक महत्व के अन्य कागज-पत्रों को संग्रह किया जाता है। प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, शिला लेख, चित्र तथा अन्य कला कृतियाँ एकत्रित की जाती हैं। इसमें अच्छी सामग्री एकत्रित करली गई है।

४. नव साहित्य-सृजन विभाग से अब तक तीन पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। पं० जनार्दनराय नागर द्वारा लिखित "आचार्य चाणक्य" नाटक, पं० सन्हैयालाल ओझा द्वारा रचित "तुलसीदास" ब्रज भाषा काव्य, एवं श्री हुक्मराज मेहता द्वारा लिखी गई "नया चीन" आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें विद्वानों से लिखवाई जा रही हैं।

५. अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग में अब तक १००० हस्तलिखित महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं २२०० मुद्रित ग्रन्थ एकत्रित किये जा चुके हैं। यह धीरे २ एक विशाल संग्रहालय का रूप ले सकेगा. ऐसी आशा है।

६. सामान्य विभाग के अन्तर्गत राजस्थानी के प्रसिद्ध महाकवि श्री सूर्य-मल की स्मृति में "सूर्यमल आसन" और राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा

पुरातत्त्ववेत्ता स्व० डॉ० गौर शंकर हीराचंद ओझा की पुण्य स्मृति में “ओझा आसन” स्थापित किये गये हैं। इन आसनों से प्रति वर्ष संबंधित विषयों पर अधिकारी विद्वानों के तीन भाषण समायोजित कराये जाते हैं। और उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है। “सूर्यमल-आसन” से अब तक डॉ० सुनीति कुमार चादुर्ज्या, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचन्द नाहटा तथा रा० ब० रामदेवजी चौखानी के भाषण कराये जा चुके हैं। और डॉ० चादुर्ज्या के भाषणों की “राजस्थानी-भाषा” नामक पुस्तक ‘संस्थान’ से छप चुकी है।

‘ओझा आसन’ से प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता सीतामऊ के महाराज कुमार डॉ० रघुबीरसिंह के तीन भाषण “पूर्व आधुनिक राजस्थान” विषय पर हो चुके हैं और यह पुस्तक प्रकाशित की जा चुकी है। दूसरे अभिभाषक डॉ० दशरथ शर्मा थे, जिनके भाषण शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

साहित्य-संस्थान से शोध-मन्वन्धी एक त्रैमासिक “शोध-पत्रिका” श्री डॉ० रघुबीरसिंह, श्री अगरचन्द नाहटा, श्री कन्हैयालाल सहल, श्री देवीलाल सांमर एवं श्री भगवतीलाल भट्ट के सम्पादन में प्रकाशित होती हैं। हिन्दी के समस्त शोध-विद्वानों का सहयोग इस पत्रिका को प्राप्त है, इसलिये यह शोध-जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है।

इस प्रकार साहित्य-संस्थान अपनी बहुमुखी कार्य योजना द्वारा राजस्थान के विखरे हुए साहित्य को एकत्रित कर प्रकाश में लाने का नम्र प्रयत्न कर रहा है लेकिन यह काम इतना व्यय और परिश्रम साध्य है कि कोई एक संस्था इसे पूरा करना चाहें तो असम्भव है। हमारे देश की प्राचीन साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं तथा चिन्तन-स्रोतों को सदैव गतिशील एवं अमर बनाये रखना है तो इस काम को निरन्तर आगे बढ़ाना होगा। देश के धर्ममानी सेठ-साहुकारों, राजा-महाराजाओं, जागीरदारों तथा जमींदारों को ऐसे शुभ सरस्वती के यज्ञ में सहायता एवं सहयोग देना ही चाहिये। राजस्थान और भारत के विद्वानों, विचारकों और साहित्यकारों का इस प्रकार के शोध-पूर्ण कार्यों की ओर अधिकाधिक प्रवृत्त होना आवश्यक है।

साहित्य-संस्थान हिन्दी के आदि ग्रन्थ “पृथ्वीराज रासौ” का प्रामाणिक संस्करण अर्थ और भूमिका सहित शीघ्र ही प्रकाशित करवा रहा है। “रासौ”

का सम्पादन-कार्य इस विषय के मर्मज्ञ विद्वान श्री कविराव मोहनसिंह, उदयपुर कर रहे हैं । इसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक कमी की पूर्ति होगी ।

आशा है विद्वानों, कलाकारों और धनी-मानियों द्वारा संस्थान को इसके कार्य में पूरा सहयोग प्राप्त होगा । इसी आशा के साथ—

विक्रम सं० २००६ }
सन् १९५२. }

गिरिधारीलाल शर्मा
मन्त्री
साहित्य-संस्थान

“दो शब्द”

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर ने अपने १५ वर्षों के कार्यकाल में अनेक संघर्षों, संकटों और कठिनाइयों को झेलते हुए भी निस्सन्देह ऐसे कार्य किये हैं, जो उसके अस्तित्व तथा उपयोगिता के लिये प्रमाण रूप माने जा सकते हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत स्थानीय कवि-गोष्ठियों और साहित्य-चर्चाओं से लगाकर राजस्थान एवं अखिल भारतीय महत्व के सम्मेलन समायोजित किये जा चुके हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ की स्थापना का मुख्य लक्ष्य ही राजस्थान की साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शिक्षणात्मक उन्नति करना था। इसी लक्ष्य को मूलाधार मानकर इसके अन्तर्गत वे सभी विविध प्रवृत्तियाँ तथा काम प्रारंभ किये गये, जो देश के सर्वांगीण विकास तथा निर्माण के लिये आवश्यक एवं अनिवार्य थे। लोक शिक्षण द्वारा उत्तरदायी लोक तन्त्रात्मक लोक-जीवन निर्माण का काम राजस्थान में सर्व प्रथम इसी संस्था द्वारा प्रारम्भ किया गया।

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ) ने संवत् १९६८ में प्राचीन साहित्य की शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन के लिये साहित्य-संस्थान (उस समय खोज विभाग) की स्थापना की और राजस्थान के प्राचीन साहित्य-विशेषकर डिंगल-के ग्रन्थों की शोध-खोज प्रारम्भ की। साहित्य-संस्थान ने इसकी महती आवश्यकता अनुभव की कि राजस्थान के प्राचीन ठिकानों, मन्दिरों, उपाश्रयों और रामद्वारों में पड़ी हुई अमूल्य साहित्यिक निधि को अन्धकार से प्रकाश में लाने का जब तक योजनावद्ध कार्य नहीं किया जायगा तब तक अतीत का गौरवपूर्ण महिमामय राजस्थान आधुनिक जनतन्त्रात्मक प्रगतिशील भारत के साथ संयोग साधकर प्रगति कर सके, यह संभव नहीं है। इसीलिये समस्त राजस्थान के प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की गवेषणा का कार्य व्यापक आधार पर देश के विद्वानों की सहायता से करने का नम्र प्रयत्न किया जा रहा है। ऋषि-मुनियों की इस पुरातन तपोभूमि में अनेक

सरस्वती-पुत्रों ने वर्षों तक साधनारत रहकर सरस और सुन्दर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रचनायें मुखरित की हैं, उन्हें आज हम अपनी असावधानी और प्रमाद से नष्ट हो जाने दें तो इससे बढ़कर क्या लज्जा की बात हो सकती है ?

साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ ने अब तक प्राचीन साहित्य की शोध-खोज कर विवरणियों (बिबलियोग्राफी) के तीन भाग प्रकाशित कर दिये हैं और तीन भाग अभी आर्थिक कठिनाई के कारण अप्रकाशित रखे हैं । ज्यों ही आर्थिक सुविधा प्राप्त होंगी, उन्हें भी प्रकाशित कर दिया जायगा ।

दस वर्षों के निरंतर शोध-खोज के कार्य के बाद इस वर्ष राजस्थान-सरकार ने साहित्य-संस्थान क 'प्रकाशन-कार्य' के लिये १०,०००) न्यूनतम सहायता प्रदान की है; उसी सहायता से इस "राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग-३ का प्रकाशन किया जा सका है । सरकार द्वारा 'प्रकाशन कार्य' के लिये प्रदत्त सहायता को स्वीकार करते हुए मैं संस्था की ओर से सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजस्थान-सरकार, उसके मंत्रीगण तथा शिक्षा विभाग के अधिकारी महाशय ऐसे गभीर और गवेषणापूर्ण साहित्यिक-सामग्री को प्रकाश में लाने का प्रोत्साहनपूर्ण सहयोग देते रहने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करेंगे ।

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ के सभी सहायकों, हितैषियों और शोध-खोज के विद्वानों का मैं उनके सहयोग के लिये-अत्यन्त आभारी हूँ । यह तो उन्हीं का काम है और उन्हीं के लिये इस संस्था द्वारा किया जा रहा है-अतः उनका सहयोग तो निस्सन्देह मिलेगा ही ।

गुरु गोविन्दसिंह जयन्ति
दिसम्बर १९५२

}

जनार्दनराय नागर

एम० ए०, साहित्यरत्न

प्रोपकुलपति

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

“प्रस्तावना”

साहित्य-संस्थान की ओर से उद्यमिह भटनागर, द्वारा संपादित राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग ३ का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष होता है। इसके प्रथम दो भाग राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्य संशोधक श्री मोतीलाल मेनारिया तथा अगरचंद नाहटा ने तैयार किये हैं। साहित्य के इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत ‘शोधसंस्थान’ द्वारा प्रकाशन की यह योजना प्रशंसनीय है। राजस्थान के प्राचीन साहित्य भंडारों में संचित कतिपय महत्त्वपूर्ण रचनाओं की सूचना प्रस्तुत विवरणों द्वारा विद्वानों को प्राप्त होगी। इसमें मेवाड़ के कतिपय प्राचीन ग्रन्थ संग्राहालयों का उपयोग कर सम्पादक ने यह ग्रन्थ तैयार किया है। इस संग्रह से पश्चिम भारत के मध्यकालीन साहित्य की प्रगति के अप्रकाशित ग्रन्थों से उद्धृत नमूनों का लाभ विद्वानों को प्राप्त होगा। परन्तु इस “माला” का नाम ‘राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज’ किस उद्देश्य से रखा गया—यह मेरी समझ में नहीं आता ? इसमें अधिकतर ब्रजभाषा तथा जूनी राजस्थानी-गुजराती के ग्रन्थों का ही विवरण है। यदि इस ‘माला’ का नाम ‘राजस्थान में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज’ रखा गया होता तो वह अधिक व्यापक अर्थ का द्योतक होता। राजस्थान और गुजरात में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थ हजारों नहीं लाखों की संख्या में मिलेंगे। अब प्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन तथा इस प्रकार के शोधपूर्ण विवरण का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण और प्रशंसनीय है। सम्पादक तथा ‘साहित्य-संस्थान’ इस महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति को चालू रखेंगे—ऐसी मैं आशा रखता हूँ।

भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए. एच. डी.

अध्यापक निवास

बड़ौदा

६-२-१९५३.

युनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष—

गुजराती-विभाग,

म० स० विश्व विद्यालय, बड़ौदा

अपनी ओर से—

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ किसी भी देश की संस्कृति—उसकी भावना और चिन्तन के विकास की परम्परागत निधि है। युद्धों की परम्पराओं के बीच जीते-जागते राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की अमूल्य निधि का संग्रह उसकी सांस्कृतिक सजीवता का द्योतक है। अविश्वास और परम्परागत दकियानूसीपन इस निधि की रक्षा में विशेष सहायक हुआ है। फिर भी उत्तम कोटि के राजपूत शैली के चित्रों के समान अनेकों अमूल्य ग्रन्थ भी यूरोप और अमेरिका में चले गये हैं और वहाँ के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

उदयपुर के विद्यापीठ में, अपने आरम्भिक जीवन से ही इन ग्रन्थों के संग्रह, संरक्षण, प्रकाशन आदि की ओर मेरी विशेष रुचि थी। अतः इसका विभाग खोला गया और मेरे संयोजन में कार्य आरम्भ हुआ। मुझे आज यह व्यक्त करते हुए हर्ष है कि यह विभाग संस्था का एक प्रधान और सजीव अङ्ग बनकर कार्य कर रहा है। इसकी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य बहुत बड़ा है, व्यापक और विस्तृत है। इसके लिये अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से मेरा यह कार्य एक प्रयोग मात्र था। फिर भी मैंने इससे बहुत बड़ा अनुभव लाभ किया। कई स्थानों से तो मुझे कई बार निराश लौटकर आना पड़ा। परन्तु मैंने उन लोगो को प्रसन्न करने और उनसे ग्रन्थ निकलवाने का विश्वास भी प्राप्त किया, और उसके परिणाम स्वरूप मैं लगभग १५०० ग्रन्थों के विस्तृत विवरण ले सका। प्रस्तुत रिपोर्ट में उन सब का विस्तार बहुत कठिन था। यद्यपि इस प्रकार की विवरणी के लिये मेरा एक भिन्न दृष्टिकोण है। विवरण व्यापक और विस्तृत होने चाहिये, जिससे ग्रन्थ पर एक आलोचनात्मक अध्ययन हो सके, उससे सम्बन्धित भाषा, साहित्य, इतिहास, जीवन-चरित्र, महत्वपूर्ण घटनाएँ, सामाजिक परिस्थितियों आदि की ओर भी आवश्यक संकेत हों; क्योंकि सभी ग्रन्थों का न तो प्रकाशन सम्भव है और न उनकी बार बार प्राप्ति ही। विवरण अधिकतर इसी दृष्टि से लिये गये थे। परन्तु, इतनी विस्तृत सामग्री के प्रकाशन की व्यवस्था भी तो एक समस्या है। अतः मैंने लगभग ५०० रचनाओं का विवरण देना निश्चय किया।

प्रस्तुत रिपोर्ट का कार्य सन् १९४२ के दिसम्बर में ही समाप्त हो गया था। १ सितम्बर १९४२ में मैंने इस कार्य को आरम्भ किया और पूरे चार महिने तक बराबर घूमने और विवरण लेने

का कार्य किया गया । इसका बहुत सा श्रेय मेरे उन सहयोगियों को है जिन्होंने मेरे साथ धूमकर विवरण उतारे और मेरे कार्य में सहायता प्रदान की । यद्यपि अपने क्रम में इस रिपोर्ट का प्रकाशन दूसरे भाग के रूप में होना चाहिये था, परन्तु इसका प्रकाशन आज पूरे दस वर्ष के पश्चात् हो रहा है । इसका बहुत कुछ श्रेय मेरे इस कार्य के सहयोगी भाई श्री गिरीधारीलाल शर्मा को है । एक प्रकार से उनका यह कर्तव्य ही था, क्योंकि इन विवरणों को लिखने के लिये उन्हें भी मेरे साथ घर-घर की खाक छानने के कटु अनुभव करने पड़े हैं । श्री पुरुषोत्तम मेनारिया को भी मैं भूल नहीं सकता । उन्होंने भी इसी प्रकार मुझे उतना ही सहयोग दिया और इसकी प्रेस प्रति बनाने में अथक परिश्रम किया । आज मुझे इस बात का गर्व है कि ये दोनों ही व्यक्ति अपने विषय में संलग्न और अपनी धुन के पक्के हो गये हैं । मेरे पश्चात् इस विभाग (शोध-संस्थान) का कार्य इन्होंने बारी बारी से सम्हाला और इसका विकास किया । अतः ये दोनों ही बन्धुई के पात्र हैं । उन सज्जनों का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने विश्वास के साथ अपने ग्रन्थों को मेरे सम्मुख लाकर रख दिया तथा मुझे उनसे विवरण उतारने दिये । श्री मोतीलाल मेनारिया के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ । समय-समय पर उनकी सम्मति ने मेरे कार्य में उत्साह-वर्द्धन किया । श्री अगरचंद नाहटा ने इसके प्रकाशन में अपनी सम्मति से मुझे अनुग्रहित किया है । आचार्य जिनविजय का तो मुझ पर काफी ऋण है । एक शिष्य अपने गुरु को क्या धन्यवाद दे और क्या उनके प्रति आभार प्रदर्शन करे ! अपने सतीर्थ भाई डा० भोगीलाल सांडेसरा से भी इसकी प्रस्तावना प्राप्त करने का सुअवसर बड़ौदा में रहने से मुझे प्राप्त हो गया । उनका मैं आभारी हूँ ।

दस वर्ष पश्चात् यह विवरणी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है । जिस रूप में यह विद्वानों के सम्मुख प्रकाशित हो रही है, मुझे आशा है, उनके लिये यह उपयोगी सिद्ध होगी । मुझे संतोष है कि अनेकों छिपे हुए ग्रन्थों में से कुछ की सूचना विद्वानों के सामने आ रही है । प्रस्तुत विवरणी राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक आधार भूमि बन सकती है । इसमें प्राचीनतम ग्रन्थ वि० सं० १४१३ तक के मिलेंगे जो भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे ।

यों तो मेवाड़ में ही साहित्य की इतनी सामग्री बिखरी पड़ी है कि उसके आधार पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है; जिसके द्वारा मेवाड़ के सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास का परिचय हमें मिल सकता है । महाराणा सांगा के जीवन काल तक (वि० सं० १५८४) या यों कहिये कि वि० सं० १६०० तक राजस्थान का इतिहास मेवाड़ का इतिहास ही है । पृथ्वीराज के साम्राज्य के ध्वंस के पश्चात् मेवाड़ ही प्रधानतः इतिहास में जीवित रहा है । उसके पूर्व भी मेवाड़ में साहित्य और कला का जो विकास हुआ है वह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है । साहित्यिक अभिव्यक्ति

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशभाषा समी में हुई और इनके ग्रन्थों का कहीं तो उल्लेख मिलता है और कहीं कहीं ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं ।

मेवाड़ में साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और कला के विकास की सूचना हमें मेवाड़ और मेवाड़ के बाहर बिखरे हुए अनेकों शिलालेखों के द्वारा प्राप्त होती है । राजा नरवाहन के एकलिंगजी के शिलालेख (वि० सं० १०२८) से हमें ज्ञात होता है कि यहाँ स्याद्वाद (जैन), सौगात (बौद्ध) और वेदाङ्ग मुनि (आर्य) का महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ हुआ था । यह शास्त्रार्थ मेवाड़ के बौद्धिक विकास की महानता का द्योतक है । राजा शालिवाहन के समय (वि० सं० १०३०) का एक अन्य शिलालेख मेवाड़ की सांस्कृतिक, साहित्यिक और कला सम्बन्धी प्रगति की सूचना देता हुआ यह व्यक्त करता है कि राजा नरवाहन स्वयं संस्कृति, साहित्य और कला का महान पोषक और संरक्षक था ^१ । एकलिंगजी की प्रशस्ति (वि० सं० १०२८) का रचयिता अमर स्वयं एक महान् कवि था । यह इस प्रशस्ति से ही ज्ञात होता है । इसी युग में रामानुजाचार्य (वि० सं० १०७३) का प्रभाव मेवाड़ पर पड़ा, जिससे आगे चलकर अनेकों नारायण (विष्णु) के उपासक साधु-महात्माओं ने इस भूमि को उपासना और भक्ति से आस्रावित किया । जैन और बौद्ध प्रभाव भी इस देश पर उस समय अवश्य रहे हैं यह केवल उक्त प्रशस्ति में दिये गये शास्त्रार्थ से ही नहीं विदित होता, अन्य प्रमाणों से भी होता है । प्रसिद्ध जैन साधु जोइन्दु (योगीन्दु) जो एक महान् विद्वान्, वैयाकरण और कवि था, संभवतः चित्तौड़ का ही निवासी था । इसका समय विक्रम की १० वीं शती था ^२ । इसी समय रामसिंह नाम जैन कवि की भी रचना भाषा में मिलती है । रावल जैसिंह के समय (वि० सं० १२७०-१३०६) में अहाड़ नगरी में दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना हुई । पहला 'ओघनियुक्ति' (वि० सं० १२८४ में लिखित) और दूसरा वयजल द्वारा लिखित 'पालिक वृत्ति' (वि० सं० १३०६) । अहाड़ नगरी में लिखित एक तीसरा ग्रन्थ (वि० सं० १३१७ तेजसिंह का समय) 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र-चूर्ण' पाटण के भण्डार में सुरक्षित है । ये तीनों ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखित हैं । अहाड़ के समीप 'धूलकोट' में लिखित 'तांबावती नगरी' २००० ई० पूर्व की सभ्यता की द्योतक है । रावल तेजसिंह के समय (वि० सं० १३१७-१३२४) जैन-संस्कृति का मेवाड़ में प्रभाव जमने लगा । उस समय के प्रसिद्ध जैन मुनि रत्नप्रभसूरि का रावल तेजसिंह के मन्त्रियों और उसकी माता पर काफी प्रभाव था ^३ । रत्नप्रभसूरि स्वयं विद्वान् और कवि था ।

१ जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, जि० २२, पृ० १६६ ।

२ राहुल सांकृत्यायन-हिन्दी काव्यधारा पृ० २४० ।

३ चित्तौड़ की गम्भीरी नदी के पुल के नीचे पाया गया शिलालेख (वि० सं० १३२४)

वि० सं० १३३० में उसने जिस प्रशस्ति की रचना की^१ उसे उसके शिष्य पार्श्वचन्द्र ने शिला पर लिपिबद्ध किया, केल्हिसिंह ने उसे खोदा और सूत्रधार देहण ने उसे स्थापित किया। इससे प्रशस्तिओं की रचना से लेकर स्थापन तक की कला का संकेत हमें मिलता है। बौद्धकालीन सम्यता कल्याणपुर और चित्तौड़ के पास मभम्भिका नगरी के भूगर्भ में छिपी पड़ी है। शैव और वैष्णव संस्कृति का यह स्थान सदा से केन्द्र बना रहा। नागदा की मूर्ति और वास्तुकला इसका एक अच्छा उदाहरण है। चित्तौड़ के विजय-स्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ जैन और वैष्णव स्थापत्य के कला स्तम्भ हैं।

लाखा और कुम्मा (वि० सं० १४३६-१५२५) के युग में मेवाड़ संस्कृति, साहित्य, और कला की चरम सीमा पर था। यह युग मेवाड़ का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इसमें जिन सांस्कृतिक भावनाओं का संचार हुआ, साहित्य के विविध अङ्गों की उन्नति हुई और कलाओं-संगीत और चित्र, शिल्प, मूर्ति, स्थापत्य और युद्धकला भी का जो विकास हुआ उसने मेवाड़ को सामान्य भूमि से बहुत ऊपर उठा दिया, उसने ऐसी प्रबल और स्वतंत्र सत्ता का रूप धारण किया कि पड़ोसी यवन आक्रमणकारी कर्मा सुख की नींद न सो सके। गोरखनाथ की गोरखपंथी शाखा और उससे निकले हुए अघोर-पंथ का मेवाड़ अखाड़ा था। उदयपुर के पास तीतरड़ी की प्रसिद्ध गुफा गोरखपंथियों से सम्बन्धित मानी जाती है और उसके पास का गांव समीनाखेड़ा अब तक ओघड़ बाबा का अखाड़ा है। कदाचित् गुरु भगडार, चुणकरनाथ, चरपटनाथ, जालंध्रीपाव धूँधलीमल, पृथ्वीनाथ, बालनाथ, ओघड़-पंथ के प्रमुख प्रवर्तक मोतीनाथ, सती कण्ठरी, शंभुनाथ, सिद्ध गवरी, सिद्ध घोड़ाचोली, सिद्ध हरवाली आदि में से कुछ यहाँ से अवश्य सम्बन्धित थे और कुछ ने अपनी रचनाओं का यहीं से प्रसार किया होगा। कुंभा स्वयं एक महान भक्त, कलाकार, संगीतकार संगीतज्ञ और संगीत शास्त्री, काव्यकार तो था ही, परन्तु साथ ही योग्य शासक, नीतिज्ञ और एक कुशल सेनानी तथा वीर योद्धा भी था। वह कलाकारों, विद्वानों, पंडितों, संगीतज्ञों, कवियों, शिल्पियों, मूर्तिकारों, सैनिकों आदि का महान पोषक और नेता था। 'एकलिंग महाकाव्य' से ज्ञात होता है कि कुम्भा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद्, व्याकरण, राजनीति आदि का विद्वान् था। संगीत पर उसके तीन ग्रन्थों—^१ संगीत राज, २, संगीत मीमांसा ३. सूड़ प्रबन्ध का पता चलता है। उसके बनाये हुए कीर्तिस्तम्भ के एक टूटे शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह शिल्प और वास्तु शास्त्र का भी विद्वान् था और कीर्तिस्तम्भों पर उसने स्वयं एक ग्रन्थ रचा था-जिसको उसने जय और अपराजित के मतों को आधार माना है^२। कुंभा एक नाट्यकार भी

१ चीरवा में प्राप्त।

२ श्रीभा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २, पृ० १११८। २६

था। उसने चार नाटक लिखे, जिनसे विविध भाषाओं-कर्णाटी, महाराष्ट्री, राजस्थानी, आदि पर उसके अधिकार का परिचय मिलता है। शासन व्यवस्था पर उसने 'सुप्रबन्ध' ग्रन्थ लिखा, 'चण्डी शतक' का अनुवाद किया और गीत गोविन्द पर 'रसिक प्रिया' टीका लिखी। अनेकों स्तुतिओं की रचना की जिन्हें वह स्वयं विभिन्न रागों और तालों में गाता था। उसके समय में मण्डन सूत्रधार ने 'देवतामूर्ति प्रकरण', 'प्रासाद मण्डन', वास्तु मण्डन, 'वास्तु शास्त्र', 'रात्रवल्लभ', 'रूपमंडन', 'रूपावतार', 'वास्तुसार' की रचना की। उसके भाई नाथा ने 'वास्तुमंजरी' तथा उसके पुत्र गोविन्द ने 'उद्धार भोरणी', 'कलानिधि', और 'द्वारदीपिका' की रचना की। अत्रि और उसका पुत्र महेश उस समय के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे। वैद्यक और ज्योतिष के ग्रन्थों की भी रचना हुई। इस समय तक यहीं कहीं शार्ङ्गधर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शार्ङ्गधर-संहिता' और 'संगीत रत्नाकर' समाप्त कर दिये थे (वि० सं० १४२०)। 'हम्मीर रासौ' और 'हम्मीर काव्य' की भी इस समय तक रचना हो चुकी थी। परन्तु इनकी खोज करना एक बहुत बड़ा कार्य है। कुंभा के पिता मोकल स्वयं विद्यानुरागी थे। मोकल के राज्य (१४७८-१४६०) में कविश्वर महेश ने कवि के रूप में, प्रशस्तिकार के रूप में, दर्शन शास्त्र के विद्वान् के रूप में सम्मान प्राप्त किया। मोकल के समय के शिलालेखों से स्पष्ट है कि कविराज बाणोविलास योगीश्वर और एकनाथ उसके प्रसिद्ध कवि, बीसल प्रसिद्ध शिल्पकार और फना और मन्ना प्रसिद्ध सूत्रधार थे। मोकल के पिता लाखा से लेकर कुंभा तक भोटिङ्ग भट्ट अपने काव्य और प्रशस्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे। रावल समरसिंह (वि० सं० १३५८) का प्रसिद्ध कवि वेदशर्मा था।

विक्रमसंवत् १३०० से १५०० तक का युग सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति का युग था। धार्मिक अधिकार किसी वर्ग विशेष का नहीं, मनुष्य मात्र का है। कोई भी कर्म हेय नहीं है, वह भगवद्भक्ति के मार्ग में बाधक नहीं है। अपना कर्म करते रहकर ही भगवान् की प्राप्ति करना इस युग की प्रधान विशेषता थी। नामदेव ने स्त्रीपा-कर्म करते हुए, कबीर ने छलाहा-कर्म करते हुए, सेना ने नाई का काम करते हुए, अपनी भक्ति और साधना का प्रभाव जनता पर डाला। इसी प्रभाव ने धन्ना जैसे एक जाट कृषक को राजस्थान का महान् भक्त बनाया (वि० सं० १४७२), रैदास जैसे चमार को (वि० सं० १४८५-१५८५) भक्तों के ऊँचे आसन पर आरुढ़ किया, पीपा को (वि० सं० १४८०-१५३०) राज महल से निकालकर द्वारिका में भिन्नक का काम कराया। और तो और, मेवाड़ के राजमहल के अन्तःपुर की मर्यादा तोड़कर राजराणी मीराँ को

१ ओम्हा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २ पृ० १११८-२६।

२ जैसा कि 'शार्ङ्गधर' से पता चलता है।

बाहर निकाला और साधुओं और सन्तों के बीच बैठकर गान और नृत्य करवाया। धन्ना, पीपा, रैदास और मीराँ मेवाड़ के अमर भक्त हैं, मोतीनाथ अघोरियों का महान प्रवर्तक है, शाङ्गधर महान कवि और वैद्य है, कुंभा भक्त, कवि, कलाकार, विद्वान और योद्धा है, भोटिङ्ग भट्ट इस युग का महान विद्वान्, कवि और प्रशस्तिकार है, सूत्रधार मण्डन शिल्पकला का सूत्रधार है। इस प्रकार धन्ना, पीपा, रैदास, मोतीनाथ, शाङ्गधर, कुम्भा, भोटिङ्ग भट्ट, मण्डन सूत्रधार और मीराँ, इस युग के 'मेवाड़ के नवरत्न' हैं, जिसकी संतति है सांगा और प्रताप जैसे युद्धवीर देश भक्त।

इस युग में संस्कृत का अधिक महत्व था, पर इन व्यक्तियों ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि देश भाषा का भी उतना ही महत्व है। भक्तिकाल में भावनाओं के परिवर्तन के साथ साथ भाषा का भी परिवर्तन देख पड़ता है। राजस्थानी पर ब्रजभाषा का प्रभाव आरम्भ होता है। मीराँ की भाषा में ये लक्षण स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। पर चारण भाटों की भाषा और साहित्यिक परम्परा भी इसी युग में स्वतन्त्र अस्तित्व धारण करती हुई दिखाई पड़ती है। इसी युग में 'डिंगल गजब डोकरो डाकी, पिंगल पूगल नाजुक नार' की ध्वनि (१५७५ के आसपास) सुनाई पड़ती है और राजस्थानी की दो शैलियाँ डिंगल-पिंगल हमारे सम्मुख आती हैं। आगे चलकर दादू-पंथ, निरंजनपंथ, रामस्नेही पंथ आदि अनेकों पंथों ने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में योग दिया। रामस्नेही का जन्म तो मेवाड़ ही में हुआ है। इसके आदि गुरु संतदास (सं० १८०६ में मृत्यु) मेवाड़ के दांतड़ा गांव के ही निवासी थे। साहित्य-कोटि के अनेकों कवि मेवाड़ में हो गये हैं। साँगा (सं० १५६६) से महाराणा सज्जनसिंह (सं० १६४१) तक मेवाड़ में अनेकों साहित्यकार, संत, साधु, भक्त, पंडित आदि हो गये हैं जिन्होंने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में अपनी ओर से कुछ दिया है। इनमें से कुछ की ही रचनाएँ अभी तक हमें उपलब्ध हुई हैं और कुछ की सूचना मात्र मिलती है। 'रायमल रासौ', 'हरिवंश महाकाव्य' (संस्कृत), सौदा बारहठ जमना (सं० १५६६-८४) और केसरिया चारण हरिदास (वि० सं० १५६६-८४) पीथा आशिया (सं० १६२८-५३) की रचनाएँ आज अप्राप्य हैं। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने बिखरे हुए रासौ को एकत्रित कराया (१६६०), पर अमरसिंह की काव्य-रचनाएँ अप्राप्य हैं। चारण भल्ल (सं० १६७६-८४) और बारहठ गोविन्द (सं० १६८४-१७०६) के कोई नाम तक नहीं जानता। किसी दयालदास ने राणा रासौ (सं० १६८० के लगभग) काव्य की रचना की, पर उसका कहीं पता नहीं। भीडर के जैन उपाश्रय की परम्परा से सम्बन्धित पन्यास (पं०=पन्यास) दौलत विजय (दलपत) ने प्रसिद्ध 'खुम्माण रासौ' की रचना (वि० सं० १७२५ के लगभग) की।

महाराणा राजसिंह के साथ विष द्वारा मारे जानेवाले^१ और महाराणा द्वारा 'भाई' माने जानेवाले दधिवाड़िया आशकरण की बीरगाथाएँ अब तक अप्राप्य हैं। इसी युग में कम्मा नाई भी कोई कवि हो गया है, जिसने उक्त महाराणा को अपने पूर्वजों के गौरव का स्मरण दिलाकर उन्हें दिल्ली जाकर बाद-शाह के सन्मुख झुकने से रोका^२। किशोरदास चारण ने 'राजप्रकाश' (सं० १७१६) और मान कवि (जैन कवि) ने 'राजविलास' (सं० १७३५-३७) की रचना की। इसी समय लाल मट्ट ने भी महाराणा राजसिंह पर १०१ छंदों का एक काव्य रचा। रणछोड़दास का 'राज' प्रशस्ति महाकाव्य भारत का सब से बड़ा शिलालेख माना जाता है। यह रचना भी राजसिंह के समय की है। जोगीदास चारण कृत 'हरिपिंगलप्रबन्ध' (सं० १७४४), मुरली कृत 'अश्वमेध' (सं० १७५५) और 'त्रियाविनोद' ख्याति में आचुके हैं। कविराज करणीदान ने महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (सं० १७६७-६०) के राज्य में किसी काव्य की रचना की ! कवि नन्दराम कृत 'शिकार भाव' (सं० १७६०) और 'जगविलास' (सं० १८०२), महाराणा जगसिंह के मन्त्री देव करण कायस्थ कृत 'वाराणसी विलास' भी साहित्य की उत्तम कोटी की रचनाएँ हैं। रामकृष्ण और नाथूराम महाराणा जगतसिंह द्वितीय (वि० सं० १७६०-१८०८) के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे और नेकराम प्रसिद्ध कवि, जिसने 'जगद्विलास' की रचना की। इसी समय दाँतड़ा में प्रसिद्ध सन्तदास हुए, जिनके शिष्य कृषाराम की प्रेरणा से रामचरणदास ने 'रामस्नेही पंथ' की स्थापना की। विक्रम संवत् १८१७ में सोमेश्वर कवि ने 'राज्याभिषेख काव्य' (संस्कृत) की रचना की और उसी परम्परा को बैकुण्ठ पल्लीवाल ने 'अमरसिंह राज्याभिषेख काव्य' (सं० १८१७) की रचना में निभाया। पंडित मङ्गल के 'अमर नृप काव्य' की रचना भी इसी समय हुई। महाराणा अमरसिंह ने (सं० १८१७-१८२६) 'रसिक चमन' लिखा इसी समय किसी अज्ञात कवि ने 'सुदामा चरित्र' की रचना की, जो नरोत्तमदास के 'सुदामा चरित' से सर्वथा भिन्न है।

महाराणा भीमसिंह के समय तक (सं० १८३४-१८८५) मेवाड़ में कृष्ण भक्ति का पूर्णतः प्रचार हो चुका था। महाराणा भीमसिंह की कृष्ण भक्ति सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी प्राप्त होती हैं। इस समय तक ब्रज भाषा और राजस्थानी का समन्वय हो चुका था। इसी समय फतहकरण चारण, फतेराम वैरागी, कविआ करणीदान, किशना आढ़ा, आशिआ मानसिंह, अपनी रचनाओं से प्रसिद्धि में आये। फतहकरण राजस्थानी का गद्य-पद्य लेखक था। पर उसकी केवल 'पंचाख्यान' (टीका) की सूचना ही मिलती है। किशना आढ़ा के तीन ग्रन्थ—भीमविलास, चण्डिशतक,

१ महाराणा यश प्रकाश—भूसिंह शेखावत

२ राजनगर के महल में इसका एक पद खुदा हुआ मिलता है।

रघुवर जस प्रकाश उपलब्ध हैं। आशिआ मानसिंह ने डिंगल में किसी रूपक की रचना थी^१। इसी समय संत परम्परा में दीन दरवेश का एकलिंगजी में प्रादूर्भाव हुआ, जिनके जीवन काल के विषय में सन्त-साहित्य के विद्वानों में भिन्न-मत हैं। दीन दरवेश की रचना राजस्थानी में है परन्तु उस पर कुछ डिंगल का प्रभाव अवश्य है। इसी समय ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि पद्माकर का उदयपुर में आगमन हुआ, जिसका प्रभाव यहाँ के साहित्य पर अच्चा पड़ा। उन्होंने यहीं पर 'गनगौर' पर रचना की। ब्रजभाषा ने राज दरवार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इसका परिणाम महाराणा जवानसिंह हैं। इनकी रचनाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये पूर्ण अधिकार के साथ ब्रजभाषा में रचना करते थे। वि० सं० १८८७ में उत्पन्न कवि गुमानसिंह (बाठड़ा) की रचना ब्रजभाषा में आध्यात्मिक विषय की रचना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

महाराणा सज्जनसिंह के समय तक मेवाड़ में ब्रजभाषा का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँचता हुआ देख पड़ता है। इसके पश्चात् साहित्य की राजकीय परम्पराएँ भी टूटने लगती हैं और साहित्य एक स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त कर लेता है। महाराणा सज्जनसिंह का समय प्राचीन संग्रह और वर्तमान विकास का युग था। इसका श्रेय महाराणा के गुरु जानो बिहारीलाल को है, जो संस्कृत, हिन्दी, फारसी और अँग्रेजी के विद्वान थे। इनके कारण महाराणा की प्रवृत्ति बदली और वे साहित्य, कला, इतिहास, विद्वानों के प्रेमी और प्रशंसक ही नहीं आश्रयदाता भी बने। वे स्वयं काव्य के मर्मज्ञ थे। उन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थों, प्राचीन चित्रों और विविध ऐतिहासिक सामग्रियों के संग्रहालयों की स्थापना की। कवि सम्मेलनों का आयोजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु का इन्होंने मेवाड़ में भव्य स्वागत किया। भारतेन्दु के प्रभाव से सरकारी कार्यालयों और अन्य विविध विभागों के नाम हिन्दी में दिये गये। प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास, कवि ऊजल फतहकरण, बारहठ किशनसिंह, स्वामी गणेशपुरी उनके प्रसिद्ध कवि थे। वे स्वयं एक सद्ब्रह्म कवि और गायक थे। स्वामी दयानन्द का प्रभाव भी मेवाड़ पर पड़ा। महाराणा ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। महाराणा ने मेवाड़ में पार्लियामेन्ट के ढंग की शासन व्यवस्था की भी घोषणा की^२, परन्तु अँग्रेजी शासन नीति के कारण वह सफल न हो सकी।

मेवाड़ के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। जिन

१ श्रीओभाजी के संग्रह में इसकी प्रति थी।

२ महाराणा सज्जनसिंह की एक प्राचीन प्रकाशित घोषणा के आधार पर।

ग्रन्थकारों का और ग्रन्थों की सूचना इसमें दी है वे केवल नाम मात्र हैं। हमें उन सबकी खोज तथा अध्ययन कर, उनका जीवन के साथ मूल्याङ्कन करना होगा।

हिन्दी-विभाग

विश्व विद्यालय, बड़ौदा

१५-१२-५२

उदयसिंह भटनागर

लेखकानुक्रमणिका

क्र०सं०	लेखक	पृष्ठ	क्र०सं०	लेखक	पृष्ठ
१	अगंद	२४,५८	२३	कानइया	२३
२	अग्रदास	१८	२४	कानइदास	१०,१७
३	अजैपाल	६०	२५	कान्हा	२६,५६
४	आधारु आधार)	१६,२४	२६	कासीराम	१६
५	अभयसोम	२०६,२०८	२७	किशन कवि	६,२५
६	अमरपुरी	२०	२८	किशना आढ़ा	१०१
७	अर्जुन नागा	१८०	२९	किसोर	२०
८	आलम	१४८	३०	कीताथोरी	२३,५६
९	आसानंद	५८	३१	कुलपति मिश्र	११५,१४०
१०	उदयरत्न (भुवन भानु केवली)	१६२	३२	कुशलताभ	१०२
११	उदासीराम	१७	३३	कृपाराम	१७५
१२	उम्मेदा	२०	३४	कृष्णदास	१८
१३	ऋषिवर संघ	३२	३५	कृष्णानंद	१६,२४,५८
१४	कबीर ६,१७,२०,२२,२३,२५,४६,	५८,६७	३६	केवलराम	१८
१५	कमजी दधिवाड़िया	६०	३७	केवलदास	६०
१६	कमाल (कमाली)	१७,५८	३८	केशवदास	११५,१२१,१४४
१७	कर्मचंद	५८	३९	केसर कीर्ति	३७
१८	करुणाराम	१६,१७	४०	केसोदास	१८
१९	कविन्द्र उदयनाथ	११५,१३७	४१	खिडियो जगो	१०४
२०	कविराव करनीदान	२०१	४२	खेम कवि	१६६
२१	काजी कांदन	२४	४३	गंगादास	१६
२२	काजी मुहम्मद	१८,२४,५८	४४	गंगाधर	१६
			४५	गरीबदास	२,५८

४६ गिरधर आस्यो	१०७	७३ छीतरदास	६०
४७ गुरुभंडार	२४	७४ छोगालाल	१८
४८ गोपाल	५६	७५ जगजीवनदास	५६
४९ गोपालदास	२२	७६ जगन्नाथ	१४, १५, १६, १६, २१, २५, २७, ३५, ६७, ५७, १८३, १६८
५० गोपालदास	२०२	७७ जगा	६७
५१ गोपीचन्द	५६	७८ जनगोपाल	१४, १६, २१, २३, २५ ६७
५२ गोरखनाथ	२४, ५६	७९ जनसूरतराम	६६, ७५
५३ गोविन्ददास	१८	८० जमना	२०
५४ ग्यान तिलोक	२४	८१ जयनारायण (कवि)	१२७
५५ ग्वाल कवि	११३, ११५, १३६, १४२, १४४, १४८	८२ जयराम	२१
५६ चत्रदास	१६, १७	८३ जसवंतविजय	८६
५७ चत्रभुज	१४, २३, २५	८४ जसविजय उपाध्याय	४, १२
५८ चतुरदास	७, ३६, ६७	८५ जससोमविबुद्धि	१६२
५९ चतुर्भुजदास निगम	१०१	८६ जान कवि	२०५, २१०
६० चरणदास (नासकेत)	१६, २२, १८२	८७ जालध्रीपाव	५६
६१ चरपटनाथ	५६	८८ जिनहर्ष	६, ३३, २१२,
६२ चाचर	१६	८९ जिनोदयसूरि	२१६
६३ चित्रसाल	१२२	९० जेतराम	१७, २३३, २३८,
६४ चिन्तामणि	१३३	९१ जैमल	६०, २१३,
६५ चुणकरनाथ	६०	९२ जोगीदास	१६
६६ चैन	६०	९३ ज्ञानविमलसूरि	१५३
६७ चन्द	१८	९४ टीला	५६
६८ चन्द (चन्दबरदाई)	६०	९५ ठाकुर	११५
६९ चन्द्र सखी	२०	९६ तत्त्वविजय	१५२
७० चौथमल	१६७	९७ तुरसीदास	१४, १८, ६४,
७१ चौरंगीनाथ	२४, ६०	९८ तुलसीदास	८१, १०२
७२ छीतभदास	१६, ५८	९९ त्रिलोचन	२३, ५८

१०० दत्त	५६	१२६ नथमल	२७
१०१ दलपतराय-वंशीधर	११०	१३० नन्ददास ८, १८, २१, २२, ३८,	
१०२ दया-निधि	११५, १४८	५५, ६३, १५०, १८१	
१०३ दयाल	१८२	१३१ नयविजय	६१
१०४ दयासखी	२०	१३२ नरसिया	२३
१०५ दयासागर	१६३	१३३ नरसी	१७, ५६
१०६ दादू	१७, २३, २४, ५८	१३४ नरहरिदास	३
१०७ दानदास दयाल	१२५	१३५ नरोत्तामपुरी	६०
१०८ दास (?)	१३	१३६ नवलराम	१८, ७१
१०९ दास (?)	१८	१३७ नानक	२४, ५६
११० दास कवि	११५	१३८ नानकदास	१६
१११ दीन	१८	१३९ नानूदास	१८
११२ दुलहराय १६, १७, २०, २२, ३१, ६७		१४० नान्हराम	११६
११३ दूजणदास	६०	१४१ नापा	५६
११४ दूलह कवि	११५	१४२ नाभादास	२०६
११५ देवदत्त) काव्य रसायन ११५		१४३ नामदेव	१७, २३, ५८
११६ देवदास	३१	१४४ नारायण ब्राह्मण	२१८
११७ देवल	५६	१४५ नारायण वैरागी	१७८
११८ देववर्द्धन (?)	१७१	१४६ नारायण दास	१६
११९ देवीदास	५	१४७ नीतानन्द	१८
१२० देवीदास	१७	१४८ नेम	१६
१२१ देवीदास	२१४	१४९ पजनेस	१४८
१२२ देवीसिंघ	२०	१५० पद्माकर	८६, १४८
१२३ देश्रम	५६	१५१ परमसागर	२०८
१२४ दौलत विजय (पं०)	८१	१५२ परमहंस सूरतराम	२०, ६६
१२५ धन्ताजी १६, १६, २३, ५८		१५३ परमानन्द	१८, २४, ५८
१२६ धीरमदास	१८	१५४ परसा	२३, ५८
१२७ धूँधलीमल	६०	१५५ पारवती	६०
१२८ ध्यानदास १४, १६, २५, ६७, २१६		१५६ पीपा	२३, ५८

१५७ पुण्यरत्न	१८४	१८५ भगवानदास निरंजनी	१७
१५८ पुण्यसागर	३३	१८६ भण्डारी उदेचंद	१२६
१५९ पुरुशोत्तम	१६	१८७ भवानीदास	१६
१६० पृथ्वीनाथ	६०	१८८ भानुकवि	१३८
१६१ पोहकरदास	१७	१८९ भीमजी	२३
१६२ प्रतापसाहि	१४७	१९० भुवनजी	२४, ५८
१६३ प्रवीनराय	११५	१९१ भैरवप्रसाद	१६६
१६४ प्रियादास	३६	१९२ मंछापुरी जोधपुरी (मंछ)	१३७,
१६५ प्रेमदास	१५		१८८
१६६ बख्तावर (स्त्री)	२०	१९३ मतिकुशल	१५८
१६७ बख्तावरसिंह	१३४, १४६	१९४ मतिराम	११५, १४१
१६८ विखना (वखना)	१७, २४, ५६	१९५ मतिसुन्दर	५६, २०६
१६९ बनारसीदास	१०८, १५३	१९६ मदन मोहन	१६
१७० ब्रह्मानन्द	१०३	१९७ मदनेश	४०, १२५
१७१ बलभद्र (मिश्र)	११५, १३१	१९८ मनराखन श्रीवास्तव	१२६
१७२ बहबल	५८	१९९ मयाराम	१८
१७३ बांकीदास	२०	२०० महादेव	६०
१७४ बाजींद	१६, १७	२०१ महाराजा जसवन्तसिंह	१२, ३
१७५ बारहठ कान्हा	२०		३७, ७४, ७५,
१७६ बालकदास	१६	२०२ महाराज प्रतापसिंह 'ब्रजनिधि'	
१७७ बालगुन्हाई	५६		१२७
१७८ बालनाथ	५६	२०३ माणिकचंद	२७
१७९ बालसाखी	२०	२०४ माधवदास	१०३
१८० बिहारी	११५, १३४	२०५ माधवसिंह	१४३
१८१ बीठुदान	२०	२०६ माधौजगन्नाथी	५८
१८२ बीसा	२३, ५६	२०७ माधौराम	५
१८३ बैलियानन्द	२३	२०८ मीठी	१६
१८४ भद्रसेन	१५६	२०९ मींडकीपाव	६०

२१० मीरां	१७, २१-२३३	२३७ रामकरण कविराय	१०६
२११ मुकुंदभारथी	५८	२३८ रामचरण	१४ से १७, २० से
२१२ मुनि क्षमाहंस	३६		२२, २४, २५, ३४, ४१ से
२१३ मुनि गुणचन्द	६२		४६, ४६, ६६, ६७
२१४ मुरलीदास	६५, ६७	२३६ रामजन	२५, २६, ४७, ४८, ७६,
२१५ मुरलीधर	१६	२४० रामदास	१५३
२१६ मुरलीराम	१५, १६, १७, २५, ३०	२४१ रामप्रताप	१७
२१७ मूरत	१८	२४२ रामसिंघ नरवर पति	११५
२१८ मेघविजय	३६, १६३	२४३ रामवल्लभ	१७
२१९ मोतीचंद 'चंद'	१८६, १६१	२४४ रामसखी	२०
२२० मोतीदास	१६	२४५ राममजन	१६
२२१ मोतीनाथ	१६	२४५ कं० रामसिंह नरवर पति	११५
२२२ मोरध्वज	१६	२४६ रामानन्द	२४, ५८
२२३ मोहनदास	६०, ६५	२४७ रावराजाबुद्धिसिंह	१३२
२२४ मोहनविजय	१५६, १६५	२४८ रूपदास	१८
२२५ यशोविजय	२१३	२४९ रूपरसिक	१६
२२६ रंगा	५६	२५० रैदास	१७, २३, ५८
२२७ रंगीला	१८	२५१ लछ्मनदास	१८
२२८ रघुनाथ	८	२५२ लब्धोदय	८७
२२९ रतनदास (साधु रामस्नेही)		२५३ लवलीनराम	१७
	१७, २०, २२, ६७	२५४ लाल	११५
२३० रतनदास वैरागी	३, ४१	२५५ लालदास	१८
२३१ रतनो ग्वाती	१७६	२५६ ब्रजनन्द	२०
२३२ रसिकछेल	१६	२५७ ब्रजराज	२०
२३३ रसिकनाथ	१८	२५८ विजय मिंघ	२०
२३४ राजू	१४	२५९ विजिया	२३
२३५ राणां	५८	२६० विद्यादास	१६, ५६
२३६ राधाकृष्ण	१६	२६१ विद्यारूचि	१५७

२६२ विनयचन्द्र	१६५	२८६ सिधगवरी	५६
२६३ विनयविजय-जसविजय	२१२	२६० सिध घोड़ाचोली	६०
२६४ विनीतकमल	२०६	२६१ सिध हरवाली	६०
२६५ वीर विजयगणि	१५६	२६२ सुखदेव मिश्र	१
२६६ वृन्द कवि	१०६	२६३ सुखमणदास	१६
२६७ शान्तिकुशल	१,१६७	२६४ सुखानन्द	२४, ५८
२६८ शिवकरण	१५	२६५ सुन्दरकवि	१५०
२६९ शिवराम	२१३	२६६ सुन्दरदास	५, १५, १६, ३०, ६०, ६१, ६५,
२७० शिवराम-विप्र (दाधीचि)	१३०	२६७ सुमतिहंस	२०२
२७१ श्रीपति सुकवि	११५	२६८ सुरति कवि (मिश्र)	१२४, १४०,
२७२ श्री भट्ट	१८		१४४
२७३ संग्रामदास	६७	२६९ सूरज	१८
२७४ संग्रामसूरि	८६	३०० सूरतराम	१७
२७५ सतीकणोरी	६०	३०१ सूरदास	१७, २४, ५६
२७६ सदानन्द	१६	३०२ सूरविजय	१६८
२७७ सधना	५८	३०३ सेख उसमान	१६
२७८ सन्तदास २०, २२, २५, ३८, ६६, ६७,	६८	३०४ सेख बहावदी	५८
		३०५ सेख मावदी	१६
२७९ सम्भुनाथ	२४	३०६ सेना	५८
२८० समयसुन्दर	१६२	३०७ सेवादास	१५, १६, २३, ६७
२८१ सवाईसिंघ	२०	३०८ सोजा (सोझा)	१५, १६, २३,
२८२ सांवलिया	२४, ५६		५८, ६७
२८३ सांवतराम	१७३	३०९ सोम	२४, ५६
२८४ सांखभद्र	१६६	३१० सोमनाथ	१३८
२८५ साखीदास	६०	३११ स्याहुसैन	६८
२८६ साधु	६०	३१२ स्वरूपदास	८, १३२, १८७
२८७ साधुराम	१६, १७, २६	३१३ हंस कुमार (हंसकवि)	१६०
२८८ सामलदास	१८५	३१४ हरदास	५८

३१५ हरवत	६०	३२० हरिराम	१८
३१६ हरसेवक	१६४	३२१ हरिरामदास निरंजनी	१२६
३१७ हरि (?	१५४	३२२ हरि स्यंघ	६०
३१८ हरिचरणदास	१११, ११५,	३२३ हस्तराम	१८
	१२१, १२२, १३५, १४६	३२४ हुक्मेश	२०
३१९ हरिदास	१८, २३	३२५ हेमरतन	८१

ग्रन्थानुक्रमणिका

क्र०सं०	ग्रन्थ	पृष्ठ	क्र०सं०	ग्रन्थ	पृष्ठ
१	अचलदासजी की वार्ता	१५२	१७	अमृतधारा का कवित (भगवान दास निरंजनी)	१७
२	अंजना सुन्दरी रास*	१५१	१८	अमरदत्ता मित्राणंदरास	१५२
३	अजारी सरस्वती	१	१९	अर्जुन गीता *	२३
४	अठारा नांतां को व्यौरो*	६७	२०	अलंकार आशय	१०६
५	अणभै वाणी (मुरलीराम)	२५	२१	अलंकार चन्द्रिका	१११
६	" " (रामचरण)	१४, २१ २२, २४, २५, ४१, ६६, ६७	२२	अलंकार रत्नाकर	११०
७	" " (रामजन)	२४, २५	२३	अवतार चरित्र	३
८	" " (सन्तदास)	२२, २५, ६७, ६८	२४	आनन्द मन्दिरास	१५३
९	अणभै प्रबोध	२, २५	२५	आनन्द विलास	३
१०	अध्यात्म प्रकाश	१	२६	आनन्दार्णवसार	३
११	अनभौ विलास	४२, ६६	२७	इग्यार अंग स्वाध्याय	४
१२	अनुभव प्रकाश	२	२८	ईश्वर विवाह	५
१३	अनेक नाम माला (नाममाला)	२१, २२, १५०	२९	उपदेश चिन्तामणि	५, १५, १६
१४	अनेकार्थ मंजरी (अनेकारथी)	८, २१, १५०	३०	उपदेश छत्तीसी	६
१५	अपछरानु' इन्द्र सराप दीन्हौ तेरी वात	२०४	३१	उपदेश बावनी	६, २५
१६	अपरोक्ष सिद्धान्त	३	३२	उमा महेश्वर संवाद*	२२
			३३	उषा भागवत	१५३
			३४	एकादस की ध्याई	७, २२, २५, ६७
			३५	एकादस भागवत की कथा	३८
			३६	आखाणे की वार्ता	२०४

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

३७ ओधवजी ना संदेश	८	६१ कुँवर साहिजादा री वात	२०६
३८ कक्का बत्तीसी	१५, ६६	६२ कुण्डलियाँ	६६
३९ कड़खा	६०	६३ कृत (पीपा)	२३
४० कपड़ कतोहल*	८६	६४ कृत (नामदेव)	२३
४१ कर्मविपाक गीता*	२२	६५ कृत (रैदास)	२३
४२ करूणा बत्तीसी	८	६६ कृत (हरिदास)	२३
४३ कल्याण मन्दिर भाषा	१५३	६७ कृत (सोजा, सोम्हा)	२३
४४ कवाट सरवेहीया री वात (हरि ?)	१५४	६८ कृष्णजीवन ना बारा मासि*	११
४५ कविकुल कण्ठाभरण	११५	६९ कृष्ण बारामास्यो*	८६
४६ कवित्त रामायण	८१	७० कृष्णानन्दजी को कृत	२४
४७ कविता कल्पतरू	११६	७१ कोरु शास्त्र*	१५५
४८ कवि दर्पण	११२	७२ कोल्याइत रे साह री वात	२०३
४९ कवि प्रिया	११५, १२१	७३ क्षेत्रपाल छंद*	८६
५० कवि प्रिया की टीका	१२१	७४ खर्यों चीते अर विजै देवड़े री वात	२०५
५१ कवि वल्लभ	११५, १२२	७५ खुमाण रासौ	८१
५२ काणे राजपूत री वात	२०५	७६ गङ्गाष्टक	३
५३ काव्य कुतुहल	१२२	७७ गजेन्द्र मोक्ष*	१६
५४ काव्य रसायन	११५	७८ गरभ चिन्तामणि	२५
५५ काव्य सिद्धान्त	१२४	७९ गाँव रे धणी री वार्त्ता	२०६
५६ किवत (परमहंस सूरतराम)	६६	८० गावा को गोपीचन्द*	१७
५७ किवत (रामचरण)	४६, ६६	८१ गावा को नरसी महता को माहेरो*	१७
५८ कुँवर चित्रसेन री वात	२०४	८२ गीत संग्रह	१२
५९ कुँवर पाल पाटण रे धणी री वात	२०६	८३ गुरुदेव को अंग	१५, २१
६० कुँवर भूपति सेन री वात	२०४	८४ गुरु वीनती जोग	२६

८५	गुरु महिमा	१४, ६७	११०	चमत्कार चिन्तामणि	१६३
८६	गुसाईं जी की बधाई	२७	१११	चांफे सींघ री अर वीरे भायल	
८७	गोपीचन्द को बैराग	१३		री बात	२०५
८८	गोरख चरित्र (शुक्ल ग्रन्थ)	२४	११२	चारण मदमै मनोहर री बात	
८९	गोरा बादल पद्मिणी चउपई	८१			२०४
९०	गोविन्दाष्टक	३	११३	चार परधानां री बात	२०४
९१	ग्रन्थ (गोरखनाथ)	२४	११४	चिन्तामणि को अंग*	१५
९२	ग्रन्थ ग्यान प्रबोध	२६	११५	चिन्तामणि (ग्रन्थ)*	१५
९३	ग्रन्थ (बखना)	२४	११६	चिन्तावण बोध	६६
९४	ग्रन्थ अनखंडण	१५	११७	चिन्तावणी (रामचरण)	२१,
९५	ग्रन्थ वैराग बोध*	१४			४४, ६६, ६७
९६	ग्रन्थ साध प्रख्या*	६०	११८	चित्रसेन पद्मावती रास*	१६४
९७	ग्रम गीता*	२४	११९	चौपाई (साखीदास)	६७
९८	ग्रह कूप वर्णन*	१५, १६	१२०	चोबीस एकादसी री महात्तम	
९९	चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध	१६२			२७
१००	चन्दन मलयागिरि चोपई-दूहा	१५६	१२१	चोबीस घरां की लीला*	२३
१०१	चन्द्रराज चरित्र	१५६	१२२	चोबोली राणी री बात	२०३
१०२	चन्द्रराजा चोपी	१५७	१२३	चौरासी बोध	२७
१०३	चन्द्रकँवर की वार्ता	१६०	१२४	चौरासी बोल*	१५
१०४	चन्द्रलेहा चतुष्पदी	१५६	१२५	छन्द पयोनिधि	१२५
१०५	चन्द्र शेखर चरित्र	१५६	१२६	छन्द प्रकाश	१२५
१०६	चन्द्राइणी (जन सूरतराम)	६६	१२७	छन्द प्रबन्ध पिङ्गल भाषा	१२६
१०७	चन्द्राइणी (रामचरण)	४२	१२८	छन्द रत्नावली	१२६
१०८	चन्द्रोदय ग्रन्थ*	६६	१२९	छन्द विवेक	१२७
१०९	चम्पक माला*	१६४	१३०	छन्दोनिधि पिङ्गल	१२६
			१३१	छांटमां वाणी	२५
			१३२	जगदविनोद	८६

१३३ जड़भरत चरित्र*	२३	१५४ दादू की जन्म लीला ❀	२३
१३४ जम्बूसर को प्रसंग* १५, १६, २८		१५५ दामो देवड़ो अर सामो सरवेही	
१३५ जामराउल रो बारामास्यो १६५		री वात	२०५
१३६ जिनपाल जिन रत्नक रो, चउढा- लियो	१६७	१५६ दिल्ली रे होसनखां री वात	२०४
१३७ जोग वासिष्ठ ❀	२२	१५७ दीनमान रा फलां री वात	२०४
१३८ ज्ञान प्रमोद	२५	१५८ दीपङ्ग कुल प्रकाश	६०
१३९ ज्ञान समुद्र	३०, ६०	१५९ दीवाली री वार्ता	२०४
१४० ज्ञानै साह री वात	२०४	१६० देवसी रा बारी री वात	२०५
१४१ भूलणी	६६	१६१ द्रौपदी चौपई	१७३
१४२ टेक को अंग	१५, ३०	१६२ धन्नाजी री प्रची	१६
१४३ ठाकुर कवित्त	११५	१६३ धना सालिभद्रजी री चौपी*	
१४४ ढोला मारवणी री वात (गद्य- पद्य)	१६८		१७४
१४५ ढोला मारवणी री वात (पद्य)	१६७	१६४ ध्रुणा चारज*	२२
१४६ तखत विलास	१३०	१६५ धू चरित्र १४, १६, २१, २३, २५	
१४७ तरपत बोध (मुरलीराम)	२५	१६६ नखसिख	११५, १३१
१४८ तरपत बोध (रामजन)	४८	१६७ नयनदीप	१७५
१४९ तर्क चिन्तामणि ❀ १५, १६, २१		१६८ नरसी महता को माहेरो (रतनो खाती)	१७६
१५० ताँत बाजी राग बूझी तेरी वात	२०५	१६९ नरसी महता को माहेरो (शिवकरण)	१५
१५१ तिलोकसी जसड़ोतरी, भाटी २१ अर कुंगड़े बलोच री वात	२०५	१७० नलदवदंती आख्यान	१७८
१५२ दत्तात्रेय उपाख्यान ❀ १४, १६, १७१		१७१ नवतत्त्व नी चौपई	३२
१५३ दवदन्ती नी कथा (गद्य)	१७१	१७२ नवधा भक्ति*	६७
		१७३ नवरत्न कुमार री वार्ता	२०६
		१७४ नववाडिनी स्वाध्याय	३३
		१७५ नसीत नामो* १, ५, १७६	
		१७६ नांव प्रताप १५, २१, ४५, ६६, ६७	

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

१७७ नांव बत्तीसी	६६	१६६ परसण सिंगगार	३३
१७८ नासकेत	१६, २२	२०० पातसाह अलावदीन अर हंमीर	
१७९ नासकेत की कथा	१५, १८०	हठीले री वात	२०६
१८० नासकेत पुराण	१८१	२०१ पातसाह बजरंग रै बेटे री	
१८१ नासकेत भाषा (नन्ददास)	१८२	वात	२०४
१८२ नासकेत भाषा (दयाल)	१८२	२०२ पाण्डव गीता*	२२
१८३ निरंजन पुराण	२४	२०३ पाण्डव यशेन्दु चन्द्रिका ८,	
१८४ निर्वाण गीता*	२२	१३२, १८७	
१८५ निसांणी आगम री	१८६	२०४ पिङ्गल	१३३
१८६ नेमिनाथ रास	१८४	२०५ पिंडत समाध	२५
१८७ नेह तरंग	१३२	२०६ पिताका लच्छन तथा षोडष	
१८८ पंचम स्कन्धे प्रसादी महात्म्य *		क्रम	१३४
१६		२०७ पूरब चिन्तामणि	१५, ३४
१८९ पंचमार री वात	२०५	२०८ पोपांवाई री वार्ता	२०३
१९० पद-संग्रह (संत काव्य) १७,		२०९ प्रची धन्नाजी की*	१६
१८, १९, २०, २३, २४, २५,		२१० प्रची सेख उसमान की*	१६
४७, ५८, ५९, ६०		२११ प्रतीत बोध	२५, ५८
१९१ पद, साखी, रमैणी (कबीर,		२१२ प्रथम रेखता	६६
परसा, पीपा आदि) ५८, ५९, ६०		२१३ प्रथ्वीराज रासो	६०
१९२ पदमिणी चउपई	८६	२१४ प्रसंगी दूहा	२०, २२, ६७
१९३ पदमिणी चरित्र	८७	२१५ प्रसण सिंगगार	१५, १६, ६७
१९४ पद्मावती की वार्ता*	५	२१६ प्रसादी महात्म्ये भगवते प्रथम	
१९५ पद्मावती नी वार्ता (सामलदास)		स्कन्ध*	१५
१८५		२१७ प्रह्लाद चरित्र	१४, १६, २१
१९६ पनरह तिथियाँ रा दोहा*	१६०	२१८ प्रह्लाद को छंद*	१६
१९७ पनरेति रा दोहा*	८६	२१९ प्राण संकुलि (गुरु भण्डार)	२४
१९८ परदेसी राजा री चौपाई*	१८६	२२० प्राण संकुलि (चौरंगीनाथ)	२४
		२२१ प्राण संकुलि (संभुनाथ)	२४

२२२ प्रेम तरंग	११५	२४४ भक्तां का नाम	१४
२२३ प्रेम लक्षण निरूपण*	६७	२४५ भक्तामर भाषा	३७
२२४ फुटकर पदावली (आलम, दयानिधि, पजनेस, पद्माकर आदि)	१५, २२, १४८	२४६ भक्ति द्वावन *	१६
२२५ फूलजी फूलमती री वार्ता	१८८	२४७ भागवत गीता *	२२
२२६ बंग साहिजादे री वात	२०४	२४८ भागवत गीता की टीका	३७
२२७ बंसीभाट री उत्पत्ति री वात	२०४	२४९ भगवती छंद	८६
२२८ बलि सोभा (सोजा) की	२३	२५० भजन संग्रह (करुणाराम)	१६
२२९ ब्रज नी दानलीला	१०३	२५१ भटियाणी री वार्ता	१६५
२३० ब्रह्म समाधि लीन जोग	१५, २५, ३५	२५२ भरतहरि चरित्र*	१५, १६
२३१ बाँधी बुहारी री वार्ता	२०५	२५३ भरतहरि की लावणी ०	१५, १६
२३२ बारमासा*	८६	२५४ भरतहरि शतक की टीका	१२७
२३३ बालन चरित्र*	१६	२५५ भलै बुरै री वात	२०४
२३४ बावनी (क्षमहंस)	३६	२५६ भलै भलो, बुरै बुरो री वात	२०५
२३५ बावनी (ज्ञान तिलोक)	२४	२५७ भागवत एकादश स्कन्ध	३६
२३६ त्रिध चिन्तामणि	२५	२५८ भागवत दशम स्कन्ध भाषा	३८ ६३
२३७ बिहारी सतसई	११५, १३५	२५९ भाटियंगी नरवां जुदी हुई तेरी वात	२०४
२३८ बिहारी सतसई की टीका	१३५	२६० भावनावेलि	१६२
२३९ बुढलारी ढालां	१८६	२६१ भीम विलास	१०१
२४० बूढ्या रासो	१६१	२६२ भुवन जी की भाषणी (भाखणी)	२४
२४१ बैराग बोध	४६	२६३ भुवन भानु केवली	१६२
२४२ भक्तमाल (नाभादास)	२०६	२६४ भोगल पुराण*	२४
२४३ भक्तमाल की टीका (प्रियादास)	३६	२६५ भ्रमर गीत	३८
		२६६ भान्ति भंजनी *	११५
		२६७ मङ्गल कलश	३६, १०३

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

२६८ मदन कुँवर की वार्ता	२०६	२६० रघुनाथ रूपक	१३७
२६९ मदन नरिन्द चरित	१६३	२६१ रतनदास दोहावली	४१
२७० मदन विवेक प्रकाश	४०	२६२ रत्नपाल रत्नावती रास	१६८
२७१ मधुमालती	१०१	२६३ रत्नमंजरी की तृतीय वार्ता	२०६
२७२ मन खण्डण २१, २५, ४४, ६७		२६४ रत्नमाणक साहिजादा की बात	
२७३ मयणरेहा	१६४		२०४
२७४ महिपाल नरिन्द्र चरित	१६५	२६५ रमैणी	६, २३, २५
२७५ माधवानल	१०२	२६६ रसचन्द्रोदय	११५, १३७
२७६ मानतुंग मानवती रास	१६५	२६७ रस प्रियूष	१३८
२७७ मिहमद खान साहेजादे की बात		२६८ रस मंजरी	१३८
	२०६	२६९ रस रंग	१३६
२७८ मीराँ के भजन २१६-२३३		३०० रस रत्न टीका	१४०
२७९ मीराँ सम्बन्धी भजन २१, २३३		३०१ रस रहस्य	१४०
	२३८	३०२ रस राज	११५, १४१
२८० मुखनावों*	२२	३०३ रस रूप	१४२
२८१ मुनिपति चरित कथा	१६६	३०४ रस विलास	१४३
२८२ नेतारज मुनि कथा	१६७	३०५ रस सिरोमनि (रामसिंह नर- वरपति)	११५
२८३ मोगल मेहंदे की बात	२०५	३०६ रसिक प्रिया	११५, १४४
२८४ मोरडी हार गिलियौ तेरी बात		३०७ रसिक प्रिया की टीका	१४४
	२०४	३०८ रसिकानन्द	११५, १४४
२८५ मोहन लीला*	११५	३०९ रसोत्पति	१४६
२८६ मोहमरद की कथा १४, १६, २१		३१० राग चरचरी (रामचरण)	४६
२८७ मोह विवेक	२३	३११ राजनीति हितोपदेश	१६६
२८८ रजपूत आल्हण की बात अर भादे वाणीये की बात	२०४	३१२ राग चरचरी (सूरतराम)	६६
२८९ रजपूत की स्त्री की सहटी बोली तेरी बात	२०५	३१३ राजा गन्धर्वसेन की बात	२०३

३१४ राजाचन्द री वात	२०३	३३३ रामजन वाणी संग्रह	४७
३१५ राजा चोर बकचूलजी री कथा	१६६	३३४ राम प्रताप	२५
३१६ राजा पराक्रम सेन री वात	२०४	३३५ राम बोध ग्रन्थ *	२४
३१७ राजा भोज अर बाफरै चौर री वार्ता	२०४	३३६ राम रसायन बोध *	१४
३१८ राजा भोज अर भाणवती रे वाद री वात	२०४	३३७ राम रसायन	४२
३१९ राजा भोज री अर मंत्रसेण री वात	२०४	३३८ राम रासो	१०३
३२० राजा भोज री अर माघ पंडित री वात	२०३	३३९ राम सतग	१४, १६, २५
३२१ राजा मोरध्वज की लावणी *	१५	३४० राम सागर	२५, ४६
३२२ राजा रे बेटे री वात	२०६	३४१ रामानन्द की रचना	२४
३२३ राजा रे बेटे रे महल री वात	२०५	३४२ रायधण री वार्ता	२०३
३२४ राजा रो बेटो देसौटे नीसरीयो छै तेरी वार्ता	२०५	३४३ राव नरपतिजी री वात	२०५
३२५ राजा विजैपति री वार्ता	२०५	३४४ रावल जामून साह मिलियौ तेरी वात	२०५
३२६ राजा विजैराव री वात	२०५	३४५ रास पंचाध्यायी	३३, ५५, ६३
३२७ राजा सिधराव जैसिंधदे री वात	२०६	३४६ राहत भजन	५७
३२८ राजा सुसील री वात	२०३	३४७ रेखता (रामचरण)	४५
३२९ राठोड़ वंश की उत्पति	२०१	३४८ रेखता (सूरतराम)	६६
३३० रात्रिभोजन चौपाई	२०२	३४९ लालमेण कुवर री वात	२०६
३३१ रामचन्द्रिका	११५	३५० लुद्धवै पाटण माहे ब्राह्मण चोरी कीवी तेरी वात	२०४
३३२ राम चरित मानस	१०२	३५१ लूणसाह री बेटी री वात	२०६
		३५२ लेख कवि बल्लभ भापा टीका *	११५
		३५३ लेख काव्य प्रकाश भाषानवाद *	११५
		३५४ लेख रस रहस्य	११५
		३५५ वचनिका महाराज रतनसिंहजी री	१०४

३५६ वल्लभा ख्यात	२०२	३७८ वात रत्ना री, रतन ही रहै	
३५७ वल्यया सटीक *	१०३	अर प्रीत ही रहै	२०५
३५८ बाधड़ै बल्लैरे री वात	२०५	३७९ वात राजकेर धन री	२०५
३५९ वाणी (कानड़ दास)	१०	३८० वात राजा भोज री चार चारणां	
३६० वाणी (जगन्नाथ)	१६	बाबत	२०३
३६१ वाणी (जन सूरतराम)	७५	३८१ वात राजा भोज री छीपण	
३६२ वाणी (दादू)	५८	बाबत	२०३
३६३ वाणी (दूल्हराम)	१६, २०	३८२ वात राज भोज री बाफरे	
३६४ वाण (देवदास)	३१	चोरां पासी चोरी सीखो तेरी	२०४
३६५ वाणी (परमहंस सूरतराम)	२०, ६०	३८३ वात संग्रह	२०३
३६६ वाणी (बखना)	५६	३८४ वार्ता ओषाणे तणे सूमारथ	
३६७ वाणी (बाजींद)	१६	हूओ तेरी	२०३
३६८ वाणी (रामचरण)	१५, २०, ४१	३८५ वार्ता जैसे सरवहीये री	२०३
३६९ वाणी (रामजन)	१५	३८६ वार्ता राय मंत्रसेन री	२०५
३७० वाणी संग्रह	५८	३८७ वार्ता राजा सालवाहन री	२०४
३७१ वाणी (संग्रामदास)	६७	३८८ वार्ता साहूकार री अर सूवे री	२०५
३७२ वाणी (संतदास)	२०, ६६	३८९ वार्ता श्री सूर्यजी री	२०३
३७३ वाणी (साधुराम)	१६	३९० विक्रमे चरित्रे चोबोली सतीनी	
३७४ वात अचलदास खीची री उमादे		चउपई	२०६
मांखली परणीयो ते री	२०४	३९१ विक्रम वेलि	२०६
३७५ वात नरबदजी अर नृसंघ सींघल		३९२ विक्रम सेन चतुष्पदी	२०८
री पियार दे बाबत	२०४	३९३ विक्रमादीत री उत्पत्ति री वात	
३७६ वात मुहत्तै सुमंतकुंर मंगल			२०३
रूप री	२०५	३९४ विचारमाला	६०
३७७ वात मोरडी मतवाली री	२०५	३९५ विमलसाह रो सरलोको	२०६

३६६ विरह मंजरी	३८, ६३	४२२ शब्दी (बाल गुन्हाई)	५६
३६७ विवेक चिंतामणि	१६, ६१	४२३ शब्दी (बालनाथ)	५६
३६८ वीरोचन मोहते री वात	२०३	४२४ शब्दी (महादेव)	६०
३६९ वीसहरमाण जिनस्तवन	६१	४२५ शब्दी (मीडकी पाव)	६०
४०० वृन्द सतसई	१०६	४२६ शब्दी (सती कणोरी)	६०
४०१ वेला जूरै री वार्ता	२०४	४२७ शब्दी (सिध गबरी)	५६
४०२ वैराग बोध *	२५	४२८ शब्दी (सिध घोड़ा चोली)	६०
४०३ वैराग्य शतक	६२	४२९ शब्दी (सिध हर वाली)	६०
४०४ वैष्णव गीता *	२२	४३० शब्दी (हरवत)	६०
४०५ वैष्णव महात्म्य *	२३	४३१ शब्दी (हरि स्यंघ)	६०
४०६ वैष्णव वार्ता संग्रह	२०६	४३२ शालिभद्र मुनि चरित्र *	८६
४०७ व्यंग्यार्थ व मुदी सटीक	१४७	४३३ संग्रह	६३
४०८ षट्कृत वर्णन	१४८	४३४ संतों के फुटकर सबद	२५
४०९ शब्द प्रकाश	१५, २१, ४३, ६६, ६७	४३५ संतों (विविध) के अंग संग्रह	१४
४१० शब्दी (अजैपाल)	६०	४३६ संत कृतियों के फुटकर अंग	१४
४११ शब्दी (गोर्प चन्द)	५६	४३७ सगत रासौ	१०७
४१२ शब्दी (चरपटनाथ)	५६	४३८ सभाय *	६४
४१३ शब्दी (चुणकरनाथ)	६०	४३९ सतपुरुषों का गाथा का सबद	१४, ६४
४१४ शब्दी (चौरंगी नाथ)	६०	४४० सतवंती की वार्ता	२०५, २१०
४१५ शब्दी (जालंध्री पाव)	५६	४४१ सतसार	६५, ६७
४१६ शब्दी (दत्त)	५६	४४२ सनेह लीला	६५
४१७ शब्दी (देवल)	५६	४४३ सबद (दूल्हराम)	२२, ३१, ६७
४१८ शब्दी (धूंधलीमल)	६०	४४४ समय सार नाटक	१०८
४१९ शब्दी (नानक)	२४	४४५ समसार नाटिका का किवंत	६७
४२० शब्दी (पारवती)	६०	४४६ सभा प्रकाश	११५, १४६
४२१ शब्दी (पृथ्वीनाथ)	६०	४४७ सरवंगसार	७५, ६७

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

४४८ सलेमखान साहिजादे री बात	४७२ सिद्धान्त बोध	७४
२०६	४७३ सिद्धान्त बोल *	७५
४४९ सवैया-संग्रह (छीतरदास) ६०	४७४ सिद्धान्त सार	७५
४५० सवैया-संग्रह (परमहंस सूरत- राम)	४७५ सिधिनाम श्रीपति बोध टीको ग्रन्थ *	२४
४५१ सवैया (सुन्दरदास) ७५	४७६ सिधराव जैसंघदे री बात २०४	
४५२ साखी (कबीर) ६, २०, २२, २३, ६७	४७७ सुखविलास	४५, ६६
४५३ साखी (काजी कांदन) २४	४७८ सुख संवाद *	२२
४५४ साखी (चैन) ६०	४७९ सुख समाध	१५, १६, ४४
४५५ साखी (जैमल) ६०	४८० सुन्दर शृंगार	१५०
४५६ साखी (दादू) २३	४८१ सुबोध प्रकाश	६६
४५७ साखी (नानक) २४	४८२ सूर पञ्चीसी	५६
४५८ साखी (बखना) ५६	४८३ सोनारी'र सुतारी री बात २०५	
४५९ साखी (मुरलीराम) १६	४८४ सोनीगरांरी वंशावली	१०६
४६० साखी (रामचरण) २५	४८५ श्री आदिनाथ सेंटुं	३३
४६१ सादे मागलीये री बात २०५	४८६ श्री कृष्ण को समर	११५
४६२ साधु मुनिसर गुणमाला २१३	४८७ " जीरावल्ली पार्श्वनाथ स्तवन	३३
४६३ सामुद्रकइंस्त्री--पुरुष शुभाशुभ*	४८८ " नाथजी को अभिग्रन्थ	२४
२१३	४८९ " पंच कल्याणी स्तोत्र	३३
४६४ सार गीता *	४९० " पाल चतुष्पदी	२१२
४६५ सारासार पञ्चीसी २१३	४९१ " पालरास	२१२
४६६ सांवलसाहरे बेटे री बात २०६	४९२ " मंधर स्वामी विज्ञप्ति	२१३
४६७ साह री स्त्री रेतपावस री बात २०५	४९३ " महादेव पारवती री बात	२०६
४६८ साहूकार री बात २०६	४९४ " महावीर पारण	३३
४६९ सिंहलसुत चौपई *	४९५ " मेघ कुमार चउचढालियउ	३३
२१६		
४७० सिखरेईदेउ गडावत री बात २०५		
४७१ सिंघासन बत्तीसी २१४		

४६६ श्रुंगारोहिणी (स्वर्गारोहिणी)	२२	५०३ हरिचंद्र ग्रन्थ (सत, चरित)	१४, १६, २५, ६७, २१६,
४६७ श्रवंगसार	१७	५०४ हरिदास चहवाण री वात	२०३
४६८ श्रवंगसार का फुटकर सबद	२०	५०५ हरिहर संवाद	२२
४६९ श्रवंगसार संग्रह	१४	५०६ हस्तांबल	२३
५०० श्रवंगसार संतविचार	२२	५०७ हितोपदेश	२१८
५०१ श्रवंगी शब्द	६०	५०८ ह्याल बोध (मुरलीराम)	२५
५०२ हंसराज बछराज चउपी	२१६	५०९ ह्याल बोध (रामभजन)	७६

१	कुल ग्रन्थ संख्या	५०९
२	कुल ग्रन्थकार संख्या	३२६
३	अज्ञात लेखकों के ग्रन्थ	७६
४	अज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	६२
५	ज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	३
६	कान्यशास्त्र-ग्रन्थ	३६
७	महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थ	६२

राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(तीसरा भाग)

(१) अध्यात्म, धर्म, दर्शन, भक्ति, सम्प्रदाय, पंथ आदि..... ।

१ अजारी सरस्वती । रचयिता- शान्तिकुशल । आकार- ६'७" x ४'२" ।
पत्र-संख्या २ । इसमें जैन शैली का एक पँच रंगा सरस्वती का चित्र है । लिपिकार-
अजयकुशल । विषय- अजारी सरस्वती की प्रार्थना । छंद-संख्या ३७ ।

हेमा चारिज ने पणि तूंठी । कालिदास ने तूंहीज तूंठी
अनुभूति सन्यासी लाधी । मुनि लावण्य समें तूँ साथी ॥१०॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) अध्यात्म प्रकाश । रचयिता- सुखदेव मिश्र । आकार- ८" x
१०" । पत्र-संख्या- ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८
अक्षर हैं । छंद-(दोहा, सोरठा, कवित्त कुण्डलियाँ, सवैया आदि) संख्या २४१ ।
रचनाकाल-संवत् १७४५ आसोज शुक्ला ११ बुधवार ।

आदि भाग-

कवित्त

स्थावर जंगम जीव जिते जग भाँतिन भाँतिन वेष धरै हैं ।
नामहि सचिदानंद स्वरूप आतम एक प्रकास करै हैं ॥
ता बिन जानत सिंधु सो लागत जानते गोपद तुल्य तरे हैं ।
बंदति ताहि कहै सुखदेव सो ब्रह्म सदा सब ही ते परे हैं ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

आगम तंत्र पुरान पुनि, पंच रीति मति जान ।

बौचि आपने पख्य को, जग में डारत आन ॥२४१॥

[अन्ताणी संग्रह]

(३) अनभै प्रबोध । रचयिता- गरीबदाम । इसकी दो प्रतियाँ हैं । पहली प्रति । आकार-६'५" × ४" । पत्र-संख्या १३ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २५ अक्षर हैं । छन्द-संख्या-१४१ ।

आदि भाग-

चोपाई

ॐ प्रणम ॐ गुरु के पाई । मति बुद्धि ज्ञान देहु समझाई ॥

जासौ वरनो प्यंड ब्रह्मंडा । सातो सागर अर नव खंडा ॥१॥

आदि अनादि जोति अपार । ताथें प्रगट्यो ॐ कार ॥

ॐ कार तें पाँचों तंत । राजस सातिग तामस मंत ॥२॥

धरती पाणी अग्नि मिलाऊँ । पवन अकास ए पाँचों नाऊँ ॥

राजस ब्रह्मा विष्णु के स्वाति । तामस महादेव की भाँति ॥३॥

अन्तिम भाग-

दोहा

गरीबदास घटि उचरी, बाणो निर्मल सार ।

जे यहु गावै मुँगों, तिनके कटें विकार ॥१४०॥

अनभै प्रमोध उचारतां विचारंत । पापेन लिपंत पुनि न हरंत ब्रह्म समाधि गच्छन्ते ॥ ॐ नमो गुरु दादू पादूका प्रणाम ॥ १४१ ॥

[चन्नीलाल दादूपंथी, उदयपुर]

दसरी प्रति-यह ७२मन्तों के संग्रहवाले गुटके में है । देखो ग्रन्थ-संख्या ३०।

[केवलराम दादूपन्थी]

(४) अनुभव प्रकाश । रचयिता- महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर । आकार-६" × ५'३" । पत्र-संख्या १५ । पद्य-संख्या २५ । लिपिकाल-सम्बन् १७३४

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(५) अपरोक्ष सिद्धान्त । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर, आकार-६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या १०० । लिपिकाल सं० १७२४ ।

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(६) अवतार चरित्र । रचयिता-नरहरिदाम । पहली प्रति । आकार-१३'' × ८ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या १६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २२ अक्षर हैं ।

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

दूसरी प्रति-श्री नाथूसिंह राव, सलुम्बर

(७) आनन्द विलास— । महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर । आकार ६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या ३४ । पत्र-संख्या २०२ । लिपिकाल सं० १७२४—

दोहा

संवत् सत्रह सै बग, ता ऊपर चौबीस ।

सुकल परख कातिक विदे, दसमी मृत रजनीम ॥२०२॥

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(८) आणंदार्णवसार— । रचयिता-स्तनदाम । आकार-११ $\frac{३}{४}$ '' × ६'' । पत्र-संख्या ७५ । प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १२ अक्षर हैं ।

विषय-फुटकर रचनाएँ । लिपिकाल तथा रचनाकाल सं० १६३४ आदि भाग—

कवित्त

विद्या गुण मंडित जे पंडित बंदत अैसें

सुधा को निवास पाँच ठौर में प्रमानियें ।

सागर में चन्द्रमा में अधर में तियानिके में

व्याल के बदन मांहि देवलोक मानिये ॥

खारौ लीन पति-भरै डसत गरल चढै
 हांत है निपात बात छिपी नाहि जानिये ॥
 कंठ हरि भक्तिनि के बसत सदैव सुधा
 भनत रतनदास ठीक चित्त मानिये ।

अन्तिम भाग-

मालिनी छन्द

अखिल मल निवासं, पाणिनात सुपासं ॥
 कनिक गिरि निवासं, सूर्य कोटि प्रकासं ॥
 भवतु भव निवासं, मालति तीर वासं ॥
 गणपति भूमि वंदे मानसं राजहंसं ॥

विशेष-इस ग्रंथ के साथ 'गोविन्दाष्टक' और 'गंगाष्टक' दो रचनाएँ और हैं ।

[ब्रजलाल साधु, श्रीधरजी का मन्दिर, भीड़र]

(६) इग्यारह अंग स्वाध्याय । रचयिता-जमविजय उपाध्याय ।

आकार-१०' x ४३' । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या ७५ । रचनाकाल सं० १७०२ ।
 विषय-जैन धर्म वार्त्ता ।

आदि भाग-

आचारांग ब्रह्म कहुं तो अंग इग्यार भभारि रे ।
 चतुर नर अठार हजार पद जिहां रे लो दाग्यों मुनि आचार रे ॥

अन्तिम भाग-

विपाक मृत अंग नास जाय अंग इग्यारे सांभल्यारे
 पोहता मन ना कोडि ।
 टोडगमल जीतूँ रे । गई आपदा संपदा मिली रे
 आवी होड़ा होड़ि ।
 मात बकाई मंगल पिता रूपचंद भाई उदार ।
 मांगिक थाप कांइ सांभल्यारे विध सूँ अंग इग्यार ॥
 युग युग मुनि विधु पच्छरे श्री जमविजय उवजाय ।
 सूरति चोमासू रही रे कीधो ए सुख साय ॥

[वद्धमान ज्ञान मन्दिर, कसारागली, उदयपुर]

(१०) ईश्वर विवाह । रचयिता-देवीदास । आकार ७" x ५'५" । पत्र-संख्या ६ ।

आदि भाग-

संकर सारदा ने सीस नांम ।
 गरवा गणपति जो' जो मुंज सामं ॥
 सारदाये ते समरथ जाणी ।
 आइ आपो अनुपम वांणी ॥
 परमोही ने पूछी बात ।
 काम करी परण्या ते संभुनाथ ॥
 वीवा वगते करी बषाणौ ।
 ये बो देवीदासे नव जाणौ ॥
 प्रभुजी ना नांम पुछावो ।
 वीवा वगते करीन गावो ॥

इसके साथ 'पद्मावती की वार्ता' भी संग्रहीत है ।

[कविगाव मोहनसिंहजी, भटियाणी चौहटा, उदयपुर]

(११) उपदेश चिन्तामणि— रचयिता-मुन्दरदाम । यह रचना १३६ संतों के संग्रहवाले गुटके में है । पत्र-संख्या- ५ । पत्र-संख्या ७६ ।

आदि भाग-

दाहा

काल चिन्तामणि ए कही, अब भापूँ उपदेश ।
 लोक चतुर दस बरण हं, गहो विधि ज्ञान प्रदेस । १ ।

अन्तिम भाग-

काया छूटसी करलाय । पंछी बोलता उड़ जाय ॥
 मरणा मोत के आगै । मूरख काई नही जागै ॥ ७७ ॥
 राम ही साजनो कर चेत । उमी बांहां हेला देत ॥
 भजरे काईमां करतार । गुगती मालका भंडार ॥ ७८ ॥
 भजीयां उधरेगा प्रान । एह उपदेस मेरा मान ॥
 भूला क्यूँ न हरी क्यूँ ध्याय । तेरा बापका क्या जाय ॥ ७९ ॥

[रामद्वारा धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१२) उपदेस छत्तीसी । रचयिता-जिनहर्ष । आकार-२'' × ४'५''

पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३५ अक्षर हैं ।

आदि भाग-

सकल सरूप यामें, प्रभुता अनूप मूप
धूप छाया छाया मां हैं, नए न जगदीस जूँ ।
पुण्य हैं न पाप हैं न, सीत हैं न ताप हैं न
जाप के प्रताप कटे, करम अर्नास जूँ ॥
ज्ञानको अगंज पुज, मुख वृष्य को निकुंज
अती से चोतीस फुनि, बचन पेंतीस जूँ ।
एसो जिन राज जिन हरष प्रणमि उपदेस की
छत्तीसी कहुं सवैये, छत्तीस जूँ ॥

अन्तिम भाग-

अधम न करी मान, मान किये होवे हांग
मान मेरी सीख मान, सुख ग्राही मान रे ।
मानते गवण राज, लंका सो गयो विभाज
कियों हैं अकाज गई सब जान रे ॥
दुर्जोधन मान करी, हारी सब धराहरी
मानते गयो हैं मुंज चानुरी की खान रे ।
कहे जिनहर्ष मान, मन में न आण मान
आणे तो विसाणभद्र जिसो मान आण रे ॥

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(१३) उपदेस बावनी । रचयिता-किशन कवि । (यह १३७ मंतों की रचनाओं के गुटके में संग्रहीत है) पत्र-संख्या केवल १८ है । ग्रन्थ अपूर्ण है । इस में ६२ पद्य थे परन्तु प्रथम तीस पद्य अप्राप्य हैं । ऐसा मालूम होता है कि ये तीस पद्यवाले पत्र, कागज बहुत पुराना होने से तड़क कर निकल गये हैं । इसी गुटके में इन गायब पत्रों के दूसरी ओर के कुछ पद्य वर्तमान हैं । और कुछ, जिन पर मीरा के भजन थे, गुम गए हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर सात-आठ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५-१८, अक्षर हैं । अक्षर बारीक और नागरी लिपि में अङ्कित हैं । ग्रंथ का विषय

धार्मिक है, जिसमें संसार के माया-मोह से दूर रहने का उपदेश दिया गया है। ग्रंथ के अन्तिम भाग से ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी बहन रतनबाई की मृत्यु पर सं० १७०८ विजया दशमी को उसकी पुण्य स्मृति में इस ग्रंथ की रचना की।

अन्तिम भाग-

श्री पे संग राज लोग जस रस ताज गुरु
तिनकी क्रिया जू की बिताई पाई पावनी ।
मंमत् सतरै से अरु आठै बिजै दसमीं कूँ
ग्रंथ की समापति भई है मन भावनी ॥
माधवी ग्यांन मां की जाई श्री रतन बाई
तज्यौ देह ताते एह रची पद चावनी ।
मत की ममत लीन्हौं तत्व ही पै रुचि दीन्हौं
वाचिक किसन कीन्हौं उपदेस बावनी ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१४) एकादस की ध्याई । रचयिता-चतुरदास । आकार-३" x २" ४"
पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११, १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २२, २५ अक्षर हैं । इसमें ७, ८, ९, और १० अध्याय हैं । सातवें अध्याय में ७७ चौपाइयाँ और २ दोहे हैं । आठवें अध्याय में ५५ चौपाइयाँ, ९ वें अध्याय में ३६ चौपाइयाँ और १ दोहा और १० वें अध्याय में ५० चौपाइयाँ और १ दोहा हैं ।

आदि भाग-

अथ एकादस की ध्याई लिख्यते । श्रीभगवानुवाच:-

उधव में कही देऊँ ग्यांना । सत्त कहत हूँ नाही आंना ॥
या जग साध भए है जेते । आप ही आप उधरे तेते ॥ १ ॥
आप ही भलो बुरा पहिचानै । छाँडे बुरे भले कूँ ठानै ॥
गरु आपनूँ आपही होई । पसु पंखी भावे ज्यौं कोई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

मो दसि जनपद एक ही, ध्यावे जग तर बंस ।
तो (ता) सन मुख जगनाथ जन, मैं ध्याऊँ पैडस हंस ॥ १ ॥
मोसूँ पग पाछो परे, सनमुख जग तर बंस ।

तारूँ मे जगनाथ जन, पाथो पैडस हंस ॥ ५० ॥
यह रचना २० मन्तों की रचनाओं के गुटके में है ।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१५) ओधवजीना संदेश । रचयिता-रघुनाथ । आकार-७" x ५'५"
छन्द-संख्या २० । लिपिकाल-संवत् १६१८ ।

अन्तिम भाग-

अवगुणी आनल धरसो अवला री कना ।
वाक धणो पण वीने वीसारो रांय जो ॥
आकांते तेडी ने के जो अटल रघुनाथ प्रभु पधारे घेरजो ।
ओधवजी अमे साथे रसीयो रूपणे ॥ पद २० ॥
ओधवजी अलबेली कोरे आवसे
.....

(अपूर्ण)

[कविराव मोहनसिंहजी के संग्रह में]

(१६) करुणा बत्तीसी । रचयिता-साधौराम । आकार-६" x ४'८" ।
पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १५ अक्षर
हैं । छन्द-संख्या ३५ । लिपिकाल सं० १६०० अश्विन शुक्ला ५ गुरुवार । लिपिकार-
भट चयनराम । विषय-कृष्ण-भक्ति, ईर्मा के साथ 'नमीतनामा' (१) 'अनेकार्थ-
मंजरी' (२) 'पाण्डव-यशेन्दु-चन्द्रिका' (३) संग्रहीत है । अनेकार्थ मंजरी और
पाण्डव-यशेन्दु-चन्द्रिका अपूर्ण हैं ।

आदि भाग-

कवित्त

गिरि कौ उठाए ब्रज गोप कौ बचाय लये
अवल तैं उबारे पुन बालक मंजारी कौ ।
गजकी गरज सुनि ग्राहतैं छुडाय दयो
राख्यो व्रत नेम धर्म पंडव की नारी कौ ॥
राखे गज घंटा तल बालक विहंगम कौ
राख्यो पन भारत में भीषम ब्रह्मचारि कौ ।

त्रिविधि ताप हारी निज संतन सुखकारी
मोहि तो मरोसो भारी अैसे गिरिधारी कौं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

करौ अपराध घोर सांभ कोर कोर नित
अति ही कठोर मति कोर को निकाम हूँ ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नाहीं
उंच नीच बोली ठोली बकौं आठौं जामहूँ ॥
अरचा न जानुं कछु चरचाइ न ब्रूभक्त हौं
कभू हेत प्रीत सौं न लेत हरि नाम हूँ ।
सबै तकसीर बलवीर मेरी छिमा करौं
कहे माधौराम प्रभु तिहारो गुलाम हूँ ॥ ३४ ॥
या करुना बत्तीस कौं, पटे सुने नर नारि
ताके सब दुख दुःख कौं काटे कृष्ण मुरारि ॥ ३५ ॥

[कविराव मोहनमिहजी, उदयपुर]

(१७) कवीर की साखी । रचयिता-कवीर । आकार-६" × ६" । पत्र-संख्या २ । पत्र-संख्या ३४ । प्रति अपूर्ण है । कवीर की अन्य कई रचनाएं मिली हैं जिनका यथा स्थान उल्लेख किया गया है । इस प्रति के केवल दो ही पत्र हैं । प्रथम दो पत्र जिन पर २१ साखियां थीं, अप्राप्य हैं । इन दो पत्रों पर २२ से लेकर ५६ तक साखियां हैं ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीण्डर]

(१८) कवीर की रमैली । रचयिता-कवीर । आकार-६"७" × ५"८" । यह प्रति एक दो-सौ ग्रन्थों के चोपड़े में संग्रहीत है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है । पत्र-संख्या ४ । छन्द-संख्या ३७ ।

ग्रंथ का आदि भाग-

राम रमे राम राम ही जीऊं । इअत राम सुधास पीऊ ।
समरथ राम सजीवण मेरी । दरीया छांड पडूँ कित सेरी ॥ १ ॥
सेरी सेरा मेरी मेरा । करम उपाय राम नहीं नेरा ।
बिद्या बेद पडे जग फूला । कथनी कथि सुमरण तैं भूला ॥ २ ॥

आप ज भूला जग भग्माया । निरफ लगाया फल हाथिन आया ।
विद्या वेद जगनकी करीया । हरि बिनि भग्म करम अनुसगीया ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

धन संत सोई राम उपासी । हरि यूं प्रीत जग यूं उदासी ।
दुबध्या छरे स राम न पावै । दिन दिन यूं ही जनम गुमावै ॥ ३६ ॥
भगति निरंतर या विधि कीजै । अठ सिधि नौ निधि चित्त न दीजै ।
जि परमात्म ब्रह्म विचारी । कहे कर्बार मै ताकी बलिहारी ॥ ३७ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भंडार, भींडर]

(१६) कान्हडास की बाणी । रचयिता-कान्हडास । आकार-
८२" x ७२" पत्र-संख्या ४३ । पत्र-संख्या-साम्ब ७३५, सौरठा २, चन्द्रायणा ५४,
सर्वैया १११, कवित्त १२६, कुण्डलियाँ ८५, रेखता ३१, पद ३० । लिपिकाल-१८४२
विषय-निर्गुण उपासना । लिपिकार-भूधरदास ।

आदि भाग-

नमो अरंगी राम अभंगी, आप अनामी ।
नमो परम गुरुदेव परम पद, दाइक स्वामी ॥
नमो सिरामणि संत, अंत मन को करि बैटै ।
दर्ई जगत कृं पृठि ऊठि हरि सुख मै पैटै ॥
राम गुरु जन एक तन, मन विचि मेरे ईस ।
जन कान्हड़ बंदन करे, तुम चरणन मम सीस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

धनि धनि सुलक मेवाड़ जू, धनि भीलैडो ग्राम ।
जाहां प्रगस्या संत जन, रामचरणजी राम ॥ १ ॥
जाका सिख ऐसा भया, मम गुरु कान्हड़दास ।
भूदर कहै बनाइ कौं, सरणै लख्यो निवास ॥ २ ॥
भीलैड़ा मे भावसूं, लिखी ज भूदरदास ।
कान्हड़ की क्रिपा भई, अंग जोड़ि परकास ॥ ३ ॥
लिखी ज बाणी होइ कुञ्जि, घटती बधती बात ।
मिसु जबानी तोवली, नीकां समभक्त मात ॥ ४ ॥

अट्टारसे बियालीस का, दुति सुदि होई (?) ।

तिथि दोजी अर सोम दिन, बाणी भई संपूरण सोई ॥ ५ ॥

[बड़ा रामद्वारा, हनुमान घाट, उदयपुर]

(२०) कृष्ण जीवन नी वारामासि । रचयिता-अज्ञात । आकार-
७'' × ५'५'' । पत्र-संख्या ५ । पद्य-संख्या १८ । लिपिकाल-सं० १६१८ । लिपि-
कार-त्रिभोवन । भाषा-बागड़ी ।

आदि भाग-

प्रथम पुछुं गणपति रे, समरू सारदा माय ।

बुधि अनोपम आपजो रे, जोधुं मारा वाला नी वाट ॥

बेले रा बलजो बीठला, सूना जमना नो घाट ।

सूनी मथुरानी वाट कृष्ण.....॥ १ ॥

असाइ आवां से सखी रे, मेऊला करे घम घोर ।

पपैया पंडप करे गरवा, बोते छे मार ॥ कृष्ण.....॥ २ ॥

लीला ते चरण पेरीया, मनसुं आणी रे धार ।

वेवाधो मुने अनी घणो, ना' या हलधर वीर । कृष्ण... ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

जेठ मैने जादव वीन्या रे भुरे गोकल नी नार ।

जल वीन्या जल माझली, दाण जलती वार । कृष्ण॥

जोर नथी मारा नाथ जी रे लीधो दुखड़ा नो अंत ।

कृष्णप्रस्ते कृष्ण आथमो मथुरा मारे जो नचात कंत ॥ कृष्ण.....

वनथी प्रभुजी पदारीयारे पुरां गंधा ग कोइ ।

गाय सीखे ने सांभले रंगमा रणछोइ ॥ कृष्ण.....॥ १२ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२१) ग्रह कूप वरणन । रचयिता-अज्ञात । यह रचना १३७ संतों के संग्रहीत गुटके में है । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ३१ । इस ग्रंथ में महाभारत के शान्ति पर्व में भीष्म पितामह द्वारा पाण्डवों को दिए गए उपदेश का सार है ।

आदि भाग-

करत प्रीति हरि भक्त सूं, करुणा सिन्धु कपाल ।

धर्म सिरोमणि देव मुनि, ताहि धरै उर लाल ॥ १ ॥

भीष्मोवाच

सावधान होय सुनियो बातां । अब हूं तन छांडत हूं प्राता ॥
अति रहस्य भारथ उपगारा । सान्ति पर्व मध्य जो साग ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

बिन हरि कथा सुने नी काना । धन विद्या जहाँ बुद्धि न ग्याना ॥
धन सो ग्यान जहाँ नही विरागा । अजहूँ मूढ़ जगाये जागा ॥ २० ॥
ऐसी सब साधन की रीति । गंम नांम सूँ कीजे प्रीति ॥
स्थिर मति हरि सो हित करे । सो संसार समुद्र ही तरे ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२२) गाथा को ग्रंथ गोपीचन्द्र । रचयिता-कान्ह कवि । यह भी १३७
संतों के संग्रहीत गुटके में है । पत्र-संख्या ६१ । पत्र-संख्या १६८ ।

आदि भाग—

राजेश्वर अलख निरंजन रे ॥ अलख..... ।
भजले नाथ नैं गोपीचन्द्र राजा
भजन किया सूँ मेरा लाल अमर होइ जाई ॥ २ ॥
गोपीचन्द्र तन धन जोवन रे ॥ तन..... ।
थिरता है वहीं गोपी० ॥
थिरता नहीं मेरा लाल भरतरी भाई ॥ ३ ॥
मेणावाती मेहलां बैठी है । मेहलां०
सीस तपे गुर पीर दरस नित जाई ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२३) गीत संग्रह । रचयिता-जसविजय । आकार-१०" × ४५" । पत्र-
संख्या १७ । पत्र-संख्या २६४ । रचनाकाल--१७७१, श्रावण सुद २ ।

आदि भाग—

राग-राम कलि

रिषभदेव हित कारी । जगत गुरु०.....
प्रथम तिथंकर प्रथम नरेसर प्रथम यती ब्रह्मचारी ॥
वरसी दान देई तुम जगमी, ईलति ईति निवारी ।
तपसी काहि करतु नहीं करना, साहिब बेर हमारी ॥
मांगत नहीं हम हाथी घोरे, धन कंचन नहीं नारी ।

दिऽ मोहि चरन कमल की येवा, याही लगन मोहि प्यारी ॥
 भव लीला वासिन मुग्धो, तूँपरि सब ही उमारी ।
 भिं मेरे सन निश्चल कीतों, तूँ आना भिग्धारी ॥
 अययो साहिब नहीं को जनमी, यासू होइ दिलयारी ।
 दिल ही दलाल प्रेम के बीचि, तिहां हव खाचै गमारी ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

धन रा दोला ए दाल
 आनो देव मुपाय जीरे, साहिब तं मूलतान । गुणना गेहा ।
 तुम्ह सूँ प्रीत भक्ती बनी रे, चन्दन गंध समान ॥
 ए तो कदिइं न कारमी रे, कदीइं न अलगी थाइ ।
 दिन दिन अधिका विस्तर ई रे, महिमां इमांह काइ ॥
 सगस कथा जे पढ़नी रे, तेह पवन मइ संग ।
 वासिन भवि जन तग हूँ रे, चन्दन रूप सुरंग ॥
 वार मांमनां तहगें रे, एह तो जनमना गेग ।
 तेणीं अधिक तुम्ह प्रीतडी रे, न लहई पामर लोग ॥
 करम भुजग बन्धन इसां रे, विस्त्रां दीये जेह ।
 विगति मयूरी मोकला रे, जिम मवी छूटे तेह ॥
 मुक्त पासैं एक मंच छे रे, गारुड प्रवचन भार ।
 कहो तो तेने बन्धन हखें रे, देव कगे जो सार ॥
 प्रीति ते चंदन वासना रे, वासित मोखें मंच ।
 तुम्ह तो मलयाचल समा रे, वाचक जय कहे धन ॥ ८ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२४) गोपीचन्दजी को वराग । रचयिता-दास (?) । आकार-

३'६" × ३" पत्र-संख्या २८ । पत्र-संख्या १७३ ।

आदि भाग-

नमो नमो निरंजण देवा । अंजन रहति निरंजन सेवा ॥
 काल करम न लागे कोई । ताहि सुमरि जीव सद्गति होई ॥ १ ॥
 सुमरे जाको सेस मैसेा । ब्रह्मा विगन रु जपै गणेशा ॥
 सारद नारद सब सिर नावे । सिव्य रिधि मुक्ति ग्यांन पद पावैं ॥ २ ॥

को बन्दसि धरणी अन्धाय । पांणी पवन मिव के दास ॥

चन्द मू न थापा अनुग्रहे । मर नर चरन पखावन करै ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

गोपीचन्द कुं मिलि गया, जोगी जलेश्वरनाथ ।

‘दास’ कहै धन्य गुरु सिवां, प्रख्या असिलि ही माथ ॥ १५१ ॥

कोऊ मणौ बैराग बोध, मोधै अपणौ जीव ।

गम भगति मरधा सकति, ज्यों गति मिले इन पीव ॥ १५२ ॥

‘दास’ कह्यो बैराग बोध, करि आरोधन नाथ ।

खस्या करौ परि वधियंकू, मै लूध न समझै वात ॥ १५३ ॥

[स्वरूपलालजी जगदीश चौक, उदयपुर]

(२५) गुटका । आकार ६" x ४" । पत्र-संख्या ६८० । लिपिकार--
करुणागंम । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

- (१) श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणां
- (२) राजू कृत भक्तों का नाम
- (३) सत पुरुषों का सबद
- (४) ग्रंथ राम मतक । रचयिता चचभुज
- (५) धू चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
- (६) फूटकर पद-सूर, मीरां, तुलसी, रामचरन, नन्ददास आदि के
- (७) मोहमरद राजा का कथा । रचयिता-जगन्नाथ । (रचनाकाल--सं० १७७६)
- (८) प्रहलाद चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
- (९) हरिचन्द ग्रंथ । रचयिता-ध्यानदास
- (१०) कान्हू कृत गाथा को गोपीचन्द । पद्य-संख्या १२४१
- (११) राम रसायन बोध
- (१२) दत्तात्रेय उपाख्यान
- (१३) ग्रंथ वैराग बोध
- (१४) विविध संतों की कृतियों के फूटकर अंग
- (१५) श्रृबंगसार
- (१६) विविध संतों के अंग
- (१७) गुरु महिमा ग्रंथ । रचयिता-रामचरण

- (१८) ग्रंथ नांव प्रताप । रचयिता—रामचरण
- (१९) ग्रंथ शब्द प्रकाश
- (२०) ग्रंथ चिन्तामणि
- (२१) ग्रंथ मन खण्डन
- (२२) गुरु देव को अंग । रचयिता—रामचरण
- (२३) चोरासी बोल
- (२४) फूटकर पद
- (२५) राजा मोगध्वज की लावणी
- (२६) नामकेत की कथा
- (२७) ग्रह कूप वर्णन
- (२८) प्रसादी महात्मै भगवते प्रथम स्कन्दे
- (२९) भरतहरि की लावणी
- (३०) चिन्तामणि को अंग
- (३१) भक्त वत्सल राग कौतूहल नरसिंह महता को माम्हेरो—शिवकरण कृत
- (३२) सुन्दरदास कृत विवेक चिन्तामणि
- (३३) तर्क चिन्तामणि
- (३४) प्रसंग सिणगार
- (३५) उपदेस चिन्तामणि
- (३६) ब्रह्म समाधि लीन जोग
- (३७) पूग्व चिन्तामणि
- (३८) जम्बूमर को प्रसंग
- (३९) मुख समाधि
- (४०) भरतहरि चरित्र
- (४१) टेक को अंग—मुगलीगम
- (४२) कक्का बत्तीसी

[रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(२६) गुटका विविध संग्रहः—

- (१) रामचरण महाराज की वाणी । पद्य-संख्या १६१६
- (२) रामजन महाराज की वाणी । पद्य-संख्या ६११ ।

- (३) मुरलीरामजी की साखी । पद्य-संख्या ११५
- (४) राम सतक-चित्रदाम
- (५) दुल्हारामजी की बाणी । पद्य-संख्या ३१
- (६) जगन्नाथजी ,, ,, । पद्य-संख्या २८३
- (७) बार्जीदजी ,, ,, । ,, ,, १४६
- (८) भायुगमजी ,, ,, । ,, ,, १७
- (९) भृ चरित्र-जनगोपाल । पद्य संख्या १७८
- (१०) प्रहलाद चरित्र । ,, ,, २८५
- (११) मोहमरद । ,, ,, २७२
- (१२) रामसतक । ,, ,, १००
- (१३) हरिचन्द चरित । ,, ,, ३४०
- (१४) दत्तत्रै उपाख्यान । ,, ,, २१०
- (१५) भक्ति द्रष्टावन । ,, ,, ३१
- (१६) ग्रह कृप वर्णन । ,, ,, ३०
- (१७) पंचम स्कंदे प्रसादी महात्म्य । पद्य संख्या ३६
- (१८) करुणाराम के मजन
- (१९) भरतहरि की लावणी
- (२०) तर्क चिंतामणि
- (२१) त्रिवेक चिंतामणि
- (२२) उपदेश चिंतामणि
- (२३) प्रसन श्रृंगार । १०२ पद
- (२४) जम्बूसर । ३८ पद
- (२५) गजेन्द्र मोक्ष । ४५ चौपाई
- (२६) धन्नाजी की प्रची । ६० चौ० दो० ७
- (२७) सेख उसमान की प्रची
- (२८) बालन चरित्र । ४०० पद्य
- (२९) प्रहलाद को छन्द
- (३०) सुख समाधि । २११ पद्य
- (३१) भरतहरि चरित्र । १४२ दो० ४३४ चौ०
- (३२) नासकेत । १०८ दो० १६५६ चौ०

- (३३) श्रृंगार सार । पद्य ३२४
 (३४) अमृतधारा का कवित्त । पद्य २६
 (३५) गात्रा को गोपीचन्द । पद्य १२३८ दो० २
 (३६) गात्रा को नरसी मेता को मायरो । पद्य ४०५
 (३७) रामचरण का पद ३
 (३८) रामप्रताप ,, ,, १
 (३९) मुरलीराम ,, ,, ५
 (४०) दुल्हाराम ,, ,, ३
 (४१) देवीदास ,, ,, २
 (४२) कान्हड़दास का पद १
 (४३) पोहकरदास ,, ,, ६
 (४४) सूरतराम ,, ,, ६
 (४५) चन्द्रदास ,, ,, १
 (४६) जेतराम ,, ,, ४
 (४७) माधुराम ,, ,, ५
 (४८) करुणाराम ,, ,, ६
 (४९) लवलीनराम ,, ,, ४
 (५०) उदासीराम ,, ,, १
 (५१) रतनदास ,, ,, १
 (५२) बार्जीद ,, ,, १
 (५३) रामवल्लभ ,, ,, १
 (५४) कबीर ,, ,, ६२
 (५५) बिषना ,, ,, ७
 (५६) कमाली ,, ,, १
 (५७) दादू ,, ,, १४
 (५८) सूरदास ,, ,, ६०
 (५९) मीराँ ,, ,, १०४
 (६०) नरसी ,, ,, ६
 (६१) नामदेव ,, ,, २
 (६२) रैदास ,, ,, २

(६३)	तुलसीदास	के	पद २७
(६४)	लालदास	,,	,, ८
(६५)	नीतानन्द	,,	,, २
(६६)	धीरमदास	,,	,, १
(६७)	हरिदास	,,	,, २
(६८)	अग्रदास	,,	,, ४
(६९)	श्री भट्ट	,,	,, १
(७०)	केसोदास	,,	,, १
(७१)	हरिराम	,,	,, २
(७२)	कृष्णदास	,,	,, ४
(७३)	नन्ददास	,,	,, १
(७४)	स्याहुमैन	,,	,, ८
(७५)	दीन	,,	,, ४
(७६)	काजी महम्मद	,,	,, ७
(७७)	नानूदास	,,	,, १
(७८)	गोविन्ददास	,,	,, १
(७९)	लक्ष्मनदास	,,	,, १
(८०)	मूरज	,,	,, २
(८१)	परमानन्द	,,	,, १
(८२)	दास	,,	,, ५
(८३)	केवलराम	,,	,, १
(८४)	मयाराम	,,	,, १
(८५)	हस्तराम	,,	,, २
(८६)	चन्द	,,	,, २
(८७)	रंगीला	,,	,, २
(८८)	रसिकनाथ	,,	,, २
(८९)	मलराम	,,	,, ३
(९०)	मूरत	,,	,, १
(९१)	छोगालाल	,,	,, १
(९२)	रूपदास	,,	,, १

(६३)	श्रीतमदास	के	पद	१
(६४)	चाचर	"	"	१
(६५)	सुखमणदास	"	"	१
(६६)	मोतीनाथ	"	"	४
(६७)	नारायणदास	"	"	१
(६८)	जोगीगम	"	"	१
(६९)	गंगादास	"	"	३
(१००)	सदानंद	"	"	१
(१०१)	मदनमोहन	"	"	१
(१०२)	विद्यादास	"	"	१
(१०३)	मोतीदास	"	"	१
(१०४)	कासीराम	"	"	२
(१०५)	मस्तुधर	"	"	१
(१०६)	नानकदास	"	"	१
(१०७)	मीट्ट	"	"	१
(१०८)	बालकदास	"	"	१
(१०९)	रामसजन	"	"	१
(११०)	अधर	"	"	१
(१११)	मेख मावदी	"	"	१
(११२)	कृष्णानंद	"	"	१
(११३)	मोरबज	"	"	१
(११४)	जगन्नाथ	"	"	१
(११५)	भवानीदास	"	"	१
(११६)	गंगाधर	"	"	१
(११७)	राधाकृष्ण	"	"	३
(११८)	नेम	"	"	१
(११९)	धना	"	"	१
(१२०)	पुरुषोत्तम	"	"	१
(१२१)	रूपरसिक	"	"	१
(१२२)	रसिक छेल	"	"	१

(१२३)	ब्रजनंद	के	पद	४
(१२४)	ब्रजराज	"	"	३
(१२५)	चंद्रसखी	"	"	५
(१२६)	बालसखी	"	"	१
(१२७)	रामसखी	"	"	१
(१२८)	बस्तावर	"	"	१३
(१२९)	किसोर	"	"	२
(१३०)	उम्मेदा	"	"	२
(१३१)	जमना	"	"	२
(१३२)	दयासखी	"	"	१
(१३३)	हुक्मेश	"	"	१
(१३४)	अमरपुरी	"	"	१
(१३५)	सवाईसिंघ	"	"	१
(१३६)	त्रिजयसिंघ	"	"	१
(१३७)	देवीसिंघ	"	"	१
(१३८)	बांकीदास	"	"	१
(१३९)	बीठुदान	"	"	१
(१४०)	बारहठ कान्हाजी	"	"	२

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२७) गुटका संतवाणी संग्रह । आकार-५"८" x ३"३" । पत्र-संख्या-५८० । लिपिकाल-सं० १८७६ । लिपिकार-प्रीतमदास ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

- (१) स्वामी सन्तदास की वाणी
- (२) रामचरण की वाणी
- (३) परमहंस सूरतराम की वाणी
- (४) दुल्हराम की वाणी
- (५) रतनदास का प्रसंगी दुहा
- (६) श्रबंगसार का फुटकर सबद
- (७) कबीर की साखी

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२८) गुटका विविध संग्रह । आकार-७" x ३'६" । पत्र-संख्या ४२० ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

- (१) प्रह्लाद चरित्र
- (२) धृ चरित्र
- (३) मोहमरद की कथा (अपूर्ण)
- (४) रामचरणजी की अण्मै बाणी, ग्रंथ नाव प्रताप, सबद प्रकाश, चिन्तामणि, मन खंडन और गुरुदेव की अंग
- (५) नंददास की अनेक नाममाला और अनेकार्थमाला
- (६) जयतराम कृत मीराँ सम्बन्धी भजन— ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें आगे दिया जायगा ।

प्रह्लाद चरित्र का अन्तिम भाग—

अमृत रस प्रह्लाद जस, कहै सुनै जे कोइ ।
 अमै अमर पद पाइये, भगति मुक्ति फल होइ ॥ २४१ ॥
 सुनै सुनावै प्रीत जुत, हरिजन हरि जस एह ।
 कहै गोपाल उर धारिकै, राम भगति सँ तेह ॥ २४२ ॥
 मै मुति सारू आपनी, कही जु घटि बधि बात ।
 जन गोपाल सुत हेत को, नीकां समझै मात ॥ २४३ ॥

धृ चरित्र का अन्तिम भाग—

गुरु गोविन्द प्रताप तै, कथ्यो भगति रस मार ।
 जन गोपाल हरिजन कह्यो, बाणी करि बिसतार ॥ २४४ ॥
 धृ चरित जे कोई सुनै, मन बच क्रम चितलाइ ।
 हरि पूरव सब कामनां, भक्ति मुक्ति फल पाइ ॥ २४५ ॥
 अब सँधा सब कागद करूँ, सारद लखै बनाइ ।
 उदध घोर मस कीजिए, धू म्हमां न समाय ॥ २४६ ॥
 मै अग्यान मति आपनी, कल्पि कही कछु बात ।
 बकसत सुत अप्राध कू, जन गोपाल पित मात ॥ २४७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२९) गुटका विविध संग्रह—आकार-६" x ३'४" । पत्र-संख्या ५८० ।

लिपिकाल—संवत् १८७६ । लिपिकार—पीतमदास

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:--

- (१) संतदास की अणभै वाणी
- (२) रामचरण की अणभै वाणी
- (३) गूरतराम की अणभै वाणी
- (४) दुल्हराम का सबद
- (५) रतनदास का प्रसंगी दोहा
- (६) श्रबंगसार संत विचार का फुटकर सबद
- (७) एकादस की ध्याई (दो अध्याय)
- (८) कर्बार की साखी ।
- (९) मुख नावों
- (१०) फुटकर पद

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३०) गुटका । आकार-६'७" x ५'८" । पत्र-संख्या लगभग ६०० ।

इसमें लगभग २५० रचनाएँ संग्रहित हैं, परन्तु इन सब का यहाँ देना असम्भव होने के कारण केवल निम्नलिखित रचनाओं के नाम ही दिए जाते हैं:--

- (१) नाममाला
- (२) नासकेत
- (३) सुखसंवाद
- (४) जोगवासिष्ठ
- (५) भागवत गीता
- (६) निर्वाण गीता
- (७) सार गीता
- (८) वैष्णव गीता
- (९) कर्म विपाक गीता
- (१०) पाण्डवी गीता
- (११) ध्रुणाचारज
- (१२) उमा महेश्वर संवाद
- (१३) श्रुगा रोहिणी
- (१४) हरिहर संवाद

- (१५) वैष्णव महात्मै
- (१६) हस्तांबल
- (१७) अर्जुन गीता
- (१८) चन्द्रोदय ग्रन्थ
- (१९) मोह विवेक
- (२०) धू चरित्र
- (२१) प्रह्लाद चरित्र
- (२२) जड़ भरत चरित्र
- (२३) चौबीस घरां की लीला
- (२४) दादू की जन्म लीला
- (२५) दादू की साखी
- (२६) कबीर की साखी
- (२७) कबीर की रमैणी
- (२८) नामदेव को कृत
- (२९) रैदास को कृत
- (३०) हरिदास को कृत
- (३१) सोजाजी को कृत
- (३२) सोजाजी की बलि
- (३३) पीपाजी को कृत
- (३४) परसाजी को पद
- (३५) बैलियानंद का पद
- (३६) धन्नाजी का पद
- (३७) कीता थोरी का पद
- (३८) चतरभुज का पद
- (३९) बीसाजी का पद
- (४०) त्रिलोचनजी का पद
- (४१) नरसियाजी का पद
- (४२) कानइयाजी का पद
- (४३) विजियाजी के पद
- (४४) भीमजी का पद

- (४५) सोमजी का पद
- (४६) अधारुजी का पद
- (४७) मांवलियाजी का पद
- (४८) भुवनजी की भाषणी
- (४९) ग्यान त्रिलोकजी की बावनी
- (५०) कृष्णानन्दजी को कृत
- (५१) रामानन्दजी की रचना
- (५२) अंगदजी का पद
- (५३) सुखानंदजी का पद
- (५४) नानकजी का पद, सव्दी और साखी ।
- (५५) काजी मोहम्मद का पद
- (५६) सूरदास का पद
- (५७) परमानन्द का पद
- (५८) कान्हाजी का पद
- (५९) गोरखनाथ का ग्रन्थ
- (६०) बखनाजी का ग्रन्थ
- (६१) गुरु भण्डार की प्राण संकुलि (गुरु भण्डार मत्स्येद्र के शिष्य)
- (६२) चौरंगीनाथ की प्राण संकुलि
- (६३) संभुनाथ की प्राण संकुलि
- (६४) प्रभ गोता
- (६५) शुक्ल ग्रन्थ—गोरख चरित्र ।
- (६६) श्रीनाथजी को पंथ अभिग्रन्थ
- (६७) रामबोध ग्रंथ
- (६८) निरंजन पुराण (दादू)
- (६९) सिधिनाम श्रीपति बोध नाम टीकौ ग्रन्थ
- (७०) भोगल पुराण
- (७१) काजी कांदन की साखी ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर

(३१) गुटका—आकार—३½" x २'४" । पत्र-संख्या ८६६ ।

इनमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

- (१) रामचरणजी की अणभै वाणी

- (२) एकादस की ध्याई
- (३) संतदासजी की छांटमा वाणी
- (४) किशन कवि कृत उपदेश बावनी— रचना—काल सं० १७०८ के लगभग
- (५) कबीर की रमैणी
- (६) ग्रंथ रामसागर—कबीर
- (७) ग्रंथ रामसतक—चत्रभुज
- (८) रामचरणजी के फुटकर सबद
- (९) हरिचन्द्र चरित—ध्यानदास, सं० १८०० के लगभग
- (१०) मोहमरद की कथा—सं० १७७६ काति विद १२ सोमवार
- (११) संतदास की अणमै वाणी
- (१२) ग्रंथ वेगग बोध
- (१३) रामचरणजी की अणमै वाणी में का छाँटवा सबद—साखी, ग्रंथ रामप्रताप, मन-
खगडन, ग्रंथ पिडित समाध, गरम चिन्तामणि, विध-चिन्तावणी ।
- (१४) रामजन की आणमै वाणी
- (१५) प्रह्लाद चरित्र—जनगोपाल
- (१६) भगवती चरित्र
- (१७) धृ चरित—जनगोपाल
- (१८) ब्रह्म समाध—जगन्नाथ, सं० १८८५ बैसाख सुदी ४, रविवार
- (१९) रामजनजी की अणमै वाणी छाँटवां
- (२०) मुग्लीरामजी की अणमै वाणी—ग्रन्थ ह्याल बोध, ज्ञान प्रमोद, तरपत बोध,
प्रतीत बोध ।
- (२१) संतों के फुटकर शब्द

इस ग्रंथ में कोई लिपिकाल नहीं है । पत्र भी इसमें कई तरह के जोड़े हुए हैं और लिपि भी ग्रंथों के साथ बदलती गई है जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि अलग अलग लोगों द्वारा ये ग्रंथ लिपिकृत हुए हैं । आरम्भ में कुछ छन्द दिए गए हैं, जिनकी लिपि अन्य ग्रंथों की लिपियों से भिन्न है । ये छन्द कृष्ण की मुरली और रास से सम्बन्ध रखते हैं । सबसे प्राचीन लिपि में एक छप्पय दिया हुआ है जो इस प्रकार है:—

अथ घड़ी प्रमाण छप्पय

प्रहै अंगुष्ठौ पुरम ब्रह्म इंद्री तिथि कहीऐ
तरजन्या रस^१ रुद्र^१ उमय^२ विचार मन लहीऐ

मधिमा रवि रुषि^७ रांम बुधि बोध ना उर जानूँ
 अनामिका त्रयोदस^{१३} वेद^४ बसु^८ सुर जुगति निदानूँ
 करै कनेछा सप्रम जो ग्रह^९ रतन तत पेषिये
 करिये बिचार यह रेन दिन घटिका पंडित लेषिये ॥ ७ ॥

नोट:- यह कबीर कृत 'राम सागर' के नीचे दिया गया है, रामसागर
 कबीर की नई रचना है।

[रामद्वारा, धौली बावड़ी, उदयपुर]

(३२) गुरु बीनती जोग । रचयिता-साधूराम । आकार-१६" × ११" ५" ।

पत्र-संख्या ६ । पत्र-संख्या २४६ । रचना काल सं० १८६८, चैत्र शुक्ला ८ सोमवार ।
 आदि भाग-

प्रथम बंद गुरु देव को, दुतिगु संत रु राम ।
 तन मन इन पद अरपि कै, प्रणवत साधूराम ॥ १ ॥
 गुरु संत हरि जो क्रिपा, मो परि करो जु पूरि ।
 तो गुरु बिनती जोगकी, उपजै मो रस ऊरि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

नम्र उदैपुर ताल पिछोला । ता तटि राम हिं द्वारा अमोला ॥
 जाहां जु ग्रंथ भयो हे च्यारी । जप सरदारसिंघ की बारी ॥ २४३ ॥
 राणा भीम पिछे नृप ज्ञाना । भए उजागर अति बलवाना ॥
 भक्ति भीम सुं करी सवाई । देस देस सन्तन जस गाई ॥ २४४ ॥
 चढ़ूँ खूंट में जस बिस्तरिया । दस बर साल गिराज जु करिया ॥
 देह त्यागि के स्वरग सिधारा । अमर रहयो जस धरा मंभारा ॥ २४५ ॥
 ता गादी सरदार ही सिंघा । राजत भली जु भाँति नरिन्दा ॥
 ग्रंथ भयो है ताकी बिरियां । संमत अठार अठ्ठाणुं र' वरिया ॥ २४६ ॥
 चेत सुक्ल अष्टम ससिवारा । पूरण ग्रंथ भयो हरिद्वारा ॥
 किंचित जस गायो हरिजन कौ । रसिकां सब गुण भनै जु उनको ॥ २४७ ॥
 गुरु सतूति बरनन करी, मेरी बुधि उनमांनि ।
 पार लहै कोटिगनि कौ, मसक अहंकृत मांनि ॥ २४८ ॥
 सब ही जन मो ऊपरै, रखियो महर अपार ।
 अरजी साधूराम की, यहै जु बारंबार ॥ २४९ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३३) गुसाईंजी की बधाई । रचयिता-माणिकचंद । आकार-
७ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " ।

आदि भाग-

बोहोंरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटै श्री विठ्ठलनाथ हमारे ।
द्रापर वग्धु भा र हरयो हरि कलयुग जीव उधारे ॥

अन्तिम भाग-

ऐसो कवि को है जुग महिमां वरनै गुण जु तिहारे ।
माणिकचंद प्रभु कों सिव खोजत गावत बैद पुकारै ॥

(३४) चोबीस एकादसी रो महात्तम । रचयिता-नथमल । आकार-
६" × ५'१" । पत्र-संख्या २० । विषय-चोबीस एकादशियों के महात्म्य की गद्य
में टीका । भाषा-राजस्थानी

आदि भाग-

नागदजी ब्रह्मा ने पूछे- तुं पिता सब जाणै । श्रावण वदी एकादसी । उपवास कीयां कृष्ण
पुन्य । ब्रह्माजी बोल्या-श्रावण वदी एकादसी का नाम । व्रत कीयां सकल काम की सिध दइ ।
गोविन्दजी की सेवा कीजे । सर्व तीर्थ स्नान कीयां पुन्य दइ ।

अन्तिम भाग-

किसनजी कह्यो । चार मास उपोष्ये । ती वारे दान पुण्य तीर्थ घणा कीजे । जीहरे
नारायण पोटे छे । बालक रूप छे । साँप को रूप छे । बीछ हे । मोर छे । डर ही रूप छे ।
संसार ने रूप छे । ताथे चोमासो महिदान पुन्य घणा कीजे । आसाठ मुदि एकादसी । श्री नारा-
यण पोटे । इण व्रत थी वैकुण्ठ पावै ।

[श्री स्वरूपलालजी शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

(३५) चोरासी बोध (चोरासी बोल) रचयिता-जगन्नाथ । इसकी
कई प्रतियाँ मिली हैं । जिनमें से एक का उल्लेख ऊपर गुटका संख्या २४ (२३) में
किया गया है । दूसरी प्रति:- पत्र-संख्या ६१ ।

आदि भाग-

नकारो नर सो बचन, नटत ही उपजे दुख ।
यूँ चोरासी जायगा, नटै ते बरते सुख ॥ १ ॥

मनख जनम पायकै, टाले इतनां दोष ।

तो जगन्नाथ नरनारी को, सुधरे लोक परलोक ॥ २ ॥

राम मूमरतां धकीऐ नै ॥ १ ॥

गुर सेवा मै लुकीऐ नै ॥ २ ॥

करणी कर गरबाजे नै ॥ ३ ॥

नित को नेम घटाजे नै ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

ऐ चोरासी सुभ असुभ, कया मान का टांम ॥

जगन्नाथ करीऐ सबै, जब लग ग्रह बिसराम ॥ ३ ॥

ईच लगत चालै सुघड़, तो भलां कहै सब लोय ॥

नहचै आवा लोक मै, पलो न पकड़ै कोय ॥ ४ ॥

या चोरासी चित धरै, तो वा चोरासी बार ॥

अपनी अपने हाथ है, मन मानै सो साध ॥ ५ ॥

बार बार नर-तन नहीं, कहै सासतर संत ॥

तार्ते सुकत कीजियं, के भजिए भगवंत ॥ ६ ॥

जैन जवन सिव धरम कहै, करणी सुधरे काम ।

दया धरम इकतार सँ, जगनाथ कोहो राम ॥ ७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३३) जम्बूसर को प्रसंग । रचयिता- अज्ञात । यह ग्रन्थ १३६ संतों के संग्रहीत गुटकों २५ (३८) और २६ (२४) में मिला है । इसके अतिरिक्त भी इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । पत्र-संख्या ३ । इसमें उपदेश की दृष्टि से एक कहानी दी है । एक धनपति साहुकार के पुत्र जम्बूसर का उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह होने के कारण उसमें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । इसमें १० दोहे, ४ कवित्त, १४ सोरठे और १० चौपाइयाँ हैं ।

आदि भाग-

दोहा

मेवल हे सो यूँ कहै, जंबूसर ज्यूँ जान ।

सिषता को प्रसंग अब, कहुँ सो निश्चे मान ॥ ? ॥

किंवत

ऐक साह धनवंत तास के पुत्र बजोई ।
जंवूसर तस नाम सीध 'र जनमत होई ॥
पिता कियो हठ बहोत, परणबो आरें कीनों ।
परण तजूं कर नारि, आप उत्तर यूं दीनों ॥
ऐक बनिया के छी आठ, तिनें सुन मतो बिचारै ।
करे पितासूं अरज, पुरष जंवूसर मारै ॥

अन्तिम भाग-

जंवूसर बड़ भाग, धन तेरी माता पिता ।
जनम नहीं जग राग, छांड रतो परब्रह्म सूँ ॥ १२ ॥
द्रव्य लेन कूँ चोर, बाधी पोट ज प्रीत कर ।
ज्ञान भयो तिह ठोर, जंवूसर को ज्ञान सुन ॥ १३ ॥
अष्ट नारि एह ज्ञान, सुनत ही सो सब गयो ।
चोर भये लगतान, सीलवान का वचन सुन ॥ १४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३६) ग्यांन प्रबोध । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ३२ । पद्य-संख्या ३६७ ।

आदि भाग-

सत गुर रांम दयाल जन, धन आनंद सुखकार ।
तिन कूँ बंदत रांमजन, करिहु नित निरधार ॥ १ ॥
गरू सबद श्रवणा करूँ, धरूँ रांम का ध्यान ।
राम गरू जन प्रसन्ता, जातैं नास अग्यान ॥ २ ॥

सिख उवाच-

कूँन ग्यान कांहां तैं आयौ, नांस भए तब कांहां समायौ ।
अर अग्यान जावै कहीं साधन, सिख पूछे गुर करि आराधन ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

महा भयानक काल एह, कलिजुग क्रम अथाग ।
ता मति सत गुर प्रगटैं, सो धन मेरो भाग ॥ ४ ॥

हलाबोला कलझुभा ऐह, जोहां न धरम बबेक ।
 तिन मधि प्रगटै आइ गुर, रामचरणजी एक ॥ ३६५ ॥
 रामचरणजी मेघ वत, जिनकी बांणी छोल ।
 मत करार सर भगति ज्युँ, भरीए ग्यान भकोल ॥ ३६६ ॥
 ग्यान उदधि गलतां नमत, उतम भजन रत आप ।
 भीलौड़े प्रगटे भले, प्रगट हरे संताप ॥ ३६७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३८) ज्ञान समुद्र । रचयिता-सुन्दरदास । यह एक ४'५" × ३'१" आकार-
 वाले संग्रह में है । जिसमें तीन रचनाएँ और हैं । (१) मोहमरद, (२) रहत
 भजन, (३) राजा चोर बकचूरजी की बात । पत्र-संख्या ८६ । पद्य-संख्या-३०६
 रचना काल-१७१० ।

पुष्पिका

संमत् सतरेसे गये, वरष दसोत्तर ओर ।
 भाद्रव सुद एकादसी, गुर वासर सिर मोर ॥
 ता दिन संपूरन भयो ज्ञान समुन्दर ग्रंथ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(३९) टेक की अंग । रचयिता-मुरलीराम । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या
 ३८ । रचना राम सनेही पन्थ से सम्बन्धित है ।

आदि भाग-

टेक रखां काइस भलो, हेतम की सिर देख ।
 मुरलीराम निवाजिया, देख जनां की टेक ॥ १ ॥
 टेक समाई सूरवां, राम नाम की अैन ।
 जन मुरली छांडे नहीं, देख रमाया चैन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

टेक न छांडे लोवड़ी, होय जाय तारोतार ।
 द्रढता लीयां रंग की, यू जन नाम करार ॥ ३६ ॥
 ऐकै रंग एक तार में, रहती रंजन धीर ।
 रंग लगावै आपणों, रचै आन सरीर ॥ ३७ ॥
 रथांम काज अर्पण करे, तन धन मान मुलवक ।

टेक रखे निज नाम की, कोप्यां मुरली खलक्क ॥ ३८ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४०) तर्क चिन्तामणि । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ५३ । यह ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है । देखो सुन्दर ग्रंथावली भाग १ । प्रकाशित ग्रंथ से इसकी भाषा में काफी अन्तर है ।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४१) दुल्हरामजी महाराज का सयद । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या १३ ।

आदि भाग-

राग भंभोटी-

बलिहारी गुर देव तुम्हागी-भो सागर सै त्त्यारी ॥ टेक ॥
 रामनाम की नांव ज सारी, बैठाया नरनारी ॥
 पंग को बिड़दवान इक भारी-धीरज जार ज डारी ।
 जत सत समता रतन अपारी, किरपा पवन चलारी ॥
 सत गुरु आप करण के धारी, औघट घाटी टारी ।
 दुल्हेराम चरण उपगारा, सरखै रखां उबारी ॥

अन्तिम भाग-

दरसाया दिल मांही रे, तूँ साइंया-दरसाया दिल मांहि ॥ टेक ॥
 दरस कीयां दिल हरी निवारी, मारी ममता साहि ॥
 नारी वारी बित पर हारी, जै हैरहीं जातिन जाहि ।
 उनमन चित नचलताई, सरबंगी राम दिखाहि ॥
 सबक गुर कृपा सूँ जानै, मरम दूँदता दरसाहि ।
 दुल्हेराम की अन्त्रजांमी, तुम सूँ छानी नांहि ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४२) देवदास की वाणी । आकार-८"५" × ७"२" । पत्र-संख्या ६५ । रचना काल सं० १८४४ (?) लिपिकार (या संग्रह कर्ता)-जगन्नाथ

आदि भाग-

नमो अखंडत राम नमो सत गुरु सुखदाता ॥

नमो अनंत ही कोटि, राम रस पाई पिलाता ॥
 जिनकी गही ज वो रहो सिरी सदा हमारूँ (?) ॥
 अठ पहरबौ मन मोलि सुरति धरि निरति न टारूँ ॥

दोहा

देवदास बन्दन करै, बारू बारज जोइ ।
 राम गुरु अर संत जन, हिरदै राखूं पोइ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

राम चरण गुर देवता, सकै सीख बौहो भारी ।
 देवदास इक नाम, जासकी बिरती करारी ॥
 भजन करै भरपूरि, आन 'चा न सुहावै ।
 गुर पद में गलतान, और कछ दाइ न आवै ॥
 सकल बासना नास, आसन की फुनि नाहीं ।
 बिचरैं जग के मांहीं, केवल अूं जल के माहीं ॥
 ऐसे सन्त दयाल, नगर इक स्यावै आए ।
 गहै दिवस दस बैठि, ताहां तन कूं छिटकाए ॥
 साध तीन ता लारि, समै ता दिन की औसी ।
 अन्त समै लगी राम, और चर्चा नहीं कैसी ॥
 परम धाम किए बास, तासमै संसै नाहीं ।
 हम देख्या निरताइ, सबद अणभै का माहीं ॥
 अष्टादस सो जानि, बरष चमाली गिणिए ।
 पोस माम के मांहिं, तीन दिन बाकी भणिए ॥
 प्रात समै आदीत दिन, गए देह छिटकाइ ।
 जगन्नाथ देखी जिसी, साची कही बनाइ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(४३) नव तत्व नी चौपई । रचयिता-ऋषिवरसंघ । आकार-
 ६ $\frac{1}{2}$ " × ४ $\frac{1}{4}$ " । पत्र-संख्या ७ । पत्र-संख्या १३६ । लिपिकाल-सं० १८२४ ।
 लिपिकार-ऋषि मलूकचन्द्र । रचनाकाल सं० १७६६ ।

आदि भाग-

पास जियेशर प्रणमि पाय । सह गुरु दांम तणें सुवसाय ॥
 नव तत्व नो कहुँ विचार । सामलजो चित दे नर नारि ॥ १ ॥
 जीव अजीव पुन्य पाप ज जोय । आश्रव संवर निरञ्जरा होय ॥
 बन्ध मोक्ष नवन्व ए सार । हवे कहुँ एनो विस्तार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दश नपुसंक सिधज जाण । बीस ते स्त्री सोम वेखान ॥
 एकसौ आठ पुरष ज कछा । जिन बचने आगम थी लछा ॥
 छिसे छहोत्तर बोलज सार । आगम थी कीधो बिस्तार ।
 नव तत्व ना चौपड़ एह । भणै गुणै सुख पामे तेह ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४४) नव वाडिनी स्वाध्याय । रचयिता-जिनहर्ष । आकार-
 १०'२" × ४'८" । पत्र-संख्या ३ । रचना काल सं० १६१६ । इसका विवरण जैन
 गुर्जर कवियों में आ चुका है ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४५) पंच कल्याणी स्तोत्र । रचयिता-पुन्यसागर । आकार-१०' × ४'३' ।
 पत्र-संख्या ५ । इसमें निम्नलिखित रचनाएं हैं:—

- (१) श्री मेघकुमार चउढालिया (सं० १७२८) पद्य-संख्या ४७ ।
- (२) श्री महावीर पारणउ । पद्य-संख्या ३१ ।
- (३) श्री आदिनाथ सेत्रु । पद्य-संख्या ३२ ।
- (४) श्री जीरावल्लि पार्श्वनाथ स्तवन । पद्य-संख्या १५ ।
- (५) श्री पंच कल्याण स्तोत्र । पद्य-संख्या २१ ।

[वर्द्धमान ज्ञान, मन्दिर उदयपुर]

(४६) परसण सिंगार । रचयिता-सेवादास । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या
 १०१ । इसकी दो प्रतियाँ हैं । दूसरी प्रति में पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या १०२ ।

आदि भाग-

उनमनि नेजा फरहरे, अनहद धूर निसाण ।
 सहीत भोग्यां ऊपरै, चढीयो सबद दिवाण ॥ १ ॥

नाँव त्रप की फोज का, केहा करूँ बखाण ।
एक एक सूँ आगला, बहु जोधा बलवान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बान हामरा जंग की, कोई सुगै सांचला सूर ।
सेवादास अलबत चटै, सुणत सुवा मुख नूर ॥ ६८ ॥
लख कोटयां मध सूरवां, सूखें हमारा जंग ।
सबद बिचारै सेवला, सो सुंग सुंग देवै रंग ॥ ६९ ॥
मो बपड़ा की क्या घणी, ए सत गुरु हन्दी रीभ ।
खोटे पहे सेवला, पाई मोटी चीज ॥ ७० ॥
सत गुरु मेरे सिर तपौ, श्री गाजी गिरधरदास ।
जिनके बल जंग जीत कर, किया पिसण सब नाश ॥ ७१ ॥
तहां काल तणां सारा नहीं, फरी राम की आण ।
मेवादास जंग जीत कर, परस्या पद निर्वाण ॥ ७२ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४७) पूरब चिन्तामणि । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ४ । पद्य-
संख्या २३ । यह तीयालीस ग्रंथों के गुटके में संकलित है ।

आदि भाग-

जनम अनेक विधि पायो है जगत में,
सिधो इन काज भयो गयो ज्यु ही आयो है ।
जैसे नलि नाल साथ कलू हीन चढ्यो हाथ,
मृग की सी नाई (मृग) बारबार भरमायो है ॥
ताते अब चेत भजो आगम के साथ सजो,
रामजन राम गाय गुरुजन चितायो है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

चोरासी के सीरे तन पायो है रतन एह,
जतन जतन कर नीठ ठाम आयो है ।
भ्रम में न भूल भाई बड़ाई जू जान लीजे,
कीजे कृत सांच काच कूर कूँ हनायों है ॥
तीयालीस लाख बीस सहस 'हूँ बरस बीते,

मानवें जनम एह नीठ नीठ पायो है ।
ताते अब चैत सावधान होय रामजन,
राम राम कहो गरुदेवजी चितायो है ॥ २३ ॥

[रामद्वारा, धोती बावड़ी, उदयपुर]

(४८) ब्रह्मसमाधिलीन जोग । रचयिता-जगन्नाथ । इस की कई प्रतियां मिलती हैं । इसका उल्लेख ऊपर के गुटकों में भी आचुका है । पत्र-संख्या २७६ । रचना काल-सं० १८५५, वैशाख सुदी १४ रविचार ।

आदि भाग-

बिनऊं राम दयाल गुर, वीय गे भंत अतोल ।
तुम कृपा जापर करो, तब उपजे उर बोल ॥ १ ॥
मन हुलस्यों तुम महरस सूं, ग्रंथ करन अभ्यास ।
जथा अरथ नीकां कहैं, जगन्नाथ है दास ॥ २ ॥
राम चरण जन प्रगट्या, अवनि लियो अवतार ।
आदि अंत लग जो भई, जांको कहुं बिचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

याहां सदा आनन्द में मंगल मूरति राम ।
मंगल कर बोहतेन कूँ पधारे परमधाम ॥ २२ ॥
परमधाम सबके परै, राम सबद अदभूत ।
लीन भए जन तासमें, अनभि जन अनभूत ॥ २३ ॥
अणभी अणभौ पद मिले, राम ही राम उचारि ।
ता बरीयां की जगन्नाथ, कलुयक कही बिचारि ॥ २४ ॥
जनगति की मोही गम नहीं, ये तो अगम अपार ।
जगन्नाथ मोकुं भूर्यो, सो मै कब्यो बिचार ॥ २५ ॥
रामचरण महाराज को, जस प्रगट्यो जग मांहि ।
ज्यूं फूल के अंतर ज्यूं, आप सरूप सराहि ॥ २६ ॥
बाण्यो सबद बिचारीये, खित मेली सबकार ।
राम सबदमई जगन्नाथ, रामचरण माहाराज ॥ २७ ॥
मै हूँ अतुचर रावरो, जगन्नाथ मो नांव ।
राम चरण महाराज कूँ, बार बार परनाम ॥ २८ ॥

मेरी बुधि सारू कछो, एह सभै को ग्यान ।
जगन्नाथ मो उर रहो, राम चरण को ध्यान ॥ २६ ॥
अठारासे पचपन वर्ष, रवि चोदस बैसाख ।
ग्रंथ संपूर्ण जगन्नाथ, पुन जानो सुधि पाक ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४६) बावनी—रचयिता—मुनि क्षमादेव । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या ५४ । विषय—नीति, उपदेश आदि ।

आदि भाग—

छप्पय

ॐकार अपार पार बहु किरण ही पायो ।
ब्रह्मा विष्णु शिव सगति ध्यान ग्यान ही धुरि ध्यायो ॥
मंत्र तंत्र जड जंत्र जोग जुगति महिमागर ।
ऋद्धि वृद्धि नव निद्धि सिद्धि साधक सुख सागर ॥
जम्पन्ति जिहि नितु प्रति जकेलहेत सुख लीला लहर ।
कवि कहे मेम सेवो सयन ॐकार आठों पहर ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

प्रियमा मंग करि गहवा पिसुण दहवट पुलाई ।
भगड़ा भउड़ सन्ताप जाई अरू बादल बाई ॥
खिमा खड़ग करि गहवा गण धरि उद्धव मंगल ।
संप कुटुम्बा साथ आधि उपजइ अनंगल ॥
कवि हंस खेत इहि खरि बावनी कवते करी ।
सब सयण सुणन्ता सीखन्ता वसुधा मंगल विस्तरी ॥ ५४ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(५०) भक्तमाल टीका । टीकाकार—प्रियादास । आकार—
६.६" x ६.५" । पत्र-संख्या ५५ । पद्य-संख्या ८२४ (मूल तथा टीका को मिलाकर)
लिपिकाल सं० १७८६ । कार्तिक शुक्ल ७ शनीवार । लिपिकार—नारायणदास ।

पुष्पिका

“श्री उदयपुर मध्ये राणां श्री संग्रामसिंहजी विजय राज्ये । स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य

प्रियादासजी लिखावतम् आत्मार्थे वाचनार्थं ।”

नोट— भाग १ में उल्लिखित भक्तमाल की टीका इसीकी प्रतिलिपि मालूम होती है ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५१) भक्तामर भाषा । रचयिता-केसरकीर्ति । आकार-१०" × ४'४" ।

पत्र-संख्या ३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ४४ सर्वैया । रचना मरम और सानुप्रास है । यह मानतुंगाचार्य कृत संस्कृत 'भक्तामर' का भाषानुवाद है । कहा जाता है कि मानतुंगाचार्य को एक बार ४० तालों में बंद कर दिया गया था । उस पर उसने जिन भगवान की प्रार्थना में ४० पदों की रचना की । एक-एक छंद पर एक-एक ताला टूटता गया । आदि भाग—

श्री जिन नायक वंशित दायक पाइकै पाय प्रणाम करै है ।
भाव धरी सुर आइन मैं प्रभु माणिक मौलि के मध्य जरै है ॥
तास प्रभा कु प्रकास करै कम पाप कलाप कुं दूरि हरै है ।
जुगादि भवोदधि मध्य परे नर तो पद पूज थी सोड धरै है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

स्तोत्र रूप फूलमाल गुंथी गुणै विसाल
अरीथाइ आलमाल जे सुणै सुभावतै ।
भावतै विरची येह विविध वरण जेह
विचित्र कुसुम तेह सोह सुघडावतै ॥
ऐसी माल कंठ धारै मातुभव आज्य आरै
निरंतर जे उचारै चित कै सुहावतै ।
मानतै उत्तंग सोई घरे लच्छी पूर होइ
केसर कीरति पोछै प्रभू कें प्रभाव तै ॥ ४४ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(५२) भगवद् गीता-टीका । टीकाकार-महाराजा जसवन्तसिंह ।

आकार-६'६" × ६'५" । इसके साथ प्रियादास कृत 'भक्तमाल की टीका' नन्ददास कृत 'भागवत दशम स्कन्ध भाषा' आदि कई अन्य ग्रन्थ भी हैं । भगवद्-गीता-टीका २८ पत्रों में समाप्त हुई है । इस प्रति को सम्बत् १७६८ में महाराणा

संग्रामसिंह के राज्यकाल में प्रियादास ने आत्म पठनार्थ लिपिबद्ध किया। टीका गद्य में है।

आदि भाग—

धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, आदि ।

टीका—संजय उवाच—दुरजोधन पांडवों की सैन्य देखि द्रोणचार्य पासि जाय अरु बोल्यो—‘हे-आचार्य ! पांडु पुत्रों की बड़ीइ सेना विषै समवेत एकत्र भये। जैसे ये मेर अरु पांडु पुत्र कैसे है। जुध की इच्छा धरतु है। हे संजय ! ते कहा करत भये।’

अन्तिम भाग—

संजय उवाच—हे राजा या भाँति श्री कृष्ण कों अर्जुन कों महाअद्भुत संवाद मैं सुन्यो। सो यह वेद की क्रीया तैं। साक्षात श्रीकृष्ण के मुख तैं। जोग परम गुह्य सुन्यो। सो यह फिरि समरन करि करि बहुत हर्ष पावत हों। और यह अद्भुत श्रीकृष्ण को रूप समरन करि करि म्होंकों विस्मय होतु है। और महा हर्ष होतु है। हे राजन् यह म्होंकों निश्चै है। जहां जोगीश्वर श्रीकृष्ण है अरु जहां धनुर्धर अर्जुन है तहाँ सर्वथा लक्ष्मीजी है। विजय है। विभूति है। अरु नीति है। मेरी मति यूँ कहे है ॥ ७१ ॥

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५३) भ्रमरगीत । रचयिता-नन्ददास। आकार-११" × ५"। पत्र-संख्या २१। पद्य-संख्या ७५। लिपिकाल-संवत् १६३१।

[ब्रजलालजी साधु, भींडर]

(५४) भागवत दशमस्कन्ध भाषा । रचयिता-नन्ददास।

प्रति १:— यह एक ८" × ६" आकार वाले चोपड़े में है, जिसका लिपिकाल संवत् १७३५ से १७६१ है। इस चोपड़े में चार ग्रन्थ हैं:—

१. भागवत दशमस्कन्ध भाषा (संवत् १७३५) — नन्ददास
२. रास पंचाध्यायी (संवत् १७६१) — नन्ददास
३. विरहमंजरी („ „) „
४. एकादश भागवत की कथा (संवत् १७६१) — संतदास

इनका वर्णन यथा स्थान किया गया है।

आदि भाग—

दोहा

नव लक्षि न करि लक्षिजी, दश मैं आश्रय रूप ।

नंद बंदि लै प्रथम तिहि, श्रीकृष्णाखि अनूप ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

सुनै छु कोउ मन क्रम बचन, ऐह उनतीसवो अध्याय ।

धंस न कलिमल बंस कहु, नंद न अवर उपाय ॥

इसमें कुल २६ अध्याय हैं जो ७२ पत्रों में समाप्त हुए हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

प्रति २:- आकार-६'६" × ६'५" । लिपिकाल- संवत् १७६२ ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५५) भागवत एकादस स्कन्ध । टीकाकार-चतुरदास । आकार-११'३" × ६" । पत्र-संख्या १८८ । पद्य-संख्या २४०६ । रचनाकाल-संवत् १६५२ । चतुरदास संतदास का शिष्य था ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(५६) भागवत एकादश स्कन्ध । टीकाकार-चतुर्भुजदास आकार-१०" × ४'६" । पत्र-संख्या २०३ में से केवल १७५ शेष हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(५७) मंगल कलश । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०" × ४'२" । पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

आदि भाग-

विनिता नय निबोधणी, वृषभ लंबन जसु पाय ।

प्रणमुं आदि जिणैसरू, नामे नव निध धाय ॥ १ ॥

शांति जिणैसर सोलना, अचिरा मात मलार ।

हुं प्रणमुं पय तेहना, अभय दान दातार ॥ २ ॥

सीलवंत सिर सेहरो, भोजकुं अरि भरतार ।

स्याम वर्ण सोहे सदा, उजल गिर सणगार ॥ ३ ॥

संखेस्वर सामि सधर, पुरिसा दाणी पास ।

वामा नंदन सेवता, पहीचे मन नी आस ॥ ४ ॥

सम सासन सोधणी, महावीर जिन राय ।

पय प्रणमता जेहना, अलिय विघन सविजाय ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

चिंतामणी पास पसाउ ले ए मालंतडी, ए रास रच्यो सुविचार ।
 संघ सकल आग्रह किए मालंतडी, मेघ कहे सुखकार ॥
 ध्रु ताहरा जिदां लगे ए मालंतडी, मेरू अचल गिरनार ।
 राम रहो ए तिहां लगे ए मालंतडी, बलि जिहा रवि ससि सार ॥
 ए रास भावे करी ए मालंतडी, जेह भणे मंन सुद्ध ।
 अंने थलि आदरे सांमले ए मालंतडी, ते लहे, निर्मल बुद्धि ॥
 मंगल कलस मणि वरे ए मालंतडी, जे करे पूण्य अपार ।
 मेघविजय कहे नेड ने ए मालंतडी, नित नित जय जयकार ॥

(५८) मदन विवेक प्रकाश । रचयिता—मदनेश । आकार-७" × ६"

पत्र-संख्या ३५३ । पन्ना-संख्या १६५० से अधिक । इसका रचना काल-संवत् १६४१ है । पूरा ग्रंथ १८ विश्रामों में विभाजित है । प्रथम विश्राम में कवि ने अपना वंश वर्णन किया है । जिसमें शक्तिसिंह से लेकर अपने तक का पूर्ण वर्णन है । ग्रंथ का विषय आध्यात्मिक ज्ञान है । प्रथम विश्राम में वंश-वर्णन होने के कारण यहाँ द्वितीय विश्राम का आदि भाग दिया जाता है ।

आदि भाग-

दोहा

भेद सजाति विजाति ओ, स्वगत कहे जो नाहिं ।

कृष्ण * शब्द को लक्ष्य यों, मदन धस्यो उर माहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

मंगल कुल मंगल प्रजा, मंगल देस महान ।

मदन सु मंगल रूप है, मंगल रूप सुजान ॥

चंद निधि अरू वेद शसि, संवत् चेत सुदि मास ।

संपूर्ण ता दिन भयो, मदन विवेक प्रकाश ॥

जब लगि गिरि कैलाश में, गौरि गिरीश निवास ।

अटल रहो जब तक जगत, मदन विवेक प्रकाश ॥

ॐ ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास (पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक) के शिष्य थे ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(५६) रतनदास दोहावली । रचयिता-रतनदास । आकार-५'८" x ३'३" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल-संवत् १८७६ ।

आदि भाग-

करै गुरां की बंदगी, सिख उरि अधिक हुलास ।

हरि बरि ऐहि मांगियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

कपट मेष सिर साध कै, कौडी मिली न ऐक ।

साहा भजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ बंबेक ॥ १६७ ॥

बिप्र सौहीं यौ आतमां, बेटी बुधि जौ जानि ।

संगति सगाई राम बर, घर गुर पूरा मानि ॥ १६८ ॥

सूरायण रटि राम कूँ, काहर कंमी दूरि ।

लज्या सोंही कुंसगति, बेल ज भगती पूरि ॥ १६९ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(६०) रामचरण बाणी संग्रह । रचयिता-रामचरण । रामस्नेही पंथी रामचरणजी की रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं । निम्नलिखित ग्रन्थों का विवरण यहाँ दिया जाता है:-

१. अणभै बाणी । इसमें निम्नलिखित अंग-साखी हैं:-

१. गुरदेव	कौ	अंग-	साखी	७८
२. सुमरण	„	„	„	१२२
३. बीनतो	„	„	„	१८
४. साधसंगति	„	„	„	३६
५. काल	„	„	„	५०
६. चिंतावणी	„	„	„	६६
७. सूरातण	„	„	„	३६

८. टेक	„	„	„	२७
९. कसतूरियां भ्रग	„	„	„	१२
१०. मन	„	„	„	२८
११. हेतप्रीत	„	„	„	१४

२. चंद्राद्वयाः—

१. गुरदेव	कौ	अंग	पद्य	४
२. सुमरण	„	„	„	३
३. बीनंती	„	„	„	१६
४. ब्रह्म	„	„	„	२४
५. साध भमी	„	„	„	१
६. साध	„	„	„	३६
७. साध संगति	„	„	„	४६
८. त्रिकत	„	„	„	२०

२. अनभौ विलास को प्रथम प्रकरण ।

आदि भाग—

नमौ राम रमतीत, नमौ गुर देव स्वामी ।
 नमौ नमौ सब संत, नांव रटि भए जूं नांमी ॥
 जिनके चरणूं हेठि, रहौ नित सीस हमारा ।
 तन मन धन अर प्राण, करूं नवझावर सारा ॥
 राम संत गुर देव बिनि, नहीं और अधारा ।
 राम चरण कर जोड़ि कै बंदै बारू बारा ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

और मिलाये मिलै न तिही न ति दुर्लभ मेल हरीजन कौ ।
 त्रिए ताप भिटै जन के दरस्यां मल धौइ के दूरि करै मन कौ ॥
 जीव नरमल होइ के राम रटै कोइ क्रमा कौ नाहि रहै कंनकौ ।
 कहै रामचरण देख्या हम जोइ कै संत सधान म्हाधन कौ ॥ १ ॥

४. राम रसायन ।

आदि भाग-

राम तीत राम गुरदेव जी, पुनि तिहूँ काल के संत ।
 जिनकूँ रामचरण की, बंदन बार अनंत ॥ १ ॥
 सत गुर परम निधान पद, हृद सूँ बेहद जोय ।
 रामचरण बंदन करै, ब्रह्म रूप नित सोंय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

(ये) राम रसायण महारस, गुर सिख पारख कीन ।
 सरणां की सोभा कहुँ, सो सुणयो परबीन ॥ ६२ ॥

५. शब्द प्रकाश ।

आदि भाग-

राम नाम तारंग मंत्र, सुमरे संकर सेस ।
 राम-चरण सांचा गरु, देवे यौ उपदेस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजन बिन खाली करणी ।
 ज्यूँ बिन बीज सुधारी धरणी ॥
 राम बीज साधन हल हाकै ।
 तो राम-चरण खेती फल पाकै ॥ २४ ॥

दोहा

बरण कयो संखेप सो, दराया कैसो पार ।
 जिन परसीया धाम कूँ, सो लीज्यौ संत बिचार ॥ १ ॥
 'रामचरण' रट राम नाम, पाया ब्रह्म बिलास ।
 ई साधन कोई लागसी, जाकै होसी सबद प्रकास ॥ २ ॥

६. चिंतावणी-

आदि भाग-

प्रथम बंदन गुरदेव कूँ, पुनि अनंत कोटि निज साध ।
 कहुँ एक चिंतावणी, थौ वाणी त्रिमल अगाध ॥ १ ॥
 बधे स्वाद रस भोग सैं, इंद्रियां तणै अरंथ ।
 उन जीवन कै चेतबै, करूँ चिंतावणि गरंथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

धरीयां दिक् कलि जाइ, सर्व ब्रंहा नांही कलै ।
 रामचरण रति ताहि, चौरासी का मैट ल ॥ १ ॥
 चौरासी का भार, भजन बिना छुटै नही ।
 तांतै होइ द्वंसीयार, एह सीख सत गुर कही ॥ २ ॥

७. मन खंडण-

आदि भाग-

अलख निरंजण बीनऊं, लागूँ सत गुर पाय ।
 मन खंडण की जुगति होय, सो मोय द्यौह बताय ॥ १ ॥
 तन मन पर असवार है, गुण इंद्री सब साथ ।
 करे सवादां बस भयौ, क्यूँ कर आवै हाथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

आतम कूँ नही व्याधि, व्याधी रोग मन मांनीऐ ।
 जिन ऐ तजी उपाधि, सुध स्वरूप ते जांणीऐ ॥ २ ॥

८. सुख समाध-

आदि भाग-

दोहा

सीस नवाऊं गुर चरण, पुनि बिनऊं सिध-साध ।
 निराकार की भगति दो, सो दो बुद्धि अगाध ॥ १ ॥

चौपाई

निराकार प्रणपात नित कीजै रसना । बिमल गाइ गुण जीजै ॥
 गुर रजब दादू परम देवा । नाम कबीर करै हरि सेवा ॥ २ ॥
 गोरख भरथरी गोपीचंदा । धू प्रहलाद सकल कूँ बंदा ॥
 पीपा धना सैन रैदासा । सोभा सोम सुनो हरिदासा ॥ ३ ॥
 सब कर कृपा देह जू ग्याना । कीजे सुख की कथा बखाना ॥
 मेरी सक्ति नही कछु असी । कही जाय.....त्यूँ तैसी ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग—

जब गुरु कृपा करी पट भागै । गृहु गुण कथित चतुर दिन लागै ॥
 कथा बिपुल उनमान सुं बरनी । जथा सगति खेम सो निरनी ॥ २०९ ॥
 भूल चूक दू घट बध आई । सुख को हेत लिख्यो सब भाई ॥
 गृह अरदास सुनो सुखदेवा । तुम गुण वार पार नही जेवा ॥ २१० ॥

६. नांव प्रताप—

आदि भाग—

महमा नांव प्रताप की, सुणै श्रवण चितलाइ ।
 राम-चरण रसना (?) तो क्रम सकल भड़ि जाइ ॥ १ ॥
 जिन जिन सुमरथा नाम कूँ, सो सत उतरथा पार ।
 राम-चरण जो बीसरथा, सो ही जम के लारि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

‘रामचरण’ भजि राम कूँ, ब्रह्म देस कूँ जाइ ।
 जहां जग जौराँ का मै नहीं, सुख मै रहै समाइ ॥ २ ॥
 ‘रामचरण’ कहै राम कौ, बडौ प्रताप जग मांहि ।
 अनंत कौटि जन ऊपरथा, भजै सभर मै नाहि ॥ ३ ॥

१० सुख-विलास (चतुर्थ प्रकरण)—

आदि भाग—

बावन अखिर को बिसतारा । सो सिखि सुखिम थूल अपारा ॥
 बेंद पुरान सासतर कहीऐ । सुमति साखि छंद जो लहीऐ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

टेक पतीव्रत बीनती, नांव तणूँ निरधार ।
 कुबधी कात्र न खेदता, कहूँ कपूत निस्सार ॥ १०८ ॥

११ रेखता ।

आदि भाग—

सदगुर सारसा और दीसें नहीं तीन ही लोक फरि देखि जोई ।
 भ्रम कपाट उघाडि दीपग धरथा मनकी मलता दूरि खोई ॥
 वेद न कतेब सुणि समझि आई नहीं सुभ अर असुभ की भूलि भारी ।

मिलत गुरदेव जगाइ चेतन कीया भूलि परिज्ञान की थाप भारी ॥
 राम की धाम हम हू रि कछा जाणता पिंड ब्रह्मंड का भेद पाया ।
 राम ही चरण गुर देव दयाल के चरण कूं परसंता सांच आया ॥ १ । ३ । ३ ।

अन्तिम भाग-

× × ×

कुवधि की खांनि जग सुबधि उपजै नहीं बिपति परपंच नहीं संच पाई ।
कांम अर क्रोध मद लौभ बौहो खोभता भ्रम कुं निकरम मै अवधि जाई ॥
आन की धार नां फिरै तन कारना बौध नासौ धनां हरि भुलाई ।
रांम ही चरण ए जगत अमार हैं सार इक रांम तू' सुमरि भाई ॥ १६ ॥

१२. किवत्त-

आदि भाग-

पतनी पीव पछाणिऐ कपति कौ व्रत धार्यौ ।
 नानां ध्रम उपांस हेति हरदा सूं डार्यौ ॥
 रही सबद अंगि लागि रांस बिनि आन भावै ।
 ज्यूं कवलां जल मधि अरणि की करणि सुहावै ॥
 भगति रमै यूं जगत मै तजे न सांची टेक ।
 रामचरण गुर ग्यान कौ जनकै अचल बमेक ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम नाम जपि लेह नेह जग छाडिउ परसारा ।
 बिक्रम क्रम सुं भावु त्रिषै गुण त्यागि बिकारा ॥
 सम दम सत संतोष दया उरि दिदु बिसवासा ।
 निंदावु निसप्रेह आस तजि रहो निरासा ॥
 बन बसती समि जाणि संक काटुं नहीं गिणिए ।
 औसी सूंज समाइ बेगि भौसागर तराए ॥
 काइर हुंवा न छूटसी, हरि भजि हौइ हुसियार ।
 रामचरण फिरि नां मिले, यों भौसर या वास ॥ ६ ॥

१३. राग चरचरी-

आदि भाग-

हारौ रे कोई हारौ रे, संसार करम सूं हारौ रे ॥

गुर कौ ग्यान हिरदै परि राखौ, रसनां रांम उचारौ रे ॥ टेक ॥
 मैं मेरी मैं मति कोई भूलौ, याहां नही कोई थारौ रे ॥ १ ॥
 काल कंठ जब आइ गहेगा, रहसी पञ्चौ पसारौ रे ।
 जम का दूत पकडि लेजासी, उनको मूं दौं कालौ रे ॥ २ ॥
 पाप ' र पुनि संग दौइ चालै, और न चालै लारौ रे ।
 रांमचरण भजि रांम सगेसी, निरधारां आधारौ रे ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

सार असार समझै नहीं, ऐसा मुति का हीण ।
 रांम नाम की निंदा गणै, करमां सूं लिबलीन ॥ १ ॥
 ब्रह्म सबद राकार है, माया रूप मंकार ।
 रांमचरण ऐ जुग लहै, निराकार आकार ॥ २ ॥

१४. फुटकर पद-फुटकर पद कई संग्रहों में मिलते हैं। अतः यहाँ देना अनावश्यक है।

[उदयपुर के रामद्वारों में संग्रहीत]

(६१) रामजन वाणी संग्रह-

अणभै वाणी । पद्य--संख्या:- दोहा १०१, चौपाई २४४, सोरठा ३५, चंद्रायणा १, पद्वरी ४८, गीतक १६, अरेल १३, मनहर २८, सर्वईया ४५, किवंत ४, निसाणी ४, चामर १, कुँडलिया ८, भंपाल ४, जौटक १, रेखना २६ ।

आदि भाग-

कवित्त

काम क्रोध भाव तेते सोधिये स्वरूप तेते
 पक्व है.....सेते चित चट्टाय ईये ।
 जेते पक्व है हरष हिय से तिनको होजे
 अपक्व कोई जोग क मिटाईये ॥
 जैसे व्याल काल रूप नाजुक नोला स्वरूप
 सोधिके सजीवनी सु सत्रु सूं घटाईये ।
 व्याल सम जग जाल ज्ञान मत्त मंत्र हाल
 भगवान बुधि वाल अभी सो चटाईये ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

पद

आरती अचल पुरस अविनासी । घट-घट व्यापक सकल प्रकासी ॥ टेर ॥
 प्रथम आरती मंदिर बूहारया । राम राम रट कर मनि कारया ॥
 दूसरी आरती दीपग जोया । हिरदै प्रेम चांदणां होया ॥
 तीसरी आरती कूँभ भराया । नाम कवल सूँ गगन चडाया ॥
 चोथी आरती चोक बीराजै । जाहां अनहद का बाजा बाजै ॥
 पाँचमी आरती पूरण कांमां । सुरति परसीया केवल रामां ॥
 सेवग स्वामी भया समांनां । राम ही राम और नही आनां ॥
 राम-चरण ऐसी आरती कीजै । परस अम्बर जुग जुग जीजै ॥

२. प्रतीत बोध-पद्य-संख्या ५५ ।

आदि भाग-

दोहा

सत गुर राम दयाल जन, घन आनंद सुखकार ।
 तिनकूँ बंदन रामजंन, करिहुँ नित निरधार ॥ १ ॥

चौपाई

भज रमतीत राम निरधारा । आनंद घन सुखकार अपारा ॥
 सब सरजे सब देह खपाई । सब सूँ अलपत रहे सदाई ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

जीता सोई जगत में, फिर न जनमै आइ ।
 रामजंन प्रतीत सूँ, रहै राम ल्यो लाइ ॥ ५५ ॥

३. तरपत बोध-पद्य संख्या १०० ।

आदि भाग-

दोहा

राम नाम को ध्यान धर, कर प्रहार मत आन ।
 रामजंन मन बाचका, वै जन तरपति जान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तरपत मन बच काइ, बिभौ भोग भावट नही ।

राम-चरन चित लाइ, रामजन औसी कही ॥ १०० ॥

४. बैराग बोध । पद्य-संख्या १५६ ।

आदि भाग-

कर बंदन गुरु रामजन, मन बच काय निधान ।

जाकी करपा भाव हूं, बैराग बोध परमान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

ज्ञान बिचारै रामजन, गुरु मुख तें सिध पाय ।

धरै सदा बैराग मन, राम राम लिवलाय ॥ १५८ ॥

राम नाम सूं लिव लगी, तजी बासना आन ।

रामजन यो भाषीयो, बैराग बोध प्रमान ॥ १५९ ॥

[रामद्वारा, उदयपुर]

(६२) राम सागर । रचियता-कबीर । आकार-३" × २'४" । लिपिकाल (या रचना काल) सं० १३४२ (?) यह उक्त आकारवाले, हरे रेशमी जिल्दवाले एक छोटे से गुटके में मिला है । कुल छोटे छोटे १० पत्रों में यह ग्रन्थ समाप्त होता है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ । २४ अक्षर हैं । ग्रंथ चौपाइयों तथा चौपइयों में हैं जिनकी कुल संख्या ८३ है । कबीर की यह एक नवीन रचना खोज में मिली है । अतः हम इसे यहाँ सारी उद्धृत कर देते हैं:-

नेमषार तीरथ (में) करि सनांना । रिषि ब्रिंद सोनक परधाना ॥

करि सनांन मिलि बैठे जाई । हरि पावन का करो उपाई ॥ १ ॥

रिष सब पूछे आपस मांही । उत्तर किनहू आवै नाही ॥

तही समै ताहां नारद आए । कर जोड़ि रिष सो मान बधाए ॥ २ ॥

बंदन करै बीनती ल्यावै । कहो मुनि हरि कूँ कैसें पावै ॥

सकल पाप कैसें विधि जाई । ए रिषजी हम कूँ समझाई ॥ ३ ॥

दान बिना तप साधां नांही । तीरथ हम कहू नही जांही ॥

जिग जोग साधन नहीं करै । अरु बिधि बिनि किए क्यूं उधरै ॥ ४ ॥

नान बरत हम करै न कोई । इंद्रयी निग्रह हम पै नही होई ॥

करां न कोई देव अराधन । ध्यान मुनि का करा न साधन ॥ ५ ॥

सुनां न सास्त्र पठां न बेद । हरि पावन कईए भेद ॥

भौ सागर तैं उतरै पारा । अरु सहजै पावै मोष दुवारा ॥ ६ ॥

करि हो क्रिपा नारद मुनि देवा । रिष सब करै तुमारी सेवा ।

नारद उवाच-

नारद कहै सुनो रिषराई । सति मानौं मैं कहूं सुनाई ॥ ७ ॥
 सिव के पास अैसी हम सुनी । सोही बांणी तुम पूछी मुनी ॥
 परवत मोरे है कवलास । तां ऊपर ईसुर को बास ॥ ८ ॥
 पूछै तांहां पारवती सती । तुम मन की बात कहो हो जती ॥
 तुम हो सकल देवन का देवा । सुर नर करै तुमारी सेवा ॥ ९ ॥
 बार बार मैं लागू पाई । तुम ध्यावो सो मोहि बताई ॥
 ब्रह्मादिक मुनि तुम कूं ध्यावै । जो मागे सोही सिधि पावै ॥ १० ॥
 परजा सकल अराधन करै । जाका काज सहज मैं सरै ॥
 देव बिस्व का तुम हो साषी । सो सेवग कू कहो तुम भाषी ॥ ११ ॥
 तुम कूं भजै मांगै सोइ पावै । तीन लोक तुमरा जस गावै ॥
 तुम जनम मरण सूं रहित हो स्वामी । रूप डिगंवर अर न्हकामी ॥ १२ ॥
 बसती तुम कूं सुहावै नांही । बास तुमारा जंगल मांही ॥
 जटा रपावो भभूत चटावो । कबहुक नाना रूप दिषावो ॥ १३ ॥
 कबहुक नाथ पुलंदर जोगी । कबहु बिलासी कबहु भांगी ॥
 भांग धतूरा आक आहारी । माया अलपति बोहो बिब जागी ॥ १४ ॥
 कबहु तुम बालक ब्रह्मचारी । कबहु मोहो सबकी नारी ॥
 करो प्रति पालख सिष्टि मवाई । कबहुक वसू प्रलै कराई ॥ १५ ॥
 भांजत घड़त बार नही होई । तुम उपरांत और नही कोई ॥
 अकथ कथा तेरी कही न जाई । मैं जांगूं तुम त्रिभुवन राइ ॥ १६ ॥
 तुम ध्यावो सो मोहि देवा । निस दिन करो कृण की सेवा ॥
 ऐ हम कूं इजरज अति भारी । कहो क्रिपाल मैं बंदी तुमारी ॥ १७ ॥
 दया करी मोहि भेद बतावो । मेरा मन में उपज्यौ भावौ ॥
 मैं सेवा करि मांग्या दान । मोकूँ कहीऐ तुमरो ध्यान ॥ १८ ॥

श्री महादेव उवाच-

पारवती सूं ईसुर बोल्या । अंतर गति का पड़दा खोल्या ॥
 वो गुपत कथा है अनत अपारा । जाको कोइक जानै सारा ॥ १९ ॥
 मैं ए कथा न काहू कही । गुपत कथ मेरी मन मैं रही ॥
 तुमकूं ऐ अब कथा सुनाऊँ । तूं निज सेवगता तैं सुच पाऊँ ॥ २० ॥

मनसा बाच्या प्यास तुमारै । तब कहबै का हेत हमारै ॥
 अधिकारी बिन कहीऐ नांही । बिन पूछ्यां रहीऐ मन मांही ॥ २१ ॥
 तुम मनसा बाचा सेवग मेरी । म्हमा काहा कहुं मैं तेरी ॥
 अति आतुर करि मांग्या दान । धन पारवती तेरा ग्यान ॥ २२ ॥
 सुण पारवती सतजुग की बात । सब कोई होता तस बिग्यात ॥
 ब्रह्मा बिसन अराधन करता । हरि बिन कथा आन नही धरता ॥ २३ ॥
 सब लोकन कै हिरदे हरिनाम । और धरम हरि बिना निहकाम ॥
 तीरथ बरत सहज मैं करता । हरि धरम की तपस्या (?) ॥ २४ ॥
 इंद्रथी निग्रह हरष न सोग । जिग न करै न साधे जोग ॥
 पाप न करता हरि हित दांना । तीरथ जाइ न करत सनांना ॥ २५ ॥
 और देव की पूजा न होती । बरण अवरण नहीं कोई श्रोती ॥
 भूत प्रेत नहीं सूँण असूँणा । जंत्र मंत्र नहीं कामण दूणा ॥ २६ ॥
 राम जना की सेवा करता । गुर गोविंद सूँ निस दिन डरता ।
 काम क्रोध नही लोभ' र मोहा । नां काटू सूँ करता द्रोहा ॥ २७ ॥
 आठूँ जाम बिमल जस गाता । परम लोक मैं प्रम पद पाता ।
 जुरा मरण का जांहां दुष नांही । सब कोइ जाता अब गति मांही ॥ २८ ॥
 सो गति देवन पावै कोई । जो गति आप भागवती जोई ।
 सो दुल्लभ निज भगति सुनाई । ताहि धरो उर मैं नितलाई ॥ २९ ॥
 तातैं सतजुग का मत लीजे ॥ पारवती ऐह सती सुनीजे ॥
 तूँ बल्लभ मेरै श्रुती परीया ॥ सो तोहि कहुं मोहि हरि दीया ॥ ३० ॥
 तुम हरिदैं धरो भगति बिसवासा ॥ ज्यूँ पावो अमरा बासा ॥
 साची बात कहुं बारंगा ॥ अति अघाध प्रलया परसंगा ॥ ३१ ॥
 साचा अखर दोइ सुण ऐही ॥ राम नाम तु सति करि लेही ॥
 मनसा बाचा ल्यौ हरि नाम ॥ आन मता तजिऐ बेकाम ॥ ३२ ॥
 ऐ उपदेस मैं साचा कहा ॥ भरम्या जगत नांव बिन ब्रह्मा ॥
 कोई कहै तुला चढ़ि दांन दुज दीजै ॥ कोइ कहै जिन्न बंदगी कीजै ॥ ३३ ॥
 कोइ कहै कासी मैं जई बसीऐ ॥ कोइ कहै गया पिंडही मरीऐ ॥
 कोइ कहै प्राग ब्रैणी परसीऐ ॥ अपणा पित्र तपत सब करीऐ ॥ ३४ ॥
 कोइ कहे नाना सासत्र सुनिऐ ॥ कोइ कहै बेद पुरांन ही भनीऐ ॥

कोइ कहै तप करीऐ काया ॥ कोइ कहै सब तजीऐ माया ॥ ३५ ॥
 कोइ कहै कुल ब्राह्मन की पूजा ॥ ऐ बड़ देव और नहीं दूजा ॥
 एक कहै न्यात ब्राह्मन की सेवा ॥ या बिन और नही कोई देवा ॥ ३६ ॥
 ऐ करम करै जम लोक सिधावै ॥ मोष परम पद कोइ न पावै ॥
 जे जे करै सोही पावै ॥ पाप'र पु'न जनम भुगतावै ॥ ३७ ॥
 दुष पावै सो पाप करमां ॥ सुष पावै सो उत्तम धरमां ॥
 ऐ धरम करम का जाण बिद्वारा ॥ पार ब्रह्म पद इन सूं न्यारा ॥ ३८ ॥
 या मै परम पद नही पावै ॥ ऐ चोरासी मांहिमां हि फिरावै ॥
 जब लग हरि हिरदै नही आवै ॥ तब लग मोष कहुं नही पावै ॥ ३९ ॥
 आननि होइ हरि सूं आराधै ॥ दूजै अंग सूं मन नही बांधै ॥
 राम बिना जीव मरम न जैहै ॥ राम बिना जीव दुःष ही पैहै ॥ ४० ॥
 राम बिना साधन सब भूठा ॥ राम बिना मन फिरै न अफूठा ॥
 राम बिना हिरदो सुध नांही ॥ इस बिधि कहत बेद कै मांही ॥ ४१ ॥
 बिध निषेद का बेद पूरांना ॥ हरि सुमरन हरि सेवन जाना ॥
 ऐक नांव निज सति करि लीया ॥ सुकत जिन सहज सब कीया ॥ ४२ ॥
 जाकै हिरदै है हरि नाम ॥ ताका सहज सरै सब काम ॥
 तां कारण पारवती तुम सुनौ ॥ हरि कौ नांव रेणि दिन मनौ ॥ ४३ ॥
 सुण देवी तत्त बवेका ॥ राम नाम सति साचा ऐका ॥
 पारवती कहै सुनौ सिव देवा ॥ सब ही क्यूं न करै हरि सेवा ॥ ४४ ॥
 नांना धरम जग काहै ध्यावै ॥ सब तजि हरि सरणै किन आवै ॥
 तत्त कछा तुम एह विचारा ॥ तौ काहै भरम्यो यौ संसारा ॥ ४५ ॥
 अरु बोहो बिधि सासतर क्यूं हूवा ॥ अर क्यूं बोल्या जूवा जूवा ॥
 एह जग असै क्यूं भमाया ॥ सब सासतर क्यूं एक न भाया ॥ ४६ ॥
 ऐ सांसा मेरे उपज्या भारी ॥ या कथा सुनावौ इसुर तपधारी ॥

सिव उवाच-

सुन पारवती कथा सुनाऊं ॥ सांसा तेरा दूर गमाऊं ॥ ४७ ॥
 रिषन देव हम मिलि कीया बिचारा ॥ हमहि न मानै ऐ संसारा ॥
 करि हौं उपाव कोई असै एक ॥ आपही पूजै लोक अनेक ॥ ४८ ॥
 लोक अराध करै हरि कैरा ॥ चोरासी मै नेकन फेरा ॥

हमकूँ कोइ जग मानै नाहीं । हम देव-रिष का का जग मांहि ॥ ४९ ॥
 रिष देव हम मिलि करी हरि सेवा । तब परसण भो नाराइण देवा ॥
 मांगों देव धूँ तुम कूँ सही । यूँ नाराइण बाचा कही ॥ ५० ॥
 मन की बात देवता कही । जग मैं हमारी पूजा नहीं ॥
 सो पूजा अप करावो नाथा । दया करो देवो सिर हाथा ॥ ५१ ॥
 तब ही बोल्या देव मुरारी । तुम कूँ पूजू हूँ अवतारी ॥
 राम किसन ओतार ज होई । ताको भेद लहै जन कोई ॥ ५२ ॥
 जब ले ओतार जग बंदी करी । तब देव रिष कूँ पूजै हरि ॥
 ता पीछैं पूजे सब कोई । तातैं काहू मुक्ति नहीं होई ॥ ५३ ॥
 देवन कूँ लागा संसारा । साचा हरि सूँ रटत नियारा ॥
 सुन पारवती यूँ भरम उपाया । तुम पूछथा मैं कह सुनाया ॥ ५४ ॥
 ऐक सूनों दूजा परसंगा । जातैं उपजै भरम के चंगा ॥
 मोपैं हरिजी मांग्या दान । सिव तुम करो अनत मत आन ॥ ५५ ॥
 मैं तब कही कहियौ यूँ राम । मो सेवग कूँ फरमावो काम ॥
 तब हरि कह्यो सुनौ सिवराया । प्रथवी धसै मोषूँ भरमाया ॥ ५६ ॥
 मोहि कोइ न जाणै ऐसी करो । तुम जग मांहि जाई तन धरो ॥
 झूठा सासत्र करो अपारा । अर मोकूँ भूलै सब संसारा ॥ ५७ ॥
 भेद करो बोहौ भरम दिखावो । नाना बिध के धरम चलावो ॥
 मो ताई कोइ सकै नहीं आई । ऐसी करो आप सिवराई ॥ ५८ ॥
 ऐह दान मांग्या हरि आप । तब मेरा मन मैं भयौ संताप ॥
 मैं जब सब दुनिया भरमाई । आन देव सूँ दीया लगाई ॥ ५९ ॥
 लोभ लाभ दुनिया सब फरी । देवत पूज जाचणा करी ॥
 ऐसे सब दुनिया भरमाई । हरि पूरण पद दीऐ भूलाई ॥ ६० ॥
 तब इक राजा मोसूँ कही । जाकै राम बिराजै मही ॥
 माहा भगत जगत सूँ न्यारो । राम भजन ताकै अधिकारो ॥ ६१ ॥
 तब वै राजा ऐसी कही । ब्रह्महत्या सिव तोकूँ भई ॥
 पग पग ऊपर जानू सही । यां मैं झूठ तणक भां नहीं ॥ ६२ ॥
 तेरो कछो कूँण नहीं मानै । तै हरि धरम कीयौ क्यूँ छानै ॥
 करता भेटि अरु आन बतावै । जम घर जाइ नरंक गति पावै ॥ ६३ ॥
 तब मेरे मन ऐसी आई । अब मैं जाइ लगू हरि पाई ॥

तुम हरिजी मीकूँ भरमायौ । धन राजा जिन ग्यांन बतायौ ॥ ६४ ॥
 मैं जब करी हरि सूँ अरदासी । मोकूँ पड़ी जमां की पासी ॥
 हत्या ब्रह्म संसार मोहि लागी । हरि धरम हम भेट्यौ अभागी ॥ ६५ ॥
 बिश्व सगली मैं भरमाई । सो ऐ कर्म क्यूँ छूटै हरिराई ॥
 ऐसो जप तप धरम बतावौ । इन कर्मां सूँ मोहि छूड़ावौ ॥ ६६ ॥
 माया उपर बल तुमरी स्वांमी । मैं नहीं जांणी अंतरजामी ॥
 मोहि वाचा छलीयौ देव मुरारी । मैं बूझो बोहो कर्म उपारी ॥ ६७ ॥
 उधरब का कहो कोइ जाप । ज्यूँ कटि है मेरा सब पाप ॥
 अैसे ज्वाब मैं हरिसू कहीया । तब हरि मोसूँ परमण भईया ॥ ६८ ॥
 मोकूँ मन्त्र दीयो तत ऐक । जि काटै मेरा पाप अनेक ॥
 मन में सुमरण तब रह सोई । तातैं कर्म लगै नही कोई ॥ ६९ ॥
 सहंसर नांम दीयौ हरि नांम । याकूँ भजो तुम आठूँ जाम ॥
 तब हम कछौ ऐह न्हिचै आई । कदाचि भेद होइ ता मांही ॥ ७० ॥
 तबै बिसन परमात्म देवा । मोकूँ फेरि बतायौ भेवा ॥
 सिव तुम राम मंत्र कूँ ध्यावौ । अंतर गति मैं प्रीत बधावौ ॥ ७१ ॥
 तब एह भेद कछौ हरि आप । मरै भिटै सकल संताप ॥
 जब मैं बोहोत बीनती करी । तुम विन कूँ उधारैं हरी ॥ ७२ ॥
 राम मंत्र किरपा करि दीन्हौ । सो मैं बोहोत प्रीत करि लीन्हौ ॥
 ता मंतर कूँ आतुर ध्यावै । जामण माहि कभू नही आवै ॥ ७३ ॥
 हम ध्यावै सो ऐह निज भेव । तूँभी कर पारवती सेव ॥
 अंतर जामी अंतर ध्यावौ । सहजै मोष परम पद पावौ ॥ ७४ ॥
 सहंसर नांम मैं भेद विचार । राम नांम सब उपर सारा ॥
 एक नांम तै भए अनेक । राम सुमर ऐ साचो ऐक ॥ ७५ ॥
 राम रमे रम रमी ऐ राम । सोही सारैगा तेरा काम ॥
 सिव ऐ पारवती सूँ कही । नारद मुनि मन जाणी सही ॥ ७६ ॥
 साची करणी नारद करी । सहज सहज आयै बिस्तरी ॥
 नारद रिष कूँ कही सुनाई । सोनक आदि दीए समझाई ॥ ७७ ॥
 सत गुर रामानंद परताप । अंतर हरिजी प्रगटै आप ॥
 कहै कबीर ऐ भेद अपारा । जो सुमरै सो उतरै पारा ॥ ७८ ॥
 सत गुर रामानंद परसाध । अमल भया मन मिट्या बिबाद ॥

कहै कबीर ऐ भेद अघाध । इनमै समझै बिरला साधि ॥ ७६ ॥
 पूरण ज्ञान कछौ निज सार । हरि हरि की बाणी निरधार ॥
 सुणै 'रु समझै सीखै सोई । ताकूँ अखै अमर गति होई ॥ ८० ॥
 सूरज उदे ज्यूं तमर नसाई । भरम करम यूँ जाई विलाई ॥
 पारवती सूँ भाग्यौ ईश्वर । मनसा बाचा बिसवा बीस ॥ ८१ ॥
 सोही नारद सोनक समझाई । सबै रिषन का भरम गुमाई ॥
 निरमै भया रांम ल्यौ लावै । आणंद मंगल प्रेम बधावे ॥ ८२ ॥
 ऐहि ग्रंथ सुनि भरम निवारै । अपणा मन हरि चरणों धारै ॥
 हरि तत प्रेम बध्यौ मन धीर । ग्यानी का गुर कहै कबीर ॥ ८३ ॥
 ॥ इति श्री ग्रन्थ रामसागर संपूर्ण ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७३) रास पंचाध्यायी । रचयिता-नन्ददास । इसकी कई प्रतियाँ देखने में आईं, जिनमें सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७६१ की लिपिकृत है। उसी का विवरण यहाँ दिया जाता है।

आकार-८"८" × ६" पत्र-संख्या ११ । पद्य-संख्या २१४ । इन छंदों का क्रम अध्यायों के अनुसार विभाजित नहीं है पर रचना के पाँचों अध्याय पूर्ण हैं।

प्रथम अध्याय— में कुल १०४ छंद हैं। उदयनारायण तिवारी द्वारा सम्पादित (तरुण भारत ग्रंथावली-सं० ३६) रास पंचाध्यायी (और भँवर गीत-नन्ददास कृत) के प्रथम अध्याय में १३२ छंद हैं। इस ग्रंथ में उक्त प्रकाशित रचना के निम्नांकित ३१ छंद नहीं हैं:-

१२, १४, १७, १८, २१, ३६, ३७, ४४, ४५, ५८, ५९, ७०, ७२, ७३, ७४, ८८, ८९, ९०, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११२, ११३, १२१, १२२, और १२३; । और इस ग्रंथ के निम्नलिखित ३ छंद उक्त प्रकाशित रचना में नहीं हैं:-

नगरि कौ धरम न रख्यो पलकति तन चल्यो ठौरते ।

खग मृग गोबछ पछ कछ ते रहे कौ रते ॥ ८४ ॥

सुनि गोपनि के प्रेम बचन आंच सी लगी तब हि जिय ।

पथर चल्पो नव नेह मीत नव नीत सहस हिय ॥ ८५ ॥

उजल मृदुल बालुका सरस अति सुमग सुहायौ ॥

जमना जू निज करन रंग करि अयन बनायो ॥ ८५ ॥

द्वितीय अध्याय— १०५ से आरंभ होकर १४१ पर समाप्त होता है। इस प्रकार द्वितीय अध्याय में ३७ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ५० छंद हैं। अतः इसमें निम्नांकित १३ छंद कम हैं:-

१३, १४, १६, २३, २४, २५, २६, २७, ३२, ४०, ४६, ४८ और ४९।

तृतीय अध्याय— १४२ से आरंभ होकर १५५ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल १४ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २२ छंद हैं। निम्नांकित १२ छंद इसमें (ग्रंथ में) नहीं हैं:-

२, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१ और २२।

इस ग्रंथ के निम्नलिखित छंद प्रकाशित रचना में नहीं हैं:-

बुधि जन मन हरनी बानी बिन जरत सबै तिय ।

अधर सुधा सब सहित तन कन्या बहु ज्या बहु पिय ॥ १५२ ॥

अरू पिय तुम्हरी कथा अमृत सब ताप सिगवहि ।

अमरामृत कौ तुष्ट करै ब्रह्मादिक गावहि ॥ १५३ ॥

अपेरि जिन कर तुम्हरी मोहन मुख अवलो क्यौ पिय ॥

तन की ताप बुझावो रसिक संबिद कोबिद हिय ॥ १५४ ॥

जो कैसे हुं साज समै सुन्दर मुष देखौ ॥

तौ इह बिधना कूर करि नैन लौ मेखौ ॥ १५५ ॥

चतुर्थ अध्याय— १५६ से आरंभ होकर १७३ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में १८ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २७ छंद हैं, अतः निम्नांकित ९ छंद अधिक हैं:-

६, ६, १०, ११, १२, १३, १७, १८ और २७।

पंचम अध्याय— १७४ से आरंभ होकर २१४ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल ४१ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ८२ छंद हैं। इसमें निम्नांकित ४१ छंद नहीं हैं:-

४, ६, ७, ८, ९, १०, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ७४, ७६ और ७९ ।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण प्रति में:-

१ अध्याय में १०४ छंद हैं, प्रकाशित रचना में १३२ छंद हैं-इसलिये ३१ छंद कम हैं और ३ अधिक

२ " ३७ " " " " ५० " " " १३ " " ×

३ " १४ " " " " २२ " " " १२ " " ४ "

४ " १८ " " " " २७ " " " ९ " " ×

५ " ४१ " " " " ८२ " " " ४१ " " ×

इस प्रति में २१४ छंद हैं प्रकाशित रचना में ३१३ । इस प्रति में १०६ । कम हैं और ७ अधिक हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(६४) राहत (रहत) भजन निर्वाह । रचयिता-जगन्नाथ ।

आकार-४'५" × ३'१" । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या २६ ।

आदि भाग-

दोहा

जत राखें जगन्नाथ जन, नर-नारी को होइ ।

सो माया संसार मैं, स्वरग न संसय कोइ ॥ १ ॥

क्यूँहूँ उपजै काम बसि, जत का करै जतन !

जगन्नाथ जगदीस जग्य, रहत अमोल रतन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सहिजादै साईं सुमरि, चेरी भजि हरि चरण ।

जगन्नाथ ते जुगल....., मेटे जांमण मरण ॥ २८ ॥

उद्धरैं उद्धर सही सौ, सुमिरि सने ही राम ।

जगन्नाथ जगन्नाथ मैं, निहचल ते निहकाम ॥ २९ ॥

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(६५) वाणी संग्रह । आकार-६'२" × ६" । लिपिकाल "संवत् १८२५
बृहस्पतिवार, शुक्ल पक्ष, पोष सुदी १२" । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

क्र०सं० रचयिता- रचना	पृष्ठ
१. दादूवाणी	१-१२६
२. कबीर-साखी, पद, रमैणी	१२६-१८१
३. नामदेव ,,	१८१-१९४
४. गैदास ,,	१९४-२०४
५. हरदास ,,	२०४-२२०
६. गरीबदास, अनमै प्रबोध	२२०-२३५
७. रामानंद पद	२३५
८. सुखानंद ,,	२३५
९. आसानंद ,,	२३६
१०. कृष्णानंद ,,	२३६
११. धना ,,	२३७
१२. सेना ,,	२३७
१३. पीपा ,, साखी	२३७-२४०
१४. सोभ्ना ,,	२४०-२४२
१५. परसा ,, साखी	२४२-२४३
१६. सधना ,,	२४३-२४४
१७. कमल ,,	२४४
१८. रांणां पद	२४४
१९. छीतभ ,,	२४४-२४५
२०. बहबल ,,	२४५-२४६
२१. काजी महमूंद ,,	२४६-२४८
२२. सेख बहावदी ,,	२४८-२४९
२३. तिलोचन ,,	२४९
२४. भवन ,,	२४९-२५०
२५. अंगद ,,	२५०
२६. मुकुंद भारथी ,,	२५०

२७. नापा	„	२५०-२५१
२८. बिद्यादास	„	२५१
२९. रंगा	„	२५२
३०. सांव्रलिया	„	२५२
३१. देश्रम	„	२५२
३२. बीसा	„	२५२
३३. मतिसुंदर	„	२५२
३४. सोम	„	२५२-२५३
३५. नरसी	„	२५३
३६. कीता	„	२५३
३७. कर्मचंद	„	२५३-२५४
३८. माधोजगनाथी	„	२५४-२५५
३९. परमानंद	„	२५५-२५८
४०. सूरदास	„	२५८-२६५
४१. सूर पच्चीसी ग्रन्थ-पद		२६५-२७२
४२. कान्हा	पद	२७२-२७६
४३. बषना बांगी, साखी		२७६-३१४
४४. गोपाल	पद	३१५-३३०
४५. टीला	„	३३०-३३५
४६. जगजीवनदास	„	३३५-३३८
४७. नानक	„	३३८-३४२
४८. गोरषनाथ	पद	३४२-३६१
४९. चरपहनाथ	शब्दी	३६१-३६४
५०. बाल गुन्हाई	„	३६४
५१. सिध गबरी	„	३६४
५२. देवल	„	३६४
५३. दत	,	३६४
५४. गोपीचंद	„	३६५-३६६
५५. जालंध्री पाव	„	३६६
५६. बालनाथ	„	३६६

५७. धूर्धलीमल	,,	३६६-३६७
५८. चौरंगनाथ	,,	३६७
५९. सिध घोडाचोली,		३६७-३६८
६०. सिध हरवाली	,,	३६८
६१. भीडक्री पाव	,,	३६८
६२. चुणकरनाथ	,,	३६८
६३. अजैपाल	,,	३६८
६४. पारबती	,,	३६८
६५. महादेव	,,	३६९
६६. हणवत	,,	३६९-३७०
६७. सती कण्हेरी	,,	३७०
६८. पृथ्वीनाथ	,,	३७०
६९. ग्रन्थ साध प्रख्या		३७०-३७३
७०. मोहनदास पद		३७३-३८०
७१. जैमल साखी		३८०-३८७
७२. दूजसदास पद		३८७-३८८
७३. चैन साखी		३८८-३९१
७४. साधू पद		३९१
७५. जगा	,,	३९१
७६. केवलदास कड़वा		३९१-३९२
७७. हरिस्यंघ शब्द		३९२
७८. श्रबंगी शब्द		३९२-४३७
७९. सुन्दरदास-ज्ञानसमुद्र		४३७-४५०
८०. छीतरदास-सवैया		४५०-४५३

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(६६) विचारमाला । रचयिता- नरोत्तमपुरी । आकार-८" x १०" ।

पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ४२ । रचनाकाल-संवत् १७२६ ।

आदि भाग-

दोहा

नमो नमो श्री रामजू , सतचित आनंद रूप ।

जिन जान्यो जग स्वप्नवत, नासे भ्रम तम कूप ॥

राम भया सत गुरु दया, साधु संग जब होइ ।
तब प्रांनी जाँनै कछु, रखो विषे रस भोइ ॥

ग्रंथकार परिचय-

पुरी नरोत्तम मित्र वर, रखो अतीत भगवान ।
वरनी मालविचार मै, ताकै कहै प्रमान ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

स्वप्न राग भयो रंक, प्रांन तजे तहां नु धाव से ।
जागे बह पर जंक, कहां विस्मय कहां हर्ष पुनि ॥

दोहा

आस्तिक नास्तिक ना कुछ, नहि जहां एक रु होय ।
लघु दीर्घ नहि गुन अगुन, न चेत्स्वरूप मय सोय ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(६७) विवेक चिन्तामणि । गुटका विविध संग्रह (२६।२१) में संग्रहीत । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या ३१ । पद्य-संख्या- ३६ ।

आदि भाग-

आप निरंजण है अविनासी । जिन या बट्ट बिध सिष्ट प्रकासी ॥
अब तू पकड़ उसीका सरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

जूदा कोई रहण न पावै । होय अमर ज्यू ब्रह्म समावै ॥
सुंदर ओर कहूं न उपरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ ३६ ॥

(६८) बीस हरमाण जिनस्तवन । रचयिता-नयविजय । आकार- ६'२" x ४" । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या १२१ । इसमें निम्नलिखित जिन-स्तवन हैं:-

क्र० स०	स्तवन	पद्य
१.	श्री मंधर जिन स्तवन	७
२.	भुग मंधर ,, ,,	६
३.	बाहु ,, ,,	५

४. सुबाहु जिन स्तवन	५
५. जात स्वामी जिन भास	६
६. सुबाहु „ „	७
७. रिष भासन „ „	७
८. अनंतवीर्य स्तवन	६
९. सुरप्रत जिन स्तवन	५
१०. विशाल स्वामी जिन भास	५
११. अनंतवीर्य जिन स्तवन	६
१२. चंद्रानन „ „	७
१३. चंद्रबाहु „ „	७
१४. भुजंग „ „	६
१५. ईश्वर „ „	५
१६. नेमिप्रत „ „	५
१७. महाजैन „ „	६
१८. देव जस स्वामी „ „	७
१९. „ „ , „ „	७
२०. अजितवीर्य „ भास	६

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) वैराग्य शतक । रचयिता--मुनि गुणचंद । आकार-
६'४'' x ४'८'' । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या १३३ । रचना काल-संवत् १८७०,
आषाढ़ सुदि २ बुधवार । इसमें वैराग्य शतक की भाषा में टीका की गई है । भाषा-
राजस्थानी । इसमें कुल ५ अध्याय हैं । एक अध्याय में २६, २ अध्याय में २५,
३ अध्याय में २१, ४ अध्याय में २२ और ५ अध्याय में १६ पद्य हैं ।

आदि भाग-

श्री आदीश्वर नित नमुं, बांझित सुख दातार ।

मंगल कारक इण युगें, धरम तणा करतार ॥ १ ॥

श्री सद गुरु प्रणमीं करी, धर्म तणो करि राग ।

भाषा करि पंच ढालियौ, कहूं शतक वैराग ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

इहां भाषी वैराग्य नी, पंचमी ढाल उदार ।
 वैराग्य शतक अनुसार थी, कहियो ए अधिकार ॥ १६ ॥
 गुणचंद मुनि कहै प्राणियां, धारो धर्म सनेह ।
 प्रभूचंद ने आप्रहे, रचनो कीधी एह ॥ १७ ॥
 संवत नभ मुनी वसु भही (१८७०), सुदि आसाढ उदार ।
 द्वितिया तिथि बुध वासरें, वाणारसी मभार ॥ १८ ॥
 भणसी गुणसी एहने, जैन धर्म सूं राग ।
 दिन दिन अधिको तेहने, ऊपजसी वैराग ॥ १९ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) संग्रह । आकार-८"८" x ६" । लिपिकाल-‘संवत् १७६२ वर्षे शाके १६५७ मिति भाद्रवा विद् ७ बुधवारेण लिखितं ब्राह्मण पोहकरणा विसालधा लालचंद का आत्म पठनार्थम् ।’ यह प्रति संवत् १७३५ की प्रतिलिपि है । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

१. भागवत दशम स्कन्ध भाषा । रचयिता-नन्ददास ।
२. रास पंचाध्यायी । रचयिता-नन्ददास ।
३. विरह मंजरी । रचयिता-नन्ददास । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १६०:-

आदि भाग-

दोहरा

परम प्रेम उखलनइ कुं, बढ्यौ छु तन मन मैंन ।
 ब्रजबाला बिरहन भई, कहति चंद सौं बैन ॥ १ ॥
 अहो चंदां रस-कंद तुम, जातु आहि उहिं देस ।
 द्वारामति नंद-नंद सौं, कहियो बलि संदेस ॥ २ ॥

चौपई

चले चले तुम जइयो जहाँ । बैठै हौहिं सांवरे तहाँ ॥
 निधरक कहियो जिय जिनि डरौ । हो हरि ! अब ब्रज-अवनि फरौ ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरा

अवर माँति ब्रज कौं बिरह, बनै न काइ नंद ॥

जिनकौ मित्र बिचित्र हरि, पूरन परमानंद ॥ १६० ॥

४. एकादश भागवत की कथा । रचयिता-संतदास ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(७१) सभाय । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'५" × ४'३" ।

पत्र-संख्या ५ । विषय-जैन-धर्म सम्बन्धी ८ स्वाध्याय ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७२) सत पुरुषां का गावा का सबद । रचयिता (सग्रह कर्ता)-
तुरसीदास । पत्र-संख्या ४ । पत्र-संख्या ५४ ।

आदि भाग-

राग गौरी

मन रे, ये तेरा उनमानां—

हरि रस छांड बिषै रस मारि, तो भी माया उलकानां ॥ १ ॥

श्रवण दवारै राग आहारी, नैनां रूप लुभानां ॥

सम रस इंद्री बिषै बिचारै, क्यूं प्रगट्या क्यूं छानां ॥ २ ॥

नाना गंध नासा कर भावै, षटरस रस ना खानां ॥

राजस कै छक छक्यौ डोलै, जैसे फरत दिवानां ॥ ३ ॥

श्रवण तुचा नै नासक रसना, पंच बिषै लपटानां ॥

मिनषां जनम पायुं के भूंदू, हरि की भगति भुलानां ॥ ४ ॥

चित कपटी कुबधी अर लोभी, अपणां गणै न आनां ॥

चंचल चपल चुगल बौहो रंगी, आप मांहि बंधानां ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

आज स्याम देखे दधि पीवत है, सरररर । आज स्याम...टेर

कर सूं कर पकरी मोहन नै, अरी चुरी मोरी गई करररर ॥ १ ॥

नंद महर के भक्त भेलन में, मोती बिखरे खररररर कदेह ।

जो सिख मनसा बाचा मिलै, तन मन अर पर लेह ॥ २ ॥

× × ×
 बिष मन दीना वृ जरजरी, बहै उंडी अति धार ।
 ऐक मना तर नीसरथा, दूजा हूबण हार ॥ ३ ॥
 अगम देस अमरापुरी, जहाँ हरिजन का बास ।
 तहाँ कबीर (?) घर कीया, मटी मरण की आस ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७३) सतसार । रचयिता-मुरलीदास । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या-

७४ ।

आदि भाग-

स्तुति

प्रथम स्तुति गुर राम कूं, जासू सब परकास ।
 भूत भव कि व्रतमांन सब, तन को मूरलीदास ॥ १ ॥

दुहा

कहूं ग्रन्थ इक सार जू, सुबज्यौ होइ प्रसत्त ।
 मुरली भजीए राम कूं, परिहरि सब दुरमत्त ॥ २ ॥

चौपाई

प्रथम सत सोही राम उचारै । दूजो सत सांच उरि धारै ॥
 तीजो सत सौ बाटिर खाई । सौ प्रसती प्रम पद पाई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

प्रसत अर ग्रह चार, तीजो ग्रिहचाड़ी सही ।
 एक प्रसत... सार, पाखंड प्रभु मानै तहीं ॥ ३६ ॥
 ग्रिहसत होइ भव पार, ग्रिहचाड़ी अधबिचि रहै ।
 ग्रिहचारी भौ पार, पैली सुख प्रापति नही ॥ ३७ ॥

[रामद्वारा, धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(७४) सनेह लीला । रचयिता-मोहनदास । इसकी एक प्रति का विवरण भाग एक १ (१५३) में दिया गया है जिसमें रचयिता का नाम 'रसिकराय' निम्नलिखित दोहे के आधार पर दिया गया है:-

जो गावै सीखै सुणे, मन कम वचन सहेत ।
 रसिकराय पूरण कृपा, मन वाञ्छित फल देत ॥ १२० ॥

उक्त दोहे में कवि ने 'रसिकराय' से श्रीकृष्ण से अर्थ लिखा है, जो अर्थ करने से स्पष्ट हो जाता है। परन्तु, श्रीमेनारिया ने रचयिता से ही उसका अर्थ ले लिया है जो अशुद्ध है। मन वांछित फल देने वाला 'रसिकराय' है। अतः 'रसिकराय' ग्रंथ कर्त्ता नहीं हो सकता। हमें इसकी ये दो प्रतियां मिली हैं :—

१. आकार- $7\frac{1}{2}'' \times 6\frac{1}{2}''$ । पत्र-संख्या १० । पद्य-संख्या १३० । इसमें भी उपर्युक्त दोहा है। परन्तु उसकी क्रम संख्या १२० न होकर १२७ है। प्रति बहुत जीर्ण है।

[अन्ताणी संग्रह]

२. आकार- $11'' \times 5\frac{1}{2}''$ । पत्र १३ । पद्य-संख्या १२५ । लिपिकाल संवत्-१६३१ जेष्ठ कृष्ण १५ भृगुवार । लिपिकार-रतनदास । इसमें रचयिता का नाम मोहनदास दिया हुआ है। इसमें भी प्रथम भागवाला दोहा है। इन दोनों प्रतियों का अन्तिम भाग इस प्रकार है:-

नासत सकल क्लेश पुनि (कों १), सुनत बटत (अरु उपजत १) मन मोद ।

युगल (जुगल १) चरन मकरंद मन, पावत परम विनोद । (१) १२६ । (२) १२४ ॥

प्रति (१) भमर गीत कौंसो पढ़ें, सुनै सकल चितलाय ।

इश्रया मनि की पूर्वै, श्री राम कृष्ण सहाय ॥ १३० ॥

प्रति (२) श्री मुकंद मन मधुप जहँ, सकल संत अनुराग ।

जसुधा प्रेम प्रवाह में, परे रहत बडभाग ॥ १२५ ॥

[ब्रजलाल वैरागी, भींडर]

(७५) सन्तदास वाणी संग्रह । इनकी रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार है:-

प्रति- १. आकार- $5\frac{1}{2}'' \times 3\frac{1}{2}''$ । लिपिकाल-संवत् १८७६ । इसमें सन्तदास की अणभै वाणी के १० अंग, ५६५ साखी; ४ रेखता और २ पद हैं । इसके अतिरिक्त इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

१. रामचरणजी की अणभै बाणी, अनभौ-विलास, सुखविलास, ग्रन्थ नांव प्रताप, शब्द प्रकाश, चितावणी, प्रथम रेखता, किवत और राग चरचरी ।

२. परमहंस सूरतरामजी की वाणी (साखी), कुण्डलियाँ, रेखता, सवैया. भूलणा, किवत (विभिन्न अंगों में), कका बत्तीसी, चितावण बोध, पदराग चरचरी, चंद्रइणा

३. साधां दूल्हरामजी का सबद ।
४. साधां रतनदासजी का प्रसंगी दोहा १६६
५. सरबंगसार का फुटकर सबद ७३६, -इसीमें नवधा भक्ति, प्रेम लक्षण निरूपण, साखीदास की चौपाई, समय सार नाटिकां का किवृत, अठारा नांतां कौ ब्यौरौ, मुरलीदास कृत ग्रंथ सतसार, सूर, मीरां और कबीर के महत्त्वपूर्ण पद हैं ।
६. प्रहलाद चरित्र—जनगोपाल
७. मोहमरद की कथा—जगन्नाथ, तुलसीदास का शिष्य । संवत् १७७६ कार्तिक विद् १२ सोमवार ।
८. हरिचंद सत—ध्यानदास । इसका लेखन काल इस प्रकार है:-

उदध दौत करि लीजिये, लेखन भार अठार ।

ध्यानदास वसुधा लिखे, भगवंत भगति अपार ॥

॥ संवत् १८२७ ॥

९. प्रसणसिणगार—सेवादास कृत, गाजी गिरधरदास के शिष्य ।

१०. एकादस की ध्याई

११. कबीर की साखी ।

प्रति-२. आकार-६.५" × ४.५" । पत्र-संख्या-२१८ । इसमें भी निम्नलिखित रचनाएँ संग्रहीत हैं:-

१. संतदास की अणमै बाणी । पत्र-संख्या १४ । पद्य-संख्या १२ ।

२. रामचरण की अणमै बाणी, गुर म्हमा ग्रन्थ, नांवप्रताप, सबद प्रकास, चिंतावणी, मनखंडण आदि ।

३. मुरलीराम की बाणी

४. संग्रामदास की बाणी

प्रति- ३ । पत्र-संख्या ४४ ।

(१) अणमैबाणी के अंगों की विस्तृत सूचि इस प्रकार है:-

(१) १.	गुरुदेव कौ अंग पद्य १ से	६६
२.	गुरु सप्रथाइ कौ ,, ,, ७० ,,	७१
३.	सुमरण ,, ,, ,, ७२ ,,	१३६
४.	नांव निरणां ,, ,, ,, १४० ,,	१६०
५.	जीव् ,, ,, ,, १६१ ,,	१६५

६.	नांव महमां	,, ,,	१६६ ,,	१६२
७.	जीव	,, ,,	१६३ ,,	२०१
(२) ८.	साध-	,, ,,	१ ,,	५२
९.	,, महमां	,, ,,	५३ ,,	५५
१०.	,, पारख	,, ,,	५६ ,,	६०
११.	,, परमाधी	,, ,,	६१ ,,	६७
(३) १२.	उपदेस-	,, ,,	१ ,,	५४
(४) १३.	चिंतावणी	,, ,,	१ ,,	१२०
(५) १४.	टेक-	,, ,,	१ ,,	१८
(६) १५.	साध संगति	,, ,,	१ ,,	१६
(७) १६.	भगति द्रोही	,, ,,	१ ,,	८
(८) १७.	जिग्यासी	,, ,,	१ ,,	६
(९) १८.	?	,, ,,	१ ,,	१०

(२) रेखता-४

(३) स्तुति के पद २

आदि भाग-

अणभै पद परकासिके, दाइक सत गुर राम ।
 अनंत कौटि जन साहि की, ताहि करूं परनाम ॥ १ ॥
 अंग ॥ सइ गुर का ऐकौ सबद, मन कोई लेवै मानि ।
 तो सहज होत है संतदास, मुसकलि सूं आसानि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सीस दीयां सब को कहै, भलां भलां जग माहि ।
 राम भजन बिनि संतदास, सदगति पहुँचै नाहि ॥ ७ ॥
 राम नाम का मोरछा, सत गुर दिया बताइ ।
 अब खेत न छोड़ै संतदास, जौ तगा-तगा होइ जाइ ॥ ८ ॥ अंग १० । साखी ५६३ ॥

ग्रन्थकार का विशेष परिचय—

छंद पद्धती

नम्र दांतडै भये संतदास । राम नाम उर दृढ़ उपास ॥
 निस दिन रहै राम तज आस । रंकार छाप सोभंत जास ॥

तज भरम कम आन उपास । रह जल कैवल्य जूँ राग उदास ।
अणभै मुख उचारत बानी । सुनत नर लहे सुख खानी ॥ १ ॥

छंद शिखरण

सिष्य तास कपाराम है, सो भये मुक्ति-धाम है ।
रतै रैन-दिन राम है, न और कोई काम है ॥ २ ॥

×

×

×

छंद नराज

उन सिष्य भान जूँ उदोत जग मानिये ।
द्वितीय ब्रह्म रूप रामचरण जानिये ॥
प्रसिद्ध जन महु अनंत जीव तयार हैं ।
महिमा अनूप जाकी कैसे पावै पार है ॥
अद्वैत मत उधार के द्वैत कूँ उखारयो है ।
अहं मम राग द्वेष देहि भाना (?) डारयो है ॥
तीन गुण जीत के ज मेटी सब भीत है ।
काटी मोह जाल सब बिचरे नचोत है ॥

×

×

×

छंद निसाणी

उन सिष्य जी राम सेवगजी राम नाम एक गायंदा ॥
काटी जग-जाला दीन-दयाला निद्रंद विचारायंदा ॥
सह सुचरणा जामण-मरणा भेट 'र ध्यान धरायंदा ॥
राम उपासी द्रढ़ विस्वासी तेजवान बड भायंदा ॥
इती करारी जगत न यारी कनक वाम हटायंदा ॥
भये प्रसिद्ध सब सिष्य मध्य अणभै मुख गायंदा ॥
सुन अणभै बानी नशै अथ खानी जग मन हुलमायंदा ॥
ज्ञान की छोलं मुक्त अमोलं दे भव दुःख (तुरत) मिटायंदा ॥
सिष्य अनंता मत के मंता राम को ध्यान धरायंदा ॥ ६ ॥

चौपाई

तास सिष्य भए पूरणदासा । राम नाम के द्रढ़ उपासा ।

ज्यूं जल-कवल रहे जगमाही । बैर भाव जग राग न जाही ॥ ११ ॥

× × ×

मनहर छंद

तास सिन्धु जानू ऐक साँची उन गही टेक ।

बड़े तेज बुद्धिवान, नाम श्री वस राय है ।

सील संतोष जलीयां राम-रस मुख पीयां

द्वंद्व उपाधि मेढ सारी भजै नित्य राम है ॥

काछ द्रढ मत द्रढ उर माही ज्ञान द्रढ

कोऊ आवै सरण ताही देत मुक्ति धाम है ।

सो है दीन के दयाल मोकूँ कीयो है निहाल

अैसा गुरुदेवजी कूँ बंदै करुणाराम है ॥ १३ ॥

दोहा

ता सिष करुणाराम है, रचे जीन यह छंद ।

गुरु संत कृपा करो, काटो मम भव बंध ॥ १४ ॥

× × ×

चरण सरण मोय दीजिये, काट जगत की पास ।

वस राम म्हाराज के, चरण कवल की आस ॥ १७ ॥

× × ×

बरष उकीसा में भयो, भयो स्वैत सब केश ।

सो देख चिंता चित भई, जरा दियो संदेश ॥ २ ॥

× × ×

मनहर

शशि^१ ग्रह^२ बेद^४ शशि^१ संवत शशि^१ बेद^४ षट^६

आसाढ शुक्ला सप्तमी^७ अमृत बेला जानिये ।

संसार असार लख तज्यो जान स्वान भख

रविवार सत गुरु सरणो लीयो मानिये ॥

उदीयापुर सुनाम रामद्वारा म धाम

तपे श्री वस राम अैसी ओपमा को मानिये ।

श्रीपमा स्वरूप आप भेटथो मोर भवताप

करुणाराम नाम दीयो सत गुरु जानियो ॥ १ ॥

चौपई

बरष शशि^१ ऋषि^७ उमर माही । जगत जस रखुं लीयो आई ॥

श्री त्रसराम कपा कीनी । दियो राम भव मय हर लीनी ॥

मनहर

संवत् शशि^१ ग्रह^२ जानू साल नैत्र^३ बेद^४ मानू

माघ मास ऋतु बसंत सुभ लग्न जानीये ।

जनम उत्सव भयो सावा पान (!) दिन गयो

हर्षित सब नारी नर परवार जानीये ॥

जनम नाम कढ़ायो ऋणलाल सुभ पायो

देश हाडोती नम्र कोटो रामपुरो मानियो ॥ ६ ॥

×

×

×

संवत् अंक उलटीये, बेद^४ बेद^५ शशि^१ ग्रह^२ ।

माघ ज शुक्ला पंचमी, रबी पूर्ण भयो यह ॥ ८ ॥

सहर उदेपुर जानियो सर पीछोला तीर ।

जहाँ राम को धाम है, संतन की अति भीर ॥ ९ ॥

नागा नगरी निकट है, श्रीबड़ रामद्वार ।

तहाँ लिख्यो यो गोटको, करुणाराम विचार ॥ १० ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(७५) सरबंग सार । रचयिता-नवलराम । आकार-७'६" × ५'६" ।

पत्र-संख्या ४२६ । रचना काल सं० १८३४ । लिपिकाल-सं० १९०७, फागुण सुद-३, बुधवार । लिपिकार-रामदास । इसमें विविध संतों के मत सिद्धान्त, विचार, भावना आदि को लेकर संत साधना सम्बन्धी ४० विषयों का प्रतिपादन किया गया है । यह विविध संतों की वाणियों का सार ग्रन्थ है । लेखक का उद्देश्य आदि भाग में इस प्रकार दिया गया है:-

कुण्डलिया

सत गुर मुझि पे मेहरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ।

श्रबंगसार ए ग्रंथ जो, ताको करुं उचार ॥

ताको करूं उचार, साखी संता की ल्याऊं ।
 उकति जुकति परमाण, और अतिहास सुनाऊं ॥
 नवलराम सरणै सदा, तुम पक्ष हिरदै धरि ।
 सत गुर मुझि महरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ॥

किवृत

बगसौ बुद्धि विचार, सुरति भरि रहै जु मेरी ।
 करूं ग्रंथ सरबंग एक धरि साखि धनेरी ॥
 सत पुरषां का सबद सोधिकै देस मिलाऊं ।
 सत गुर के परताप उकति सौ अंग बखाऊं ॥
 जुगति जुगत निरणै करूं भव तिरणै की रीति ।
 नवल जगत कूँ ना रुचै करै ममोषी प्रीति ॥ २ ॥

दुहा

अनंत कोटि जन सिर तपे, राम चरण उर मांहि ।
 आन भरोसो आन बल, नवलराम के मांहि ॥ ३ ॥
 राम निरंजन संत जन, सत गुर दया सुसंग ।
 जिनकै बाल बुधि सूं करूं, सुधा समंद अरबंग ॥ ४ ॥
 प्रथम स्तुति बरनन करूं, आगे और विधान ।
 अधि-मोचन ए ग्रंथ जू, ज्यों 'तिम-मोचन भांन ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

भरमी करमी लखि बिनां, बाचिक बिषी असाध ।
 ताकूँ ए भावै नहीं, सुणि कै करै विवाद ॥ ११५ ॥
 वाद विवाद निवारिऐ, साधू सब्द विचार ।
 नवल दोस हम कूँ नही, संता भाषे सार ॥ ११६ ॥
 सार रूप ए ग्रंथ है, अरथ जुगति ता मांहि ।
 संसकृत का श्लोक है, बाणो भाषा मांहि ॥ ११७ ॥
 साध सब्द गति अगम है, मै काहा जानूँ मेव ।
 नवल हिरदै जन प्रगटे, ग्रंथ भयौ तब एव ॥ ११८ ॥
 मेरी कुछि सरधा नहीं, सतगुर कृपा कीन ।
 साधू रामदयाल सिरि, नवल मऐ प्रवीन ॥ ११९ ॥
 सत संगति सुम स्वांति सुख, दुख मिटावन जोइ ।

नवल सरणि गुरदेव की, सब ही कारज होइ ॥ १२० ॥
 बीतराग निति ब्रह्म जू, रामचरण कूँ जोइ ।
 नवल सरणि निज तास की, ग्रंथ बनायो जोइ ॥ १२१ ॥
 घटि बधि कोई संकला, अर्थ भेद जो होइ !
 सब जन छिम्यां कीजियौ, मै सरनागति तोहि ॥ १२२ ॥
 मेरी बुधि अति तुच्छि है, तुम्हारे सबद अपार ।
 नवल कहै तुम महरि सूँ, उपज्यौ एह बिचार ॥ १२३ ॥
 साहिपूरा निज नम्र मधि, सतगत अति सुभ धाम ।
 नवल क्रिया गुरदेव की, अबंगसार ग्रंथ नाम ॥ १२४ ॥

सोरठा

संबत सौ एहजानि, अठारसै चौतीस जू ।
 पौस बुद्धि परमानं, चतुर्दसी रविवार कूँ ॥ १२५ ॥

ग्रन्थ की विषय सूचि:—

१.	निर्गुण ब्रह्म गुर संत निरूपण	शब्द	७८	७८	पद्य
२.	राम महिमां सत विचार	,,	१६१	३	,,
३.	गुरु लक्षण निरूपण	,,	७१	११०	,,
४.	सिख पारख निरूपण	,,	३६६	१२५	,,
५.	काम सकाम भक्ति निरूपण	,,	४८०	८१	,,
६.	सरूप भक्ति निरूपण	,,	५३१	५१	,,
७.	त्रैगुण निज मूल भक्ति निरूपण	,,	५६५	६४	,,
८.	नवधा भक्ति प्रेम लक्षण	,,	६६०	६५	,,
९.	सुमरण नांव	,,	७७५	८५	,,
१०.	,, टेक पति	,,	८५६	८४	,,
११.	सुमरण नांव महमां	,,	८६२	८३	,,
१२.	,, , महातम	,,	१०३५	७३	,,
१३.	उत्तिम भक्ति ग्यांन	,,	११२०	८८	,,
१४.	बंद मोखि सुभ असुभ बासना निरूपण	,,	११६२	७१	,,
१५.	जग दूषण बैराग निरूपण	,,	१२८३	६१	,,
१६.	अजचीन बैराग अजगरी भवर व्रत्ति	,,	१३५०	६२	,,

१७. सन्यास ज्योग सुध बैराग निरूपण	,,	१४५८	८३	,,
१८. लछि बैराग भेष निरूपण	,,	१५३५	८७	,,
१९. अडग बैराग खिम्य निरूपण	,,	१६५५	८०	,,
२०. संत महिमा निरूपण	,,	१६२८	८३	,,
२१. साध लछिण	,,	१७८६	६१	,,
२२. सीत प्रसाद महमा निरूपण	,,	१८६८	१०६	,,
२३. जीव दया निरूपण	,,	१९६३	६५	,,
२४. अधम खय कारण दास लषिण निरूपण	,,	२१३०	६७	,,
२५. राम त्रिमुख कथन निरूपण	,,	२२१७	८१	,,
२६. कुसंग लषिण निरूपण	,,	२२६३	८३	,,
२७. परधन पर त्याग जोग करम धर्म	,,	२३६८	८३	,,
२८. कीम खंडण निरूपण	,,	२४६३	१२५	,,
२९. सील सुभ्रम	,,	२६५६	१६३	,,
३०. माया खंड आसालोभ निरूपण	,,	२७४३	८३	,,
३१. माया खंड तत्त असत	,,	२८५२	१०६	,,
३२. काल चिंतामणि निरूपण	,,	२९८०	१२२	,,
३३. मस चिरत निरूपण	,,	३०६१	८१	,,
३४. भ्रम भेद निरूपण	,,	३१३५	७४	,,
३५. भ्रम भेद खंडण मनसा तीरथ निरूपण	,,	३२६४	१२६	,,
३६. साध महिमा निरूपण	,,	३३८१	८६	,,
३७. साध पारस्व निरूपण	,,	३४३६	८८	,,
३८. लछि अलछि पिंडत पारिस्व निरूपण	,,	३५६२	१३६	,,
३९. दर्शन लछि अलछि निरूपण	,,	३७१५	१२३	,,
४०. आन भ्रम खंडन भक्ति मंडण निरूपण	,,	३७६४	७६	,,

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) सिद्धान्त बोध । रचयिता-महाराजा जसवंतसिंह । आकार-

६'' x ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या ४५ । पद्य-संख्या १२ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(७७) सिद्धान्त बोल । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या ६६ दोहे और ३६३ ढाल ।

[वर्तमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७८) सिद्धान्त सार । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १७६ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(७९) सुन्दरदासजी सवैया । रचयिता-सुन्दरदास । प्रति १:- आकार-४'३'' × ३'६'' । पत्र-संख्या ५६ । पद्य-संख्या ११४ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

प्रतिर-आकार ६'५'' × ४'' । पत्र-संख्या १८० । पद्य-संख्या ७६५ । इसीके साथ दादूदयाल की वाणी है जिसकी पत्र-संख्या ३४६, पद्य-संख्या २५०० और लिपिकाल सं० १८४६ है:-

नवसे नवसे कहते हैं, बीस बीस लै और ।

नव उपरि फागुन सही, एकादशी गुर भौर ॥

[चुन्नीलालजी दादूपंथी, बड़ी ब्रह्मपुरी, उदयपुर]

(८०) सूरतरांम वाणी संग्रह । रचयिता-जन सूरतरांम । इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । सूरतरांम की रचनाएँ रामद्वारों के कई ग्रन्थों में बिखरी पड़ी हैं । कहीं-कहीं सब एक साथ संग्रहीत भी मिलती हैं । रामस्नेही पंथ की रचनाओं की एक विशेषता यह है कि उनकी रचनाओं के शीर्षक बहुधा छंदों के नाम पर मिलते हैं । अतः उन्हें एक ही रचना के अन्तर्गत नहीं मानना चाहिये । यह परम्परा कबीर की रचनाओं साखी, अलिफ नामा, राग फगुआ, बिचार माला, शब्द, हिंडोरा, रेखता आदि के समान विकसित हुई है । जैसे-साखी, ककाबर्त्तीसी, रागमाला, शब्द, रेखता, कुण्डलियाँ, कवित्त आदि । सूरतरांम की रचनाओं के एक संग्रह का विवरण यहाँ दिया जाता है, जिसका आकार ६'५'' × ४'' है ।

१. बांणी (साखी) । पत्र-संख्या २७ । अंग ३५, साखी २६ ।

आदि भाग-

स्तूति का छंद

नमो अमापं नमौ अथापं नमौ नमस्ते परमदेवं ।
 नमौ अजन्मा नमौ सबनमां नमौ नमस्ते नां खेवं ॥
 नमौ अलेख्यं नमौ अमेख्यं नमौ नमस्ते भव पारं ।
 उंति पति पर लपे सथ तियाल नमो नमस्ते निराकारं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजै सौही संत है, मत सूं बंधै नाहि ।
 जन सूरतराम हरि भजन बिनि, धकाधकी बौहो खांहि ॥ ६ ॥
 धखा खाइ दरबारि मै, राम बिना सब कौइ ।
 जन सूरतराम सांची कहै, ग्रिही भेष किन होइ ॥ ७ ॥
 ॥ इति भेष कौ अंग संपूरण ॥

२. कूंडल्या । पत्र-संख्या २६ । अंग २५, कूंडल्या ६६ ।

अन्तिम भाग-

संम्रथ ग्यान बिचारिऐ, सम्रथ सरगूं जौय ।
 आन धम बिन्न चारणी, निति हि परलौ होय ॥
 निति हि परलौ होय, भजन बिनि जनम गुमायौ ।
 राम नाम सुख छाडि, भरम संगि पाप कुमायौ ॥
 जन सूरतराम सांची कहै, च्यारि जुगा दुख होइ ।
 संम्रथ ज्ञान बिचारीऐ, सम्रथ सरगूं जौइ ॥ ७ ॥

३. रेखता । पत्र-संख्या ८ । अंग ६, रेखता २१ ।

अन्तिम भाग-

खेत कूं हाकि कै बोहोती दई खात भी नांखी पलाव कीन्हा ।
 मैजड़ा फेरि कै खूब भी करि रख्यां घास अर फूसि कूं डारि कीन्हा ॥
 बीज औरै नहीं कालुजा कटि हैं खेत कूं देखिकै खुसी होई ।
 वसि ही व्रत करि कूं सुख पाईया बीद बनि जान बेकाम जावै ॥
 जन सूरत ही राम अब समझ करि देखीऐ सीस बनि धड़ कसि काम आव ॥ ८ ॥

४. सवईया । पत्र-संख्या १० । अंग १६, सवईया ४० ।

अन्तिम भाग-

अैसे बेईमान गुलाम हलाम है जासकी बुद्धि में सुधि नहीं कोई ।
 राम तजै अर दाम भजै सुनि सांग काछथौ जैसे रावल् भोई ॥
 सेवग जाट 'र माली कीया सट खेत खलु' दुख ही दुख रोई ॥
 सूरतराम ऐ राम सूं बै मुख आग लीया छली दौन्यूं ही खोई ॥ २ ॥

५. भूलणा । पत्र-संख्या २ । ५, भूलणा ७ ।

अन्तिम भाग-

अरे नर मूरिख चेति बेगी पल माहि सौ कोल उड़ावता है ।
 तीन हीं लोक की कुण चली ब्रह्मा बिसन कूं खावता है ॥
 तू दिन रैन भजै नहीं राम कूं राम बिना दुख पावता है ।
 जन सूरतराम अकाल भया निति ब्रह्म सूं ध्यान लगावता है ॥

६. किवत । पत्र-संख्या ४ । अङ्ग ६, किवत १४ ।

अन्तिम भाग-

दुनियां बड़ी कुरंग, जासकै एक न रंगा ।
 नांनं इसट उपाइ, तास कौ मन वो भंगा ॥
 राम नांव कूं छाडि, आन कूं सीस नवावै ।
 अपण फिरतब पूजि, राम कूं पूठि दिखावै ॥
 म्हानिसट संसार है, जामै लच्छिन नाहि ।
 जन सूरतराम सांची कहै, भग्या काल मुखि जाहि ॥ ३ ॥

७. नांव बत्तीसी । पत्र-संख्या ७ । छंद भंपाल, ३२ ।

आदि भाग-

सूरतराम करै प्रमहंज जू, राम गरू सूं बंदनं ।
 नांव महातम करू बत्तीसी, जाति सबद की छंदनं ॥
 सुनत ही भ्रम क्रम सब भागै, उपजै नांव जिय्यासा ।
 नांव म्हातम परमपरा सूं, थरि चित व्यौ पदबासा ॥ १ ॥

८. कका बत्तीसी । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ३३ दुहा ।

आदि भाग-

सतगुर कूँ निति बंदनां, निमसकार निति रांम ।
 सब संत की म्हरि ग्रंथ करूं, ककाबतीसी नांम ॥ १ ॥
 कका क्रिपा करि गुर देवजां, लयीं सरण गति मोहि ।
 दीयीं भजन निज ब्रह्म कौ, सारथा कारिज सोइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

ससा सतगुर की दया, कीयीं जीव कूँ पार ।
 ऐसे गुर कूँ कीजीऐ, बंदन बारु बार ॥ ३१ ॥
 हहा हरि गुर महरिकरि, दई बुद्धि ऐह मोहि ।
 एह ग्रन्थ सुणि हरि भजै, ताकौ कारिज सहजै होई ॥ ३२ ॥
 कका बतीसी ग्रन्थ मधि, भाष्यो सुमरण सार ।
 बांछि बिचारै जौ कोई, जन सूरतरांम होई पार ॥ ३३ ॥

९. पद राग चरचरी । पत्र-संख्या २० । पद्य-संख्या पद ४६, साखी २ ।

आदि भाग-

देखौ रे सतगुरजी दाता, ऐसा राहा चलाया है ।
 भरम करम सब दूरि निवारया रांम नांम पिछणाया है ॥ टेक ॥
 जाकूँ रटत मन सुद्ध 'ज हुँवा', प्रेम प्रीत उपजाया है ।
 उनके चरण सरण सुख पावै, जनम-मरण मिटिजाया है ॥ १ ॥
 भाग भला जब रासण होई, ऐसा सतगुर पाया है ।
 जनकी म्हमा अगम अगौचर, ब्रह्मा वेद स गाया है ॥ २ ॥
 सिव सनकादिक वैं ही ध्यावैं, सोही तत बताया है ।
 ऐक नांव की न्हचै राखै, परमपद सुख पाया है ॥ ३ ॥
 जन सूरतरांम का सांसा भागा, रांमचरण गुर पाया है ।
 तन मन की सब आस निबारी, ध्यान अखंडत ल्याया है ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

साखी

हरिजनं ऐसा चाहिए, औषदि का सा रूप ।
 दुख मेटे सुख उपजै, जन सूरतरांम अनूप ॥ १ ॥

साधू अैसा चाहिए, तन सू रहै उदास ।
रामभजन निसि दिन, जन सूरतराम गुर पास ॥ २ ॥

१०. चंद्राइणा । पत्र-संख्या २३ । अंग २१, चंद्राइणा ३५ ।

अन्तिम भाग-

कौई मुख ह्वे रहै है बात कौ करत है ।
कौ कथियो था ग्यान का जन ही सरत है ॥
कौ देवी को ध्यान रूद्र कौ ध्यात है ।
परि हाँ सूरतराम भजि राम ब्रह्म पदपात है ॥ ३ ॥

११. सुख बोध कौ छटौ प्रकरण । पत्र-संख्या । इसमें किवत, अरेल, सरोठा, चौपई, कूंडल्या, भंपाल, निसांणी, साखी, त्रिभंगी, चंद्राइणा, सवइया, मनहर, चांमर, छपै, दुहा, रेखता-कुल ६५ पद्य हैं ।

आदि भाग-

किवत

बरकति बिरति बिचारी अरपि आपौ तुम गावौ ।
बरणि दस अवधूत रीति सूँ मोहि सुनायो ॥
अबै साध कौ संग साध मइमां सौ गावौ ।
पारख साध असाध जिनुँ की रैसि बतावौ ॥
सत संगति अर साध संग भषौ भलै प्रकार ।
जन सूरतराम उरि सिख कै सुन सै प्रीति अपार ॥ १ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(८१) ह्वाल बोध । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ११ । पद्य-संख्या दोहा १०, चौपई ६१ ।

आदि भाग-

करो फकीरी रामजन, रे मन ह्वाल बिचार ।
सुमर राम रमतीत कूँ, अपनौ आपौ तार ॥ १ ॥
आपौ तारौ रामजन, तौ निज ह्वाल समाय ।
निरदावै निर बासनां, सत गुर सिख्या पाय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

कर जोडै करणां करै, सुणज्यौ दीन दयाल ।
माहा कठिन कलू काल मै, आप निभावौ ह्वाल ॥ ६९ ॥
आप निभावौ ह्वाल ऐह, सतगुर राम निधान ।
रामजन मन बंच करम, ऐ मांगत करदान ॥ ७० ॥
ऐही मांगत हूं सदा, राम गरू कै पास ।
रामचरण पद रैणं कौ, रामजन नित दास ॥ ७१ ॥

सूचना-इसीके साथ रामजन कृत 'ज्ञान-प्रमोद' है जिसकी पद्य-संख्या ३६७ है।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२) काव्य, साहित्य-शास्त्र, इतिहास आदि....

(१) कवित्त रामायण । रचयिता-तुलसीदास । आकार-११'२" × ५'२" । पत्र-संख्या ४२ । पत्र-संख्या २८७ । लिपिकाल-सं० १८५१ । इसी के साथ तुलसीकृत 'रामचरित मानस' की भी तीन प्रतियाँ मिली हैं । मेरे पास भी एक प्रति सं० १६०१ की लिपिकृत है ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(२) खुम्माण रासो । रचयिता-पं० दौलतविजय । आकार-१०" × ४'४" । प्रति अपूर्ण है । इसके केवल चार पत्र हैं । प्रति पत्र पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५५ अक्षर हैं । ६५ छंदों में अजेसी, 'लपमसी अरसी अधिकार समय' समाप्त हुआ है । अंत में रचयिता का नाम पं० दौलतविजय गणि दिया गया है । अतः यह प्रसिद्ध 'खुमाण रासो' का कोई भाग है । इसमें अजेसी, लपमसी, अरसी, हम्मीर आदि का चित्तौड़ के लिये अलाउद्दीन के साथ युद्ध का वर्णन है । इसमें यद्यपि कोई रचनाकाल या लिपिकाल नहीं दिया है परन्तु इसके अंत में दिया हुआ यह दोहा बहुत महत्व पूर्ण है:—

‘संबत्सर संवत्त में, तेरे से तेताल ।

आथडिया हिन्दू असुर, धरा करे धकमाल ॥’

आदि भाग—

गाहा

गौरी गुणे गहिरम् । गिरिं तनया माय देहि वर वित्तं ।

भय हरि भगति भीरं । चाण्डा होय इक चित्तं ॥ १ ॥

दूहा

कमल वदन कमलासनी, कवि उर मुख कैलास ।
 वसे सदा वागेश्वरी, विधि विधि करे विलास ॥ २ ॥
 कवि दीजे कमला कला, जोडण कवित जुगति ।
 सुरिज वंस तणो सुजस, वरण करु विगति ॥ ३ ॥
 गटां मुगट चित्तोडगट, राजे राण हमीर ।
 चित्तोडो ढलते चमर, बडो अडुबाहो वीर ॥ ४ ॥
 कहु तस गुणरी कथा, सुणज्यो सवण सुचित्त ।
 एवे घालक वातां त्रिहद, विधि विधि कथ विगत्त ॥ ५ ॥
 पुहवि पति पहि उप्पडे, लोह लगायो रास ।
 अनड पहीमो अरसि सुज, नृप तिहाँ कियो निवास ॥ ६ ॥
 गट दिल्लीपति गंजियो, दीनो गड सर सल्ल ।
 सभियो गट सोनिगरां, अके गट अणहल्ल ॥ ७ ॥
 सिसोदो सायर नयर, हे सु अरसी राण ।
 एक दिवस आखेट के, चढिया श्री दीवाण ॥ ८ ॥

गाहा

चोसर घिरया गिर घमसाणं । जूडा एकल्ल सुभट जुच्चाणं ।
 धार अणी अवसाणं । गोली पंखाल गणणं ॥ ९ ॥

अन्तिम भाग-

बाबीसे बेटा हुंती, घटि घटि आये काम ।
 गट कज्जे गट लषमसी नवखंड रख्यो नाम ॥ १ ॥
 वरस अठारे बीस दिन, रिबु अजेसी राण ।
 पाट बेटि पडतालिया, मुरडिया मुगलाण ॥ २ ॥
 मुच्यो नहि मुगलाण पति, समसद्दी सुरताण ।
 कटथो गट किल्लो करे, पनरे वरस प्रमाण ॥ ३ ॥
 दिसि दिल्ली दिठ्ठी नहीं, विडियो वारण वेर ।
 पितु वेरे आपही पडे, सुज्ज गहेस मरोर ॥ ४ ॥
 संवतसर संवत्त में, तेरे से तेताल ।
 आथडिया हिंदु असुर, धरा करे धकपाल ॥ ५ ॥

(३) गीराबादल पदमिणी चउपड़ । रचयिता-हेमरतन ।

इस ग्रन्थ के कई संस्करण और प्रत्येक संस्करण की कई प्रतियाँ मिलती हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यह रचना किसी समय बहुत प्रचलित थी । राजस्थान के बाहर भी इसकी प्रतियाँ पहुँच चुकी हैं जिनमें से नागरी प्रचारिणी सभा काशी, गुजरात विद्या-सभा, अहमदाबाद, ऑरिएण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा और भण्डार इन्स्टीच्यूट पूना के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । इनके अतिरिक्त कई जैन भण्डारों में भी इसकी प्रतियाँ मिलती हैं । मैंने इस कृति का सम्पादन किया है जो अब 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर' द्वारा प्रकाशित हो रही है । अतः इसके विषय में यहाँ अधिक न लिख कर कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ही लिखी जाती हैं ।

इस कृति का मूल लेखक हेमरतन है । संवत् १६४५ में हेमरतन ने सादड़ी (छोटी) में महाराणा प्रताप के मंत्री भामाशाह के छोटे भाई ताराचंद के आग्रह से इसकी रचना की । इसकी सबसे प्राचीन प्रति श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है जिसकी सम्पूर्ण फोटो प्रति उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई । इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है:-

बादल राउत नी ए कथा । सुणतां नावइ निज घटि व्यथा ॥
 रोग सोग दुख दोहग टल'इ । मन ना सयल मनोरथ फल'इ ॥ ६० ॥
 पूनिम गच्छि गिरूआ गणधार । देव तिलक सूरिसार सार ॥
 न्यान तिलक सूरिसर तास । प्रतपइ पाटइ बुद्धि निवास ॥ ६१ ॥
 पदमराज वाचक परधान । पुहवी परगट बुद्धि निधान ॥
 तास सीस सेवक इस भणइ । हेमरतन मनि हरषइ घणइ ॥ ६१० ॥
 संवत् सोलइ सइ पणयाल । श्रावण सुदि पंचमि सुविशाल ॥
 पुहवी पीठि घणु परगड़ी । सबल पुरी सोहइ सादड़ी ॥ ६११ ॥
 पृथवी परगट राण प्रताप । प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप ॥
 तस मंत्रीसर बुद्धि निधान । कावेड्या कुलि तिलक समान ॥ ६१२ ॥
 सांभि धरमि धुरि भामुंसाह । वयरी वंस विधुं सण राह ॥
 तस लघु भाई ताराचंद । अबनि जाणि अब तरिउ इन्द्र ॥ ६१३ ॥
 ध्रूय जिम अविचल पालइ धरा । शत्रु सहू कीधा पाधरा ॥
 तसु आदेश लही सुभ भाइ । सभा सहित पांमी सुपसाइ ॥ ६१४ ॥
 वात रची ए बादल तणी । सांभि धरमि ए सोहामणी ॥

वीरा रस सिणगार विशेष । रस बेरस अछइ सविसेष ॥ ६१५ ॥

सुणता सवि सुख समंद मिलइ । भणतां भावटि दूरइ टलइ ॥

ऊजम अंगि हुइ अति घणउ । मुहकम जाणइ करि मंत्रणउ ॥ ६१६ ॥

षट सित षोडस गाथा बंधि । सुणिउ तिसु भाष्यु संबंधि ॥

अधिकऊं न जे उच्चरिउं । सयण सुणी ते करयो खरुं ॥ ६१७ ॥

सामि धरम पालंतां सदा । सगली आवइ वरि संपदा ॥

सुर नर सहू प्रसंसा कर'इं । वरमाला ले लखमी वर'इं ॥ ६१८ ॥

इति श्री गोरा बादिल चरित्रे । बादिल जय लक्ष्मी वर्णनो नाम प्रथम खंडः । संवत् १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५ ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हेमरतन ने एक से अधिक खंडों में इस काव्य की रचना की हो । परन्तु इस प्रथम खंड से आगे की कथा अब तक कहीं प्राप्त नहीं हुई । हमें अब तक जितनी प्रतियाँ प्राप्त हुई उसमें गोरा बादल की कथा ही मिलती है, जिससे हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि यदि हेमरतन ने पद्मिनी के सती होने तक की रचना की होती तो वह अवश्य ही कहीं न कहीं प्राप्त होती, क्योंकि प्रथम खण्ड का प्रचार सर्वत्र दिखाई देता है और अन्य कई लेखकों ने इसका भाषान्तर कर छेपकों द्वारा विविध संस्करण भी तैयार कर दिये थे । यह हमें मानना पड़ेगा कि शीर्षक 'गोरा बादल पद्मिणी चउपई' के अनुसार यह कथा बिलकुल पर्याप्त है । अतः लिपिकार ने भूल से ही 'प्रथम खंड' लिखा है; अथवा इस कथा को आगे बढ़ाने की लेखक की इच्छा रही हो—यह सम्भव है ।

इस विषय का अध्ययन करने पर हमें यह विदित हुआ कि संवत् १६४५ में हेमरतन ने सम्भवतः जायसी के पद्मावत से प्रेरित होकर इस काव्य की रचना की । रचना साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें काव्यगत ङिंल के प्रभाव से रहित राजस्थानी है और उस पर ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट देख पड़ता है । इसी में छेपक जोड़ कर संवत् १७६० में भागविजय ने (अथवा संग्रामसूरि ने) एक नया संस्करण तैयार किया । परन्तु भागविजय की कोई कृति अब तक हमें नहीं मिली । संग्रामसूरि की कई प्रतियाँ मिलती हैं उसमें भागविजय शब्द अवश्य आया है परन्तु उसका अर्थ किसी व्यक्ति के अर्थ में लेना संदेहास्पद है, क्योंकि संग्रामसूरि ने स्वयं अपनी प्रशस्ति में हेमरतन का उल्लेख कर उसमें छेपक रखना स्वीकार किया है । संवत् १६८०-८५ के लगभग जटमल ने 'गोराबादल की कथा'

की रचना की जो हेमरतन का एक संक्षिप्त संस्करण मात्र है। जटमल ने भी हेमरतन की भाषा और छंदों में थोड़ा-सा हेर-फेर किया। इस पर हम अलग लेख लिख कर बतावेंगे कि कहाँ किस लेखक ने कितना अंश हेमरतन से लिया है। संवत् १६०७ (या १७१७) में लब्धोदय अथवा (लब्धोदय के लिये ज्ञानराज ने) इसी रचना को गीतों की ढाल में ढाल दिया। इन संस्कारणों की कई प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जाता है:—

१. हेमरतन-कृत गोरा-बादल पदमिणी चउपई। रचनाकाल संवत् १६४५। सबसे प्राचीन लिपिकृत प्रति संवत् १६४६ की है, जो श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है। इसमें पद्य-संख्या प्रशस्ति के अनुसार (६१६ + २) ६१८ है।

आदि भाग—

सुख संपति-दायक सकल । सिधि बुधि सहित गणेश ।
 विघन विडारण विनय सुं । पहिली तुभ प्रणमेश ॥ १ ॥
 ब्रह्म त्रिष्णु शिव सहं सुखइ । नितु समरइंजसु नाम ।
 ते देवी सरसति तणइ । पद युगि करुं, प्रणाम ॥ २ ॥
 पदमराज वाचक प्रभृति । प्रणमी निज गुरु पाइ ।
 केलवस्युं सांची कथा । कांणि न आव' इ काइ ॥ ३ ॥
 नव रस दाखइ नवनवा । सयण सभा सिणगार ।
 कवियण मुभ करियो कृपा । वदतां वचन विचार ॥ ४ ॥
 वीरा रस सिणगार रस । हासा रस हित हेज ।
 सामि--धरम--रस संभलु । जिम हुइ तन अति तेज ॥ ५ ॥
 सामि-धरम जिणि साचविउ । वीरा रस सविसेष ।
 सुभटां महि सीमा लही । राखी खिचवट रेख ॥ ६ ॥
 गोरा रावत अति गुणि । बादिल अति बलवंत ।
 बोलिसु वात बिहुं तणी । सुणयो सगला संत ॥ ७ ॥
 रतनसेन राजा तणइ । छलि हूआ अति छेक ।
 गोरा बादिल बे गुणी । सत्तवंत सविवेक ॥ ८ ॥
 युद्ध करी जिम जसलीउ । वसुहा हूआ बिरुयात ।
 चित्रकोट चावउ कीउ । ते निसणउ सहवात ॥ ९ ॥

इसमें राजस्थानी का वयणसगाई अलंकार ध्यान देने योग्य है । अन्तिम भाग ऊपर दिया जा चुका है ।

दूसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १६६१ । इसमें पत्र-संख्या ७०३ हैं । आकार-१०" × ४^१/_२" । पत्र-संख्या २० ।

[मुनि जिनविजयजी से प्राप्त]

तीसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७२६ आकार--३^३/_४" × ४^१/_२" । पत्र-संख्या २६ । पत्र-संख्या ७१२ ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

चौथी प्रति । लिपिकाल--संवत् १७८५ । आकार--६" × ५" । पत्र-संख्या १०२ । पत्र-संख्या ७६५ ।

[भण्डारकर इन्स्टीच्यूट, पूना]

२. भागविजय [या संग्रामसूरि कृत] पद्मणी चौपई । रचनाकाल-संवत् १७६० । इसकी निम्नलिखित प्रतियां प्राप्त हुई ।

पहली प्रति । आकार--१०" × ४" । पत्र-संख्या ३१ । पत्र-संख्या ६१७ । इसमें कोई लिपिकाल नहीं है । संभवतः मूल प्रति हो ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

दूसरी प्रति-वही है जिसका उल्लेख रिपोर्ट के प्रथम भाग के पृष्ठ ५३ पर विवरण (६६) में श्री मेनारिया ने हेमरतन समझ कर किया है । इसकी पूरी प्रतिलिपि मेरे पास है, उसकी प्रशस्ति का वह भाग यहाँ उद्धृत करते हैं जो प्रथम भाग में उद्धृत अन्तिम भाग के पत्र-संख्या ६११ से ऊपर का है, और जिसे श्री मेनारिया ने उद्धृत नहीं किया । सभी प्रतियों में यह अंश मिलता है । इसीसे यह स्पष्ट हो जायगा कि हेमरतन का ही यह परिवर्द्धित संस्करण है:-

पदमराज वाचक परधान । पुहवी प्रगट सकल गुणवान् ॥

तास सीस मन रंगै घणै । हेमरतन वाचक इम भणै ॥ ६०६ ॥

वात रची ए बादल तणी । सांम धरम अति सोहामणी ॥

वीरा रस सिणगार वसेष । सील धरम पदमिण सुविवेक ॥ ६०७ ॥

सुणतां सुख चतुराई वधै । नीत रीत सूरतन सधै ॥

ऊजम तेज हुइ अति घणो । विविध करी जाणै मंत्रणौ ॥ ६०८ ॥
 सांम धरम पालंतां सदा । पामै घरि नव निधि संपदा ॥
 सुर नर सह प्रसंसा करै । वरमाला ले लिखमी वरै ॥ ६०९ ॥

कलश कवित्त

हेमरतन की बुद्धि, छंद चोपई प्रथम कीय ।
 अब कछु वयण विशेष, सुकविराज सगुण थपीय ॥
 सुदृढ़ बंध 'संग्रामसूरि', चित बेधक वाइक ।
 कवित दुहा चोपइ, धरै नौतन जहां लाइक ॥
 महिलात ग्रंथ उज्जल कली, त्रीय सरूप भूषण सभै ।
 रंग रेख भरे चित्रांम, सिर गुल क्यारी उपवन मभै ॥ १० ॥

तीसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७८३ ।

[आरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा]

३. लब्धोदय (या ज्ञानराज) कृत पदमिणी चरित्र (प्रबंध) । रचना काल-संवत् १७०६-७ । इसमें हेमरतन की उसी कथा को गीत की ढालों में ढाल दिया गया है ।

पहली प्रति । लिपिकाल सं० १७५३

[सरस्वती भवन, उदयपुर]

पहले भाग में श्री मेनारिया ने पृ० ५२ पर विवरण (६८) पर संवत् १८२३ की जिस प्रति का वर्णन किया है वह भी सरस्वती भवन [पूर्वनाम सरस्वती भण्डार] की है वह बहुत अशुद्ध है । इन दोनों की प्रतिलिपि मेरे पास है । इन दोनों प्रतियों में भी काफी अन्तर है, फिर भी इस प्रति का विवरण श्री मेनारिया ने नहीं दिया ।

दूसरी प्रति । आकार-१३ $\frac{१}{२}$ " x ८ $\frac{१}{२}$ " । पत्र-३३ । इसमें ५६ चित्र है । कुछ बहुरंगी हैं तथा कुछ केवल मसि से चित्रित हैं । कला की दृष्टि से चित्र बहुत साधारण हैं । लिपि घसीट और बहुत अशुद्ध है । इसके आदि भाग के दोहे हेमरतन की रचना से मिलते हैं । अन्तिम भाग प्रथम भाग में उल्लिखित पद्य-संख्या ८०० तक बहुत पाठान्तर लिये हुए हैं जिसकी संख्या ८२६ है । लिपिकाल सं० १८६५ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

तीसरी प्रति । आकार-६" × ६"२" । पत्र-संख्या ६१ । लिपि शुद्ध और सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्तिमें १७-१८ अक्षर हैं । प्रबन्ध तीन खण्डों में विभाजित है:—

प्रथम खंड—१४४ छंद

द्वितीय खंड—१५६ छंद

तृतीय खंड—५११ छंद

योग ८११ छंद

अन्तिम भाग—

श्री सुधरभी स्वामी पाट परंपरा रे, सुविदित गद्य सिणगार ।
 श्री खरतर गद्य श्रीजिनराज सूरिसरू रे, आगम आरथ भंडार ॥ ४ ॥
 तास पाट उदयाचल दीपें करूँ रे, श्री जिन रंग वखाण ।
 रिभियां जिण साहिजिहांन दिल्लिसरू रे, करि दीधी फरमाण ॥ ५ ॥
 तास हुकम संवत सतर छीडो तरे रे, श्री उदेपुर सुवखाण ।
 हिंदूपति श्री जगतसिंह राणो जिहा रे, राज करें जगमाण ॥ ६ ॥
 तास तणी माता श्री जंबूवती कही रे, निरमल गंगा नीर ।
 पूरणवंत षट्दरसन सेवा करें सदा रे, धरम मूरति मन धीर ॥ ७ ॥
 तेहतणां परधान जगत में जाणीइं रे, अभिनव अभय कुंमार ।
 केसर मंत्री सर सत अरि करि केसरी रे, हंसराज हितकार ॥ ८ ॥
 जिण वा पूजा हेतें पुरंधर रे, कामदेव अवतार ।
 श्रोणिक राय तणी वरि गुरु भगवा पहिरे, मंहमुगर सिणगार ॥ ९ ॥
 पाट सात पछे जिणदेव मेवाड में रे, थाप्यो गद्य सिर थोभ ।
 कटारिया कुलदीपक जसि जेहने रे, श्री खरतर गद्य सोभ ॥ १० ॥
 तस बंधव डुगरासी तेवाणे दीयतो रे, भागचंद कुल भाण ।
 विनयवंत गुणवंत सोभागी सेहरो रे, वडदाता गुण सुजाण ॥ ११ ॥
 तस आग्रह करि संवत सतर सतोतरें, चेव पूनिम शनिवार ।
 नवरस सहित सरस संबंध वीरच्यउ रे, निज बुद्धि नें अनुहार ॥ १२ ॥
 श्री जिन माणिकसूरि प्रथम शिष्य परगडो रे, वाचक नयसमुद्र ।
 तास सीस वड वषती जगमें जाणीये रे, श्री हर्ष त्रिशाल अनुद्र ॥ १३ ॥

“संवत् १७६१ वर्षे मासोत्तम माघ कृष्ण दशम्यां कुजौ लिखिता ॥ सकल पंडित श्री ५ श्री मतिविजयगणि तत शिष्य पं० जसवंतविजयेन लिपिकृता ॥

इसीके साथ संग्रह में निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

१. भगवती छंद (सं० १७६१)—जसवंतविजय कृत
२. शलिभद्रमुनि चरित्र (सं० १७६२)
३. कपड़ कतोहल
४. क्षेत्रपाल छंद
५. पनरेति रा दूहा
६. बारमासा रा दूहा
७. कृष्ण बारमास्यो

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

चौथी प्रति । आरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा ।

(४) जगद्विनोद । रचयिता—पद्माकर । इसकी तीन प्रतियाँ हैं ।

१. आकार—११" × ७" । पत्र-संख्या--१३६ । लिपिकाल संवत् १६०७ । इसके साथ ‘प्रवीणसागर’ भी जिल्दबंध है ।

[सरस्वती भंडार, भींडर]

२. ठीक उपरोक्त ढंग की ‘प्रवीण सागर’ सहित है ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

३. आकार—८" × ६" । पत्र-संख्या—१०६ । पत्र-संख्या—७२७ । लिपिकाल संवत् १६२७ ।

आदि भाग—

दोहा

सिद्ध सदन सुन्दर वदन, नँद नंदन मृदु मूल ।

रसिक सिरोमनि सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥ १ ॥

पुष्पिका—

“इतिश्री कूर्मवंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंघाहस मधरा स्थानो मोहनलाल भटालज कवि पद्माकर विरचितं जगत विनोद नाम काव्य सम्पूर्णम् ॥”

[माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर]

(५) दीपंगकुल प्रकाश । रचयिता-दधिवाडिया कमजी । आकार-१६" x १०" । पत्र-संख्या ४२ । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ । १६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या- ४६० । अन्त में एक अपूर्ण छप्पय है । इसमें डोड़िया राजपूतों का इतिहास है ।

आदि भाग-

दुहा

रस कपोल सुरभित (र) नरष, माचे सोर मल्लिद ।

ईस पुत्र मोदक असन, गण नायक जग बंद ॥ १ ॥

छापै

सुरसति गुणपति सकत, उकत दीजिये अपाराँ ॥

दाखुं जस डोडीयां, मनोहरसीह मयाराँ ॥

गढ लाहो अग जीत, कीत दस देस कहाई ॥

तण जोरावर तटै, दिये नाहर विरदाई ॥

पीटियों सुं जल चाटण पथां, नेक बिरद धाटण नवां ॥

दरगाह गण भड डोडिया, एक एक बधता हुवा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

मोरटा

जैसो आगर जोय, बले जोय बंधव बलू ।

कूंतां पूत ज होय, सूर सहो बड सारखा ॥ ४६ ॥

छापै

पुन्यात्तमा पुरस्स, हुवो नवलेस सिंघ हर ।

पंडित कवि पोपया, सदा पूजन परमेश्वर ॥

(ग्रन्थ आगे अपूर्ण है)

[अन्ताणी संग्रह]

(६) पृथ्वीराज रासौ । रचयिता-चंदबरदाई ।

इसकी ६ प्रतियों का विवरण प्रथम भाग के ५५ से ७० पृष्ठों तक दिया गया है । अतः उसके पश्चात् रासो की जो प्रतियां खोज में प्राप्त हुई हैं उनका विवरण हम नीचे देते हैं—

प्रति-१ ।

आकार-११'' × ६३'' । इसके कुछ पत्र ही प्राप्त हुए हैं, जो 'माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर' में सुरक्षित हैं। पत्र बहुत प्राचीन हैं, और दो स्थानों पर मुड़े हुए होने के कारण तीन भागों में बँट गये हैं। बीच में दो सल हो गये हैं जहाँ के कुछ अक्षर भी घिस गये हैं। अक्षर जमे हुए और मोटे हैं पर इतने प्राचीन हैं कि सामान्य व्यक्ति से नहीं पढ़े जा सकते। इनमें मात्राएँ पीछे लगी हुई हैं और हिं, नि, जि, जि, जो, च, छ, य, थ, रे, ले आदि अक्षरों में बहुत प्राचीनता देख पड़ती है। इस प्रति में कागज़, लिपि और भाषा तीनों में प्राचीनता देख पड़ती है, जिससे अनुमान होता है कि यह प्रति कम से कम सं० १४०० के लगभग की होनी चाहिये। परन्तु दुख की बात है कि इस प्रति के केवल थोड़े से पत्र ही प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५३ अक्षर हैं। पत्र १३ के नीचे का $\frac{1}{3}$ भाग इसके साथ मिला है जिसमें दोनों ओर सात-सात (१४) पंक्तियाँ हैं। शेष $\frac{2}{3}$ भाग अप्राप्य है। इसी प्रकार आगे पत्र १४ का ऊपर का $\frac{1}{3}$ भाग नहीं है, जो ७ पंक्तियों का टुकड़ा है। आठवीं पंक्ति के कुछ अक्षर भी उसी के साथ गये हैं। पत्र १३ के $\frac{1}{3}$ भाग के एक ओर छंद ३६१ का अन्तिम भाग है और दूसरी ओर ऊपर छंद ३८७ समाप्त होता है। और नीचे छंद ३६१ आरंभ होता है। पत्र १४ के प्राप्त $\frac{1}{3}$ भाग के आरंभ में छंद ३६५ समाप्त होता है। इस छंद का आदि भाग अप्राप्य टुकड़े में रह गया है। यह $\frac{2}{3}$ भाग वाला पत्र दूसरी ओर छंद ४०२ पर समाप्त होता है। आगे ७०७ छंदों तक एक ही विषय चलता है, जहाँ अंत में 'राश केसु चरित्र' समाप्त लिखा है। आगे 'राजा विलासन शुक चरित्र' आरम्भ होता है, जो ६८ छंदों में समाप्त होता है। इसके आगे आरम्भ होने वाले समय का नाम नहीं है। परन्तु, २८ पत्रों तक के हांशिये पर 'कनवज्ज' लिखा है। शेष पत्रों के हांशिये फट गये हैं। इसके प्राप्त पत्र १४ से ३१ तक हैं।

पत्र १३ के $\frac{1}{3}$ का प्रथम पृष्ठ

.....राजह ।

एकति सूदि आषारि एकति मांडि गय गयारह ॥

पुरतानेर उरह कटार करि परिग षेत तुरन न जिय ।

जिहि जूध मूध चहुवान सू प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥ ३६१ ॥

परबु गूँज गहिलोत नाम गोयंद राजवर ।
 दाहिमुं नरसिंघ परबु नगवर जाशधर ॥
 परबौ चंद पुंडीर वदन पिथ्यौ मारंतु ।
 सोरंग सारंग परबु असिवर भारंतु ॥
 क्रूरमोराय पालनदे बंधव तीन निहट्टिया ।
 कनवज्जराय पहिलि दिवस सुमिसत्त निघट्टिया ॥ ३६२ ॥
 पजूनह उपरहि राज प्रथीराजरा पुंतु ।
 गरूओ राउ गोविंद धाय अघायस संतु ॥
 चाय चित्त चहुवांन कीन कींतु कर उभु ।
 रा रंडा दिल्लीरी आज लडि मन दुभु ॥
 धाराधिनाथ धारंग धर.....कीनु रुदन ।
 चामंडराज मुक्यु सुग्रह रषन छिति छत्रीअ दहन ॥ ३६३ ॥
 अरध रयन चंदनी अरध अंगि अंगिया ।
 मो.....

[आगे सब फट गया है]

पत्र १३ के ३ का द्वितीय पृष्ठ

.....गुन सुधारस ।
 तुमहि क.....ति राज प्रथम कारण काम कस ॥
 हम काज आज शिर उपरि बाग धार रा..... ।
 ...ज चूराय दिल्लीय सुधी दु.....मर सजि दल ॥ ८७ ॥
 मिं जान्यो पहिलूत एह कारण कत राजन ।
 मरण पखिक कयमास मत जानि नही जाजन ।
 म.....पकरिय सब लोकह सो जानिय ।
 एह कथ पहलूणि शनशान मई बांनिय ॥
 मृत्यु शु एह कारण प्रथम.....प्रथीराज किय ।
 षंड सु अब अरी हरउ कशि लोक सुजीतु काजि जिय ॥ ८८ ॥

दोहा

संजोगिनि तनि निरषि, सुफल जम्म नृप मांनि ।
 काम कसाए लोअने, हन्यो मदन सरतानि ॥ ८९ ॥

सुधि भूली संग्राम की, भूली अपनी देह ।

जो न भया वसि पंगुदल , सुभयो वाम वसि नेह ॥ ६० ॥

तेम चरन कर मुष उर, विकसत कमल अका- ।

..... ॥ ६१ ॥

पत्र १४ का १-आठवीं पंक्ति से-

.....लान..... ॥

हराय जामाते घ पमारतथ ॥

शासनु पूर दिशि पुच्च पंच । रष नह राज सजि सुसंच ॥

नार नाह कत पामार जित्त । उदित उदोत्त रषि सुमित्त ॥

हाहुलीराज हंमीर तथ । जघील राउ भीमानीय पथ ॥

धनपति दिशि रषि सुधीर । अप अप परिगह जुत्तवीर ॥

बंधव हरण तोमर पहोर । बधेला सुलष नवं लषसार ॥

द्वि बंधह डंश म अल्ह सूर । महण शीपी परिहरि राहपूर ॥

पश्चिमि दिसा सजिधीर सार । भजंनह जूह गय मत्त भार ॥

पामार शलष आजोन बाह । चहुवांन अत्तत्ताई उधाह ॥

चालुक बिभम्भ माहा अभंग । बदरी देव खिची प्रसंग ॥

बार डह शीह अभंग भार । दध्यिणी दिसां सजि सूरसार ॥

अनि २ दिशि शामंत सूर । रषह सुरकु हय गय सपूर ॥

सहस एक २ शत एक सथ । शबभृत उच्च नीचेह उथ ॥

अप २ भृत शामंत सब । पठए काज जल गंग तब ॥

कमधञ्ज भृत मध्ये वराहि । आनयुअपमे देवताहि ॥

मुष पाय पाणिअ दोलि वारि । अवये अप आतम अधारि ॥

करि सुनत शंति शामंतराज । चित्ति सु इष्ट भर स्वामि काज ॥

प्रउध बधि सजि वाजि शब । अशौन तांन अप्पह अथव ॥

ख्खंग मृत के दिअ सीस । अस्तेमि षेट केबिन परीश ॥

मारश वेदि पंगुरह सेन । गज्जि निसान हय गय गुरेन ॥ ६५ ॥

दोहा

चित्त अति चिंता तपि सज्जि राय कमधञ्ज ।

जिके सुमटवर अपनि फिरिता संकत रज्ज ॥ ६६ ॥

संजोगि शयन प्रथीराज भू, वजिहि लाग निसान
 कायर विधूति..., सुरति बंझहि मान ॥ ६७ ॥
 मोवि निसंक संभरि नरिंद । परप्य सुपंग संकयो सुरिंद ।
 प्रथीराज कामत संजोग ॥
त हिंसहि के कान ।
 चपे चंग दिसी निरहि धुरि निसान ॥
 सिंधूर मारु मलकोश संगीत (तान) ।
 सूरिसूर अनंद कायर कंपान ॥
 पंचास कोस रुंधिय धरनि ।
 मिल्लान मधि . चहुवांन धनि ॥
 कचिकिय चार बुल्यो बिसदु ।
 सिंघ जिम जग्य सुनि श्रवन सदु ॥ ६८ ॥

दोहा

विरुदावलि वल्लत जग्यौ । पिय संजोइ कौ कंत
 कंदल रस रति नयन । क्रोध सहित विहसंत ॥ ६९ ॥

छंद सारस

इशी रीत प्रगाशी । मंडल सामंत मासी ॥
 कबिन किलोल काशी । श्रुस्त्र गानि वासी ॥
 पारसं रजि चंद्र । तार संते न संद्रं ॥
 करतरा कति बंधि । सूर छुटि बल बंधि ॥४००॥

छंद त्रोटक

छुटि बंद निशा प्रगटी प्रगटी । मिलिटनीमल रह सुघटी ॥
 निश मान निशानहुअं । धूअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं ॥
 नव निभरथ बरयं बनयं । गजबजि तश जितयं घनयं ॥ .

पत्र १४/२

निजंक छरिअ छरियं तनयं । करि २ जनयं जनयं ॥
 करि सारद नारदयंनदयं । शिर सजन ममयं सदयं ॥
 निज निर्भय रावहु आन मनं । किरनी भिराजति सूर जनं ॥ ४०१ ॥

गाथा

शत भट किरणहि सूरु । पूर रा रेणि सुग आयेस ॥
जोगिन पूर पति सूरु । पारश मिसि पंति पंग रायेश ॥ ४०२ ॥

[यहाँ से बंद मुरिल्ल आरंभ होता है]

पत्र २०/२

छंद भुजंग प्रयात

जिते सार साधा रिजु शारि दृट्यु । मनुं आवनं मेख संसार उट्यु ॥
फटी फुज्ज आवाज शापंग राई । मृगि जांनि मागध भिव पघाई ॥
बजी हक्क हंकार भेरी । जुरी रोष सेना फिरी लाज वेरी ॥
धज बीर बिरषशा बंबरेशा । लगि सीस सामंत शाअंमरेशा ॥
उडि गिध आवध दृटि उतंगा । किन कि श्रुता जीवि कि हस्ति चंगा ॥
भटकिं श्रुधायं श्रुरायं हवाई । मनुं मारुतं मत्त आई ॥
फिरि चक्क चहुआन की हाक बज्जी । मनौं प्रोट मत्त निवोटा सुलज्जी ॥
इशी कंत चहुआन करि केलि रती । फिरि जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
दहं कोह सीस्वामि आराम छुट्टी । पल्लि पंगरा शेन आवत उट्टी ॥ ५४१ ॥

कवित्त

पत्र २२/२

परतषिभ चलुक्क गहकि रा पंग सेन सब ॥
राज राव सांग देव आइयो तपि तब ॥
सहस तीन तीन असवार धार धारा समथं ॥
नृमलं नेह स्वामिसिंघ पावहि सुहथं ॥
नाइंयौ सीस नमि पंग कह दईय सीख पहुउचकर ॥
उपारि जंग निज सेन सम भले प्रसंषह अपमरा ॥ ८४ ॥

पत्र १८/१-२

कनवाज्ज समय का अंतिम छंद

दो० कु०

जोर शर शनन अलंदिय अधर दुराय दुराय ।
एशा दुज दुज कंत निकरु सषिन सुनाय सुनाय ॥ ७०४ ॥

हीइ सुचि सुचि टालजि मनह सुघल विथला कंपितै ।
 न नटिकीय नहंनह जियत मरत मिलि मैत कछौ ॥
 अजब तुम मत भुरस । श्रुतिराज न हुंकिति दसन कुचित हसन ॥
 न तुट ताटक न (त ?) । भगत कियन बिगुरह तम वत ॥ ७०५ ॥
 श्रुति राजन हुंकित हसन । कुब्रित हशन नयन ॥
 तुति ताटकन भंग । किय नग बिगुरह तमवन ॥ ७०६ ॥
 इति रश तिथि दह पंच विशि निशि । मुष अशम शरघात ।
 कुल ग्रीषम श्रीषम मुषनि । पावश प्रसन प्रभात ॥ ७०७ ॥

इति श्री कवि चंद्र विरचिते रास केमु चरित्रं समाप्तं ॥ ॐ ॥ श्री ॥ श्रीरस्तुः कल्याण मस्तु ॥ ॥

इसीसे आगे-

अथ राजा विलासन शुक चरित्रं लिख्यते

आदि-

सुरिह

उत्तर पश्य असाठ पवित्रं । आद्रा मंडल मंडि नपित्रं ॥
 दांत भोग फल इहलष्टि गतिय । विलसन राज करै नव नितिय ॥ १ ॥

क०

इक जोस धन मद । मदराज मद वारुनि ॥
 अरु मद देह अरुज । संग नव वनिता तारुनि ॥
 अरु बंधन पतिसाह । पैज कनवज्र संपूरिय ॥
 एता मद राजान । दुखदं दह कर दूरिय ॥
 आनंद कंद उमण तनह । संजोगी सर हंस सरि ॥
 जानिन राज अस्तम । उदय महि जीवन भानै सुपरि ॥ २ ॥

अन्तिम-

चौपाई

पत्र ३१/१

नृप पर दुष्य अलप्य जु कीनी । ज्यौ बरि गय तर फे रहि भीनौ ॥
 दुष निद्रा निसि घटिअ आई । तिहि नृप संज संपन्नौ पाइ ॥ ६५ ॥
 अति सुष संकुल बरष तिय । रितु रितु ए आचार ॥
 बिलसित बिन ग्रीषम अधर । सुपन सुराज विचार ॥ ६६ ॥

भावी गति आगम बिगति । की भेटन सम नरच्छ ॥
 राम छुधिष्टिर और नल । तितही परी अवच्छ ॥ ६७ ॥
 मान करै मति हीन वर, जोवन धन तन रूप ।
 कौन कौन ह्वै नीबरें, बिनां ग्यान रस कूप ॥ ६८ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथीराज रास के भोग विलासे श्रुक चरित्र वर्णन
 संजोगिता चेष्टा इच्छनि आग्र अथिम प्रस्ताव समय ४१ मः संपूर्ण ।

इसीसे आगे का समय जिसका नाम नहीं दिया—

दूहा

साष लाष षटलाष दर, सजिति रजतपुर इंद ।
 मनुहुँ सूर सामंत मुष, दिष्यिय चंद कविंद ॥ १ ॥

पत्र ३१/२ इसी पत्र का अंतिम—

गा०

जंदे ही तोदुषई, दुषह सुष सरीर, दुषच्छन अनं सुबतं, कीय असोक निद्धिय ॥ ८१ ॥

दो०

सत्तम बरष सज्जिव, अरष दीह अनसै सन्वड ।
 वृद्ध तीय अरू थिर अरथ, देह विधि न लषि दिव्व ॥ ८२ ॥
 राजन सुक मुच्छन बिगति भाया.....

प्रति-२ । आकार- १२" x ८" । पत्र-४० । प्रत्येक पत्र पर ३६ पंक्तियाँ
 और प्रति पंक्ति में ३१ । ३२ अक्षर हैं । इसमें केवल निम्नलिखित समय हैं:-

१. इच्छनि रूप वर्णन	चौथा समय २२ छंद
२. बालुकराय	पाँचवाँ समय १४४ ,,
३.	छठा समय १८२ ,, (अपूर्ण)

इसको भट्टारक श्री यशोदेवमूरि ने उदयपुर में संवत् १७६१ पौष वदि १४ को
 लिपिकृत किया ।

इसीके साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं :-

१. शाहजहाँ जीवन चरित्र
२. सुन्दर शृंगार

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति-३ । इसमें ६८ समय हैं आकार-- १४" × ६३" ।

प्रत्येक पत्र पर २८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति पर लगभग ३२ अक्षर हैं ।

लिपिकाल-संवत् १८०६ साके १६७४ प्रवर्त्तमाने । आसोज शुक्ला ६ सोम-
वार । लिपिकार-हठीराम का पुत्र शंभुराम ।

इसके अंत में यह विज्ञप्ति दी हुई है—

मिलि पंक जगत उदधि ॥ करद काल रनी ।
कोटि कवी काज लह ॥ कम कटि कर्ते करनी ॥
हि तिथि संप्या गुनित ॥ कहे कक्काव वियानै ।
इहं श्रम लेषन हाण ॥ भेद भेद सोइ जानै ।
इम कष्ट ग्रंथ पूरन करय ॥ जन वंमत्रा दुष ना लहय ।
पालिये जतन पुस्तक पवित्र ॥ लिषि लेषक बिनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस योइ ॥ चंद्र कवियन कर दिद्विय ॥
छद गुनीते तुदि ॥ मंद कवि भिन भिन किद्विय ।
दे संदेस बिप्यरिय ॥ मेलगुन पार न पावय ॥
उद्विम करि मेलवत ॥ आस बिन आनय आवय ॥
चित्रकोट रांन अमरेस त्रप ॥ हित श्री मृष आयस दिया ॥
गुन ब्रान करुन उदधि ॥ लिषि गसो उद्विम कियौ ॥ २ ॥

दोहा

लघु दीर्घ ओष्ठो अधिक, जो कछु अंतर होइ ॥
सो कवियन मुप्य सुद्ध तों, कहौ आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इति विज्ञप्ति ॥ ॥ इति श्री कविचंद विरचिते राजा श्री प्रथिराज रासके राजकुंवर श्री रचयनसी
पट्टाभिषेक दिल्ली नगर वासं गोरी साहाब गोरि धरनं बिनै साह पातसाह तषत करनं परस्पर जुद्ध जुरनं ॥
दिल्ली जौहर जरनं ॥ राजा श्रीरयनसी मरनं ॥ राजा जैयचंद गंगासरनं प्रस्ताव संपूरनं समापत ॥
॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु, श्री उदैपुर नगरे महाराजाधिराज महाराणां श्री प्रतापसिंघजी विजेराज्ये
लिषावितं राज श्री भाट पूरब्या गोते रावजी श्री रामचंदजी ॥ ततपुत्र सकल कवि सिर छत्र सकल
चंडि सिरोमनि ॥ रावजी श्री श्री श्री श्री सुषरामजी ॥ चिरंजीवि कुंवरजी श्री भेमचंदजी ॥ चिरंजीवि
कुंवर श्री मुरलीधरजी पठनारथं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु ॥ सुभंभूयात् ॥ श्री ॥ संवत् १८०६ वर्षे ॥
साके १६७४ प्रवत्तमाने ॥ आसोज मासे सुक्ल पंच्ये ६ तीर्थौ सोमवासरे ॥ लिप्यंत दसपुर जाति पंडित
हठीराम ततपुत्र पंडित संभूरामेण लिख्यतंमिदं पुस्तकं ॥ लेषक पाठक चिरंजीवि ॥ श्री श्री श्री
श्री श्री श्री ॥

॥ श्लोक ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा । तादृशं लिखितं मया ।

यदि श्रुद्धंभमसुद्धं । मम दोषो न दीयते ॥

समयों की सूची-

- | | |
|-----------------------------|----------------------------|
| १. आदि पर्व सम्यो | २. दसम सम्यो |
| ३. दिल्ली किल्ली सम्यो | ४. लोहानो आजान बाह सम्यो |
| ५. आखैटक वीर वरदान सम्यो | ६. नाहरराम सम्यो |
| ७. कंन्हाण्य पट्टी सम्यो | ८. मेवाती मुगल सम्यो |
| ९. हुसेन कथा सम्यो | १०. चित्ररेखा सम्यो |
| ११. आखेट चूक सम्यो | १२. भोलाराय सम्यो |
| १३. सलष जुद्ध सम्यो | १४. इच्छिनि व्याहसम्यो |
| १५. मुगल जुध सम्यो | १६. पुंडारी दाहिमी सम्यो |
| १७. भोमि सुयन सम्यो | १८. दिल्लीदान सम्यो |
| १९. माध्ये भाट सम्यो | २०. पदमावती सम्यो |
| २१. प्रथा व्याह सम्यो | २२. धन कथा सम्यो |
| २३. होली सम्यो | २४. दीपमालिका सम्यो |
| २५. सिसिब्रता सम्यो | २६. करनाटी पात्र सम्यो |
| २७. देवाग्र सम्यो | २८. रेवातट सम्यो |
| २९. अनंगपाल सम्यो | ३०. कैमास युद्ध सम्यो |
| ३१. घध्वर नदी सम्यो | ३२. पीपा युद्ध सम्यो |
| ३३. करेहमा युद्ध सम्यो | ३४. इंद्रावती सम्यो |
| ३५. जेतराव सम्यो | ३६. कंगुरा जुद्ध सम्यो |
| ३७. हंसावती सम्यो | ३८. पोहडराय सम्यो |
| ३९. बरुन कथा सम्यो | ४०. सोमवध सम्यो |
| ४१. पञ्जून श्रोग सम्यो | ४२. पञ्जून चालुक सम्यो |
| ४३. चंद द्वारिका सम्यो | ४४. भीम वद्ध सम्यो |
| ४५. संजोगता पूरब जन्म | ४६. विनय मंगल सम्यो |
| ४७. सुक वरन सम्यो | ४८. बालुकाराय सम्यो |
| ४९. पंग जग्य विद्वेसन सम्यो | ५०. संजोगिता नेम सम्यो |
| ५१. हासी जुद्ध सम्यो | ५२. दुती हांसी जुद्ध सम्यो |

५३. पञ्जून महोबा सम्यो

५५. सामंत पंग सम्यो

५७. कैमास वध सम्यो

५९. दिल्ली वरनन सम्यो

६१. षट ऋतु वर्णन सम्यो

६३. सुक चरित्र सम्यो

६५. आषटक चम्प सम्यो

६७. बान बेध सम्यो

५४. पञ्जून विजय सम्यो

५६. समर पंग सम्यो

५८. दुर्गा-केदार सम्यो

६०. जंगम कथा सम्यो

६२. कनकचम्प सम्यो

६४. धीर पुंडीर सम्यो

६६. बडो जुद्ध सम्यो

६८. राजा रेनसी सम्यो

प्रति-४ । अन्तिम भाग-

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

पुष्पिका

चिरजीवो श्रोतान । हाम मन वंक्षित पूरय ॥

चिरजीवो श्रोतान । दुष आप दल चूरय ॥

चिरजीवो श्रोतान । पुत्र परवार सहेतो ॥

चिरजीवो श्रोतान । दान कवियन जन देतो ॥

हय पाट ठाट भंडार भरि । आस भास सफल फलय ॥

धरि ध्यान जोग साधन जुगति । जराम्रत्फलन नां कलय ॥

उसके नीचे वही विज्ञप्ति दी हुई है जो ऊपर तीसरी प्रति में आ चुकी है। परन्तु इसमें केवल ३३ समय दिये गए हैं। जिनकी सूची इस विज्ञप्ति के नीचे ही उसमें दे दी गई है। सूची इस प्रकार है:-

क्र० सं०	समय (प्रस्ताव)	छंद सं०	क्र० सं०	समय (प्रस्ताव)	छंद सं०
१.	तोंथर पाहा रूपक	८१	२.	करुण कथा रूपक	३३
३.	सोम वध रूपक	८६	४.	पंजून मोहव रूपक	१९
५.	पूजून विजै रूपक	२८	६.	चंद द्वारिका रूपक	८९
७.	कैमास युद्ध रूपक	७१	८.	भीम वध रूपक	१४२
९.	संयोगिता पूर्व जन्म रूपक	१४२	१०.	सुक वर्णन रूपक	१८
१२.	बालुकाराय रूपक	१९	१३.	जग्य विध्वंसन रूपक	१७
१४.	संयोगिता नेम रूपक	५५	१५.	हांसी प्रथम जुद्ध रूपक	८९
१६.	हांसी २ जुद्ध रूपक	११३	१७.	पंजून महुवा रूपक	२६
१८.	पंजून छोगा रूपक	३५	१९.	सामंत पंग रूपक	१३५ ?
२०.	समर पंग रूपक	६०	२१.	कैमास वध रूपक	१८७

२२.	द्रुगा केवार रूपक	१६८	२३.	दिल्ली वर्णन रूपक	५७
२४.	जंगम कथा रूपक	५४	२५.	षट्तरितु वर्णन रूपक	५७
२६.	कनवज्ज रूपक	१३८४	२७.	सुक चरित्र	१०१
२८.	धीर पंडीर	३१२	२८.	आषटक..... ?	१६
३०.	समरसी दिल्ली सहाय	४६	३१.	बडी लड़ाई रूपक	८६०
३२.	बांन वंध रूपक	३४८	३३.	ग्यनसी रूपक	११२

प्रति-५

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

यह उपरोक्त चौथी प्रति का आधार ज्ञात होती है। यह जीर्ण होने से चौथी प्रति में इसकी प्रतिलिपि की गई हो ऐसा संभव है। क्योंकि दोनों में कोई अंतर नहीं दीख पड़ा। इसके आरंभ और अंत के पत्र फटे हैं।

आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ६ $\frac{३}{४}$ " । प्रति पत्र की पंक्ति संख्या-२५ । प्रति पंक्ति की अक्षर संख्या-३५ ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(७) भीम विलास । रचयिता-किशना आढ़ा । आकार-१०" × ८" । पत्र-२०२ । पत्र-७१७ । रचना काल-सं० १८७६ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(८) मधुमालती । रचयिता-चतुर्भुजदास निगम ।

प्रति-१: आकार-६'७" × ४'२" । पत्र-संख्या २६ । पत्र-संख्या ८८३ । लिपिकाल-सं० १७६२ ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

प्रति-२: आकार-११" × १०" । पत्र-संख्या ६६ । इसकी लिपि बहुत सुन्दर है तथा इसमें राजस्थानी कलम के ७६ बहुरंगी चित्र हैं। लिपिकाल-सं० १८२० ।

[सरस्वती भण्डार भींडर]

प्रति-३: आकार-११" × ६" । पत्र-संख्या ११४ । पत्र-संख्या १२५ । बीच बीच में गद्य वार्ता भी है। इसीसे इसका शीर्षक 'मधुमालती की वार्ता' है ।

[अन्ताणी संग्रह]

(६) माधवानल । रचयिता-कुशललाभ ।

प्रति-१: आकार-१०'२" • ४'१" । पत्र-संख्या २२ । पद्य-संख्या ५५०
गाथाएँ । लिपिकाल सं० १७१६ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं० १६५७ ।

प्रति-३: लिपिकाल-सं० १७८६ ।

आदि भाग-

देवि सरसतिइ सुमति दातार ।

कासमीर कमलासिनी, ब्रह्मपुत्र करि वीण सोहइ ।

मोहण तरवर मंजरी, मुख मयंक चिहुँ भवण मोहइ ॥

पय-पंकज प्रणमी करी, आणी मणि आणंद ।

सरस चरित्र श्रंगार रस, पमणिसु परमाणंद ॥

अन्तिम भाग-

संवत १६ लोतरे, जैसलमेरि मभारि ।

काण्ण सुदि तेरसि, विरची आदितवार ॥

गाहा गूढा चौपइ, कवित कथा संबंध ।

.....॥ ३६ ॥

कुशललाभ वाचक कही, सरस चरित सुप्रसिद्ध ।

जे वांचे जे संभलि, तिही मिले नव निद्धि ॥ ३७ ॥

× × ×

राउल माल सुपाट घर, कुंवर श्री हरिराज ।

विरंची एह श्रंगार रस, तास कुतूहल काज ॥ ३८ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) राम चरितमानस । रचयिता-तुलसीदास ।

प्रति-१: आकार-११'२" × ५'२" । पत्र-बालकाण्ड १११, अयोध्याकाण्ड ६१, आण्य करण्ड २३, किष्किन्धा काण्ड २०, सुन्दर काण्ड १६, लंका काण्ड ४४, उत्तर काण्ड ४४ । लिपिकाल-सं० १८५१ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं० १८५८, वैसाख सुद ८ । बालकाण्ड का लिपिकाल सं० १८०५ ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(११) रामरासो । रचयिता-माधवदास दधिवाड़िया । आकार-
६'६" x ६" । पत्र-संख्या ६०५ । लिपिकाल-सं० १७७५ ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(१२) वल्लया सटीक । पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि' की टीका ।
टीकाकार-अज्ञात । यह भी ८" x ५" आकारवाले ६ रचनाओं के संग्रह में
संग्रहीत है । ३७ पत्रों में इस ग्रन्थ के १४६ पत्र सटीक लिपिबद्ध हैं । टीका मेवाड़ी
में है ।

आदि भाग-(आरम्भ के पाँच पद्यों में संस्कृत में प्रार्थना है)

टीका-प्रथम ही परमेश्वरजी ने नमस्कार करें छे । श्री सरस्वतीजी ने नमस्कारै ने । श्री गुरु
नमस्कारै ने । ए त्रिणि तत्व सार छे । इण उपरांत मंगलाचार कोन छे ।

दुवालो

आरम्भ मैं कीयो जेणि उपायो
गावण गुण निधि ऊँ निगुण ।
फिरि कंठ चीत्र पूतला निज करि
चीत्रा रो लागी चित्रण ॥ २ ॥

टीका-कवि कहे छे जिण मो ना उपायो । जे परमेश्वर सुगुण को निधि छे जिणरो गुणरो पार को न
पावे । मैं निगुण थका तिणका गुण गाइवा को आरम्भ कीयो ।

[स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१३) ब्रज नी दानलीला । रचयिता-ब्रह्मानंद । आकार-७" x ५'५" ।
(यह पद्मावती नी वार्ता के साथ है) । पत्र-संख्या ८ । इसके प्रत्येक पृष्ठ
पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १२/१३ अक्षर हैं । इसमें बागड़ी बोली
में गाने के १२ पद हैं । लिपिकाल-संवत् १६१८ जेठ सुदी ४ ।

आदि भाग-

गोरस लई ने गोपीका चाली वेचवा काजे ।
ओडो बांधो आवी ने वचमां ब्रजराजे ॥
मट्टकी लीधी माथडे चाली मईवाली ।

ओचीतानां आवीया वचमां वनमाली ॥
 मारग रोको मावजी आडा उमा छे आवी ।
 आव ओरी में आरडी ईम केने बालावी ॥
 मेड तारु अमे लूट स उभी रे रे में आरी ।
 सांचु जांठो तु सुन्दरी लेसु रीत हमारी ॥
 जावा दोने जादवा वाटे रोको मा वेतां ।
 अमे मला जो राषीये तंम सामु रे केतां ॥
 समझा वीना नव भालये पर नारी ने षेडो ।
 ब्रह्मानंद केरो नवे गली में लीनौ केडो ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(१४) महाराज रतनसिंहजी री वचनिका (रतन रासो) । रचयिता-
 षिडियो जगो । आकार-१०'' × ४'२'' । रचनाकाल-संवत् १५१५, वैशाख विद ६ ।

लिपिकार-मुनि गोतम रुचि (भींडर निवासी)

लिपिकाल-“संवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुल्क पद्वे १३ तिथो सोमवासरे
 ॥श्री॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमल रुचि गणि शिष्य मुनि गोतम रुचि ना लेपकः
 ॥ डंगला नगरे ॥

आदि भाग-

गुणपति गुणे गहिरं गुण ग्राह दान गुण देयनं ।
 मिद्धि ऋद्धि सुबुद्धि मधीरं मडाहल देव सुप्रसन्नं ॥ १ ॥

कवित्त

समगि विमन मित्र सगति मिद्धिदाता मग्गति ।
 वषाणुं कमधज्य पृहुवी राजा छत्रपति ॥
 जेहा चक्कवें हुआ जिण वंस नरेसर ।
 त्याग त्याग निकलंक वंस छत्रीस तणा गुरु ॥
 गजराज दियण भंजण गंजा उमै बिरूद उद्ध रे ।
 कुल भाण धरै प्रगटथौ कमध रतनमल्ल रिणमल्ल रे ॥ २ ॥
 दलपति उदयसिंघ माल गंगेव महावल ।
 बाघा सुजा जोध कमध रणमाल अणंकल ॥

चुडा वीरम सलष साष तेरह अज आला ।
 चाग तीडा छात्र हुआ कमधज्ज हाथाला ॥
 हिंदुआण तिलक हिंदु बिहद धुं हड आसासीह धन ।
 तीण पाट हूओ महिराण तन रूप भूप एता रतन ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

गाहा

कंत मृत वात सुणे कुलवंती करि हरि २ जम हरि कुलवंती ।
 कुंदण तन होमे कुलवंती कीधा चंदन मो कुलवंती ॥ ८० ॥
 इस अंग होमि विमाणें आईआ सुरती सम्ही आई करि ।
 बऊ कोड पुहप वरषा करि लिण सामि चाला संभि सुंदरि ॥ ८१ ॥

वचनिका

“तिण वे लागें बरी आकास वांणी कहायो माहाराजा रेणसा वधाइ वधोइ
 अगनि सनान करि सति पणि आइ ब्रह्म विष्णु महेसर इंद्र सुरसथि सुर विमानें कही
 महा सतीयां सम्ही जाउं धवल मंगल पुहप वरषा करि वधावो ॥”

दूहा

सावत्री उमया श्रीया आगी सामी आई ।
 सुंदर भिदिर सोवन मैं इंदिर लई वधाइ ॥ ८२ ॥
 धवल मंगल हरष वधीया नेह नवल ।
 सूर रतन सखीयां सरिस मिलिया जणि महल ॥ ८३ ॥
 कुआं सुर नर पुर उद्वरे बैकंठ की घो वास ।
 राजा रायणा भर तणो जुग अविचल जग वास ॥ ८४ ॥

पुष्पिका-

“वदि वैसाषह तिथि नवमी १५ पनरोतरे वरस ।
 वार शुक लडीआ विहद हिन्दू तुरक बहसि ॥ ८५ ॥
 जोडि भणै षडीयो जगो रासो रतन रसाल ।
 सूर पुरां सामलो भ डमोटा भूपाल ॥ ८६ ॥
 दिल्ली रावा का उजेणी रासा च्यारिजुग
 कथा रहसी कविपात्र कहसी ॥ ८७ ॥

इति श्री महाराजा रतनजी री वचनिका संपूर्णम् ॥ संवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुक्ल पक्षे १३ तिथो सोमवासरे ॥ श्री ॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमलरुचि-गणि शिष्य मुनि गोतमरुचि रा लेषक ॥ डुंगला नगरे ॥

इसमें राणा रत्नसिंह का वीरता पूर्वक युद्ध में काम आना और पद्मिनी का अन्य स्त्रियों के साथ सती होने का वर्णन गद्य तथा पद्य दोनों में है। यह वीररस का सुन्दर काव्य है।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१५) वृन्द सतसई । रचियता-वृन्द कवि । प्रति १-आकार ७" x ८" । इसमें ७१४ पद्य हैं । इसका रचनाकाल इसमें 'ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार' दिया है, जिसके अनुसार संवत् १७६१ या १७६१ ठहरता है । परन्तु वृन्द कवि का देहावसान संवत् १७८० भादों वदि ३ निश्चित है । अतः इसका रचनाकाल संवत् १७६१ ही मानना होगा ।

आदि भाग-

श्री गुरु नाथ प्रभाव तैं, होत मनोरथसिद्धि ।
घन तैं जु तरु बेल दल, फूल फलन की बद्धि ॥ १ ॥
क्रिये वृन्द प्रस्ताव कैं, दोहा सुगम बनाय ।
उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि, दृढ़ करि दिये बताय ॥ २ ॥
भाव सरल सम हुत सर्वैं, भले लगे इह माय ।
जैसे ओसर की कही, यांणी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥

अंतिम भाग-

जिय संतोष विचारियै, होइ जु लिप्यो नसीब ।
षल गुल काच कथीर सौ, मानत रली गरीब ॥ ७११ ॥
जथा जोग सब मिलत है, जो विध लिप्यो अंकूर ।
षल गुल भागे गवारनी, रांणी पांन कपूर ॥ ७१२ ॥
समै सारदो दीन को, सुनत होत मन मोद ।
प्रगट भयो यह सतसया, भाषा वृंद विनोद ॥ ७१३ ॥
संवत ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार ।
सातै ढाका सहर में, वुपज्यो पुहमि प्रचार ॥ ७१४ ॥

[स्वरूपलाल शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

प्रति २. आकार ५'५" × ४'२" । इसमें ५४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं । इसमें पद्यों की कुल संख्या ७१५ है । इसका लिपिकाल संवत् १७६८ भाद्रवा वदि ८ शनि है

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

प्रति ३. आकार- ११'५" × ८.७" । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या-७०६ । लिपिकाल सं० १६०४ ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१६) सगत रासो । रचियता-गिरिधर आस्या । आकार-११"×१०" । इसमें कुल ४३ पत्र हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । अक्षर बहुत अधिक जमे हुए न होने पर भी पढ़े जा सकते हैं । इसमें कुल ६४३ पद्य हैं । इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह तथा उसके वंशजों की वीरता का वर्णन है । इसमें रचनाकाल न होने पर भी ऐसा ज्ञात होता है कि यह रचना १७७५ के बाद की है क्योंकि भींडर में इसका रचनाकाल शक्तिसिंह के दसवें वंशधर मोहकमसिंह (दूसरे) के समय में माना जाता है । रचना वीर रस प्रधान है । ग्रन्थ डिगल भाषा में है ।

आदि भाग-

प्रथम प्रणमि सुरराइ प्रसन ? प्रणमि बले गणपति ॥
सत गुर पृण में सेव गुर । मोद दिये सुम मति ॥ १ ॥
तूरिज वंश सराहियै, भुजा धरजै बित्र भार ।
गुर धर गहिलोतां तणों, सहिये लौ मंसार ॥ २ ॥

उदाहरण-

टोल सन्बम टूकडों, भींडर हूँ कुल भांण ।
अमरो सुष राषै असंष, बित्र जोस पुम्माण ॥ ४१ ॥
धर धु'सै धन धुप्पटै, सोनिगरो छल कार ।
सारा देस दसोर रा, प्रजा आपिआ पुकार ॥ ४२ ॥
बु'ब सुणै भी आबले, भांजण खलां भटक्क ।
सन्नातह हि साजत करे, किलंबे बेखटक्क ॥ ४३ ॥

अमरौ रौदा उपरै, चाले कलि चुऊवाण ।
 दल आविआ दसोर रा, भींडर ऊगे भाण ॥ ४४ ॥
 मोरे भींडर मालजै, धर धपट्ट दे धक्क ।
 आथवलै अमरा तर्जा, किलंबे बे कटक्क ॥ ४५ ॥

अन्तिम भाग-

परि पलि अपछरा, नरो बेकुंठ पधगवै ।
 सांम्हे ले सुर भेलि, बड़ौ नर पाल बधावै ॥
 सति सकल सहि सूरों, अवर कांड सुमति न आवै ।
 जिता साथि नरपाल, सहिसा जोति समप्पे ॥
 तर वहि धरु तोर की, तैं हुआ वागम टलै ।
 मंगार सिरै करि सगत हर, महा जोति नरहर मिलै ॥ ८ ॥

[सरस्वती भंडार, भींडर]

(१७) समयसार नाटक । रचयिता-बनारसीदास । आकार-
 १०" x ४'४" । पत्र-६१ । पद्य-७२७ । लिपिकाल-सं० १७६८ । रचनाकाल-सं०
 १६६३ आसोज शुक्ल १३ रविवार ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) सोनी गरांरी वंशावली । यह ८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं
 के संग्रह में दी हुई १०१ नामों की एक वंशावली है ।

नाम इस क्रम से हैं:-

(१) आसापुरी । (२) काशिव । (३) चाहमान । (४) मरू । (५)
 श्रीवध । (६) हंसदेव । (७) मलयदेव । (८) राजपाल । (९) मस्तकराव । (१०)
 पुत्रमासार । (११) माल । (१२) सत्रेसाल । (१३) भार्गनाथ । (१४) भवानीदास । (१५)
 भागीरथ । (१६) सामदत्त । (१७) जिनदत्त । (१८) रामदत्त । (१९) मानदेव । (२०)
 सूरजदेव । (२१) कामदेव । (२२) मुगधनाथ । (२३) विश्वनाथ । (२४) हरिदत्त । (२५)
 भरवदत्त । (२६) महीपकर । (२७) नारायणदास । (२८) सोमदास । (२९) नरवद । (३०)
 विश्वेश्वर । (३१) पुरुषदेव । (३२) विजयचंद । (३३) अजितसेन । (३४) वेरसेन । (३५)
 रूद्रसेन । (३६) नरसिंहदास । (३७) ईसरदास । (३८) गुणनाथ । (३९) अरवदपति । (४०) सोमेश्वर
 (४१) जांगलू । (४२) महीपाल । (४३) समरसीध । (४४) रातुल । (४५) अनय-
 सिध । (४६) उदयसिध । (४७) विजयासह । (४८) गुल्ल । (४९) बसिलदेव ।

(५०) अमर गंगेय । (५१) अनयसिंघ । (५२) बाहमदे । (५३) चाहमदे । (५४) सोमेश्वर
 ग्रीथीराज । (५५) वासुदेव । (५६) सामंतराज । (५८) नरदेव । (५९) विक्रम ।
 (६०) अजैराज । (६१) आनों । (६२) वल्लभराज । (६३) दुर्लभराज । (६४)
 चंदनराव । (६५) गोवलराव । (६६) विधराज राव । (६७) सिंधराव । (६८) लाषण ।
 (६९) चीतो । (७०) बालण । (७१) सोही । (७२) मरेदराउ । (७३) अन्हल्ल राव
 (७४) जींदराज । (७५) आसराज । (७६) मणिराव । (७७) आल्हण राव । (७८)
 कात्रू । (७९) समरसी । (८०) जागदेव । (८१) अरसी । (८२) उदैसींघ । (८३)
 जसोवीर । (८४) कर्मसी । (८५) चाविगेद । (८६) सामंतसी । (८७) कानूमदे ।
 (८८) मालदे । (८९) रिणविर । (९०) वणवीर । (९१) लोलो । (९२) सतो ।
 (९३) बीमो । (९४) रणधीर । (९५) अखयराज । (९६) भाणजी । (९७) नारायण
 दासजी । (९८) महाराज श्री चतुर्भुजजी । (९९) महाराज श्री गरीबदासजी । (१००)
 महाराज कुमार श्री जगतसिंहजी । (१०१) कुमार श्री कीर्तिसिंघजी ।

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१६) अलंकार आशय । रचयिता-रामकरण कविराय । रचना
 काल-सं० १८५७ विजय दशमी रविवार । आकार-१० $\frac{३}{४}$ '' × ७'' । पत्र-संख्या
 १६ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति प्रकित में २३ अक्षर हैं । छंद-
 संख्या ६७ ।

आदि भाग-

दुहा

वरन वसन वाहन विमल, विध विध विमल विचार ।
 बंदौ वर बानी वने, विमल वरन विस्तार ॥

अन्तिम भाग-

अतिसयोक्ति रूपक जहाँ, केवल ही उपमान ।
 कनक लता पर चन्द्रमा, धरे धनुष छे बान ॥
 संवत् अठार सतावनो विजय दशम रविवार ।
 अलंकार आसय जु यह भयो गन्ध अवतार ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(२०) अलंकार रत्नाकर । रचयिता-दत्तपतराय और वंशीधर ।

लिपिकाल-सं० १६२८ । आकार-११'५'' . ८'७'' । पत्र-संख्या ६६ । प्रथम ६ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है और शेष पर ग्रन्थ का विस्तार है । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५/२६ अक्षर हैं । छंद-संख्या २१६ । इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह संवत् १६२८ में दशोरा पुरुषोत्तम द्वारा महाराणा शम्भूसिंह के लिये लिपिवद्ध की गई । लिपिकार ने जिस ग्रन्थ से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है उसकी सूचना ग्रन्थ के अन्त में लाल अक्षरों से इस प्रकार दी है-“या पुस्तक लिखाणी पारसोली रावजी श्री लछमणसिंहजी की पुस्तक सों । सौधौणी मोगडै हरदानजी मंडायचरी पुस्तक सों । ”

ग्रन्थ के आदि भाग से ज्ञात होता है कि उक्त दोनों लेखकों ने इस ग्रन्थ का निर्माण महाराणा जगतसिंह के लिये किया था । ग्रंथ अलंकारों को समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं । क्योंकि प्रत्येक छंद की उसके साथ ही गद्य में विशद व्याख्या की है इसके अतिरिक्त इसकी एक और विशेषता यह है कि व्याख्या में अन्य कवियों के उदाहरण भी उद्धृत किये गये हैं ।

आदि भाग-

दोहा

नवत सुरा सुर मुकुट महि, प्रतिबिंबत अलि माल ।

किये रत्न सब नील मनि, सो गनेम रत्नपाल ॥ १ ॥

अथ देशाधिप वर्णन

उदयापुर सुर पुर मनौ, सुरवर श्री जगतेस ।

जिनकी छाया छत्र बसि, कीनौ ग्रन्थ असेस ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सवैया

कवि खेलत फाग सुनारिन संग, अनंग तरंग महा सरसै ।

तिहे दूटति मोलिय माल विसाल, उरोजन तैं करकैं परसै ॥

गिरि भूमि गुलाल तैं लाल भये, सु तो दारिम जानि सुवा करसै ।

लखि सों यह साहजहाँ जगनाह के, दान ही की महिमा दरसै ॥ २१६ ॥

“एहां कवि की समृद्धि कहि याते उदात्त अलंकार” उदात्त के आश्रयसों मोती गुलाल करी लाल भये येह तद्गुण अलंकार । ओर इही लाल इरू याके भ्रम को समर्थकता यातें काव्यलिंग अलंकार । सो इहां एक ही लाल शब्द करिकें तद्गुण अरु काव्य लिंगन को सूचन हे । याते दुहुन कों एक वाचकानुप्रवेश संकर अरु भ्रांति अलंकार । एक वाचकानुप्रवेश संकर अरु भ्रांतिमान अलंकार । इन दुहुन मिलिके उदात्तालंकार की सुन्दरता कीनी । याते अंगांगी भाव संकर ॥ एसी कवि की संपात्त सोई कार्य अरु साहजहाँ को दान महिमा सों कारन ए दोह धरे है याते हेतु अलंकार । अथवा प्रश्नोत्तर छते कवि की संपत्ति करि साहजहां की संपत्ति प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा ॥ अथवा दुहुनी संपत्ति प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर । ऐसे तीन हुं अलंकारन को संदेह संकर ॥ कवि की संपत्ति वर्णन तहां देत अजोग ही जोग या लछन ते सम्बन्धातिसयोक्ति के अरु उदात्तालंकार के एक वाचकानु प्रवेश संकर अरु कवि संपत्ति ओर राजा को दान ताको वरनन सोइ अत्युक्ति अलंकार सो एक वाचकानु प्रवेश संकर वाके आश्रय सों कवि की संपत्ति रूप कार्य की द्वारा राज संपत्ति रूप कारन प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा कवि संपत्ति ओर राज संपत्ति दोऊ प्रस्तुत होई तो प्रस्तुतांकुर सों इहाँ अप्रस्तुत प्रसंसा अरु प्रस्तुतांकुर से संदेह संकर सों राजा की संपत्ति वर्णन उदात्तालंकार व्यंग है ताको एक वाचकानु प्रवेश संकर ॥ ऐसे इन तीनहु एक वाचकानु प्रवेश संकरन को सम प्राधान्य संकर है ॥ जो पे इन तीनहु संकर भांझते कोऊ काहुको अंग नाही या प्रकार इन च्याहु संकरन को संकर है ॥ उदात्त (१) अतिशयोक्ति (२) तद्गुण (३) काव्यलिंग (४) भ्रान्ति (५) हेतु (६) अप्रस्तुत प्रसंसा (७) प्रस्तुतांकुर (८) अत्युक्ति (९) ऐसे ना हुं अलंकार या सबैया में धरे है ऐसे ओर दू उदाहरन विचार लीज्यो ॥

[कविराव मोहनसिंह, भटियानी चोहट्टा, उदयपुर]

(२१) अलंकार चन्द्रिका— रचयिता—हरिचरणदास ।

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ एक स्थान पर प्राप्त हुईं । यह जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के ‘भाषा-भूषण’ के अलंकार खंड की टीका है । प्रथम प्रति का आकार १२" x ७" ६" है । लिखित पत्रों की संख्या ८३ है । इसमें प्रथम तीन पत्रों पर ‘भाषा-भूषण’ का ‘नायका-भेद’ प्रकरण समाप्त हुआ है । चौथे पत्र से ‘अलंकार चन्द्रिका’ आरम्भ होती है । ग्रन्थ ४६८ छंदों में समाप्त होता है । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । शैली की दृष्टि से कवि ने पहले पद्य में लक्षण प्रस्तुत किया है, फिर गद्य में उसकी टीका की है और अन्त में बिहारी और मतिराम के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं । ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर ‘भाषा-भूषण’ में दी गई गणपति की प्रार्थना को व्यक्त करने वाला एक सप्तरंगी चित्र भी है, जिसका चित्रणकाल संवत् १६१० दिया गया है । चित्र शुद्ध राजपूत शैली का है ।

इस ग्रन्थ की रचना संवत् १८३४ में हुई और संवत् १९१० में राव बख्तावर-सिंह ने अमरचन्द ब्राह्मण द्वारा लिपिबद्ध कराया ।

द्वितीय प्रति का आकार ६" × ६" है । इसमें ३६ पत्र हैं । अन्त के अन्य ५ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है । इसमें गद्य में टीका नहीं है । केवल दोहों में लक्षण और उदाहरण है । इसके पश्चात् कुछ महत्त्वपूर्ण अलंकारों, ध्वनियों, रीति आदि पर ६४ पत्रों से प्रकाश डाला गया है । विभिन्न भेदों सहित ११८ अलंकारों के लक्षण सोदाहरण २१४ पत्रों में दे दिये गये हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं । परन्तु यह प्रति प्रथम प्रति की भाँति न तो लिखावट में सुन्दर है और पूर्ण ही । पाठ भी कहीं कहीं अशुद्ध है ।

ग्रन्थ के आदि भाग में टीकाकार ने इस प्रकार अपनी भिन्नता प्रकट की है :—

भाषा भूषन ग्रन्थ कों, किय जसवन्त नरेस ।

टीका हरि कवि करत है, उदाहरन देवेस ॥

जहाँ सु चन्द्रालोक में, भाषा भूषन विरुद्ध ।

उदाहरण सूत्र— लच्छ सुलच्छन केरि तहि, करत सुहरि कवि सुद्ध ॥

(२२) कवि दर्पण—रचयिता—ग्वाल कवि । रचनाकाल—१८६१ । आकार—१०" × ४" । पत्र-संख्या ८० प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । अक्षरों का लेखन सुन्दर, मोटा, जमा हुआ और नागरी है । रीतिकाल की शैली पर लिखित यह एक आलोचनात्मक ग्रन्थ है जिसमें काव्य-दोष का बड़े सुन्दर ढंग से विवेचन हुआ है । कवि ने यहाँ गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग किया है । सारे ग्रन्थ को सात 'क्रान्तियों' में विभाजित किया है । ग्रन्थ के विभाग और छन्द इस प्रकार हैं:—

प्रथम क्रान्ति	पद पदां दोष निर्णय	६० छन्द
द्वितीय "	वाक्य दोष निर्णय	८४ छंद
तृतीय "	अर्थ दोष निर्णय	६३ छंद
चतुर्थ "	रस दोष निर्णय	२६ छंद
पंचम "	दोषैकता करन	३३ छंद
षष्ठ "	दूषोद्धारक वर्णन	५७ छंद

ग्रन्थ के आदि भाग के पहले कवित्त में शंकर की प्रार्थना है और दूसरे दोहे में सरस्वती की । तीसरे दोहे में कवि ने अपना और ग्रन्थ का परिचय दिया है—

बंदी विप्र सुगाल कवि, श्री मथुरा सुष धाम ।

प्रगट कियो या ग्रंथ को, कवि दरपन यह नाम ॥ ३ ॥

चौथे दोहे में कवि ने रचनाकाल दिया है—

“संवत् ससि^१ निधि^२ सिधि^३ ससि^४, आस्विन उत्तम मास ।

बिजै दसमि रवि प्रगट हुअ, कवि दरपन परकास ॥ ४ ॥

पाँचवे दोहे में कवि ने खलों के मुँह पर ‘कुलफ’ (ताला) लगाकर सज्जनों की प्रार्थना करते हुए सातवें दोहे में अपनी शैली प्रकट की है—

“उदाहरन दुषनन पै, इक इक अपनो राषि ।

फिर पुराने कविन कै, रखिहौ कवित सुसाषि ॥ ७ ॥

इस ग्रंथ से यह सिद्ध होता है कि कवि ने यहां एक आलोचक के रूप में रीति काल की शैली में एक क्रांति उपस्थित की है । आलोचना के इतिहास में यह ग्रंथ एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । जो इसकी शैली से स्पष्ट प्रकट होता है । अपने समय तक प्रचलित लगभग ४० रीति ग्रंथों, नाटकों तथा अन्य ग्रंथों का अध्ययन कर कवि ने यह ग्रन्थ तैयार किया है, जिनकी सूचि हम नीचे देंगे । एक ओर तो कवि ने प्राचीन लक्षण ग्रंथों की शैली को स्थान दिया है और दूसरी ओर अपनी नवीन शैली को । सबसे पहले पद्य में लक्षण की स्थापना की गई है, फिर उसकी गद्य (वार्ता) में व्याख्या की है । इसके बाद कवि ने स्वरचित उदाहरणों से पुष्टि करते हुवे उनको भी गद्य में व्याख्या करदी है । इसके पश्चात् अन्य ग्रन्थों से उदाहरण देकर उनकी भी व्याख्या कर, अनेक प्रश्नोंत्तरों द्वारा शंका समाधान की है । अन्य ग्रन्थों से दोष पूर्ण उदाहरण लेकर उनकी भी विशद व्याख्या करदी है । कहीं कहीं कवि ने गद्य में भी वाक्य बनाकर अपने मत की पुष्टि की है ! इससे हमें कवि के व्यापक अध्ययन के साथ ही साथ विषय को समझने की क्षमता और उसे व्यक्त करने की योग्यता का परिचय मिलता है । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है ।

अथ पद-दोष

कवित्त

श्रुति-कट्ट-गत-संस्कृत अप्रयुक्त और
 असमर्थ फर निहतारथ न आनियै ।
 अनुचितार्थ लीजै ना निरर्थक अवाचक ॥
 तीनों असलील को बचावहु'र मानियै ॥
 राषौ ना संदिग्ध अप्रतीत ग्राम्य ने पारथ
 दोष कहे त्रीदस ये पद के प्रमानियै ।
 गत संस्कृत असमर्थ औ निरर्थक
 त्रै सागि दस दोष वाक्य हूँ मै पहिचानियै ॥ १ ॥ २७

वार्ता

“गत संस्कृत आदि ये तीन दोष छोड़िकै और श्रुति कट्ट इत्यादि जे कवित्त में है ते दस दोष वाक्य हूँ मैं होत हैं । अथ नाम जुत लखन-लख लिखियत है—

कवित्त

कर्न कुट अट द्रुत वर्न तिय कीनो कुष
 गत संस्कृत सव्दा सुद्ध तीनि हारा है ।
 होय सव्द सुद्ध पै अवन्यौ अप्रयुक्त कहै
 जिश्रु पति नीको तो यै बारि डारा है ॥
 द्वर्थ ख्याती थोरो बहु थोरो है असमर्थ
 धूमि घन परसत अम्रत की धारा है ।
 राषौ अप्रसिद्ध द्वर्थ मै तो सोई निहतार्थ
 पीबै मकरंद अलि चन्द को अपारा है ॥ १ ॥ २८

वार्ता

कर्न कट्ट इति ‘अट’ कहियै नहीं, है टवर्ग जामै और जे वरन है तेहुत होय कान कों कडये लगै । प्रमानः—काव्य प्रकास की टीका—काव्य प्रकाशादर्श ना नंदी पुरुषास्ती.....।

याको अर्थ

“कठोर और व्रज तन करि कै जो उच्चार करियै ओज गुण व्यजकम् संजोगी वर्ण ओ दुषद होय कानन कों जो पद श्रुति कट्ट कहियै ।”

इहाँ प्रश्न

“स्याम कन्हार्है जुन्हार्है प्यारे इत्यादि पद संजोगी है ये भी कर्न कष्ट भये चाहियौ ।”

“अैसेई पदन के जुदे करिये को कहा है । संजोगी भी होंय औ तीव्र प्रयत्न करि उच्चारन करियै होय ताको उदाहरन ‘तिय कीनो कुष’ कुष को कोप, कुष की ठौर रिस कहै तो दोष नहीं ।
अन्यत्र:-काव्य रसाइन ।

आगे ‘काव्य रसायन’, ‘बिहारी’, ‘रसिक-प्रिया’ कृष्ण को समर’ आदि कई ग्रन्थों से उद्धरण लेकर गद्य में सब की विशद व्याख्या करके स्पष्ट किया गया है ।

ग्रन्थ में कवि ने इसी प्रकार निम्न कवियों और ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं:-

- | | |
|-----------------------------------|---|
| १. काव्य रसायन | २१. गीत गोविन्द (संस्कृत) |
| २. बिहारी सतसई | २१. दयानिधि |
| ३. कवि प्रिया | २३. श्री पति सुकवि |
| ४. रसिक प्रिया | २४. रस सिरोमनि ग्रंथ (नरवर पति राम सिंघ कृत) |
| ५. श्री कृष्ण को समर | २५. दास कवि |
| ६. लेख काव्य प्रकाश (भाषानुनाद) | २६. राम चंद्रिका |
| ७. काव्य-प्रकाश (मूल संस्कृत) | २७. रसिकानंद |
| ८. काव्य प्रकाश. (टीका संस्कृत) | २८. कुमार सम्भव (संस्कृत) |
| ९. सभा प्रकाश | २९. दुलह कवि |
| १०. ठाकुर कवि | ३०. वीर चरित्र नाटक (संस्कृत) |
| ११. प्रेम तरंग | ३१. रत्नावली (संस्कृत) |
| १२. कविवल्लभ | ३२. कर्पूरमंजरी (संस्कृत) |
| १३. फुटकर | ३३. रस मंजरी (संस्कृत) |
| १४. रस चन्द्रोदय | ३४. लालकवि |
| १५. रस राज | ३५. प्रवीनराय |
| १६. लेख रसरहस्य (भाषानुवाद) | ३६. काव्य-प्रदीप (संस्कृत) |
| १७. लेख कवि वल्लभ (भाषा-टीका) | ३७. भ्रांति भंजनी |
| १८. नषसिष | ३८. भास नाट्यकार (संस्कृत) |
| १९. आलम कवि | ३९. भाषा भूषण |
| २०. मोहन लीला | [कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर] |

(२३) कविता कल्पतरू । रचयिता-नान्हूराम 'कवि सागर' । आकार-
 ८" x ६" ५" । पत्र-संख्या ८२ । प्रत्येक पत्र ११-१२ पंक्तियाँ और प्रति
 पंक्ति में २२ से २७ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ में ५७३ छंद हैं । यह ग्रन्थ संवत् १६४०
 में रावल नवलसिंह के पुत्र राव मोड़सिंह ने सादरपुर में लिपि बद्ध किया । इसकी
 पुष्पिका इस प्रकार है "इति श्री सहृदय रूप जोरावरसिंह आग्या प्रमानं ग्रन्थ
 कविता कल्पतरू कृत अर्थालंकार संकर संमृष्टि वर्णनम् नाम पंचमी सापा
 ॥ संपूर्ण ॥ संमत् १६४० वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे २ द्वितिया से संपूर्ण
 लिपितम् ॥

सादरपुर में शुभ लिखित, कवित कल्पतरू जान ।

नान्दं पुत्र नवल के, आम् पुष्प सम नाम ॥ १ ॥

ग्रन्थ के अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि जोरावरसिंह ने नान्दूराम को
 'कविसागर' की उपाधि दी थी और उसने उनके आदेश से संवत् १७८८ में इस
 ग्रन्थ का निर्माण किया था । आदि भाग में ३८ छंद तक कवि ने जोरावर-
 सिंह का और अपना वंश परिचय दिया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण
 है । सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच शाखाओं में विभाजित किया गया है-

१-राजवंश वर्णन तथा शब्द अर्थ निरूपण

२-विभाव, अनुभाव, संचारीभाव आदि निरूपण

४-शब्दालंकार निरूपण

५-अर्थालंकार निरूपण

कवि ने मम्मट के मत का प्रतिपादन करते हुए लक्ष्णों को सोदाहरण
 समझाने का सफल प्रयत्न किया है । विषय के अनुसार छंद और भाषा के प्रयोग
 हुए हैं । वीर रस के छप्पयों में रासो की शैली का प्रयोग पाया जाता है ।

आदि भाग-

छप्पय

मंगल मंगल करन रूप मंगल छवि छाजत ।

बुधि विसाल गुन जाल बाल ससि भाल विराजत ॥

फरस पांनि वरदानि दुषद दानव दल षंडन ।

एक दंत निति मंत मत्त दंति मृष मंडन ॥

जिह जोग काज जगपत ही लहत-सिद्धि सिव सिद्धि तुव ।

बीर रस भूषन करन देहु उकति गन ईस तुव ॥ १ ॥

(५ छंद तक ब्रह्मा, शिव, कृष्ण, सरस्वती आदि की प्रार्थना है)

कवित्त

कुल पति मिश्र सब कविन के चक्रवर्ति,

चक्रवर्ति गावै गाथ सुनै छुम भारे की ।

नागदेव लोक तें निपुन कीनौ लोक,

नान्दंरांस जैसी मति गज मुषवारै की ॥

सुर गुर भूलि कै असुर-गुर भूलि गयें,

उदै निसिराज कै गनति कौन तारे की ।

एक मुष वारेन की कविता समान कैसें,

समता न कविता हजार मुषवारे की ॥ ६ ॥

दोहा

जोति रूप प्रगटै सुबुधि, मित्त तिम (१) अग्यांन ।

दिनकर जिम कवि पैम को, धरै जबै कवि- ध्यान ॥ ७ ॥

अथ राजवंस वरनन

दोहा

देव अंस राजा भए, रघुकुल कै अवतंस ।

लषि मत पूरव कवि- ने, वरनत हौं तिन वंस ॥ ८ ॥

छंद पद्धति

नृप ईस धर्म ग्वालेर दीन । तिन पुत्र सोढ भए अति प्रवीन ॥

सुत दुलहराय जमवाइ भाइ । दिय वड गूजर मीनां उडाइ ॥ ९ ॥

कुल तास कलस का किल नस्स । सुत हनूराय हनमंत भेस ॥

जग जान उदे तिनकै सपूत । जिन मारि लई धरनी अभूत ॥ १० ॥

जिनकै पजौन सावंत भेस । जीते कमद्ध कनवज्ज देस ॥

ता पुत्र मलैसी वड ववेक । गिरनारि आदि जीते अनेक ॥ ११ ॥

बीजल नरेस तिनकै गुरुर । नृप राजदेव तिन वंस सूर ॥

कहि कीलृणदे भय तास नंद । सुत कुंतिल लने अति अनन्द ॥ १२ ॥

सुनि जौनसीह ता पुत्र मानि । वर उदैकरण ता पुत्र जानि ॥

तिनकै नरेस नरसिंघ गाव । भुज बंधु दुतिय स्वौवृंभराव ॥ १३ ॥

स्थौ वृंभ प्रगट स्थौवृंभ भूप, तिन जुद्ध जोरि जीते अनूप ॥
जिन वंस भोज षग दांन संग, रणमल्ल तास कै रण अभंग ॥ १४ ॥

दोहा

रणमल्ल के नाथू भयो, दृतिप पंचाइण वीर ।
आसल जी सुत तीसरो, जुटै जंग तव वीर ॥ १५ ॥
पुत्र पंचाइण कै भयौ, दिन मनि देईदास ।
सुत गुपाल तिनकै भयौ, जिम गुपाल वृजवास ॥ १६ ॥

कवित्त

बारह वसस कै संधारी बड़ गूजरानि,
तीन बेर खेत परधौ चावले लराई को ।
पूरव में मारधौ बलषटा को फवजदार,
दलि डारधौ दल जो वरार पति साई को ॥
ठौर २ खगावल जीति के गुपालदास,
पायौ मान भूपतै किताव खताई को ॥ १७ ॥

दोहा

सुत गुपाल के द्वै भये, इक गनि भोपतिराव ।
कदौखतसी दूसरो, रिण से तिनको चाव ॥ १८ ॥
भीम रूप भोपति तनय, रावत राघोदास ।
फतेसिंघ हूंगर प्रवल, अरि कुल करने वास ॥ १९ ॥

कवित्त

मिच्छुक कै कर दांन को देखत ललि छिपावत लोग भए हैं ।
जैवत एते रसोई में आयकें वात में टाक कै पात गए हैं ॥
षग गहैं कहि कौन वचै जस के सुत तैं सब आइ नए हैं ।
रावत राघवदास के वास तैं दुज्जन वास धरान एए हैं ॥ २० ॥

दोहा

बड़ गूजर बल षंडि कै, भूडों लयो छिनाइ ।
मीना मारधौ वारि को, फते फतेसिंघ पाइ ॥ २१ ॥
फतेसिंघ कै केसरी, सिंघ सिंघ के माइ ।

चतुरसिंघ बल करि प्रबल, पुनि सुजानसिंघ गाइ ॥ २२ ॥
 अचलसिंघ अरू देवसिंघ, फूलसिंघ मन मांनि ।
 महुकमसिंघ पुनि अजबसिंघ, हिन्दू सिंघ जग जानि ॥ २३ ॥

छप्पय

फतेसिंघ के राव देवसिंघ देव प्रगट्टिव ।
 बीदरपति बल भीम खगावल दुज्जन बल घट्टिव ॥
 राम काम आसाम धाइ धौकल धर किन्नव ।
 कवर किसन के वैर बेगि दुज्जन सिर लिन्नव ॥
 बहु वर जट्ट मारे अघट, सोधि वृज सब सुद्ध किय ।
 आ वैरी नाथ विसनेस कौ, जीति जंग तिन जोति दिय ॥ २५ ॥

दोहा

देवसिंघ कै कँवर प्रिय, वषतसिंघ जुभ्भार ।
 जोरावरसिंघ जोरवर, अरि मारे गहि सार ॥ २६ ॥
 कवर उदै बषतो कवर, कोकि लियो करतार ।
 मेव मारि रेणागढी, भूक्यौ राव भुभ्भार ॥ २७ ॥
 जुद्ध काव्य विद्या सकल, इत्यादिक पढ़ि धीर ।
 इमि प्रवीन पुहुमि भयौ, जोरावरसिंघ वीर ॥ २८ ॥
 विदर बड़ाई ग्रन्थ रचि, कहैं कबीसर गाइ ।
 सो प्रसाद जयसिंघ कौ, लीज्यो सब जग पाइ ॥ २९ ॥

छप्पय

दए धवल पुरधाव वीर जोरावर रूद्धिव ।
 सांभरि सैद संघारि बेत परि घाइल उद्धिव ॥
 जट्ट पट्ट दहपट्ट जट्टमंडल वसि किन्नव ।
 आत्रै गढ़ गंजाइ धाइ हाडा हठ खिन्नव ॥
 अरि आड तोडि आडावला-मेर घेर सब जेर किय ।
 वन गिरहि मेदि जयसाहि वलिण कहा कहिं गु लाज लिय ॥ ३० ॥

कवित्त

लीनै तीन लोक भार करतार राज लहै
 कहैं वेद गाथा मैं प्रमान मत वाहि कौ ।

दीनों करतार नरलोक भुज भार सब
 दिली पातसाह कौ जनम धनि ताहि कौ ॥
 दिली पातिसाह पातिसाही धंम जानि करि
 सौंय्यौ जयसिंघ भुजभार पातिसाहि कौ ।
 दीनों जयसिंघ महाराजि राज-भार सब
 जोरावरसिंघ मोर जानि कै सिपाही कौ ॥ ३१ ॥

दोहा

जोरावरसिंघ जोरवर, लखि जयसिंघ नरस ।
 राज-भार सौंय्यौ सरस, थप्यौ मालवा देस ॥ ३२ ॥
 किला रामगढ़ निकल इक, गांव भानपुर चार ।
 तहां कविन कौ करि सभा, कीनों कवित विचार ॥ ३३ ॥
 तहां बाघोरा भाट इक, चंद नंद सुप्रधाम ।
 वासी गढ़ आमीर कौ निज कवि न्हान्दूरांम ॥ ३४ ॥
 तिन कवि कौ कीनों हुकम, सब सुष दै सुष पाइ ।
 रस कविता भूषन बलिन, वरनौ ग्रन्थ बनाइ ॥ ३५ ॥
 हुकम सकति सम पाइ कै, मंमट मत को पाइ ।
 वरनौ कविता कलप तर, ग्रंथ वाम ठहराइ ॥ ३६ ॥
 मन चिंतत फल कलपतरु, सेवत देत बताइ ।
 जिन रस भूषन बहुलहै, कवित कलपतर गाइ ॥ ३७ ॥
 संवत सतरह सत सुनौ, वरष अटवासी जानि ।
 नवमी आदि अषाढ़ पख, रचना ग्रन्थ प्रमांन ॥ ३८ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

हुकम समान कीनों कविता कलपतर
 पाइ इत तामैं भेद कवि रस मीनों हैं ।
 चौप करि चाह सौं सुनत भए भिन भिन
 ताही वे रचित कौ उमंग और कीनों हैं ॥
 जोई जोई चाह्यौ सोई दीनों मनचित फल
 बहुरि जगत सांभ असी जस लीनों द्र ।

नान्दुरांभ कवि को किताब कवि को
जोरावरसिंघ धीर रीभि करि दीनों हैं ॥ २८६ ॥

दोहा

पुषि अष्टमी भूमि सुत, कातिक आदिक पाष ।
सबै ग्रन्थ पूरन भयो, पूरन कवि अभिलाष ॥ १६० ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२४) कविप्रिया—रचयिता—केशवदास । प्रति १ । देखो भाग १, (२२)

प्रति २ । आकार—७" x १४" । पत्र-संख्या—२१ । पत्र-संख्या—६८ ।
दशा-जीर्ण ।

[अन्ताणी संग्रह]

प्रति ३ । आकार—११½" x ८" । प्रति अपूर्ण है । अतः पत्र-संख्या १ से ८ तक अप्राप्य है; और फिर ६ से १४ तक वर्तमान है; १५ से १६ तक अप्राप्य है; और फिर २० से ३५ तक वर्तमान है । रचना ३५ पृष्ठ पर समाप्त होती है जहाँ उसका लिपिकाल “संवत् १७४० वर्षे शाके १६०५ प्रवर्तमाने महा मांग्यल्य प्रद पोष मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां तिथौ भौमवारे श्रीमेडता गद्ये लिखावतं पंचौली श्री अचलदासजी अत्मार्ये चीरंजीव शुभं भवतु ॥ लिखतंम शेन सांवलः ॥”

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(२५) कविप्रिया टीका । टीकाकार—हरिचरणदास । रचनाकाल—
संवत् १८३५ मघ शुक्ल ५ । आकार—१२" x ६" । पत्र-संख्या ११२ । श्लोक-
संख्या—७१२५ ।

अथ कवि की स्थिति

राजत सुबे विहार में, हैशरनि सरकार ।
सालग्रामी सुर सरित, सरजू सोम अपार ॥ १ ॥
सालग्रामी सरजू तहँ, मिली गंग सो जाय ।
अंतराल में देस है, हरि कवि को सरसाय ॥ २ ॥
परगना ‘गोआ’ तहाँ, गाँव चैनपुर नाम ।

गंगा सों उत्तर तरफ, तहाँ हरि कवि को धाम ॥ ३ ॥
 सरजूपारी द्विज सरस, वासुदेव श्रीमान ।
 ताको सुत श्रीरामधन, ताको सुत हरि जान ॥ ४ ॥
 नवा पार में गाम है, बढ्या अभीजन तास ।
 विस्व सेन कुल भूपकर, करत राज कवि भास ॥ ५ ॥
 मारवाड़ में कृष्णगढ़, तंहं नित सुकवि निवास ।
 भूप बहादूर राज है, विरदसिह जुवराज ॥ ६ ॥
 राधा तुलसी हरि चरन, हरि कवि चित्त लगाय ।
 तहाँ कवि प्रियाभरन यह, टीका करी वनाय ॥ ७ ॥
 सत्रसो छयासठि महीं, कवि जो जन्म विचारि ।
 कठिन ग्रंथ सूधो कियो, लै है सुकवि निहारि ॥ ८ ॥
 संवत् अठारह सौ त्रिते, पैतिस अधिके लेषि ।
 साक अठारह सौ जपै, कियो ग्रंथ हरि देषि ॥ १४ ॥
 माघ मास तिथि पंचमी, शुक्ला कवि को वार ।
 हरि कवि कृति सौ प्रीत हो, राधा नन्द कुमार ॥ १५ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२६) कविवल्लभ । रचयिता--हरिचरणदास । आकार--१२" x ६.२" ।
 पत्र-संख्या ६१ । पद्य-संख्या ४३० । विशेष देखो भाग १ (२४) ! इसमें कवि ने
 गद्य में व्याख्या भी दी है । कवि ने बिहारी-सतसई, कविप्रिया, श्रुति भूषण
 साहित्य दर्पण आदि के उदाहरणों के साथ जो उदाहरण दिये हैं उसमें अपने एक
 स्वरचित ग्रन्थ "मोहन-लीला" से भी उदाहरण दिये हैं जो अब तक अप्राप्य है ।

सूचना--इसीके साथ 'काव्य चंद्रिका' भी है ।

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२७) काव्य कुतुहल । रचयिता-चित्रसाल । लिपिकाल संवत्
 १६२५ पोष कृष्णा ११ गुरुवार । आकार--६" x ६.५" पत्र-संख्या २७ । प्रत्येक
 पत्र पर ६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ अक्षर हैं । अक्षर जमे हुए हैं और
 लिपि नागरी है । छंद--संख्या २१४ । यह पिंगल तथा रस का एक लक्षण ग्रंथ है ।
 ग्रन्थ ब्रज भाषा में है ।

आदि भाग-

दोहा

जय बांनी दांनी सुमति, कविता कर वर पंथ ॥
चतुर रसन रचना रचै, काव्य कुतूहल ग्रंथ ॥ १ ॥
गोकुल सुतैलंग कुल, गुर मुरलीधर पाय ॥
बंदन कै चातुर रचत, भाषा सहज सुभाय ॥ २ ॥
कवि कविता लखन सहित, बहुरि प्रयोजन जान ॥
काव्य अंग पुनि भेद कौ, बरनौ प्रथम प्रमान ॥ ३ ॥

उदाहरण-

(अथ-वियोग)

अब वियोग के भेद बखानौ । पूर्वानुराग रूचिर हम प्रमानो ।
ईरषा स्नाप विदेस विभागो । उदाहरो पूर्वानुरागो ॥ ६५ ॥

(पूर्वानुराग-यथा बरवै)

गगरी लग लग बगरी चित ही चाही
सगरी पग गुन अगरी हित ही हाही ॥ ६६ ॥

(हास्य)

हास्यालंबन जानि विदूषक तिह अंगत उद्दीपो ।
दग संकोच अनुभाव सुनी मुदत अलस संचारि समीपो ॥ ६७ ॥
हासी इनके व्यंग ह्वै नृप कवित्त ।
हास्य सुरगनि चातुरनि के चित्त ॥ ६८ ॥

उदाहरण

जल थल भ्रम पर उचक रत, लषि रहै सबै मुसकाय ।
जानि फटक थल परत (जु) जल, मेंह सबै नृपराय ॥ ६९ ॥

(ओज)

कटि सुर्वन सुख सरेफ संग । गुन ओज चोज जिहि रूधिर अंग ।
पुनि ओर बीर रस को भुवन्न, लखिब गाम गोड सगो सुवन्न ॥ ३ ॥

प्रसाद

आमा सै सुनत हि अर्थ तास । कहिये प्रसाद गुनको प्रकास ॥
चित्त चहै भलो जन गूढ़ जानि । साँचो सु एक हरि ध्यान ग्यानि ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२८) काव्य सिद्धान्त । रचयिता -सूरति मिश्र । रचना काल-संवत् १७६८ काति सुद ७ बुधवार । आकार-६" × ७" ५" । पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५ अक्षर हैं । अक्षर नागरी हैं । छन्द-संख्या १५० । यह प्रति जोधपुर राव बागजी के भतीजे जीवराजजी की प्रति से संवत् १६३२ वैशाख बुद ५ गुरुवार को महत्तापसिंह द्वारा सलूम्बर में लिपि-बद्ध की गई ।

आदि भाग-

दोहा

श्री वृन्दावन मधि लसै, नित वय नवल किसौर ।
गौर स्याम अभिराम तन, दंपत संपत भौर ॥ १ ॥
कवि ताहि को कहत है, समझे कविता अंग ॥
बृज सविता गुण जो चहै, तो छवि ता प्रत अंग ॥ २ ॥

काव्य लक्षण

वरनन मन रंजन जहाँ, रीत अलौकिक होय ॥
निपुन कर्म कवि को जुतह, काव्य कहत कवि कोय ॥ ३ ॥

उदाहरण-माधुर्य-

दोहा

रौद्र रस-

आलंबन मधि रौद्र अरि, चिरत उदीपन धार ॥
भू भंगादि अनुभाव हैं, उग्रतादि संचारि ॥ ११३ ॥
जग के विषई नरन को, सदगत वरनी नाछ ॥
बृज बालन कै गुन रटै, तेऊ सदगत माछ ॥ ११४ ॥

अन्तिम भाग-

‘शब्द अर्थ तिनु धात मय, जीव सुरस आनन्द
अलंकार सौ कान्त है, अंग अंग मत छन्द ॥ १४७ ॥
गुन जु सुरतां आदि गुन, रीति भलन सुनुधीर ॥
दौष अंध पंगादि विन, जानो काव्य सरीर ॥ १४८ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२६) छंद पगो निधि । रचयिता-महाराज कुमार मदनसिंह 'मदनेश', भींडर । रचनाकाल- १६२६ । आकार-कुल्सकेप । पत्र संख्या ४५ ..। छंद संख्या १३६ ..। यह ग्रंथ रचयिता के जीवन काल में समाप्त न हो सकने के कारण अपूर्ण ही रह गया है । इसमें एक जै मंगल अश्व का चित्र तथा अन्य पताका तालिकादि के चित्र और कोष्ठक भी अंकित हैं ।

आदि भाग-

दोहा

विघन हरन मंगल करन, लंबोधर उर ध्याय ॥

तवै वाज कछु कीजिये, तुरत सिद्ध दरसाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

धारा वणे जु च्यारिकौ, रगन चंद गुरु जानि ॥

छंद निर्गला जगत गुरु, पिंगल सीखि प्रमानि ॥ ५ ॥

धारा छंद उदाहरण

दूत आयो । पत्र लायो ॥

भोग डारौ । जोग धारौ ॥ ६ ॥

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(३०) छंद प्रकास । रचयिता- दानदास दयाल । आकार-६" x ६" । पत्र-संख्या ५६, जिनमें प्रथम १६ पत्र अप्राप्य हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । ३२ से ५६ पत्र में कमल बंध, वृक्ष बंध, चश्मा बन्ध, जहाज बन्ध आदि ३७ चित्र हैं । इसमें रचयिता ने एक ही छंद में लक्षण और उदाहरण दे दिये हैं और साथ ही दादू पंथ की भावनाओं को भी व्यक्त किया है ।

उदाहरण

छापय

करिये एक दस प्रथम, त्रयोदस फेरि लगावत ।

इहि विधि कल चौबीस, चार पद काव्य बनावत ॥

रचि द्वै पद अवसान, पंच दस तेरह आनय ।

उल्लाले की रीतिमत, बसु बीस बखानय ॥
यह कष्टों नाग खग नाह सों, छप्पय छंद अनंद सो ।
जब ह्वै अनन्य भगवत भजे तब छूट हिं भव फंदसों ॥ ५३ ॥

इन्होंने कुल ७८ छंदों का उल्लेख किया है । शेष ३७ बाह्य अलंकारों के विभिन्न छंद हैं

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(३१) छंद प्रबन्ध पिंगल भाषा । रचयिता— भंडारी उदेचंद । रचना-
काल संवत् १६३६ आषाढ़ विद ३ । आकार—१० $\frac{३}{४}$ " × ७" । पत्र—संख्या १७,
प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २६ अक्षर हैं । पत्र—संख्या १५० ।

आदि भाग—

दुहा

विघन हरने वांछित करन, श्री मदिष्ट गुन गाय ।
रचना छंद प्रबन्ध की, रची सबन सुषदाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

दुहा

सब देसन में लसत है, मरधर देस विसाज ।
तहां तखतगढ़ जोधपुर, तपे मान महिपाल ॥ २८ ॥
ग्रन्थ बन्यो ता देस में, नगर नागपुर मांहि ।
बुधजन समुझि सराय है, यामे संसय नाहि ॥ २९ ॥
कंठ कर लहि ग्रन्थ यह, अर्थ मर्म निरधार ।
सो सब छंदन ग्रंथ को, ह्वै है वारा पार ॥ ३० ॥
परम देव नखान में, ओरन ऐसे बोध ।
चाहे सो विधि सकल ह्यो, तैमे फिर कछु सोध ॥ ३१ ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(३२) छंद रत्नावली—रचयिता हरिराम दास निरंजनी । रचना काल—
संवत् १७६७ में डीड़वाना में लिपि संवत् १६३० में रामरतनदास द्वारा भांडर
में । आकार १२" × ७ $\frac{१}{४}$ " । पत्र संख्या—२६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और
प्रत्येक पंक्ति में १६ अक्षर हैं । छंद—संख्या ११० ।

आदि भाग-

दोहा

गुरु जन पति गोविन्द को, नाय सीस हरि राम ॥
 पिंगल मत भाषा विषे, रचत रुचिर परकाम ॥ १ ॥
 मात्रा बरन बिभेद करि, द्वे विधि लौकिक छंद ॥
 पिंगल आदि आचार जन, कहे बांधि पर वंद ॥ २ ॥

अंतिम भाग-

दोहा

जिहि अर्थ करि कबित को, चिमतकार मन होय ॥
 अलंकार तिहि नाम को, कवि धारो सब कोय ॥ १०७ ॥
 छंद नाम कृत भेद लखि, कविजन माँनहु वेद ॥
 के देशान्तर रीति है, के आचारज भेदि ॥ १०८ ॥
 ग्रंथ छंद रत्नावली, सारथ याको नाम ॥
 भूषन भारती ते भरथौ, कहे दास हरीराम ॥ १०९ ॥
 संवत्सर ७ नव १ मुनि ७ शशी, १ नव नवमी गुरु भांति ॥
 डीडवान दढ़ कूप तट, ग्रंथ जन्म थल जानि ॥ ११० ॥

[सरस्वती भंडार, भींडर]

नोट:—इसी ग्रंथ के साथ जयपुर महाराज प्रतापसिंह 'ब्रज निधि' कृत भट्टहरि शतक की टीका भी दी गई है ।

(३३) छंद विवेक—रचयिता—कवि जयनारायण । रचना काल—संवत् १८६२ वैशाख शुक्ल ३ गुरुवार और संवत् १८३४ फाल्गुण शुक्ल ६ बुधवार को गोरजी मोतीराम द्वारा बाँसवाड़ा में । आकार १२" x ७" ६" पत्र संख्या—२२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं । छंद—संख्या १२१ ।

ग्रन्थ की वर्तमान दशा उत्तम है । ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि लिपिकार ने महाराजा रावत मोतीसिंह राजगढ़ वाले की आज्ञा से इस ग्रन्थ की प्रति लिपि की और प्राप्त प्रति इसकी प्रतिलिपि है । बीच बीच में कवि ने अपने आश्रयदाता उमर नरेश का नाम दिया है ।

आदि भाग-

दूँ हो

याहि पढ़ै तें जानि है, छंदनु रचन विवेक ॥
नाम धर्यो या ग्रन्थ को, याते छन्द विवेक ॥ १ ॥
लगु-गुरु-छुत गन आठ हैं, सब बानी में लीन ॥
याते इनको प्रथम ही, करत विचार प्रवीन ॥ २ ॥

‘अथ लगु विचार’

जा अक्षर के बिन्दु नहीं, परै न होहि संजोग ॥
एके मत सों लगु लिषे, सरल रेष कवि लोग ॥ ३ ॥

उदाहरण-

निसानी छंद

तेह पुनि दस पांच हैं, गुर अंत बनावै ।
छंद निसानी में कला, तेईस गनावै ॥
चितामनि कल वृच्छ कौ, काहे मन लावै ।
श्री उमर नर नाह को, जस जो कवि गावै ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग-

द्वात्रिंसाक्षर रूपक-घनाक्षरी छंद

चारबौ बेर आठ आने, मध्य बिसराम ठाने,
बरन बत्तीस माने, अन्त लगु कौ हे धाम ।
नारायण कहैं ऐसे, लछन बतायें जैसे,
च्यारी तुक रचे तैसे, सोहत गुनन ग्राम ॥
ऊमर नरेस जहाँ, रावरो मनत इमि,
सु कवि लहत मोज, पुरन सकल काम ।
जाति गुन आगरी है, अति सुख माघरी है ।
रूपक घनाक्षरी है, सेस मत याको नाम ॥ १६ ॥

दोहा

पिंगल मत बहु छंद हैं, कहे कोम पे जात ॥
वरने कछुक जथा सुमति, जे मैं सुन्यो विख्यात ॥ १ ॥

पच्छि २ अंक^१ वसु^८ ससि^१यहै, संवत् माघव मास ॥
 भयो पच्छ स्वत तीज गुरु, छंद विवेक प्रकास ॥ २ ॥
 प्रगट लच्छ लच्छन सहित, कहे दुहुं बिधि छंद ॥
 नाम भेद कैते कहे, लेहु विचार कविंद ॥ ३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३४) छंदो निधि पिंगल-रचयिता-मनराषन श्रीवास्तव । रचना
 काल-संवत् १८६१ माघ शुक्ला १३ । आकार-१२'६" X ७'६" पत्र-संख्या २४ ।
 प्रत्येक पृष्ठ पर ३३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति पर २८, ३० अक्षर हैं ।

इस ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि अधो नगर निवासी कवि
 शिवदत्त कान्य कुब्ज ने संवत् १६३६ असाढ़ सुद २ शुक्र को बांसवाड़ा में कविराव
 बख्तावरसिंह के पठनार्थ लिपि बद्ध किया । ग्रंथ ब्रज भाषा में है ।

आदि भाग-

दोहा

सीता राम सरोज पद, तीनि लोक को ईस ॥
 मन राषन को दाम करि, देहु भक्ति बकसीस ॥ १ ॥

सोरठ

सुमिरत ही सिधि होइ, श्री गनेस कुंजर बदन ॥
 करहु क्रिपा मम सोइ, देहु बुद्धि संपति सदन ॥ २ ॥

दोह

सम्बत दस^{१०} वसु^८बर बसत, इकसठि^{६१} के अनुसार ॥
 भयो माघ सुदि त्रयोदसी, छंदोनिधि औतार ॥ ३ ॥
 सीतल पावन सुभग है, सोमवार है बार ॥
 करत काज सो सिद्ध है, सकल मनोरथ चार ॥ ४ ॥
 कायस्थ हैं भांडेर को, श्रीवास्तव कुल जान ॥
 हरिनारायणदास सुत, मनसुक राम प्रमान ॥ ५ ॥
 ता सुत मनराषन प्रथम, अमरसिंह लघु भाइ ॥
 करत सदा तिन पर क्रिपा, पंडित 'कवि नर' राइ ॥ ६ ॥
 बांदा है अस्थान सुम, कैन नदी जहँ वास ॥

ता में नित प्रति देखिये, पंडित सुकवि प्रकास ॥ ७ ॥
 बंदन गुरु के चरन हूँ, सीस नाई सुष पाइ ॥
 तिन्ह यह छंदो ग्रंथ को, दीनो ग्यान बताइ ॥ ८ ॥
 पिंगल माम अगस्त मत, गहि कवीस की राहि ॥
 कीन्हों छंदो वृत्ति यह, मनराषन चित चाहि ॥ ९ ॥
 चतुर वेद को अंग है, छंद सफल सुभमान ॥
 याते पढ़ियत प्रात नित, भाषत नाग सुजान ॥ १० ॥
 बेद पढ़े बिन विप्र ज्यों, अंत्यज त्यों अति दीन ॥
 तैसे पिंगल बिन पढ़ै, कवि है कहत गुनी न ॥ ११ ॥
 श्रीमुनिलाल कृपा करी, आग्या दई सु बेस ॥
 छंदन की रचना करहुँ, जिहि विधि भाषहु सेस ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग-

दीपमाल छंद-दोहा

बारह दस दस बस बिरति, चरन चरन में जान ॥
 दस चोकल इक चरन करि, दीपमाल सुष बान ॥ ६७३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३५) तखत विलास । रचयिता-विप्र शिवराम दधीचि । आकार-
 ६" × ७^३" । विषय-नायिका भेद लक्षण ग्रन्थ । रचना काल सं० १८६६ । राव
 महतापसिंह ने संवत् १९३२ अषाढ़ बुध ३ शनि को (सलूम्बर मेवाड़) सेलाना राव
 हमीर से प्राप्त प्रति से इस प्रति को लिपि बद्ध किया । ग्रन्थ ब्रजभाषा में हैं ।
 पद्य-संख्या १६६ ।

आदि भाग-

कवित्त

गुरु देव स्तुति

माया सी निसा की जहाँ नाहिन उदोत होत,
 कलिकृत तारू की न जोत लव लेस है ।
 तिमिर अहंमद सोउ डिगो न जानू किते,
 काम से उलूक नाहिं पावत प्रवेस है ॥

सिष्य अरविंद सिवराम से प्रफुल्ल भये,
चित चंचरीक गुन गावत त्रिसेस हैं ।
हेरे मैं गनेरे दूर नेरे ना सुनेरे ऐसे,
मेरे गुरुदेव श्रुप अपर दिनेस हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

बालबधू के पठन हित, लच्छन किये विचार ।
उदाहरन नाहीं कहें, ग्रन्थ बदन हिय धार ॥ १६४ ॥
मम कविता सब गुन रहित, बाल बचन सी जोय ।
श्री गुरु श्रुप प्रतापते, कान मानि हे कोय ॥ २६५ ॥
संमत निधि^१ ग्रह^२ वसु^३ महि^४, दसइ चैत्र सुकलान ।
तखत विलास भो....., रसिकन को सुखदान ॥ १६६ ॥
तखतसिंह नृप हुकमते, लहि सिवराम हुलास ।
श्रीगुरु श्रुप प्रतापते, कीनो ग्रन्थ प्रकास ॥ १६७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३६) नखसिख । रचयिता-बलभद्र ।

प्रति १: आकार-११" x ७"२" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ६५ ।
लिपिकाल-सं० १६४२ ।

आदि भाग-

मरकत को सूत, कीधों पन्नग को पूत,
कीधों राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं ।
मखनूल गुन प्राँम सोभित सर स्याम,
काम मृग कानन कि कुहू कें कुमार हैं ॥
कोप की किरनि जाल नील कंजरी के तंतु,
उपमा अनंत चारू चामर सिंगार हैं ।
कारे सटकारे भीजै सौंधे तै सुगन्ध बास,
अैसे बलिभद्र नव बाला तेरे बार हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति २: आकार-१० $\frac{3}{4}$ " × ७" । पत्र-संख्या ६७ । लिपिकाल-सं० १६३७ ।
रचना काल सं० १७६६ पौष सुदी १३, मंगलवार ।

[अन्ताणी संग्रह]

(३७) नैत्र वर्णन । रचयिता-आलम । आकार-११" × ७'२" ।
पत्र-संख्या ४ । पत्र संख्या २७ ।

आदि भाग-

जोत भरे जेति भरे जोवन जेव भरे,
भीर भरे होत जैसे वारज विहान के ।
दया भरे मया भरे हांसी भरे हसा भरे,
सोभा के सुभाय भरे जीवन जिहान के ॥
स्स भरे रूप भरे रंग भरे ससि के-से,
सील भरे तेज भरे 'आलम' सुभान के ।
विस भरे सुधा भरे लाज भरे नेह भरे,
मैने भरं मान तेरे नैन रहिमान के ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सेत संधामणी जोति अंजन धनुष साज विक्रि बिष अरून सुमन संग लाये हैं ।
प्रेम नेम सुधा धेनु सुन्दरता रमा-रंभा 'आलम' चपल बाजी काम के सधायें हैं ।
प्रीतम मद पुथरी कल्पतर पूरनता धनंत्री सुद्रष्टी गज-गतिन सुहाये हैं ।
काहि को समंद मथ देवता समर कीनो चयुदे रतन त्रिय-नैनन में पाये हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३८) नेहतरंग । रचयिता-रावराजा बुद्धिसिंह । आकार-८" × ६'५" ।
पत्र-८५ । पत्र-४६१ । रचनाकाल-सं० १७८४, भाद्रपद शुक्ल ६, चन्द्रवार ।
लिपिकाल-सं० १६२३ चैत्र वदि ६, मंगलवार ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३९) पान्डव यशेन्दु चन्द्रिका । रचयिता-स्वरूपदास आकार-
८'५" × १०'६" । इसमें १६३ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति
पंक्ति में २१ अक्षर हैं । अक्षर मोटे और जमे हुए हैं । अंत के ११ पत्रों पर एक
शुद्धि पत्र दिया गया है जिसमें काव्य में प्रयुक्त लगभग १००० तद्धव शब्दों के

तत्सम रूप दिये गये हैं। ग्रन्थ में कवि ने डिंगल, पिंगल और संस्कृत तीनों भाषाओं का प्रयोग किया है। कविता अलंकृत और रसपूर्ण है। ग्रन्थ १६ मयूखों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में ११६७ छंद हैं। कवि ने श्लोक, दोहा, सोरठा, चौपाई के अतिरिक्त पद्धरी, छप्पय, त्रिभंगी, कवित्त आदि छंदों का भी प्रयोग किया है। ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है। अतः हम कवि के उन दोहों को उद्धृत करते हैं जिसमें उसके तीनों भाषाओं का अलग अलग प्रयोग करना स्वीकार किया है।

दूहा

पिंगल डिंगल संस्कृत, सब समझन के काज ।

मिश्रित सी भाषा धरि, छिमा करिहूँ कविराज ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) पिंगल । रचियता-चिंतामनि । प्रति १-आकार-१२'६'' × ७'६''

इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्ति में और प्रति पंक्ति २० । २१ अक्षर हैं । प्रति अपूर्ण है । केवल आदि भाग दिया जाता है—

॥ अथ प्रस्थान विपरीत प्रकारांतर को प्रस्तार ॥

अंतकला सिर गुरु कौ अन । पाछैं रेख समान प्रमान ।

लगु आवैं आगैं यह जान । अस्थानिक दूजो पहिचान ॥ १ ॥

संख्या विपरीत भामह मत प्रस्तार

आदि कला संधि गुरु देसही, अगैं पाति बरोबर रही ॥

पाछैं सौं लगुसौं भर देह, यह संख्या विपरीत करेह ॥ २ ॥

उभै विपरीत दोहा

अत कला गुरु दीजिये, आगैं करिये तूल ।

पाछैं लगु सौं ले मरो, उभै नाम अनुकूल ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह]

प्रति २-आकार-१२'६'' × ७'६'' । पत्र-संख्या ३३ । पद्य-संख्या १५६ ।

लिपिकाल सं० १६२७

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(४१) पिताका लच्छन तथा षोडसक्रम । रचयिता-राव बस्तावर-सिंह । आकार-१२'६" × ७'६" । यह चिंतामणि विंगल के साथ ही लिखा है । संवत् १६३७ इसका लिपिकाल है । इसमें १० पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ । २३ पंक्तियाँ हैं, परन्तु स्थान स्थान पर मेरु, पताका (पिताका) गण आदि के कोष्ठक आ जाने से पंक्तियों और अक्षरों की संख्या कम भी हो गई है । प्रत्येक पंक्ति में २० । २१ अक्षर हैं । केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग—

चौपाई

आड़े दंड पिताका करिये, सूची एक मत्त लौ भरिये ।
अंत एक तैं निकट जु अंका, घटाउ बरे लौ निरसंका ॥ १ ॥
लैके यक गुरु के रखथाना, निकट अंक लुपि कै तर लान्हा ।
यो एक लौ घट उबरे लीजै, यक गुरु की यक पंकति कीजै ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४२) बिहारी सतसई । रचयिता-बिहारीलाल

इसकी कई प्रतियाँ देखने में आई हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है । अब तक की प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७४३ चैत्र शुक्ला पंचमी की लिपिकृत है (देखो भाग १, ७३ । (७७) । किन्तु यहाँ जिन प्रतियों का उल्लेख किया जा रहा है उनमें सबसे प्रथम प्रति किसी नथ्थमल नामक व्यक्ति द्वारा संवत् १७६८, फागुण कृष्ण प्रथम एकादशी, सोमवार की लिपिकृत है ।

आकार-८" × ५'१" । पत्र-संख्या २६ । पद्य-संख्या ७१३ ।

आदि भाग—

दोहा

मेरी भव बाधा हरा, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की भाई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

सामा सेन समान को, सबे सही के साथ ।
बाहु बलि जयसिंह जु, फतू तिहारें हाथ ॥ ७११ ॥

यो दल काटे बलकर्ते, ते जयसीध भुवाल ।

उदर अवासुर के परै, ज्यौ हरि गाय गोपाल ॥ ७१२ ॥

घर घर हिंदुनि तुरुकिनी, कहें असीस सराहि ।

पतनि राषि चादरि चुरी, तें राषी जय साहि ॥ ७१३ ॥

बिहारी रत्नाकर में संवत् १७३६ की एक प्रति का वर्णन अवश्य है, परन्तु इसकी प्राप्त प्रतिलिपि सं० १८०० की है अतः अब तक प्राप्त प्रतियों में वह सब से प्राचीन प्रति है ।

[श्री स्वरूपलालजी, जगदीश का चौक, उदयपुर]

प्रति २ । आकार-१३" × ५'६" । पत्र संख्या-१० । पद्य-संख्या-७२० ।
लिपिकाल-सं० १८६५ आषाढ़ सुद ५ भौमे ।

[स्वामी केवलराम दादू पंथी, उदयपुर]

प्रति ३ । आकार-६'५" × ५'८" सजिल्द । पत्र-संख्या ६६ । अक्षर बहुत सुन्दर और प्रति सचित्र है । चित्र दोहों की भावनाओं को प्रकट करने वाले हैं और राजपूत शैली में चित्रित हैं । ये बहुरंगी चित्र छोटे और बड़े सब मिलाकर ४३ हैं । इसकी लिपि तथा चित्रों का लेखक रामपुरा निवासी कडुजी दशोरा था । यह प्रति संवत् १८१६ अगण वदि ६ मंगलवार को लिपिबद्ध की गई ।

[जगन्नाथ वैरागी, भींडर]

प्रति ४ । आकार-६" × ६'५" । पत्र-संख्या ३३ । छंद-संख्या ६७२ ।
लिपिकाल-सं० १८४४ ।

विशेष-इसमें सभी दोहों को विषयवार छांट कर अलग-अलग शीर्षक के नीचे रीतिकाल की शैली में लिपिबद्ध किया गया है ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) बिहारी सतसई की टीका । (हरिप्रकाश) । टीकाकार हरिचरणदास ।

आकार-१२" × ८'५" । इसमें ११२ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २७ अक्षर हैं । अक्षर साफ और सुन्दर हैं । पत्रों को दीमक कूट लेने पर भ अक्षर बच गये हैं । इसका रचना काल संवत् १८३४ है और

लिपिकाल सं० १८६५ भाद्रपद कृष्णा ११ भोमवार । रचना काल सं० १८५० ।
आदि भाग-

सवैया

तुलसीदल माल तमाल सो स्याम अनंग तै सुन्दर रूप मोहार्ही
श्रुति कुंडल के मनि की भलकै मुष मंडल पै वरनी नहि जाहीं ॥
सषि दोषि पिगूष मयूष हुतें सुषमा अति आनन की सरसाही
बिहरै हरि गोप सुता संग कान्ह निसीपिनि मै बनवीथिनि मांही ॥ १ ॥

उदाहरण-

दोहा

देख्यौ अन देख्यौ कियो, अँग अँग सवें दिषाय ।

पैठत सी तन में सकुचि, पैठी चित हिल जाय ॥ १६ ॥

टीका-देख्यौ इति । सषी सों सषो वचन हे सवय हे सषि नायक कों अंग अंग दिषाय कें ।
नायक कों देख्यौ सो कियो । मानो नाही देख्यौ हैं । चित ही लजाय आपने चित में लजाय कें
अैसे वेठी आपना नन में सकुचिके पेठे हे पैठत सी । पैठत क्रिया हैं ताके आगे सी बाचक हैं यातें
अनुक्तास्पदा वस्तुप्रेच्छा ।

अन्तिम भाग-

दोहा

सालग्रामी सरजू जहाँ, मिली गंग सों आय ।

अंतराल में देस सों, हरि कबि को सरसाय ॥ १ ॥

सेवी जुगल किसोर के, प्राननाथजी नाव ।

सप्त सती तिनसो पढ़ी, वसि सिंगार बट दाव ॥ २ ॥

जमुनांतर अंगार बट, तुलसी विपन सुदेस ।

सेवत संत ग्रहंत जहि, देवत हरत कलेस ॥ ३ ॥

पूरोहित श्रीनंद के, मुनि सांडिल्य महान ।

हम हैं ताकें गोत में, मोहन मो जजमान ॥ ४ ॥

मोहन महा उदार तजि, और जाचिए काहि ।

संपति सुदामा को दर्ई, इंद्र लही नहि जाहि ॥ ५ ॥

गही अकस मनु ताततें, विधि को बंस लषाय ।

राधा नाम कहें सुने, आनन कान बढाय ॥ ६ ॥

संवत् अठारह सौ बिते, तापर तीस रू चार ।

जन्माठे पूरो कियौ, कृष्ण चरन मन धार ॥ ७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) रघुनाथ रूपक । रचयिता-कवि मंछ । रचना काल-संवत् १८६२ भाद्रवा सुद ५ शुक्रवार । आकार-८" × ६" ५" । पत्र-संख्या ७३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३, २४ अक्षर हैं । छन्द-संख्या १५०० । विंगल के रीति ग्रंथ के समान यह भी डिंगल का एक रीति ग्रंथ है । इसमें राम कथा को उदाहरण स्वरूप लेकर डिंगल के रीति-शास्त्र का प्रतिपादन किया गया है । इसकी भाषा भी डिंगल है ।

आदि भाग-

गाहा

श्री निध आगम सारँ । बास्पनयनं च ज्यान की

अखिल जगत आधारं । सारंग धरण जयो अवधेस्वर ॥ १ ॥

दूहो

चरस करत लिखमण चमर, सरस अगार सामीर ।

ईस सिय जुत जन मंछ उर, वसो सदा रघुवीर ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दूहो

जम करो आज सरवरी, सरवरी सब सिर चंद ।

काम अधमरे अधमरे, मातर मतिर मति वृंद ॥

मंछ सुकवि कीधो मुदै, निरमल भाषा नेत ।

मन रूप जति लिखियो महा, हरष मनां कर हेत ॥

पुष्पिका

राज श्री १०८ श्री अर्जुनसिंहजी का राज में लखित ब्राह्मण डुगारामेण ॥ पठनार्थ मोडजी पोथी सुखजी की छै ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४४) रसचन्द्रोदय । रचयिता-कवीन्द्र उदयनाथ । रचना काल-संवत् १८०४ । यह प्रति अपूर्ण है । इसके ४ पत्र लिखित हैं, शेष सब पत्र खाली हैं ।

प्रथम २॥ पत्रों पर ४५ छंदों में 'काव्य कुलवधु' वर्णन समाप्त हुआ है। दूसरे प्रकाश के केवल ३१ छंद ही लिखे गये हैं।

एक उदाहरण-

मध्याऽधीरा-सवैया

कुंज निकुंजनि कोतुक हेतु, फिरौ तुम श्रीफल लेत-सुठारे ।
बानन बेधत काम हमैं भरि, कोप कसीस कि कानि-किनारे ॥
पीवत हो तुमतो मदिग, हम पे मद मोहन जात सम्हारे ।
लाल जगो कितहूँ तुम रैनि, भये दग आलस लाल हमारे ॥

सूचना विशेष-देखो आचार्य शुक्लजी कृत हि० सा० इ० पृ० ३२६ तथा ना० प्र० स० द्वारा प्रकाशित आचार्य श्यामसुन्दरदासजी द्वारा संपादित हस्त-लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण पृ० १५ और १३० ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४५) रस पीयूष । रचयिता-सोमनाथ । आकार-६" x ७" । पत्र संख्या १ से १२ तक; आगे के पन्ने अप्राप्य हैं ।

आदि भाग-

छन्दे

सिंधुर वदन अमंद चंद सिंदु माल घर ।
एक दंत दुति वंत बुद्धि निध अष्ट सिद्धिवर ॥
मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीगन ।
चंचल श्रवन अनूप थोदि थिर करत मोहित मन ॥
सुर नर मुनिवर नटजोरि कर गुन अनंत इमध्याय चित्त ।
ससि नाथ नंद आनन्द करि जय जय श्री गणनाथ नित ॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(४६) रस मंजरी । रचयिता-भानु कवि । आकार-६'३" x ५'२" । पत्र-संख्या ६ । प्रति अपूर्ण है-

अतः इस विषय में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता है । पाठ भी बहुत अशुद्ध है । केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

दोहा

गुरु गणेश पद वंदि के, सारद चरन नमाय ।

बरनत हौं रस मंजरी, रसकन के सुखदाय ॥ १ ॥

सवैया

गोन विषैनत कनेत भूमै तिही पहीलै डगु आप भरी है ।

फूलन भ्रम के डरते द्रम हूँ को भुजा सिव की प्रचरी है ॥

सैन समै भ्रग छालि कि वुपरै आपुन अंग करीट करी है ।

प्रेम के भारते आ रस वंत प्रिया हरने अरधंग थरी है ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४७) रस रंग । रचयिता—ग्वाल कवि । आकार—१४'' × १३'' । पत्र-संख्या ४० । रचना अपूर्ण है । प्रथम ५ पत्र अप्राप्य हैं । इन ५ पत्रों में ७६ पद्य थे । प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर हैं । विषय का विभाजन इस प्रकार है—

प्रथम उमंग—विभाव, स्थायी भाव; अनुभव संचारी भाव, सात्विक भाव-वर्णन-१६२ छंद ।

द्वितीय उमंग—पदमिन्यादि, उत्तमादि, द्विव्यादि स्वकीया भेद मान वर्णन-११२ छंद ।

तृतीय उमंग—परकीया, गणिकादि वर्णन-७४ छंद ।

चतुर्थ उमंग—अवस्था भेद ते पंच-दस नामका वर्णन-१०७ छंद ।

पंचम उमंग—सखी लक्षण (अपूर्ण)-६ छंद । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

गच्छत पतिका मुग्धा को लक्षण

कवित्त

आयो काहू देस तै नरेस को बुलावौ बैगि,

सुनत सिधायों सीरा भोज के मिलन की ।

नाथ के चलत बटवाल नै नवायौ माथ,

हाथ में रखी हों हीय हूँ नही लल की ॥
 ग्वाल कवि कहै चाँची करसी चमक हीसो,
 रखह रही न कहूँ तन में चिलक की ।
 सीत जर सोरी खैचि मुख पे सुके सवारी,
 सासु के पीछारी खरी थारी ले तिलक की ॥ २५ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४८) रस रत्न टीका । रचयिता-सुरति मिश्र । रचनाकाल संवत्
 सातअष्टादसै (१८०० या १८०७) सावन छवि भृगुवार । लिपिकाल सं०
 १६२७ । आकार-८"६" × ७"२" । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या ७५ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४९) रस रहस्य । रचयिता-कुलपति मिश्र । आकार-कुल्सकेप ।
 पत्र संख्या-४४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । ग्रन्थ
 का विषय ८ भागों में बंटा हुआ है, जिनका क्रम तथा छंद-संख्या इस प्रकार है—

१	अध्याय	—	अप्राप्य है	
२	,,	—	शब्दार्थ निर्णय	३७ छंद
३	,,	—	शब्दनि निरूपण	६० छंद
४	,,	—	गुणीभूत व्यंग निरूपण	२२ छंद
५	,,	—	काव्य दोष	१३७ छंद
६	,,	—	गुण निरूपण	२४ छंद
७	,,	—	शब्दालंकार	४३ छंद
८	,,	—	अवसर ते प्राप्त अर्थालंकार	१८३ छंद

एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

न्यून पद लक्षण—

दोहा

जा बिनु अर्थ बने नहीं, सो पद जहाँ न होइ ।

पदम समूह व्यापार युत, कहे न्यून पद सोइ ॥ ४३ ॥

कवित्त

साजयत मोर बंदी मोरन को भोर जसु,
 गावैं ठोर ठोर हरषित जीव जन्तु है ।
 फूलत सुमन बरैं अधिक अनल आगैं,
 कोकिल मधुर सुर पढ़ैं वेद मंत्र है ॥
 वन घर अम्बर बने हैं बहु मांतिन सो,
 नर नारी पर सुत लगन को तंतु है ।
 पयो राज नयो सब जग बय भयो सोई,

मेन अरु पहुमी को व्याह को बसंत है ॥ ४५ ॥

इहाँ विरही अनल कछो चाहिये ॥ अरु द्विज कोकिल कहिये तो वेद मंत्र पढिबो संभवै जाके
 कहे कछु बिगरे नांही सो अधिक पद कहावै ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५०) रसराज । रचयिता-मतिराम । रचनाकाल-संवत् १८८० ।

आकार-५'७" x ४" । पत्र-संख्या ६० । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति
 में २० अक्षर हैं । छंद-संख्या-४२४ ।

आदि भाग-

सोरठा

श्री सुष गुरु पद कंज, वानिप जुग पद उर धरो ।
 जाते मन आनन्द विविध केलि रसराज सुष ॥ १ ॥

दोहा

होत नायक नायकहि, आलंबित सिंगार ।
 तातैं वरनों नायका, नायक मति अनुसार ॥ २ ॥
 उपजत जाहि त्रिलोकि के, चित्त बीच रस भाव ।
 ताहि बषानत नायका, जो प्रवीन कवि राव ॥ ३ ॥

सवैया

कुंदन रंग फीकी लगैं, भलकैं अंगन चारु गुराई ।
 आषिन में अलसानि चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ॥
 को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लषैं मुसक्यानं मिठाई ।
 ज्यों ज्यों निहारिये नैरे व्हे जानति त्यों त्यों परी निषरेंसि निकाई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

अनयिष लोचन लाल के याते नंद कुमार ।
मचि गई जु रषि चहि, विरहानल की जार ॥ ४२३ ॥
समुझि समुझि सब रीझि है, वचन सुकवि समाज ।
रसिकन के रस को कियो, इहें ग्रन्थ रसराज ॥ ४२४ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

नोट:— नाथूलाल हजूरी द्वारा तित्तरोद में यह ग्रन्थ लिपि बद्ध हुआ ।

(५१) रस रूप । रचयिता—ग्वाल कवि । रचना काल—? आकार—
११" x ७" ३" । पत्र-संख्या १ । पद्य-संख्या ८ ।

आदि भाग-

च्यार भुज धारी थोद थूल की थरकत भारी
बिघन प्रहारी देत दासन सुमति हैं ।
भाल चंद चंदन हैं सब जग बदन हैं
पारवती--नंदन हैं, ईस-पद रति हैं ॥
ग्वाल कवि कहैं भक्ति भाव की भरन घन
असरन सरन करन सीख अति है ।
सिद्ध निद्ध बद्धि के करैया परसिद्ध पूर,
सकल समृद्धि दैन सिद्ध गनपति है ॥

अन्तिम भाग-

वीरता लखैगे रघुबीर जू तिहारी अब
भारी परी वहस सभारी परी फंद हों ।
तोर डारी मैंने तो मृजादा जादा बादा बिन
तुम तो मृजादा पुरसोत्तम सुखंद हो ॥
ग्वाल कवि परम प्रतीत पन पारों में तो
पावत प्रतीत तुव नांव सुख कंद हो ।
मैं तो दीनराज तुम दीनानाथ रघुनाथ
मैं तो दुति-मंद तुम रामचंद चंद हो ॥ ८ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५२) रस विलास । रचयिता-माधवसिंह । आकार-१४'' × १२'' ।

इस ग्रंथ की यह प्रति अपूर्ण है । आरंभ के तीन पत्र गायब हैं । आगे २६ से ३४ तक के पत्र गायब हैं; अंत में ४२ से पत्र नहीं हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ से २२ तक पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में १८ से २८ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ के विषय की रीति काल की शैली के ही अनुसार कई उल्लासों में विभक्त किया गया है; यहाँ केवल ये उल्लास इसमें मिले हैं ।

प्रथम उल्लास-श्रंगार रसालंबन रूप नायक-नायिका वर्णन-२४८ छंद (आरंभ के ५२ छंद गायब हैं)

द्वितीय उल्लास-सखि दूति जात्यादि वर्णन-१ से ४४ तक और फिर १८ छंद हैं-पृष्ठ २६ से ३४ गायब हैं ।

तृतीय उल्लास-रस प्रसंग-१ से ३० तक छंद हैं । ३० से ६० तक गायब हैं । ६० से ६२ छंद वर्तमान हैं । उसके बाद लगभग ३० छंद और हैं, पर उनके ऊपर कोई संख्या नहीं है और लिखावट साफ न होने से गिना नहीं जा सका । यह ग्रन्थ कवि ने रीति काल की शैली पर ही रचा है । पहले एक छंद में लक्षण देकर फिर उसके स्वरचित तथा अन्य कवियों के उदाहरण दिये गये हैं । आवश्यकतानुसार गद्य में व्याख्या भी की गई है । एक उदाहरण उचित होगा:—

अथ प्रोषित पति का निरूपण

दोहा

गयो जु पति परदेस कों, होत विरहते छीन ।

प्रोषितपतिका जानिये, कविता मांभ प्रवीन ॥ १८ ॥

उदाहरण

कवित्त

फूल फूल पुंज लोनी लतिका लारज गई

कमले कमल मोंर सोर विर रायो है ।

चलि चलि सुन्दर समीर तजि सीतलता

ललित रसाल फल नालन तें छायो है ॥

होन लगे सघन जवासन के भार मधु,

दश विदिशान तेज तरुन दिखायो है ।

लेख लेख पंथ चित्त होत न निश्चित तहू,

कंतहू न आयो पे बसंत अन्त आयो है ॥ १९ ॥

चर्चा

इहां चितमनि प्रोषित शब्द को त्रिकाल वाचि लिखे है । प्रोषितपतिका प्रवत्स्यतपतिका प्रवसित पतिका । तिनके ये लखन कीने सो जाको पति परदेस सो तो प्रोषित पतिका । अर प्रवत्स्यत पतिका को लखन ये-प्रिय विदेस के गोन को उबम लखि दुख पाये । अर प्रवसित पतिकाये लखन कीनों सो—‘कहन पिऊ परदेस को अपने अंगवन देख । या प्रकार तो लख लिखे अर उत्तमादि भेद हूवि ऐसे लिखे सो प्रवास के कथन मात्र व्याकुल होय सो उत्तमा । पति को परदेस चलवो देखि दुखित होय सो मध्यमा । पति को परदेस गये पाँछे दुःखित होय सो अधमा । तब इहां प्रवसित पतिका उनमें तीसरो भेद भिन्न कैसे लियो । मध्यमा प्रोषित पतिका को लखन अरु प्रवसित पतिका को लखन एक है । ताते हम दोनों ही भेद लिखे हैं—एक प्रोषित पतिका, दूसरी प्रवत्स्यतपतिका ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५३) रसिक प्रिया । रचयिता-केशवदास । रचनाकाल-१८८३ ।

आकार-६" × ६" पत्र-संख्या ६६ ।

[सरस्वती भंडार, भीडर]

प्रति २:-रचनाकाल-१८४४ द्वितीय श्रावण सुदि ५ शनिवार । आकार-६" × ६" १/२" । पत्र-संख्या ५८ । छंद-संख्या ५४० ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५४) रसिक प्रिया की टीका—जोरावर प्रकाश । रचयिता—सुरनि कवि । लिपिकाल-सं० १६२६ । रचनाकाल-सं० १८१० आकार-१२" × १०" । पत्र-संख्या १३२ । छंद-संख्या ५६२ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५५) रसिकानंद । रचयिता—ग्वाल कवि । रचनाकाल-सं० १८७६ आकार-११" × ७" १/२" । पत्र-संख्या ४८ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ । १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ । ३६ अक्षर हैं । छंद-संख्या ३०६ । यह ११" × ७" १/२" आकारवाले चोंपड़े का तीसरा ग्रंथ है । इन पत्रों में इस ग्रंथ के तीन प्रकरण समाप्त हुए हैं । शेष ६ प्रकरण भी एक दूसरे चोंपड़े में स्वतन्त्र रूप से लिखे हुये हैं । लिपिकाल सं० १६२७ । इस ग्रंथ की रचना (काव्य के आदि भाग के कुछ छंदों से ज्ञात होता है) कवि ने नाभा महाराजा जसवन्तसिंह के आदेश से उन्हीं के लिये की ।

संवत् निधि० रिषि० सिद्धि ससि०, स्याम पत्न मधुमास ।

अदितवार सु द्वादसी, रसिका नंद प्रकाम ॥ ३७ ॥

कवि ने दो छंदों में मंगलाचरण किया है फिर गुरु की प्रार्थना की है—

श्री गुरु श्री जगदीश सुरी, श्री पति जू महाराज ।

तिन पद उज्जल विमल कों, करत प्रनाम समाज ॥ ३ ॥

चौथे कवित्त में नाभा नगर का वर्णन किया गया है । पद्य ५ से २५ तक राजवंश, तुरंग और सभा का वर्णन है ।

राजवंश का संक्षिप्त वर्णन—

लियो विक्रमाजीत तै, जिन साको जग माहि ।

वीर सालबाहन प्रगट, तिन (सम) दूजो नाहि ॥

उनरु वंश में बली प्रचण्ड फूतसिंह—उनके तिलोकसिंह जो गुरु गोविन्दसिंह का भक्त हुआ—जिसको उन्होंने सिरोपाव, वस्त्र, जयपत्र प्रदान किया, जिसके सिर पर छत्र तना—उसके राजा गुरुदत्तसिंह हुआ, जो वीर था । उसके सूरतसिंह, जो दानी और तेजस्वी था—उसके हमीरसिंह, उसके महाराजा यशवंतसिंह हुए, जिनका यश काश्मीर से दक्खिन, बंबई से मुत्तान, कारी, कतकत्ता आदि देश-देश में व्याप्त हुआ और—

माँगै जो मैगैय्या येक वार आय जाके पास,
ताको सुख संपति सों सदन छयो करै ।

वादी वनि पंडित सुनावै वाद सों हि बैठि
तोपै दोऊ वादिन को मानन दयो करै ॥

ग्वाल कवि प्रेमी प्रेम पूछिबौ करै तो ताहि,
प्रेम के पयोध में पकरि दूबियो करै ।

नाभा के नरिंद आगे कवित्त कछो करै तो
कवि ताको कविता की सिकल भयो करै ॥

अमृत धुनि—

कर कर पिट्ट कमट्ट की टक्क टक्क भये जव्व ।

पन्नगेस फन फुट्टि है अविखसत्त दधि तव्व ।

अविरखसत्त दधि तव्व वलव्वल सधर थिरचर ।

भरग गय अरि नग गय दरि अगगयथिर ॥

जगगमग जलमय भये सज्ज छंद कवि ग्वाल बर ।

जबहि कुपि जसवंत हरि जतउ मग गहि खग कर ॥ १८ ॥

ग्रंथ की वर्णन शैली कवि दर्पन के ढंग की है । एक पद्य में लक्षण देकर उसकी साथ ही साथ गद्य में टीका तथा व्याख्या भी करदी गई है ।

एक उदाहरण-पुनरुक्त लच्छन

दोहा

मुख्य अर्थ द्विबार जहँ, बिना कार्य बीजुक्त ।

ताहि वचावहु बुद्ध जन दूषन है पुनरुक्त ॥ ३५ ॥

पुनरुक्त उदाहरन

चलि चितवो चेटक मरथो, बदन चंद सुखदान ।

विधि विधितें विरच्यो विसद, चंद लखन गुनखान ॥ ३६ ॥

कवित्त

आनंद को कंद वृषभानुजा को मुख चंद,

लीला ही ते मोहन के मानस को चोरे है ।

दूजो तेसो रचिवे को चाहत विरंच नित,

ससि को बनावे अजों मन को न मोरे हैं ॥

फैरत है सान आसमान पें चढाय फेर,

पानप चढायबै को वारिध में बोरे हैं ।

राधिका के आनन की जोटन विलोके विधि,

टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरें हैं ॥

टीका

इहाँ वृषभानुजा याही पद के कहिवे ते श्रीराधाजू को बोध भयो । फेर राधिका पद न कक्षो चाहिये अर्थ पुनरुक्त होत है । फेर मुख चन्द कहिके फेर आनन कक्षो इहाँ अर्थ में पुनरुक्त भयो । फेर एक बार विधि कहि के फेर विरंचि कक्षो अह अर्थ पुनरुक्त भयो ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) रसोत्पत्ति-रचयिता-कविराव बख्तावरसिंह । आकार १२" × ७" ६"

पत्र संख्या-६ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर हैं । इसमें

कुल-पद्य ही है और जिनमें रसों का ही विवेचन है । रचना काल-

संवत् अयन' रु हर-नयन, खंड रदन गननाह ।

करी रसोत्पति बखत कवि, चैत्र शुक्ल त्रितियाह ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

अयन (भुवन) = ३, हरनयन = ३, खंड = ६ और रदन गननाह = १ ।

इस क्रम से इसका रचना काल वि०सं० १६३३ होता है ।

ब्रज-वन कुंजन बिहारी, प्यारी राधा आलंबन भूता ।

श्रृंगारा रसचारी, प्रागट्य हारी त्वं बंदेहं ॥ १ ॥

मिलि विभाव अनुभावा, सात्विक 'स्थाई' रु संचारिय जू ।

अंगहि रस उपजावा, सो वर्नत लच्छन संयुक्ता ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५७) व्यंग्यार्थ कौमुदी । रचयिता--प्रतापसाहि । आकार-६'३" x

५'२" । पत्र संख्या ८३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं । कुल १०६ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है । इसका रचनाकाल संवत् १८८२ है ग्रन्थ सटीक है । कवि ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना विषय और शैली इस प्रकार प्रकट की है—

दोहा

गनपति गिरा मनाय कै, सुमरि गुरन के पाइ ।

कवित रीत कछु क रत हों, व्यंग अर्थ चित लाइ ॥ १ ॥

वाचक लक्षक व्यंग को, सब्द तीन विधिमान ।

वाचक लक्ष्य रु व्यंग है, अर्थ त्रिविधि पहिचानि ॥ २ ॥

इनके लक्षन लक्ष बहु, रस ग्रन्थन ठहराइ ।

तातै द्यावरने नही, बदे ग्रन्थ समुदाइ ॥ ३ ॥

जहाँ सब्द में अर्थ की, होइ छु अधिक प्रवृत्ति ।

चमत्कार इति से जहाँ, जानि विजना वृत्ति ॥ ४ ॥
 व्यंग जीव है कवित्त मैं, शब्द अर्थ गति अंग ।
 सोही उत्तम काव्य है, वरनै व्यंग प्रसंग ॥ ५ ॥
 करि कवि जन सो वीनती, सुकवि प्रताप सहेत ।
 कथि व्यंगारथ कौमुदी, व्यंग जानि पे हेत ॥ ६ ॥

सुचनिका

कही व्यंग तैं नाइका, पुनि लक्षणा विचारि ।
 ता पीछे वरनन करों, अलंकार निरधारि ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

व्यंग अर्थ सब तैं कठिन, को कवि पावे पार ।
 मंमट मत कछु समझि चित, कीजो मति अनुसार ॥ १०७ ॥
 यह व्यंगारथ कौमुदी, पढ़े गुने चितलाइ ।
 ताको मत साहित्य को, कछुक पंथ दरसाइ ॥ १०८ ॥
 संवत कर^२ वसु^८ वसु^८ मही^१, गति असाइ को मास ।
 किय विंग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १०९ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५८) पट्कृत वर्णन : रचयिता-ग्वाल कवि । यह एक ११" x ७" ५" आकार की चोपड़ी में मिला है । यह कवि के यमुनालहरी ग्रन्थ का एक अंग मालूम होता है । इस चोपड़े में 'अलंकार रत्नाकर' 'रसिका-नन्द', बलभद्र कृत 'नख सिख', 'नैत्रवर्णन', ग्रन्थ हैं जिनका यथा स्थान वर्णन किया गया है । इनके अतिरिक्त इसमें आलम, दयानिधि, ग्वाल, पजनेस, पद्माकर, राव अमानजी आदि कई कवियों की फुटकर रचनाएँ हैं ।

इस ग्रन्थ में कुल ३७ कवित्त हैं । एक कवित्त यहाँ दिया जाता है ।

चम चम चाँदनी की चमकि चमक रही,
 राखी है उतार मानो चन्द्रमा चरखतें ।
 अंबर अवनि अंबु वाले सु बिटप गिर,
 एक ही तैं पेखे परें परेन बरखतें ॥

ग्वाल कवि दिसों दिसा हूँ गई सपेद चारू,
 खेद को रह्यो न भेद फुला हैं हरखतें ।
 लीपी अब्रखतें कि टीपी पुंज परदेत,
 कैधों हुति दीपी हैं के चांदी के बरखतें ॥ २६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) सभा प्रकाश । रचयिता-हरिचरणदास । आकार-१०'५'' x ७'४'' । पत्र-संख्या ७६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं । ग्रन्थ के आदिभाग से ज्ञात होता है कि ग्रंथकार ने भरत और वामन का आधार लेकर खंडन-मंडन की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की । रचना काल-सं० १८१४ श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, शुक्रवार । ग्रन्थ १० उल्लासों में समाप्त है । लिपिकाल-संवत् १६१७, वैशाख सुद १२, भौम ।

आदि-

गौर स्याम जो वपु धरै, वस्तु विचारे एक ।
 ज्यों विसर्ग सो राखि है, निज जन मन की टेक ॥ १ ॥
 मोहि ग्यान गौरव न को, कहै जोरि 'हरि' ग्यान ।
 तुम ही ग्रंथ बनाय हो, राधा राधा जान ॥ २ ॥
 प्यारी पिय नारी ललन, आदि नाम निरधार ।
 उचित ठौर में लक्ष्य है, राधा नंद कुमार ॥ ३ ॥
 जो जै चाहत कविन सौं, खंडन मंडन आस ।
 सो चित दै नित देखि है, 'हरि' कृत सभा प्रकास ॥ ४ ॥
 लिख्यौ निरख मत भरत कौ, वामन हू को सुत्र ।
 दोष बुद्धि करि हैं नहीं, जो कवि मांहि सुपुत्र ॥ ५ ॥

अन्तिम-

दोहा

वह निरखनि सुसुख्यानि वह, वैसे कृपानिधान ।
 राधा अचल विहारि के, वसौ हिये वह ध्यान ॥ २४ ॥
 दूर करत जुवि कर्म गति, मनु दयाल सुम गीत ।
 राधा-हरि यह ग्रन्थ सौं, होउ सदा शुभ प्रीत ॥ २५ ॥

वेद ४ इंदु १ गज ८ भू १ गनित, संवत्सर रविवार ।

सावन शुक्ल त्रयोदसी, रच्यौ ग्रंथ सविचार ॥२६॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६०) सुन्दर शृंगार । रचयिता-सुन्दर कवि ।

प्रति-१: आकार-११" x ८" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-३६७ । लिपिकाल सं० १७६१ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति-२: आकार-६" x ६" ५" । पत्र ३७ । पद्य-३६७ । लिपिकाल-सं० १८४४ । रचनाकाल-सं० १६८० ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६१) अनेक नाम माला । रचयिता-नन्ददास । विषय-शब्द-कोष ।

प्रति-१: आकार-६" ३" x ५" २" । पत्र-संख्या ११ । छंद-संख्या ६६ ।

[कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति-२: आकार-७" x ३" ६" । पत्र-संख्या ३७ । छंद-संख्या २६१ ।

उदाहरण-

चन्द्रमा के नाम

इंदु सुधानिधि कलानिधि, अञ्ज जीव हिम रोम ।

ससिधर हिमकर निसाकर, औषधीस ससि सोम ॥ १०३ ॥

कुमुंद बंधु श्री बंधु हरि, रोहिणेय सुर-पेय ।

उडिराजा द्विजराज पुनि, लो मृगांक आत्रेय ॥ १०४ ॥

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

अनेकारथी । रचयिता-नन्ददास ।

प्रति-१: आकार-७" x ३" ६" । यह अनेक माला के साथ ही है । पत्र-संख्या १५ । पद्य-संख्या ११६ ।

प्रति-२: आकार-५" x ५" ३" । पद्य-संख्या ११६ । लिपिकाल सं० १८६१ ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(३) ख्यात-वात, कथा-काव्य, जैन-रास, जीवन-चरित्र, आदि

(१) अजना सुन्दरी रास । रचयिता-अज्ञात । रचनाकाल-सं० १६११
आश्विन कृष्ण ६ । आकार-६'५" x ५" । पत्र-संख्या ३६ । पद्य-संख्या ८१ दोहे
और १६१ ढाल । विषय-जैन-रास-रचना; सती शिरोमणि अंजना के शीलव्रत
की कथा ।

आदि भाग-

दोहा

मुनि सुनृत सांमजी, त्रिभवन तारण देव ।
तिर्थकर प्रभु वीसमौ, सुर नर सारे सेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तौ जी आप स्वारथ सहू सजौ, ए मलीया माया की जाल ।
हणुमंत संजम लेई तप करे, पाँच माहाव्रत खांडीनी धार ॥
तौ बावीस परीसीस है सहौ, सील संतोष जे छै गुणवंत ।
तौ षट आवशक नीम, साच बौ हणुमंत ॥
वीर गयो निरवाण तौ ॥ १६ ॥

तौ अधकौ औछौ मै कछौ ते मी छामीहू कंड होज्यौ
जिन मुझ तौ सील तणा गुण वरणच्यां सती ने सीरोमंणी
अंजणां माय तो एतले संबंध पूरौ हूवौ आगल चालसी

सीता नी बात तौ विरहणी बली रे बेरागणी माय जिगतनी
माय तौ १६१ सती सीरोमणी अंजणा ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) अचलदासजी री वार्त्ता । रचयिता-अज्ञात । आकार-१०" × ४'३"
पत्र-संख्या ७ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर हैं ।

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(३) अमरदत्त मित्राणंद रास । रचयिता-तत्व विजय । रचना-
काल सं० १७२४ । लिपिकाल-संवत्-१७३३, प्रथम श्रावण सुदी ६ । भरोचबन्दर-
मध्ये आकार-१०" × ४'३" । पत्र-संख्या २८ । प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियाँ । प्रति
में पंक्ति ५२ अक्षर । लिपि जैन पाटो की । विषय-जैन जीवन-चरित्र । रचना
काल-सं० १७२४ ।

आदि-

(आरम्भ में ११ दोहों तक प्रार्थना है)

दान तणा पर भावथी, अमरदत्त मित्राणंद
सुख विलसी संसारना पाम्या परमानंद ॥ १२ ॥
अमरदत्त मित्राणंद नो, सरस एह संबंध
शांतिनाथ चरित्र थी, करस्यु एह प्रबंध ॥ १३ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४) आनन्दमंदिर नास्ति रास—रचयिता-ज्ञानविमल सूरि । रचना-
काल-संवत् १७७० महासुदि १३ । आकार १०'४" × ५" । पत्र-संख्या २०० । छंद-
संख्या-४५८५ दोहा और ढाल । इसमें श्री चंद केवली का वर्णन है । एक स्थान
(प्रशस्ति में) पर अकबर और सलीम का भी वर्णन है—

‘साहि अकबर नि० निज वयणें, निज मत स्यूं मति जोरी जी ॥
साहिब सलेम आगलि जय वरीओ, श्री विजय सेन सूरी गुण दरिओ जी ।
विरुद सवाई जगत गुरु धरीओ, मति सुर गुरु अधी करी ओ जी ॥

आदि भाग-

सुषकर साहिब सेविये, श्री संघेसर पास ।

जास सुजस जग विस्तरथौ, महिमा निधि आवास ॥ १ ॥
इन्द्र वासव पूजित चरण कज, रज पावित भू पीठ ।
परता पूरण परगडो, एहवो अपर-न दीठ ॥ २ ॥
संपति काले तिरथ छे, जे महिमा भंडार ।
पिण ए अतीत चौबीसीइ, कहि उत्पति विस्तार ॥ ३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञानमंदिर, उदयपुर]

(५) उषा भागवत । -रचयिता- रामदास । आकार- ११" × ६" ।
पत्र-संख्या २१८ । इसका लिपिकाल संवत् १६०१ है । कथा का १८ अध्यायों में
भागवत से दोहा चौपाइयों में भाषानुवाद किया गया है ।

आदि भाग-

दोहा

संग विना समरये विना, राजद्वार विदेस ।
फल दायक मेने सुने, गवरी पुत्र गनेस ॥ १ ॥

चौपाई

सुमिरि सरसुती सुमिरो तोही ।
बेठि कंठ अक्कल दै मोही ॥
दास दयाल चरन चित ल्याऊ ।
कीन कृपा हरि के गुन गाऊ ॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६) कल्याण मन्दिर-भाषा । रचयिता-बनारसीदास । आकार-
६'३" × ४'१" । पत्र-संख्या ३ । छन्द-संख्या ४५ । विषय-भक्ति । विशेष-रचना
गद्य और पद्य में है ।

अन्तिम भाग-

चौपाई

मह तुम चरण कमल गुन गाई । बहु विध भगति करी मन लाई ॥
जन्म २ प्रभु पाऊँ तोही । यह सेवा फल दीजे मोही ॥ ४३ ॥
इह विध श्री भगवंत सुं जस जे भवि जन भासे ते निज पुन भण्डार

संचि चिर पाव पणा सहि रोम रोम उदन्न सित अंग प्रभु
कै गुण गावै सुरग संपदा भजे वे-पंचम.....गति पावे ॥ ४४ ॥

दोहा

एह कल्याण मन्दिर कियो, कुमुद चन्द की बुद्धि ।

भाषा कहत बनारसी, कारन समकित सुद्ध ॥ ४५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७) कवाटसरवेहीयारी वात । रचयिता-हरि ? आकार-११" × १५"

पत्र-संख्या १०० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १४ अक्षर हैं । रचना गद्य-पद्य में है, जिसमें पद्यों की संख्या २३३ है । यह प्रति संवत् १६०८ जेठ विद् १४ गुरुवार को खाराड़ी रा खड़िया नरसीगदास भेरूदा-सोत द्वारा लिपिबद्ध हुई । इसके आरम्भ में एक संवत् '१८५४' कात्तिक मास कृष्ण पक्ष भी दिया गया है । यह इसका रचना काल है । इसका विषय तो वही है जो प्रथम भाग के पृष्ठ २ पर अनंतराय सांखलारी वात का है । परन्तु रचना शैली और भाषा में अन्तर है । प्रथम भाग वाली रचना में रचयिता का नाम अज्ञात है । परन्तु इसमें २३२ वें दोहे में लेखक ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

दुहा

दानवा अरी हरी नाम दष, जात रखी बर जाण ।

हर जेठी कै सुत कही, वात कवाट वषाण ॥ २३२ ॥

आदि भाग—

दुहा

सुरसत मात सुमत हो, गवरी पुत्र गुणेश ।

करणानिध कर जोड़ कर, मांगू बुद्धि महेस ॥ १ ॥

वारता

कोयलापुर पाटण नगर जठे अनंतराय सांखलो राज करै जी को पुरसाण हिंदवाण दोनु ही राह रैसी है । जीको कोयलापुर कीसोयेक दरसावे । जीण ने देषीया थंका दुजो सहर दायनी आवे ।

अन्तिम भाग-

दूहा

केइ घोड़ा गाँव की, केइ गयंद कहाय ।
 करां चढ़े कवाट रे, लंका दीये लुटाय ॥ २२८ ॥
 ना राज्या सारी जगत, पल के जोत प्रकास ।
 सुरज ज्यांही कवाट सी, ईधक जोत उजास ॥ २२९ ॥
 पांषहे माऊ कवाट त्रप, साँचो अहे सभाव ।
 ज्या सामो देखै जरु, राका करे जराव ॥ २३० ॥
 तेरासे सेताली समो, सुकल पष माहा मास ।
 नीज गरु की बात तद, प्रतमो राज प्रकास ॥ २३१ ॥

[स्व० पं० रतीलाल अन्ताणी के संग्रह से]

(८) कोकशास्त्र वार्ता प्रबन्ध प्रथम भाग । रचयिता-अज्ञात ।

यह ग्रन्थ ८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में संग्रहीत है । ६ पत्रों में इसके ६६ छन्द समाप्त हुए हैं ।

आदि भाग-

कवित्त

अति कोमल सब अंग, रूप राजिति अति निर्मल ।
 ॥
 जाहि सदा है प्रसन्न, ताहि आणंद अमारी ।
 राग रंग रति रूप, सबै लागत अति भारी ॥
 विस्तार कोक भूषण करन, इह इच्छा कविज न धरतु ।
 शृंगार आदि गतिराज को, जोरि सुकर अस्तुति करतु ॥ १ ॥

दोहा

जहाँ रंनधंभर (गढ़) सुगढ़, तहाँ भैरव राजान् ॥
 त्यागी लोभी मानधर, गारन दुसह गुमान ॥ २ ॥
 षटभाषा विद्या चवद, कला बहुतर चार ।
 गुण प्रमाण असू भयो, ज्यूँ भोजराज मतिधार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

कोक सु' व्याही पंषिनी, जोरी बनी अपार ।
 मानो अवा ततार फिरि मकरध्वज रति नारि ॥ ८५ ॥

कोक महल क्रीसत सदा, पंषिनी कुं लिये संग ।
 हास विनोद विलास सुष, सदा रहिति रति रंग ॥ ८६ ॥
 तब सु कोक अरु पंषिनी, कीन्हों एक विचार ।
 केलि ग्रन्थ इक कीजिये, होइ सुजस संसारि ॥ ८७ ॥
 ओषद अरु रति भेद सब, तिय वर्णन सिंगार ।
 कियो दुऊँ मिली बुद्धि सौँ, कोक नाम विस्तार ॥ ८८ ॥
 ता पाछे कवि अति भग्यै, रचै नु भाषा रूप ।
 कोक ग्रन्थ अति सरस है, सुनि सुनि रीभत भूप ॥ ८९ ॥

[स्वरूपलाल जगदीश चौक, उदयपुर]

(६) चंदन मलयागिरि की चोपड़-दूहा । रचयिता-भद्रसेन ।

आकार-६'६" × ५" । पत्र-संख्या ६ । छन्द-संख्या २०३ चउपड़, दूहा, गाहा ।
 लिपिकाल-सं० १८२४, माह विद् १४ सोमवार । लिपिकार-ऋषि हेमराज ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) चंदराज चरित्र । रचयिता-मोहनविजय ।

प्रति-१: आकार-६'७" × ४'२" । पत्र-ढाल १८०० । रचनाकाल-सं०
 १७८३ । लिपिकाल-१८७८ ।

आदि भाग-

दोहा

प्रथम धरा धवनी म, प्रथम तीर्थकर आदेय ।
 प्रथम जिणंद दिणंद सम, नमो नमो ना भेय ॥ १ ॥
 अमित कांत अद्भुत सिषा, सिर भूषित सो छाह ।
 प्रगटयो पद्म ऊह थकी, सिंधू सलिल प्रबाह ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

तमगछ नायक गुण गण लायक विजय सेन सुरिंदरजी ।
 प्रति बोध्यो जिणें दिल्ली नो पति अकबर साह भुमिंदरजी ॥ १६ ॥
 तास चरण शतपत्र सु मधुकर कीर्तिविजय उबभावाजी ।

तास सीस कवि मुख मंडन मान विजय कवि राया जी ॥ १७ ॥
 तास पद सेवक मति सुत सागर लब्ध प्रतिष्ठ कहायाजी ।
 पंडित रूप विजय गुण गिरूआ, दिन दिन सुजस सवायाजी ॥ १८ ॥
 तेहने बालक मोहन विजये अठोतर सौ दालें जी ।
 गायो चंद चरित्र सुरंगो चरित्र बचन परिनालें जी ॥ १९ ॥
 कीधो चोथो उल्लास संपूरण, गुण वसु संजय वर्षेजी ।
 पोस मास सित पंचमी दिवसें, तरणिज यारें हर्षेजी ॥ २० ॥

x

x

x

विजय, लेम सुरिंद राज्ये करि परम गुरु वंदना ।
 कवि रूप सेवक मोहन विजयें वर्ण व्यागुण चंदना ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

प्रति:-२ लिपिकाल-१८४६

[अन्ताणी संग्रह]

(११) चंदराजाचोपी । रचयिता-विद्यारुचि-आकार-१०.४'' × ४.४'' ।

पत्र-संख्या १३५ । छंद-संख्या-२६८४ लिपिकाल-संवत्-१७६१, फाल्गुनमास ।

आदि भाग-

दोहा

श्री जिननायक समरिइ, ऋषभदेव अरिहंत ।
 वंछित पूरण सुरतरु, भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
 शिव सुष दायक सविइ, शांति नाथ जिनचन्द ।
 यादव वसन लोमणी, नमइनेमि जिणंद ॥ २ ॥
 पुरुसा दांणी परगडो, श्री वर काणो पास ।
 नाम जपता जेहनो, सफल फले सवि आस ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप गछ पंडित वड वयरागी, संवेगी गुण भरिउरे ।
 श्री गुरु सहज कुसल सुषदायक, उप समरसनो दरियो रे ॥ ८ ॥
 ताम सीस सुध समयम धारी, श्री लक्ष्मी रुचि बुध ईस रे ।

क्रिया वंत पंडित कुलदीपक, श्री विजय कुसल तस सीस रे ॥ ९ ॥
तस पद पंकज भ्रमर विराजें, श्री उदयरुचि कविराय रे ।
कुमत मतंगज कुंभ विदारण कंठी ख कहवाय रे ॥ १० ॥
तास सीस सेवग महोदधि, श्री हर्ष रुचि बुध कहीइ रे ।
उपकारी मुभ श्री गुरु मिलिया, दरसण ती सुष लहीई रे ॥ ११ ॥
विज्ञ सरोमणि मुगट नगिनो, विद्या रुचि तस सीस रे ।
गुण भणिते पुरो पंडितरे सुषदायक सुजगीस रे १२ ॥ १२ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१२) चन्द्रलेहा चतुष्पदी । रचयिता-मतिकुशल । प्रति-१ । आकार-
६-३" × ४" । पत्र-संख्या-२० । पद्य-संख्या ६२४ गाथा और २६ ढाल । रचनाकाल-
सं० १७२८ । लिपिकाल-सं० १७४६ । विषय-जैन जीवन चरित्र ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

प्रति २ । आकार-६-८" × ४-८" । पत्र-संख्या २३ । पद्यः संख्या-१०८५ ।
लिपिकाल-सं० १८८१ ।

आदि भाग-

दृष्टा

सरसति भगति नमी करीं, प्रणमूं सदगुरु पाय ।
विघन विदारण सुषकरण, परसिध एह उपाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दृष्टा

संवत सिद्धि कर मुनि जिसै, (वदि) आसु दशमि रविवार ।
श्री पवीय षमै प्रेमस्युं, एह रच्यौ अधिकार ॥ १२ ॥

×

×

×

सुगुण श्री सुगुण कीरति गणि, वाचक पदवी धरंत ।
अंतेय वासीय चिरंजयौ, मति वल्लभहं महंत ॥ १४ ॥
प्रथम सुशिष्यं अति प्रेमस्यं, मति कुशल कहे एम ।
सामायक मन सुध कहौ, जय वरौ चंद्र लेहा जेम ॥ १५ ॥

x

x

x

गुणय गुण जे सुणै भावै स्युं, गुरूया तणा गुण जेह ।

मन सुध जिन ध्रम जे करै, त्रिभुवन पति हुवै जेह ॥ १७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१३) चन्द्रशेषर छरित्र । रचयिता-वीरविजय गणि । आकार-
८" x ४'४" । इस ग्रन्थ में २३७ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति
पंक्ति में २८ अक्षर हैं । अक्षरों की लिखावट जैनपाटी की है । कुल २६६१ छंदों
में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है । संवत् १६३६ में माणिकचंद विजय गछ द्वारा लिपि-
बद्ध हुआ ।

यह प्राकृत प्रबंध 'चन्द्रशेषर' का भाषानुवाद है जिसको उक्त रचयिता ने
राजनगर (मेवाड़) में चतुर्मास में भाषान्तर किया । इसमें जम्बूद्वीप के चन्द्रशेषर
नृप की कथा का वर्णन है, जो इस प्रकार विभाजित किया गया है । नरति-सुन्दरी
प्रीति सुन्दरी का पाणि ग्रहण, क्षेत्रपाल वशी-करण, श्रंगदत्त कथा श्रवण, द्विज
पत्नि कुलटा प्रबन्ध कथन, सुदर्शन कुमरोपनय प्रकाशन, तापस पुंत्रि कनकावती,
विमला पाणिग्रहण शत्रु जययात्राकरण, चतुषष्टिखेट सुताकर ग्रहण, त्रिलोचना
के वचनामृत, पितृ-मिलन, स्वर्गगमन । रचना तथा इसकी भाषा जैन शैली की है
और जैन उद्देश्यों को लिये हुए है । केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग—

दृष्टा

श्री संघे सुरपालजी, तामधि विघन पलाय ।

प्रिय मेलक परमेश्वरूँ, नमि पद्मावति माय ॥ ५ ॥

इष्ट देव समरण करी, व्रत फलनो अधिकार ।

जिम श्रुति सागर वरणव्यो, तिम कहूँ पर उपगार ॥ ६ ॥

तास सिस विजयबुध तास, सिस गुण वंताजी ।

श्री शुभ विजय जस नामेंजे, महिमा हिमहंताजी ।

पंडित वीर विजय तास सिस चितनो वृति उल्लासंजी ।

चन्द्रशेषर नृप गुण मणिमाला गुण श्री छे आरासंजी ॥ ७ ॥

संवत उगणीसयदोयवरसे विजया दशमी प्रसिद्धिजी ।
 राजनगर मां रहि चत्रमांसु रासनी रचना कीधीजी ॥
 विजय देवेन्द्र सूरि साम्राज्ये भाष्यो व्रतआचारोजी ।
 दत्त परीक्षक नर जो सुणस्ये तो श्रम सफल ऊमारोजी ॥ ८ ॥
 जिम सोहम पति इन्द्र ने नन्दन नामें राय जयन्ताजी ।
 तिम राजेशरी सेठ हेमाभाई तस नंदन गुणवन्ता जी ॥
 छे युवराज पदें पद लायक प्रेमाभाई विराजेजी ।
 रासतणी में रचना कीधी ते सद्दु ने सुणना काजेजी ॥ ९ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१४) चन्द्र कंवर की वार्ता— रचयिता-हंसकुमार आकार-
 ११-५" x ८-७" । यह ग्रन्थ चमड़े की जिल्ददार पुस्तक में है, जिसमें इसके अतिरिक्त
 'पनरह तथियां रा दोहा', 'ढोला मारवणीरीवात', 'ब्रंद सतसई', 'फुटकर दोहा',
 'अमरकोश' (संस्कृत), और 'अलंकार रत्नाकर' है । १८ पत्रों पर यह ग्रंथ समाप्त
 हुआ है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ अक्षर हैं । अक्षर बहुत
 बड़े २ हैं । यह वार्ता है, इससे अधिकतर कथा गद्य में है । कहीं कहीं दोहा, चौपाई
 सोरठा, चन्द्रायणा आदि आ जाते हैं, जिनकी संख्या ८६ है ।

विवरणी के प्रथम भाग में इस ग्रंथ के विषय में कुछ अशुद्धियां रह गई,
 उन्हें यहाँ सुधार देना चाहते हैं—

प्रथम भाग के पृष्ठ २८ पर इसी ग्रन्थ 'चन्द कुवर री वात' का उल्लेख
 किया गया है । उसमें रचयिता प्रतापसिंह दिया गया है वह अशुद्ध है । ग्रन्थ
 का रचयिता है "हंस कवि" है । प्रतापसिंह तो पुमाण को हुकुम देता है कि 'हंस
 कवि' को कुछ अपूर्व बात सुनाने को कहो (यह उसी विवरणी में दिये गये पाठ
 का अर्थ किया गया है) । इसी प्रकार अमरावती नगर के सेठ की पुत्री चन्द्रकुँवरि
 लिखा गया है, यह भी अशुद्ध है । यह नाम 'चंद कुवरि' नहीं है 'चन्द कँवर' है
 जो पुल्लिङ्ग है । यह 'चंद कंवर' अमरावती के राजा अमरसेन का पुत्र है । इसी
 प्रकार राजकुमार के स्थान पर 'राज कुँवर' पाठ लिखा होने से यह राजा के पुत्र
 का नाम समझ लिया गया है । इस राजकुमार का प्रेम सेठ की पुत्री से न होकर
 उस सेठ की स्त्री से ही था । 'सेठ तणी जे असतरी, तिण सूं घणों सनेह' का अर्थ

भी यही होता है। अतः इस भूल सुधार के लिये हम संक्षेप में सारी कहानी यहाँ देते हैं—

अमरावती (सौरठ) का राजा अमरसेन। उसका पुत्र चन्द्रकुँवर शिकार को जाता है। सूअर के पीछे दौड़ता हुआ साथियों से छूट जाता है। ३३ कोस पर सूअर मारता है। सूर्यास्त। किसी ऋषि के आश्रम में जल पीकर मार्ग पूछता है। ऋषि कहते हैं आगे कुछ दूर तक बस्ती नहीं है फिर कंधार शहर है, उससे ५ कोस की दूरी पर ताँबापुरी है। कुमार का प्रस्थान। मार्ग में नदी) बरसात से बाढ़-नदी के उस पार ताँबापुरी! काजली तीज का त्यौहार कुछ सुन्दरियाँ वहाँ खेल रही है। वह वहाँ जाता है। एक कामिनी उसे पूछती है—तुमने ऐसे समय स्त्री को क्यों छाँड़ा? कहाँ से आ रहे हो? राजकुमार का उत्तर—“सौरठ हंदा राजवी, राजकरैं अमरसेन पंथ सीकारां नीसरयां, भुला आया इण देस।” इसके बाद उसके साथ नगर में जाना— फिर अन्य स्थान पर डेरा डालना। नगर के सेठ सामजी बारह वर्ष से परदेस में— स्त्री विरह में कामान्ध-उसकी एक दूती का ‘भरमर’ की खोज में फिरते हुए चंदकुवर के पास आना-उसको विवश करना-वह पहले पर-स्त्री के पास जाने से इन्कार-फिर दूती की पटुता से वशीभूत होकर सेठानी को संतुष्ट करता है और प्रेमान्ध हो वहीं रहने लगता है। इधर राजकुमार की माता दुःखी होती है। अमरसेन अपने गुप्तचरों द्वारा पता लगाकर मन्त्री को लेने भेजता है। मन्त्री बजाज का वेश धारण कर इसके पास जाता है और उसकी माता को दुःख वर्णन करता है। चन्द्रकुँवर सेठानी से विवाह कर उसे घर ले आता है।

इसमें कुछ पाठान्तर भी है:—

प्रथम भाग में ग्रन्थ की प्रथम चौपाई इस प्रकार है।

समकं सरसत मात मनाय । गणपति गरु के लागुं पाय ॥

प्रतापसीध रस कीनो काज । क्यूं न कथ्यो रसिक कविराज ॥

इससे भी यह सिद्ध नहीं होता कि इसका रचयिता प्रतापसिंह है। मुझे जो ग्रन्थ प्राप्त हुआ है उसमें यह पाठ है

दोहा

समरु सरसत माय कुं, गणपति लागु पाय ।

प्रतापसिंध नृप अरज कीय, यथा सिक कविराय ॥ १ ॥

—आगे जो पाठान्तर है वह इससे मिला लिया जावे—

हंस कवीसर सूं कश्यो, कछु इक बात सुणाय ॥ २ ॥
 सबकुं लगै सहामणा, रस संजोग सिणगार ।
 मुरख हु को मन हरे, सब रसीयन को सार ॥ ३ ॥
 सतरे से चालीस मै, तेरस पोसज मास ।
 गुण कियो कर चाव के, होगी पूरण आस ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

घर घर हुवा वधामणा, तोरण बाध्या द्वार ।
 परणे आयो पदमणी, आयो चंद कवार ॥ ८२ ॥

चन्द्राइणा

बाप तणे पग लाग मील्यो है माय कुं ।
 वेण उतारे लूण भयो सुख धाय कुं ॥
 दुलहण को मुख देख, ठमक ठमक पाय परत है ।
 मोहरा भर-भर मूठ, निछावर करत है ॥ ८३ ॥

दोहा

मो मन प्यारी सुं वसे, प्यारी के मन पीव ।
 मे प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥ ८४ ॥
 परतापसिंघ सेबक कहै, वाचत सदा सहाय ।
 चंदवात पूरी भई, यह करि रस कविराय ॥ ८५ ॥
 जोध वंश युग युग जियो, घणो होत हरवार ।
 नाम धार्यो परताप नृप, गुण ही को गुणसार ॥ ८६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१५) चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध । रचयिता-समयसुन्दर । आकार-
 १०" x ४'५" । पत्र-संख्या-३६ । लिपिकाल-सं० १८४२, पोष सुदि १४, शुक्र ।
 रचनाकाल-१६६५ ज्येष्ठ शुक्ल १५ । पत्र संख्या-प्रथमखंड ढाल १०, गाथा १८७,
 ग्रं० श्लोक २२५; द्वितीय खंड ढाल १०, गाथा २५०, ग्रं० श्लोक ३६४, तृतीय खंड ढाल
 १७, गाथा ३६६, ग्रं०; चतुर्थ खंड ढाल १०, गाथा २५०, ग्रं० ३६४ ।

विषय:-इसमें कलिंग देश में चंपावती नगरी के राजा दधिबाहनराय के
 युद्ध तथा चार प्रत्येक बुद्धराजाओं का वर्णन है ।

आदि भाग-

श्री सिद्धार्थ कुल तिलो, महावीर भगवंत ।
वर्तमान तीरथ धणी, प्रणमु श्री अरिहंत ॥ १ ॥
तसु गणधर गोतम नमुं, लबधि तयो भंडार ।
काम धेनु सुरतरुमणी, वारू नाम विचार ॥ २ ॥
वीणा पुस्तक धारिणी, समरू सुरसति मात ।
मूर्ख नैं पंडित करें, कालीदास कहिवाय ॥ ३ ॥

× × × ×

कर कंठ राजा दुमुख, नमिनइ विग्गड सुद्ध ।
इणि नामें उत्तम द्वआ, च्यारे प्रत्येक बुद्ध ॥ ८ ॥
चार तिया च्यारे चतुर, मोटा साधु महंत ।
चिहुं खंडे कहुं चरितहुं, जिम पामूं भव अंत ॥ ९ ॥
चार खंड ए चउपई, चिउं खंडे परसिद्ध ।
प्रथम खंड कर कंडुनो, सामलि ज्यो मन सुद्ध ॥ १० ॥

पुष्पिका-“इति श्री आगरा वास्तव्य नागड गोत्रिये श्री संघ भार धुरंधर
नाना विध शास्त्र बिनोद महा रसिक सा० भारू (?) समभ्यर्थ नया वाचक श्री
समय सुन्दर गणि विरचिते श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्धे.....सम्पूर्ण
इति श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध चतुष्पदी समाप्ता । सकल पंडित शिरोमणि पंडितर्ज
श्री १०८ श्री रत्न रुचिगणि तत् शिष्य पं० श्री अनोपरुचि गणि शिष्य पं० अभय
रुचिगणि लिपि कृते भीडर नगरे.....संवत् १८४२ वर्षे पोष सुदि १४-
शुक्ले । ”

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१६) चमत्कार चिन्तामणि । रचयिता-अज्ञात । आकार-८" x ५'१"

पत्र-संख्या ३ पद्य-संख्या ११३ । विषय ज्योतिष ।

आदि भाग-

युं विचार ज्योतिष को, कहत न आवै पार ।
अब फल बारह भवन को, वर्णन है कविसार ॥ १ ॥
तन भवनै सूर्य करै, नरक रूप बहु केस ।
विनय रहित क्रोधी समझ, सार चित लवलेश ॥ २ ॥

वित्त हरे ,रवि धन रखो, गुह्ये सदा सरोग ।
सजन अधिक दुर्जन अधिक, भाग विसर्ग लोक ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

राह करै अमल वन, वरष तीन को आप ।
जो कदाचि जीवै अधिक तो अति दुखित माप ॥ ८ ॥
धर्म सार तम कर करै. करै बिन्द से वास ।
कामी लोभी कठिन मन, धरै सकल की आस ॥ ९ ॥
राह कर्म कर बुद्धि बल, मरै पिता तव रोग ।
सूखीर पर नारि सूँ (रता), सार सुमति को जोग ॥ १० ॥
राह लाम को सुभस सुख, आय बहुत धनवन्त ।
महा बलि सिर वन्त बहु, सारद सदा मति वन्द ॥ ११ ॥
राह बार में आपदा, होत द्रव्य को नास ।
अल्प बुद्धि मानें तिके, माया वन्त उदास ॥ १२ ॥

इति राह फलं

अैसे बारह भवन परि, जोतिष शास्त्र विचार ।
फल नव ग्रह को वर्ण व्यो, सार बुद्धि अनुसार ॥

[सरूपलाल शर्मा जगदीश चौक, उदयपुर]

(१७) चंपकमाला । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'४" x ४'२" । पत्र-
संख्या-८ । पद्य-संख्या ६५ । विषय-चम्पकमाला के सतीत्व और जैनधर्म पालन
की कथा ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) चित्रसेन पद्मावती रास । रचयिता-अज्ञात । आकार-
१०'४" x ४'१" । पत्र-संख्या-३३ । छंद-संख्या ४६५ । रचना-काल- । १८१४
विषय-इसमें किसी पूर्व देश के राजा चित्रसेन और उसकी रानी पद्मावती की
कथा है ।

अन्तिम भाग-

भविष्य साचो इक भ्रम भाई ।

भवक ममता जीवनं एहिज होय सहार ॥ १ ॥

धरम पदारथ जगत में जिहों तिहों ग्यानी ए गायो ।
 तिण उप चित्रसेन नरिंद ने ए दृष्टान्त सुणाथो ॥ २ ॥
 दान सील तप फल सुमदायक जो होया तावस मेला ।
 श्रुत परणाम बिनासहु निरफल तीने ही एह अकेला ॥ ३ ॥
 करम तणौ बंध करम नि जरा एस रु आतम सारे ।
 ए चित सेये चरित्र श्रवणे शुणीए परमारथ धारे ॥ ४ ॥
 अठारह ऊपर वरसै चवदो तरे बहेते ।
 पोसमास शुदि दसम तणै, दिन रास रच्यौ मनषंते ॥ ५ ॥
 श्री जिन लाभ सूरि सिर राजै षरतरगछ बड़भागी ।

बेम साष श्री शांति हरष शिष्य, श्री निज हरष बैरागी ॥ ६ ॥
 तामु चरण रज कण सुप साठौ, सरमतिशुं निज रणाई ।
 राम छिजै उठ जाय ए चौपई बीकानेर वणाई ॥ ७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(१६) जाम राउल रो बारामास्यो । रचयिता-अज्ञात । यह एक प्राचीन गीत है । जो एक प्राचीन चोपड़े में प्राप्त हुआ । इस चोपड़े पर संवत् ११४२ लिखा है, परन्तु रचना इतनी प्राचीन नहीं है । जाम राउल जामनगर का संस्थापक था और उस समय में जामनगर गुजरात में ब्रजभाषा साहित्य का केन्द्र था ।

साल ले बारह मेघ सायण अंब धारा उबले ।
 बाबीहा दादुर मोर बोलै साल दह दिशी षल हलै ।
 भडमचै सिहरे बीज भबकै मिले अन्नल फर हरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिषि रीति संभरै ॥ १ ॥
 भाद्रवै नीर निवाण भरिया, गिर पहाड़ पषालियै ।
 मिलि छपन कौडि मेघ माला नदी नीर मालियै ।
 घेधूब लूंबा सांमली छटा कांठली जल हर करै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिषि रीति संभरै ॥ २ ॥
 ऊनमै अति घण मासव पासु नदी नीर निरमला ।
 बन अधिक छाइ यै लूंब बेलि चंद्र द्वै चढ़ी कला ।

नैबैथ करि बापि-तट बिहसै बेक वदन बिस्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ३ ॥
 कातिमा मास आकास निरमल मेघ चालै घर सुणै ।
 सर कमल बिकसै सरद रेणि नीर छाया पोमणै ।
 अनल ठमै गरज उतर अरक दषिक मनि धरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ४ ॥
 मगसिरे मारग माग मंडै मेघ मंडै दामिणी ।
 करि कोट बाला रत्न चमकै उष्ण अस्तन कामिणी ।
 बड़ छाया कूप पयाल अस्तर जीवह दिसै ऊमरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ५ ॥
 मिति हिमोतर पौष मासे पान तर वर हाखै ।
 साक पै प्रेम कमल विकयल भंवर पंख न साखै ।
 धूजंत वानर गो निरधन नाग रायण निस्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ६ ॥
 उतरा दल हरि लंक नाषै प्रलैवन षंड परजलै ।
 अंब होय विषमा अगनि अमृत सीत बादल साललै ।
 दीरघ रयणि तोछ दिनकर माह मास समाचरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ७ ॥
 निसि सित फागुण दिन ग्रीसम अनल पंथ समारै ।
 फिर चलै उतर चाहि रवि रथ दषिण पंथ निवारै ।
 बिति लोक रामति फाग षेलै होलिका प्रष विस्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ८ ॥
 माजरि अदभुत चैत्र मासै पागुरै पत कोमला ।
 सीजाई घर दिसि धूम पलटै हुए अंबर निरमला ।
 बनराई मार अढ़रि फूटै दहण माथा उत्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ ९ ॥
 बैसाख मासै मोरिया बन बसत अमृत आण ए ।
 केतकी जाइक हसै कुसमै भंवर लीला माण ए ।
 महकंत चंपो बेलीदमणो अधिक प्रेमल उधरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांभितिणि रीति संभरै ॥ १० ॥

(१६७)

वरतिये जैठक लूऊ वाजै हुवै दिसी हला हलै ।
दिन बधै घटै निसी दिवाधर जणि हुवै ।
प्रितिम जलं फल जाइ दाडिम दाख पाचै मालिणी कायामरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ११ ॥
आषाड ऊबां करै डंबर गहली निद्रा अति घणं ।
सू जाई निसरी गरमिये जल, कुंअरि ढीला कंकणं ।
बिजली चमकै बले बादल उन्हंगालै प्रसेवो उतरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणी रीति संभरै ॥ १२ ॥

[माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर]

(२०) जिनपाल जिनरत्नक रो चउढालियो । रचयिता-शान्तिकुशल ।

आकार-१०'' × ४'५'' । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ६१ । विषय-जैन-जीवन चरित्र । भाषा-बोल चाल की राजस्थानी ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२१) ढोला मारवणी री बात । रचयिता-अज्ञात ।

आकार-५'' × ४'६'' । पत्र-संख्या-७० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २० अक्षर हैं । अक्षर सुन्दर और छोटे हैं । प्रति कुछ जीर्ण हो गई है । इसमें कुल २१८ पद्य हैं और बीच बीच में वारता दी गई है । रचना काल इसका इस प्रकार दिया गया है—

पनरेसे तीसे वरस, कथा कही गुण जाण ।

वदि वेसाषै वार गुरु, जन्ति जाण दस आण ॥

इसका आदि भाग विवरणी के प्रथम भाग में पृष्ठ ३७ पर दी हुई कुशल लाभ रचित ढोला मारू री चोपई प्रति १ के आदि भाग से कुछ पाठान्तर लिये हुए हैं ।

सकल सुरासुर स्वांमिनी, सुणि माता सरस्वति ।

विनोद करी ने विनवूँ, मुजने दो अविरल मति ॥ १ ॥

जोतानवरस यण दुगे, सबहि करी सणगार ।

रागें सुरनर रीजिये, अबला तस आधार ॥ २ ॥

उदाहरण-

दुहा

नदियां नाला नी भरण, पाणी चढ़ियो पूर ।
करहो कादम किम चले, पंथी पुंगल दूर ॥

वारता

सूणो महाराज आबु परबत अठारे गिरा रो राजा
छे: तिण कने शोवन गीर परबत नेड़ो छे:
तबै जालोरगढ़ थापीयो छै: सो गढ़ विषम जायगा छे:

दूहा

अन्तिम भाग-

अति आणंद उखब हुवा, नरवर वरज्यो दोल ।
ससने ही सयणा तणा, कल में रहिस्यै बोल ॥ २१७ ॥
दुहा गाहा सोरठा, मन विकषणा वर्षाण ।
अब जाएया मूरख हसै, संभे चतुर सुजाण ॥ २१८ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(२२) दोला मारवण री वार्ता । लेखक-अज्ञात

यह भी उसी जिल्ददार संग्रह में जिसमें है जिसमें चन्द्र कंवरी री वार्ता, वृंद सतसई और अमर कोप (संस्कृत) हैं ।

इसमें कुल ४७ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ से १६ तक अक्षर हैं । यह संवत् १६०४ शकै १७६६ आसोज कृष्णा ५ बुधवार को उदयपुर में लक्ष्मी विजय द्वारा लिपि बद्ध हुआ । यह विवरणी के प्रथम भाग के पृ० ३८-३९ पर दिये हुए ग्रन्थ ४६ से भाषा और शैली में बहुत भिन्न है । कथा वही दोला मारवणी की है, परन्तु इसका रचयिता कोई है । भाषा यद्यपि राजस्थानी ही है पर लेखक की भिन्नता स्पष्ट प्रकट होती है । वर्णन पद्धति भी वही गद्य तथा दोहा सोरठा वाली है; परन्तु दोहे का विषय तथा क्रम एक दूसरे से भिन्न है । एक ही कहानी की विभिन्न रचनाएं उसकी लोक प्रियता का प्रमाण है ।

आदि भाग-

पुंगल राजा जातरा चवांण (भाटी ?) । पुंगल राज करै छे । सो देस में काल पड़ीयो ।
सो लोग परदेस जावा लागा । तरे पुंगल राजा रो प्रधान । पंचायण नाम हुतो । तिण ने हजूर

बुलायो । पंचायण आपणै खजाणो कोठार छै । सो खरचो । लोका ने डुलवा घो मती । तरै प्रधान हाथ जोड़ अरज करै छै । माहराज खजानों थोड़ो । ई तरे काल निसरें नही । देशउं चालो करो तो रूडो हुवै । वैसू थानै दीरावां । तरै अटकल नै प्रधानै । आदि तीरथ पोहकर व धारा रे आगखार वास मांडीयो । नै प्रधान सीख मांगी । तरें राजा पीगलै परवानों घणी मनवार देनै लिख्यो ।

दुहा

राज अत आदर कीयो, जिम राज वदजो गेह ।

देस वसारयो रावलो, अँ घोड़ा अल गेह ॥

वारता- परवानों लेनै राजा पुंगल रो प्रधान पुंगल आयो राजा पींगल नै जाय छहार कीनो । समाचार सामलनै । राजा पुंगल रलीयायत हुवो ।

दुहा

पुंगल देस दुकाल थयो, किही कंवर सब सेष ।

पुंगलनैउ चालो कियो, नीअँ नलवर (दीसै) देस ॥

मारवणी का विरह वर्णन

(डाढ़ी के द्वारा मारवणी ढोला को संदेश भेजती है)

“कागद में तो घण्णई मोकलीया । पीण पाखो जवाब कोई आयो नहीं । हमे तो कागद मेंह कोई देवां नहीं ॥ नै थे मां कनेसेती दुहा सीखो ॥ तिके कवरजी नु संभलावजो ॥ त्रि जो थांकने परमेसरजी कहावै जी को कही जो ॥ नरे मंगण कहीयो ज राज प्रमाण दुहा—

मारवणि सीखावीया, मारू राग उपाय ।

दूहा संदेसां तणा, डाढी जाय सुणाय ॥

डाढी जो ढोलो मिले, (तां) कह अमारी बात ।

धण कणीयर री कांबजु, सुंकी तोही छुरात ॥

डाढी एक संदेसडो, ढोला ने कहिवीव ।

पींजर नाही प्राणिया, थां दीस्या छे जीव ॥

डाढी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जीवन आंबो मोरीयो, साष लुटोनी आय ॥

डाढी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जोबन छांत उपाड़ीयो, राजंद वसो आय ॥

डाढी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जोवन हसती मद हुवौ, आंकुस चोनी आय ॥
 डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
 डेर पड़ी छे आंगणे, सीलो करो नी आय ॥
 डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
 जोवन काला नाग ज्यू, झुक झुक भोला खाय ॥
 चीतारली चुगतीयां, कुरभां रोवहियांह ।
 रुर थको दा हीयला, मिले नही मन्नाह ॥
 ढोला मौलसी नवीसरसी, नहीं आवसी लेस ।
 मारू तणा..... कर कडे, बायस उंडा हेस ॥
 ढोला जो तुं न आवियो, सावण पैहली तीज ।
 भंख करेसी मारवणी, देष भीवन्ती बीज ॥
 ढोला जो तुं न आवियो, सावण पेहला मेह ।
 आडा वसीया वालहा, झुर झुर हुइ हम देह ॥
 निरमोही घर आव पिव, कासू घणो कहेर ।
 संपत (तो) दिन दिन आवसी, (पीछ) जोवण कदलहेस ॥
 पांष हुवे तो किम हुवो, दर्ई अरुठा त्यांह ।
 रात बिछोहो दिन मिलण, पंखछती चकवांह ॥
 आथमण ऊपरां दीठ, पूरब सांमी बांह ।
 एक संदेसडो कुर भड़ी, ढोला ने कहियांह ॥
 ओ दुहा केह ने कुरभा, सो मारू जोवनलागी
 ताल चुगंती कुरभड़ी, सर संधियो गी मार ।
 हुं ऊडी आकास ने, हाली जोवनहार ॥

वारता

इतरी वातां करतां मारवणी घरे आई : ढोलाजी आगम चिंता करे छे काग बैठी उडावे छै
 और काग सुं कहे छे—

कागा पीव न आवियो, कियो न डेरो चीत ।
 लकड़ी हुवे तो दध बलु, रहुर अकेली नीत ॥
 कागा देऊ बधाइयां, पीव मिलावो मुभ्भ ।

काड माह थी जीवड़ो, भोजन देख्युं तुभम्भ ॥

कागा जठे पीव वसे, उड जो त्यांह चल जाय ।

दोला बेहलो आवने, (फेर) घणा ही हुत्ता माय ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(२३) दत्तात्रेय उपाख्यान । रचयिता-अज्ञात । आकार-६२" × ४" ।

पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४० या ४२ अक्षर हैं । पद्य-संख्या २२० । इसमें भागवत पुराण के अन्तर्गत एकादस स्कन्ध के ७, ८, ९ और १० अध्यायों की कथा है ।

[रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(२४) दवदंती नी कथा । (लेखक-देववर्द्धन(?) । आकार-१०" × ४½" ।

यह कथा गद्य में है । पत्र-संख्या १२ । प्रति पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३६ अक्षर हैं । जैनपाटी की सुन्दर और व्यवस्थित लिपि है । रचनाकाल-संवत् १५०० से पूर्व अनुमानित । भाषा-जूनी राजस्थानी ।

आदि भाग-

दवदंती नी कथा कहियइं छइं । ईणइ जंजू द्वीपि । भरत क्षेत्रि ।
 अष्टापद समीपि । संगमपुरु नगर । तिहा भंभण राजा ।
 वीरमती भायसिहि सुखिइ राज करइं । अन्यदा प्रिया सहिगुनु ।
 राजा आहेडा भणी नगर बाहर निकलिउ । तिसइ संघात साधि ।
 महात्मा एक मल मलिन गात्र आवतउ देखी । मनमाहि अपशकुन-
 मानतउ म राजायइ महात्मा उमउ राखिउं । संघात हूतउ ।
 चूकविउं । बार घड़ी ताई संतापी पछइ दया परिणमि ऊपनइं-
 राजायइ महात्मा पृच्छिउं । किहां हुतां आव्या । किहां जासि ।
 तिवारइं मुनि कहइं । हउ रोहीतक नगर हूतउ आविउं ।
 हम बात करतां राजा राणी ए दुस्वप्न परिइं कोप मूंकिउं ।
 तै वार हम महात्मायइं जीव दया मूल धर्म उपदेसिउं ।
 अनइ राजा राणी ए भावना सहित सखहियुं । पछइ ते महात्मा तह
 भात पाणी यइ करी सम्पूर्ण भक्ति कीधी । पच्छइ महात्मायइ यज्ञ-ज्ञान
 रूप धर्म उषध कर्म रोगनी चकिशा भणी आविउं ।

पछइ महात्मा अष्टापदि पदूतउ । हिवतें बिन्हइ यतीना ससग्य लगइ-
 भाबकउ धर्म पालिवा लागी जिमराक । द्रव्यनइ पालइ । अन्यदा वीरमतीनइ
 जिन धर्मनी गाढी स्थिरता करिवा भणी शासनना देवताइं अष्टापद
 तीर्थ देखाडिउं । तिसइ तिहां अष्टापद ऊपरि वीरमतीयइं शाश्वती
 प्रतिमायइं जे देवतां पूजइ छइं । ते देखी परमानंद धरती चउवीसइ-
 जिननी प्रतिमा नमस्करी ।

उदाहरण-

नलदवदंती बाहरि नीकली कहइं । तिव केही दिशि जाईस्यइं ।
 तिवारइ दवदंती कहइं । स्वामिन कुंडिनपुरि जाइयइं ।
 जिहां माहारउ पिता छइं । तिवारइ नल कुंडनपुर भणी रथ खेडिउं ।
 पछइं मार्ग उल्लंघता महा अटवी माहि रथ पडिउ ।
 तिसइ गाम भील आव्या । एहइ नल रथ दूतउ उतरी खल्ल लेई ।
 सामुहइ धावा लागउं । ते नलइ दवदंती कहइ ।
 हे नाथ पाली भणी ताहरउ सिउ आक्षेप । इम कहइ दवदंती हुंकारा मूकइं ।
 जे जे हुंकारा सुणी ते ते आवत थाइ भुइं पडइं ।
 पछइ भीले पलायन कीधा । हिव जे रथ अलगउ मूकउ दूतउ ।
 तिखि करि बीजे लीधउं । पछइ नल दवदंती पालो पालिवा लागी ।
 इम चालतां मार्गि जातां थका किहांइ एक वृक्ष तलइं जई बइठा ।
 तिहां नल केलिनइ पत्रिइ करी दवदंती नइ वाय घातिवा लागउं ।
 दवदंती पणि नलना पग चापइं छइं । एक वई दवदंती त्रिषाक्रांत हुई ।
 तिसइ तले कमलनइ पत्रेकरी जल आणी पायउ ।
 सुस्ती कीधी तिंवाइ दवदंती पूछई । अजी अटवी के एक भाकइं ।
 नल कहइ । सउ जोयण माहि । अजी पाचइ जि जोयण आव्या छां ।
 इम वात करतां सूर आयमिउ । पछइ अशोक वृक्षना पल्लव लेइ साधरउ कीधउ ।
 तिहां दवदंती सूती । एहनउ गाइनइ शब्द सामली ।
 वसतउ जाणी । नलि कहिउं हउ पाहर छउं । तूं सुखि निद्रा करि ।
 पाछइ दवदंती नइ निद्रा आवी । एहवइ नल चीतवइं ।

अन्तिम भाग-

.....। ऐ असार संसार माहि चरित्र इति सार । तेह भणी हिवतूं दीक्षा लइ ।

पछइ नल राजा पुष्कल पुत्रनइं आपणपउं राज देई दवदंती सही दीक्षा लीधी । तिहाँ सतर भेदे संयमे पालतउ पृथ्वी माहि विहार करवा लागउं । पणि नल मुनि कोमलपणां लगइं चारित्रुं पालतउं दीलउ हूअउं । एहवइ निषेध देवि आवी द्रदि कीधउं । तउ ही नल मुनि दवदंती नइं बिषइं कामातुर हूअउं । चली पिता पइं आवी प्रति बोधउं । पछइ अणसण सहित नल मरी कुवेर थाहिइ नमिइ उत्तर दिसिकउ अधिपति हूअउं अनइ दवदंती तेहनी देवो हुई । इम दवदंती नइ परिइं ओर नर लोके सील पालिवउं ॥ ६ ॥

पुष्पिका

“इति श्री दवदंती कथा समाप्त” गङ्गहडा गच्छे मद्रा० श्री ४ दयालसुंदर सूरि पटे श्री ४ भावसुंदर सूरि । पटे श्री आचार्य श्री ४ श्री कर्मसागर सूरि । वा० श्री वीरसुंदर । ग० देववर्द्धन लिखापितं । आत्मवाचनार्थ ॥”

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(२५) द्रौपदी चौपई । रचयिता—सांवतराम । आकार—६'४" x ४'२" । इस ग्रन्थ में १० पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियों और प्रति पंक्ति पर ३२ से ३७ अक्षर हैं । कुल ग्रन्थ में ५१ दोहे, १४ ढाल और १६२ पद हैं । संवत् १८६३ कार्तिक कृष्ण सप्तमी को सांवतराम ने सवाईजयनगर (जयपुर) में रचना की । इसकी भाषा राजस्थानी है । विषय: द्रौपदी के जीवन की घटनाओं को जैन दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया गया है ।

आदि भाग—

दोहा

शील बड़ो संसार में, मंत्रां में नवकार ॥
दांनं माहि बड़ो अनै कग्दे षेवो पार ॥ १ ॥
ग्यान में केवल बड़ो, रिष में गौतम जेम ॥
सतीयां माहि शिरोमणी जोंउ पंचाली जेम ॥ २ ॥
परबरा पडिया द्रौपदी, पञ्चोतर के पाश ॥
शील साध तो राखीयो, सफल फली तथु आश ॥ ३ ॥

ढाल

भर्त क्षेत्र माहे भलों, किपिलपुर नयर रसालो ऐ ॥
राज करें रलीयामणो, दुपद नाम भूपालो ऐ ॥ १ ॥

सुणज्यो चित्त सुहामणी, धरज्यो मन बैरागो ऐ ॥
 करज्यो कारज जीव रो, ज्युं पामो खेवो पारो ऐ ॥ २ ॥
 रूझी ने रलियामणी, लावण ने चतुराई ऐ ॥
 कुमरी द्रौपदी तेह मै, कसर न तिलभर काई ऐ ॥ ३ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(२६) धना सालिद्रजी री चोपी । रचयिता-अज्ञात । आकार-
 ८३" x ४" । पत्र-संख्या ३७ । छंद-संख्या ५०५ । लिपिकाल-संवत् १८७७ ।
 विषय जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

सासण नायक समग्रियै, वर्धमान जिनचंद ।
 अलिय विघन दूरें टलै, आपे परमाणंद ॥ १ ॥
 सहु को जिनवर सारिखा, (पिण) तीरथ घणी विशेष ।
 परणी जेते गाइये, लोक नीत संपेष ॥ २ ॥
 दान-शील-तप-भावना, सिवपुर मारग च्यार ।
 सरिषा छे तो पिण इहां, दान तणो अधिकार ॥ ३ ॥
 सालभद्र सुख संपदा, पामे दान पसाय ।
 तास चरित्र वखाणता, पातिक दूर पलाय ॥ ४ ॥
 तास प्रसंगे जे थई, धन्ता नी पण बात ।
 सावधान थइ सांभलो, मति करिज्ये व्याघात ॥ ५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२७) नयनदीप । रचयिता-कृपाराम । आकार-८" x ७" १" । यह
 ग्रंथ उक्त आकार के एक गुटके में है । इसमें कुल ४३ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १५ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में २१-२३ अक्षर हैं । अक्षर नागरी हैं । लिखावट
 आरम्भ में घसीट है दो पत्रों के पश्चात् लिपि जमी हुई है । कुल ७०० पद्यों में
 ग्रन्थ समाप्त हुआ है । इसका विषय वैश्वक है । इस ग्रन्थ की रचना महाराणा
 संग्रामसिंह (दूसरे) के आदेश से संवत् १७८५ में लेखक ने कई ग्रन्थों का अध्ययन
 कर की गई है । यह बात इसके आदि भाग तथा प्रत्येक अध्याय (प्रकाश) के

अंतिम पुष्पिका लेख से ज्ञात होती है। संवत् १७६४ श्रावण कृष्ण ७ भृगुवार को यह लिपिबद्ध हुआ। इस ग्रन्थ में नेत्र में उत्पन्न होनेवाले विविध रोगों का वर्णन किया गया है। लेखक ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना वंश परिचय भी दिया है। जिससे ज्ञात होता है कि उसके पूर्वज ऋषिकेश भारत के अंतिम सम्राट महाराजा पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे और रावल समरसिंह उसे अपने यहाँ लाये। इसका रचनाकाल संवत् १७८५ है।

आदि भाग-

सुमति सदन गज वदन को, करि कृपाल परनाम ।
 विघन हरन बुद्धि करन, कवि एक रदन निधि धाम ॥ १ ॥
 अमरसिंघ सेवत चरण, एकलिंग शिव धाम ।
 अटल देस मेवार दे, प्रभु थापे तहा रान ॥ २ ॥
 शिव की भक्ति सदा करै, प्रभु को सवै प्रसाद ।
 सूरय कुल मंडल भये, राषन वेद मृजाद ॥ ३ ॥
 नगर उदैपुर प्रगट जग, से वत नृपति समाज ।
 तहां रान संग्रामसिंह, करत इन्द्र ज्यों राज ॥ ४ ॥
 प्रगट धर्म अवतार है, विप्र धेन प्रति पाल ।
 महारांन हींदुवान पति, साहन के उर साल ॥ ५ ॥

व्यापय

महारांन संग्रामसिंघ, जस जगत न बीनों ।
 सिव अराधि सब साधि, दान सकत अति कीनों ॥
 जाको प्रबल प्रताप, मानि फुरमान लपे हैं ।
 सीस नावावत आनि, नृपति मुअ मण्डल जे हैं ।
 सुनि सदा रहत दिल्लीस के उर में संक अपार ।
 अमर रान सुत मान कुल, प्रगटै अधिक उदार ॥ ६ ॥
 + + +
 कुवर नाथ श्री रांन को, हित चित सी सुषकार ।
 कवित राग रुचि जिव सदा, सुंदर सूर उदार ॥ ७ ॥
 कवि पंडित वो होतै गुनि, औरै वैद्य समाज ।
 आग्या करि कृपाल कों, राजा के महाराज ॥ १० ॥

किते नैन के रोग हैं, बरनो तिन्हे बनाय ।
 ज्यों निदान लखिन सहित.....॥ ११ ॥
 विनती करि कृपाल तब, जब प्रभु आग्या कीन ।
 आचारिज मिलि देषि कैं, करियो ग्रंथ नवीन ॥ १२ ॥
 प्रिथीराज चहुवान पैं, रिषीकेश दुज नाम ।
 लाए रावल समरसी, दीनो मोही गांव ॥ १३ ॥
 बैद्य भले तिहि कुल भाए, उदयसिंह महारान ।
 उदक गांव द्यो पीपरी, षेम द्विजन कूं दान ॥ १४ ॥
 उही वंश प्रगटे सुमति, रूपदत्त परवीन ।
 महानंद दूजे कहं, तिनि मिली संमत कीन ॥ १५ ॥
 प्रभु आयस ते ग्रन्थ जिन, विविध सुनाए आनि ।
 नेम तस ..कृपालां कवि, माषा करी वषांनि ॥ १६ ॥
 सुश्रुत चरक..... ।
रच्यो कवि, कृपाराम निरधार ॥ १७ ॥
 संव.....तमे, वरम पञ्चासी जानि * ।
 माह मास सित पैंचमी.. च गुर मानि ॥ १८ ॥

अंतिम भाग—

छाप्य

कवित करे अरु चित्र, वैद्य अश्वर लिपि जानै ।
 जाकी सूरति कहो, काट में ताकी आनै ॥
 बिना प्रान की मेन, बनायर बहे लहरावै ।
 बात अपूरब कहै, सुनत भूपन मन भावै ॥
 सो कृपाराम दुज नाम है, जामे केउ गुन लसै ।
 संग्रामसिंघ महागन दिग, नगर उदैपुर में बसै ॥

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(२८) नरसी महता को माहैरो । रचयिता-रतनोपाती । यह ग्रन्थ भी
 १३७ संतो के संग्रह में है । इसमें कुल ६५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ में ११

पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३१ अक्षर हैं। इसके अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् १६१६, और शालिवाहन संवत् १४८१ में इसकी रचना हुई और बाद में रामरतन-शिवकरण ने शोधकर शुद्ध किया। सारा ग्रंथ दस प्रकाशों में विभाजित किया गया है जिनमें ४० प्रकार के छंद रागादि हैं। कुल संख्या लगभग ६०० है। ग्रन्थ का पूरा नाम 'भक्त वत्सल विरदराग कोतूहल नरसी महता को माहेरो है'।

आदि भाग-

श्री श्री सद गुरु प्रणम्य, द्वितीय बंदु सब साध ।
तृतीय बंदु परि ब्रह्म को, धो बाँधी विमल अगाध ॥ १ ॥
भक्त गत भगवंत गत, यो पे लखी न जाय ।
श्री गुरु देव दया करो, दीजे भेद बताय ॥ २ ॥

सोरठा

विघन हरण गन राज, देह सदा सारद सुमति ।
कौजिये मंगल राज, कंठ कमल बाँधी विमल ॥ ३ ॥

चौपाई

श्री गुरु चरण कवल चित राग्वृं । भक्ति प्रभाव बिडद जस भाग्वं ।
बंदु भक्त भक्त बुधि पाऊं । नरसी को इतिहास सुनाऊँ ॥ ४ ॥
गजरात जूनैगढ माहीं । जक्त छाड कर भक्त के माहीं ।
नागर कुल बड़नगरा केही । पूर्व जनम की भक्ति लेही ॥ ५ ॥
तृतीय जनम की कथा सुनाऊँ । थोडे में बहुती समझाऊँ ।
पूरव जनम हंतो नृप भारी । सुभद्र नाम सतवंती नारी ॥ ६ ॥
सदा भरत पत्नि को दीन्हौ । षग मिल घात रिषी को कीन्हौ ।
पुन्य करत लागो तिन पापूँ । विप्र दुषित हुय दयो सरापू ॥ ७ ॥
सो वह कथा यहाँ नहीं आनी । मीरा मिथुला बहुत बखानी ।
कछु एक तात पिरज चुन लेहू । लघु संक्षेप यहाँ लिख देहू ॥ ८ ॥
यहाँ शिवकरण कहत कछु छार्ई । ग्रंथ बढे बाँचै कोउ नार्हीं ।
यह सुन रीस करो मति कोई । इतनो ही पढ़ें सुनें धन सोई ॥ ९ ॥

दोहा

नृप सुभद्र कों श्राप अति, दियो विप्र कोउ काल ।
गयो महारण के विषे, भयो सिंघ विक्राल ॥ १० ॥

चौपाई

नारी सहित सिंह तन धारे । बन के जंतु सकल चुन भारे ।
रये न षग मृग सकल संघारे । धावा बड़त दूरलौ पारे ॥ ११ ॥
हनें पथिक गौ ग्वाल समेता । चलत न पंथ होत मयुमेता ।
द्वारावती जात मग माँही । सुनते आक सब लोग परांही ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग-

सौला से सोलोतडो, विक्रम संवत जान ।
चवदासैं इकियासियो, शाके शालीवहान ॥ ६ ॥
मक्ता के हित कारणें, जद हरि बांध्यो मोड ।
माहेरामें रूपीया, लागा नहि करोड ॥ १० ॥
जो गावे सीखे सुणें, वैकुंठां को बास ।
हरि नामे रतनो बसै, हरी भक्तन को दास ॥ ११ ॥
लिखे पदे गावे सुणें, कहे करावे कोय ।
खाती रतनो यूं भणे, गऊ सहस फल होय ॥ १२ ॥
माहेरो नरसी तणे, करे ज्ञान अरु मान ।
ज्ञान बटै गुण उपजे, गंगा तणा सनान ॥ १३ ॥
महिमां मादेश तणी, षाती कही बणाय ।
सहज मुक्ति फल पावे सहो, जन जमपुर नहिं जाय ॥ १४ ॥
भक्ति उपजै भयुं मिटै, अस स्वास ससी काज (?) ।
नुषता सकल निहजसी, सांवल सा महाराज ॥ १५ ॥
सुखसारण कृपा करी, सत गुरु दई सुबुद्ध ।
रामरतन शिवकरण यह, सोध करथो अति सुद्ध ॥ १६ ॥

[रामद्वारा धौली बावड़ी, उदयपुर]

(२६) नल दवदंती आख्यान । रचयिता-वैरागी नारायण ।

आकार-१०'१" x ४'१" । पत्र-संख्या-७ । पत्र-संख्या-३१५ । रचनाकाल-१६८२
पोप सुदी एकादशी ।

आदि भाग-

दुहा

परम पुरुष धरि ध्याईइ, वंछित सुखदातार ।
 सिद्धार्थ कुलि चंद सभ, त्रिसला मात मल्हार ॥ १ ॥
 प्रातु समय निति तेहनुं, धरता निर्मल ध्यान ।
 दुख नावइ सुपना तरिइ, बाधइ महिमावांन ॥ २ ॥
 त्रिभुवण.....मंडण निलउ, चरम जिणेसर सामि ।
 वेद मुनि प्रभुता हरइ, लहीइ बुधि नामि ॥ ३ ॥
 तूंकुर.....समरथ धणी, सेव्यु देव दयाल ।
 चरित्र रचुं रलीआंमणुं, देज्यो वरन रसाल ॥ ४ ॥
 नल दवदंती तुं हवईं, सुणज्यो सहु आख्यांन ।
 सती तणां गुण गावतां, दूरि टलइ अज्ञान ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

जीवहणी जेह धर्म रूपसिइ, तेह अनारि जि जांणि ।
 आश्रय छंडीनइ संजम पालीइ, ए जिन परवणी आंणि ॥३१०॥
 रूप ऋषि जीव ऋषि कुंअरजी गणि, श्री मल्लजी मुनिराय ।
 तारण तरण आचागजि रत्नसर, वंदीय तेहना पाय ॥३११॥
 रास रचिउ रलीआंमणउ रंगसुं, आंणीय हरष अपार ।
 भणइ गुणइ जे सांभलइ भाव सुं, तेहनइ जय जयकार ॥३१२॥

कलस

संवत साल बिहासी बरषे, पाष सुदी एकादशी ।
 गुरूवार कृतिका तणइं योगिइं, कीधऊ दिम उल्हसीं ॥३१३॥
 श्री रत्नसीह गणि गच्छ नायक, नेमि जिम सम स्वामिए ।
 ताम प्रसादिइं रास रचीउ, खेडावारे ग्रामिए ॥३१४॥
 देव जिनवर साधु सहिगुरु, दया धरम आराधिइ ।
 वैरागी नारायण जंपइ, मुगित मारग साधिइ ॥३१५॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(३०) नसीतनामो । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'' x ४'' ८'' ।

पत्र-संख्या ७ । रचना गद्य में है । प्रति पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १४-१५ अक्षर हैं । लिपिकात-संवत् १६०१ । लिपिकार-गोपालजी ।

आदि भाग-

दुपाजी पछे । मूला कहै । श्री दली भीतर की बाणी । नीसाणि । पुछयो-बसत कैसे प्रमाणीय । कछो-देतां कुसाली रहे । पुछयो-कोन बाजा सुं जीव पोषीय । कछो-धरम सुं । बुध का विचार सुं । पुछयो-कोन बात जाकुं लोग द्रुडै । कछो-तीन बात सुं । पहले तो देह नरोगी । पछे कुसली रहे तीजी मंत्र हेत कारी । कछो-भलाई तो करनी । बुराई सु दूर रहणा । पुछयो-गुण करता श्रीगुण होई सो कोन । कछो-दे' न पाओ मांगता । पुछयो-कोन बात सुं दल कुं बंधावै । कछो-धरम सुं सांच सुं ॥

अंतिम भाग-

मजमान आगे अपने घर कौ हकीकत ना कीजै । ओर लड़ाई अपने घर पै ना लीजै । असो-काम कीजै सुं अपने घर म्हां कुसाली रहै । जो काम करो जो पंचा प्रमाणो पूछ के कीजै । सब की ईजत राखी जै । तब अपनी ईजत रहे । राजा की महरबानी ऊपर गुमान लाईजे नहीं । पराये घर भोजन बना आदर कीजै नहीं । भूखा कुं अवस दीजै । घर को दुख का सुं कहणों नहीं । क्यूं । बदतो हुव तो लोग लागुं । घट तो हुव तो मरम जावै । मरदु का देवाला मुवा नीसरता है । यो नसीतनामो सत समजसी ज्यो सुख पावसी सही ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३१) नासकेत की कथा । रचयिता- अर्जुन नागा । यह भी १३७ संतों के संग्रह वाले गुटके से लिया गया है । इसमें कुल १२५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । रचयिता ने इस ग्रन्थ में 'नासिकेतोपाख्यान' का २०६२ दोहा--चौपाइयों में भाषानुवाद किया है । संवत् १७५१ पोष ८ गुरुवार को इसकी रचना आरम्भ की और संवत् १७५१ फाल्गुन की प्रथम पंचमी शुक्रवार को यह ग्रन्थ समाप्त किया ।

आदि भाग-

दोहा

गुर गोविंद प्रणाम कर, नारद सारद सेस ।
शिव सनकादिक बंद कै, करुं ग्रन्थ मति जेस ॥ १ ॥
जथा शक्ति बरनन करुं, धरमाधरम विचार ।
सरधा सूं सब सिख सुनै, तगै सिन्धुभव पार ॥ २ ॥
हरिदासन के निमित्त कर, कछो भाष भगवान ।
जो या कुं हिरदै धरै, होय निरंजन ज्ञान ॥ ३ ॥

सत्रहसैइक्यावने, पोष अष्टमी जान ।
धुरगुरवार विचार कै, आरंभ कर दिन मान ॥ ४ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३२) नासकेत पुराण । भाषाकार-नंददास । आकार-३-२" × २-५" ।
पत्र-संख्या-६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । इसको
मोहनदास ने संवत् १६२० आश्विन कृष्ण ११ सोमवार को लिपिबद्ध किया ।
आदि भाग-

आदि संस्कृति महाभाषा करि विस्तारी छै । नासकेत पुराण भाषा करि वारतीक । नंददास
जो आपण सिषनै के हेतु है । सो या कथा कैसी है । सहस्र पाप कटतु है ओर देही बहोत पवित्र
होतु है । या कथा संस्कृत पुराण बैस्यंपायन रिषि । राजा पीछत को पुत्र । राज जनमैजै कों
कथा कहीतु है । राजा जनमैजै या कथा सुणी । परम गति कों पाया है ।

अन्तिम भाग-

राजा जनमैजै विवाण चढ़ि करि । परम पद कों पाय बैकुंठ को प्रापति भयो है ।
बैस्यंपायन रिषि आपणे आश्रम आयो है । ये कथा आदि है । स्वामी नंददास । आपण भित्र
ने भाषा करि सुणाई छै । सो यह कथा महा अमृत है ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(३३) नामकेत भाषा । रचयिता-चरनदास । आकार-१५" × ६" ।
पत्र-संख्या-७४ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर
हैं । इसको मेवाड़ निवासी दाधीच ब्राह्मण सीताराम के पुत्र सुखदेव ने कार्तिक
सुद २ संवत् १६३५ में कपासन में लिपिबद्ध किया—

आदि भाग-

दुहा

जै जै श्री व्यासजी, जै जै गुरु सुख देव ।
तुहन कृपा सूँ कहत हूं, नासकेत को भेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दुहा

नासकेत ऐसी कथा, जैसा धरम जिहान ।
जनमेजय तापै चढ़ा, कष्ट गये सब भाज ॥

षेवटिया जहां व्यास से, वचन बाद ही वान ।
जगत सिंधु सम जानियै, धर्म जिहाज पिछान ॥

×

×

×

बाण अनिमिल अरू नंद महि, विक्रम संवत मान ।
कार्तिक सुद दुतिया रवी, ग्रंथ संपूरन जान ।
पुस्तक प्यारा ग्रान सुं, और हिया का हार ।
रहो जही लग राखियो, पुस्तक ही सो प्यार ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३४) नासकेत भाषा । रचियता-दयाल । इस ग्रन्थ की दो प्रतियां हैं ।

दोनों ही सचित्र हैं । चित्र मुगल शैली के हैं । एक प्रति में पूरे पृष्ठ पर चित्र है और दूसरी और मूल पाठ है । दूसरी प्रति में दोनों पृष्ठों पर छोटे तथा बड़े चित्र हैं जो बीच बीच में चित्रित हैं । प्रत्येक पत्र चित्र पर लिखित प्रसंगानुसार खिंचे हुए हैं । ये चित्र कई रंगों के हैं । हम यहां दूसरी प्रति का ही विवरण देंगे, क्योंकि कथा में कोई अंतर नहीं है और दोनों का रचियता एक ही है ।

आकार-१६" × ११" ५" । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर बीच बीच में चित्र आ जाने के कारण कहीं ६ कहीं २० और कहीं २३ पंक्तियां हैं और प्रति पंक्ति में इसी कारण ४६, ४८ और ५० अक्षर हैं । पूरे ग्रन्थ में ७७८ चौपाई ४ कवित्त (श्लोक १००७ ?) हैं । संवत् १७२४ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में इस ग्रन्थ की रचना समाप्त हुई ।

आदि भाग-

दोहा

श्री गुरु श्री हरि संत सब, रुषिजन नाऊँ सीस ।
गिरजा जनपति सारदा, ऐ विद्या के ईस ॥ १ ॥
बाल जनन से बीनती, कवि गुरु बंदू पाय ।
संस्कृत भाषा करूँ, हे प्रभु करो सहाय ॥ २ ॥

चौपई

राजा जनमेजै बरू भागी, पुन्य संग्रही पाप को त्यागी ।
गंगा तट जगि आरंभ कीयो, द्वादस बरस नेम व्रत लीयो ॥ ३ ॥

तहाँ छुरे हैं रिष संमाजा, पद बंदे जनमेजै राजा ।
ब्रैसंपाईन मुनी समाजा, व्यास सिष्य परिपूरण काजा ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

संस्कृत श्लोक हैं, सुगम सुभाषा कीन ।
जगनाथ आग्या दई, दयाल सीस धर लीन ॥ १२५ ॥
धरि बिधि अक्षर मातरा, आराधऊ सुधि (न) होइ ।
बाल बुधि मम जानि सब, क्षिमा करो मुनि सोइ ॥ १२६ ॥
सितर सात'रू सात सै, दोहा चौपई जानि ।
च्यारि कवित्त पुन ओर भनि, नासकेत आख्यान ॥ १२७ ॥
श्लोक बीसा गन करे, संख्या एक हजार ।
पुनि सात ऊपर जानिए, नासकेत विसतार ॥ १२८ ॥
संवत सत्रा से गए, ऊपरि पुनि चौबीस ।
फागण सुद तिथि सुक्ल पक्ष, पूरण ग्रन्थ सुदीस ॥ १२९ ॥
सत गुर संतन की क्रिपा, भाण्य ऊन उपदेस ।
जो श्रवणि नीकै करै, ताकै मिटै संदेस ॥ १३० ॥
बकता मन दिढ़ राखि करि, बकै ग्रन्थ के बैन ।
श्रोता मुनि निश्चै करै, तब ही तिनक' चैन ॥ १३१ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३५) निसांणी आगम री । रचियता-पं० जगन्नाथ । यह रचना एक
८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में है । इसमें २ पत्र हैं । प्रत्येक पत्र
पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५-२६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या २६ हैं ।

आदि भाग-

आषा तीज अठागुंऐ, आगम पांचा दीह ।
पावूरा पुरमाण अं, ग्रंही ज बीली जीह ॥ १ ॥
सहिणां में सुणिया सबद, मोहि पिउ कियो मन्न ।
जांणु धर उजड हूसी, वसती हूसी वन्न ॥ २ ॥

पुलसी कोधर पष मैं, कोइक खंडसी काल ।
 उलटि चलेसी आदमी, बांधे तकिया बाल ॥ ३ ॥
 कहतां समो करवरो, ऽवैकारा रो बींद ।
 मान नीरंदां बूढिसी, गढ मोलिसी गइंद ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग

तुरका कंध मंडोवरो, दाण वनिक दांतौऽ ।
 जेतीधर ऊअरां, तेती चुहाणां तौऽ ॥ २३ ॥
 एती आण वरतावसी, राठो बध राणैऽ ।
 को भणियो को सावणी, को आगम जाणैऽ ॥ २४ ॥
 आकां उछल पाछल काः, आई ठुक्रियां ठाणैऽ ।
 एवायक उला नहीं, पेला ऊहमाणैऽ ॥ २५ ॥
 खेला पाछूं कहै जी, हवोली ठाणैः ।
 होसी हो ठाकुरे दिल्ली हिंदू आणैऽ ॥ २६ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३६) नेमिनाथ रास । रचयिता-पुण्यरतन । आकार-६'४" x ४'२" ।
 पत्र-संख्या ५ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ । ३४ अक्षर हैं ।
 इसमें लिपि प्राचीन पाटी की होने से मात्राएँ पीछे की ओर लगीं हैं । पद्य-संख्या
 १६५ ।

आदि भाग-

सारद पाय पणमी करी, नेमि तणा गुण होइ धरेविं कि ।
 रास भगू रूलीयामणउ, गुण गिरू आगा इसूं संषेवकि ।
 हुं बलिहारी यादवा ॥ १ ॥ द्रुपद (ध्रूपद) ।
 एक सर उरध पाछु बालिकि, मइ अपराध न को कीउ ।
 कांइ ठोडइ नव योवन बालिकि, राजलि प्रीऊ प्रति इम भणाइ ॥ २ ॥
 सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुद्र विजय नु ठामकि ।
 शिवादित्रि राणी तसु तण, अणुपम रूपि रंभ समाण कि ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

चुपन दिवस नि अंतरि, आश्विनि तणी अमावसि जाणकि ।
 रैवत सिषर वर पाषती, जिनवर पाम्यु केवल न्यांनकि ॥ ६२ ॥

संपि म पाली सातसि, सहस वर सतुपुरी आड कि ।

असादि सुदि अष्टमी, मुगति पहुता यादव राइ कि ॥ ६३ ॥

प्रहि उठी नित प्रणमीइ, श्रीयादव मंडण गिरिनारि कि ।

मन बांछित फल ते लहि, हरणि जे गाई नर नारि कि ॥ ६४ ॥

समुद्र विजय तनु गुण निल, सेव करइ जसु सुर वृंदकि ।

पुन्य रतन मुनि इय भणि, श्री संघ सु प्रसंता नमि जिणंद कि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३७) पद्मावती नी वार्त्ता । रचयिता-सामलदास । आकार ७'' x ५'५''

पत्र-संख्या ८६ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १२-१३ अक्षर अधिक जमे हुये और साफ नहीं है पर पढ़े जा सकते हैं । ६५८ पद्यों की यह वार्त्ता त्रिभुवन त्रिवाड़ी द्वारा संवत् १६१८ बेसाख विद् ३० बुधवार को लिपिबद्ध की गई । इसकी भाषा बागड़ी है, जो दक्षिणी मेवाड़ी का एक अंग है । इसमें चंपावती नगरी के राज कुमार पुष्पसेन्य तथा कुन्तलपुर की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम और विवाह का वर्णन है । रचना सरल, सरस और सुन्दर है ।

आदि भाग-

दोहरो

परथम समरूँ सारदा, आपो एक पसाअ ।

वरदो मुज वर दाअनी, सुभ मती आओ माय ॥ १ ॥

+ + +

कल्प वृक्ष कवि राजवी, पूरो मननी आस ।

बहुकर जोडी वरणये, कहे कवि सामलदास ॥ ४ ॥

+ + +

आख्यान कहूँ पद्मावती, सती सिरोमणी जेह ।

पुष्प सेन्य राजा ने वरी, वरणव करहुं तेह ॥ ६ ॥

+ + +

चतुर नगर चंपावती, (तिनी) चंपक सेन्य राजन ।

(तेन) पटराणी पुष्पावती,(तिनी) पुष्पसेन्य ऐक तन ॥ ८ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरो

सोमल मरे रो वरणवृं, पृष्प मैन्य आख्यान ।
 गाय् सीखे ने सांभले, तीने गंगानुं स्नान ॥ १ ॥
 सतवादी जेराय ने, गाय सुणे नहीं माय ।
 बी जोग भोगे तेहना, यासा पूरण थाय ॥ २ ॥
 राजो राणी जम मला, पोती मननी हांम ।
 जो कोई सीखे सांभले, (तितुं) अंबा पूरे काम ॥ ३ ॥
 सेवक छे अंबा तणो, सौ कविउ केरो दास ।
 भ्रामण चारण भाट ने, नसी करू पुरो अभ्यास ॥ ४ ॥
 खोटमदे सोजन कवी, सौ कोनो हु रांक ।
 जाणो अंजाणे जे करू, क्षमा करो मुझ बांक ॥ ५ ॥
 कवीरी कई ई वारता, कान्य सुण जो सोय ।
 श्रोतां जन सौ सांभलो, श्री हरी को सौ कोय ॥ ६ ॥

[कविराव मोहनमिह, उदयपुर]

(३८) परदेसी राजा री चोपाई । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ३१ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति २६-३३ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ४५६ ।
 लिपिकाल-संवत् १६३१ मिति आषाढ़ विद् १२ ।

आदि भाग-

संघ प्रदेसीरायनी, राय प्रसेणी माहि !
 तिण अणुसारै हुं कहूं, सांभल ज्यो चित नाहि ॥ १ ॥
 आमल कंप्पा नगरी, (तिहाँ) अंब साल ना राग ।
 तिहाँ श्री वीर समोसरया, भव जीरा रै भाग ॥ २ ॥
 खबर हुई नगरी मभे, लोग बांदण जाय ।
 सेनराय जीपी आवीयो, सेव करे चित लाय ॥ ३ ॥
 च्यार जात रा देवता, आया वंदण नै काज ।
 ल ल नै लटका करै, धन दीहाड़ो आज ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

परदेसी ना सीध कही रे, भगत भाव विचारी रे ।

जो कोई साधु पढ़े तिणकुं, वंनणा हमारी रे ॥ १४ ॥

[चर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३६) पांडव यशेन्दु चन्द्रिका । रचयिता-स्वरूपदास । आकार-
८'५'' x १०'६'' । पत्र-संख्या-१६३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक
पंक्ति में २०-२१ अक्षर हैं । पत्र-संख्या ११६७ (१६ मयूख) लिपिकाल-संवत्-
१६१७ कार्तिक कृष्ण ३ गुरुवार । लिपिकार-वैष्णव नरसिंघदास ।

आदि भाग-

अथ रसालकृत बोधिनी पांडव यशेन्दु चन्द्रिका

दुहा

ध्यान कीर्तन वंदना, त्रिविध मंगलाचर्न ।

प्रथम अनुष्टुप बीच सोइ, भये त्रिधा सुध कर्ण ॥ १ ॥

नमो अनन्त ब्रह्माण्ड के, मर-भूप नकेभूप ।

पांडव-यशेन्दु-चन्द्रिका, वरनत दास सरूप ॥ २ ॥

स्वामी के पीछे रहै, आदि होय उच्चार ।

नर नारायन सब्द कुं, दास स्वरूप विचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तति कीनी हुंये चन्द्रिका, मेरी मति अनुमान ।

भक्त संग अरु भक्ति कों, देहु कृपानिधि दान ॥ ५५ ॥

पंगुल गूंगो रोग छुत, बनि कछु धातुर जीव ।

भय छुत बालकत्रिया अत्रष (?), सुनत अनाथ सदीव ॥ ५६ ॥

कवित्त

ज्ञान ओ विराग दोउ पांन विनाइ पंगू,

भक्ति रस न तिहिन गूंग हूँ निहारोने ।

त्रिधा ताप रोगी कर्म बानी जब निकहूँ मैं,

भूखो दस धाको केउ जन्म को विचारोने ॥

काल मित बाल बुधि आतमा है अबलाओ,

अंध तत्व अजन हूँ विनाहू नेक धारोगे ।
 एक अंग के अनाथ ताकि विषे सूने हाथ,
 आदि अंत में अनाथ नाथ का विसारोगे ॥ ५७ ॥

छप्पय

पंगु कुबज्या संपाति, गूंग ज भला अर्जुन गावत ।
 रोगी माधवदास, वनिक, तरि लोचन धावत ॥
 छुधित सुदामा विप्र, नित जुत व्रज की भामिनि ।
 बालक ध्रुव प्रहलाद, अबल द्रुपदादिक कामिनि ॥
 है अंध सूरलौ हम सुने, हाथ विकें तिजु के हरि ।
 ॥ ५८ ॥

दूहा

रस'रू अंलकत ग्रंथ में, लिखे नाहि इहमाय ।
 समझहि बुधि जिन बितुं लिखे, अबध लिखें लखाय ॥ ५९ ॥
 पिंगल डिंगल संसकत, सब समझन के काज ।
 मिश्रत सी भाषा धरी, छिमा करिहु कविराज ॥ ६० ॥

सोरठो

नृप रस को बलुतीक, भूषित धुनि अधिक भये ।
 दूषन खर नजदीक, भारवाह मेढहि कि भा (?) ॥ ६१ ॥

इसका पाठ बहुत अशुद्ध है ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) फूलजी फूलमती री वार्ता । रचयिता-मंझापूरी, जोधपुरी ।

आकार-११" x ६" । पत्र-संख्या २३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । संवत् १८५२ चैत्र शुक्ल ६, रविवार को इसकी रचना हुई । इसमें उदयपुर राज्यान्तर्गत भदेसरी के लक्ष्मणसिंह सेठ गंगाराम की बेटी फूलमती की सगाई, उदयपुर में सामजीराम के बेटे मोक्ष से होती है । पर फूलमती एक अन्य व्यक्ति फूलजी से प्रेम करने लगती है । इन्हीं दोनों की प्रेम कहानी मारवाड़ी भाषा में वार्ता के रूप में दी गई है । पद्य इसमें केवल २३ ही हैं, परन्तु सारी प्रति कई रंगों के चित्रों से सचित्र है ।

आदि भाग-

दुहा

समरू देवी सारदा, गवरी पुत्र गनेश ।
 निमस्कार शिव कुं करूँ, ब्रह्मा विसणु महेस ॥ १ ॥

वारता

श्री ऊदेपुर में सीसोदीयो राणों राजसीधजी राज करै छै । बड़ो जोरावर छै । राजसींग री वार
 में भदेसरी नगर सेठ गंगाराम रहे छै । बड़ो दोलतवंत लखेश्वरी धरमात्मा छै । तिणरे बेटी
 फूलमती मोटी हुई । तिणरी सगाई सांमजीराम रा बेटा मोत सुं कीवी छै । सेहर उदेपुर माही ज
 कीधी । ओ पण रूप रो निधान छैः।

अन्तिम भाग-

वारता

पाटवी कुंवर उदेसीध ने परा मराया । तरे ए समाचार फुलजी सुणीया सो घणो फीकर कीनो ।
 पछे राणांजी ने मुजरो करण गया । मुजरो कीधो । राणेजी लाष दोय रो पटो दीनो । ने धीरप
 देने ऊदेपुर राखीया । फुलजी फुलमती जीवीया । जठा तई घणो सनेह राखीयो ।

दुहा

अरज हमारी मानने, बात करी विख्यात ।
 आग्या सुं कीनी कथा, माता तेरे दास ॥ २२ ॥
 मंझापुरी मातजी, बमे जोधपुर वास ।
 जिहा शंकर के सीस पर, सदा रहत हे चांद ॥ २३ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(४१) बुढला री ढालाँ । रचयिता-मोतीचंद 'चंद' । आकार-
 १०" × ४'६" । पत्र-संख्या ७ । सर्व ढाल २२ । रचना काल-१८३६ । विषय-एक
 धनलोलुप पिता अपनी पुत्री को किसी बूढ़े के साथ ब्याह देता है, उसकी करुण
 कहानी । भाषा-मारवाड़ी ।

आदि भाग-

दुहा

दया 'ज माता बीनबू', गणधर लागू पाय ।
 बर्द्धमान चोबसमा, बादू सीस नमाय ॥ १ ॥
 कन्या ने जमी तणो, पइसो न लीजै कोय ।
 बूढा नै परणावतां, गुण बूढा रा जोय ॥ २ ॥

ढाल-इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥
 पर देस सुं एक सेठ 'ज आयो ॥
 धन कमाय 'र बोहलो ब्यायो ॥
 रुपीया नवसै आकरा लीया ॥
 बटा लागिण पाछा दीया ॥
 सभरे लगने साहो सुजावै ॥
 भर सारू वले जान बुलावै ॥
 वीन वीनरो दूज्यो भाई ॥
 तीजो भोजग चोभो नाई ॥

अन्तिम भाग-

मा कहै सुण । है बेटी, मम करो याँ सू बाद ।
 यां रां हुकम मे रहो, करो जीव री साद ॥ १ ॥
 बालक ने परणी सू तो ले गयो काल..... ।
 बूढा नै परणी ढालरी, यो हुलराव मावार ॥ २ ॥
 कहूँ मन मै धरस्यो राग ।
 धारो क्यूँ ही नहीं बिगड्यो बेटी गज पतला भाग । ढाल ।
 बेटी धारे माथे रो मोड़ो । तोनै इण वीन किसड़ी ठोड़ो ॥
 इण सुहाग सुं हुं धाई । सामायक कर स्यूं सहाई ॥
 मारी नव तत्व हिरदै धरस्युं । तपस्या ने पोभो करस्युं ॥
 भर सारू दान हुं देस्युं । मन मान्या कारज करस्युं ॥
 संवत् १८३६सै आणी । मगसर मास ए जाणी ॥
 'चंद' परतिख देख बखाणी । सुणो कलज्जग री नीसाणी ॥

(४२) बूढ़या रासो । रचियता-मोतीचंद 'चंद' । आकार-१०'' x ५'५''
इसमें कुल ११ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २१ । २५
तक अक्षर हैं । लिपि जमी हुई नहीं है पर लिखावट जैन पाटी की ही है । कुल
१०८ छंदों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है । रचियता का यह मूल ग्रन्थ ज्ञात होता है ।
इसका रचना काल तथा लिपिकाल संवत् १८४५ मृगसर मास है ।

आदि भाग-

दूहा

जंबू द्वीपना भरत मा, दुषमी पंच में काल ।
धनि होई तो घर नहीं, घर ह्वै तो नहि नारि ॥ १ ॥
निरधन के बेटी हुई मन में हरषित थाइ ।
बाई जी मोटी हुवै, तो म्हारा घर नो दालिद जाइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बैन कहै सुणों बाई । चिता मन में म करा भाई ।
बाप रुपिया सूँ चित लाई । तो बूढ़ा ने परणार्थ ॥ १ ॥
तपस्या करि लाह्या लेस्युं । घर सखुं दान ज देस्युं
संमत अठारै पैतालीसैं आणी । मृगसर मासैं ज जाणी ॥ ८ ॥
मोतीचंद कहै भाई । बाई थे सो धरम बिना एक भाई ।
मोतीचंद प्रतक बषाणी । या कलियुग की नीसाणी

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४३) भटियाणी की वार्ता । रचियता-अज्ञात । आकार-१०'१'' x ६'३''
पत्र संख्या-६ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं ।
यह रचना गीतों में लिखित है । इसमें किमी भटियाणी का विरह वर्णन है ।

आदि भाग-

मामी ने भटियाणी कागद मोकल्यारे ।
मोकमसिंघ ! अके बार उदेपुर आव ।
ओगा राजीओ ! अके बार उदेपुर आव ॥

वारी वारी कागद कही मोकलो रे ।
मामज मारेवती आयहु न जाय ॥

अन्तिम भाग—

ज्ञान री वाता नहीं करे रे मोकल सीध,
ममता में बीया जाया । छोगा
हाथे पले कही आवे नहीं रे मोकम सिंघ,
अणगणती राखार । छोगा
वेणी वे ज्यो होसी । मोकमसीध,
ईश्वर धारे जो होयगा । छोगा.....

[अन्ताणी संग्रह]

(४४) भावनावेलि । रचयिता—जससोमविबुद्ध । आकार—
१०'४'' × ४'३'' । पद्य संख्या—१०७ । पत्र-संख्या ४ । लिपिकला-संवत् १७६० मार्ग-
शीर्ष कृष्ण पक्ष ७ कर्मवाश्री, लिखतं पलागा मध्ये ।

आदि भाग—

दृहा

पास जिणेश्वर पय नमी, सह गुरु तई आधार ।
भविष्य जण नै हित भणी, भणस्युं भावन बार ॥ १ ॥
प्रथम अनत्व असरण पणुं, एह संसार विचार ।
एकलपण अनत्व तिम, अशचि आसव संसार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

(तथा रचनाकाल)

दृहा

भोजन नम गुण वरस सुचि, सत हे सरि कुजवार ।
भगते हेज भवन भणि, जेस लमेर मभार ॥ ५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(४५) भुवन भानु केवली । रचयिता—अज्ञात । लिपिकाल—संवत्
१८१७ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४६) मंगल कलश । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०" x ४" २"
पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४७) मदननरिन्द चरित । रचयिता-दयासागर । आकार-
६" ४" x ४" ४" । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या ५६५ । रचनाकाल-१६१६, आसोज
सुदी १०, गुरुवार । इसीका दूसरा नाम 'मदनराज ऋषि नी चउपइ' है ।

आदि भाग-

आदि जिणेश्वर अतुल बल, शांतिनाथ सुखकार ।
नेमि पास प्रणमु सदा, वीर विनय भंडार ॥ १ ॥
जिन वंदना वृज-वासिनी, गौर वरण गुण गेह ।
ते सरसति समरूँ सदा, वचन रूप जसु देह ॥ २ ॥
मुभ तनु घर मांहीं किऊ, ज्ञान दीप जिणसार ।
ते सदगुरु नइं हुं सदा, जुगतइं करूँ जुहार ॥ ३ ॥
सुकवि तणी अनुमति लही, शीलतणइ अधिकारि ।
मदन नरिंद तणुं चरित हुं, विरचि सुमति सार ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

मदन महीपति चरित विचार । बोलिउं शील तणि अधिकारि ॥
जे नर शील सदा मनि धरइं । शिव रमणी ते निश्चइं वरइं ॥ ५६ ॥
श्री अंचल गच्छि उदधि समांण । संघ रयण केरउ अहि ठांण ॥
उदउ तास पधारण चंद ! श्री धरम मूर्ति सूरेश मुणिंद ॥ ६० ॥
अचारिज श्री गुरु कल्याण । सागर सागर सम गुण नांण ॥
तास पत्ति महिमा भंडार । पंडित भीमरतन अणगार ॥ ६१ ॥
तास विनेय विनय गुण गेह । उदय समुद्र सु गुरु स सनेह ॥
तास सीस आणंदइ घणइं । श्री दयासागर वाचक इम मणइ ॥ ६२ ॥
गुरु भाई लहुडउ ऋषि देव । विनयवंत सारइं मिति सेव ॥
आदरि तेह तणइ ए पईं । मदनराज ऋषिनी चउपई ॥ ६३ ॥

दूहा

मदन शतक का दूहड़ा, एकोतरसो सार ।

मदन नरिंद तणुं चरित, मइ विरच्युं विरतारि ॥ ६४ ॥

सोलहसय उठाणोतरहं, पुर जालोर मभारि ।

आसो सुदि दशमि महं कीऊ, कथाबंध गुस्वारि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४८) मयणरेहा । रचयिता-हर सेवक । आकार-१०'२"×४'५" ।

पत्र-संख्या-६ । पद्य-संख्या १५७ । लिपिकाल-संवत् १८७८ । विषय-जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

जुवो मांश दारू थकी, करे वेश्या सूं जोष ।
जीव हिस्यां चोरी करै, पर नारी ने दोष ॥ १ ॥

+ + +

जंबू द्वीप नै भरत खेतर में नगर सुदर्शन भारी ।
धन सम्पूरण देखत सुंदर रैत सुखी राजारी ॥ ५ ॥
मरणेथ राजा रै धरणी राणी रिद्ध तणों विस्तारो ।
मनरथ राजा रे जुग बाहु भाई माहो माहि छे धारो ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग-

युग बाहू नै मयण रेहा राणी युगवल्लभ लघु भाई ।
च्यारां रा तो कारिज सरीया मणरथ दुरगति माहीं ॥ ५४ ॥
एक कृविल्ल मणरथ सेव्यो दुख पायो संसारो ।
सात कृविल्ल सेवे प्राणी जिण रा दुख छै अंपारो ॥ ५५ ॥
विसन सातमो पर नारी रो जीव घात घर हांणी ।
मणरथ राजा नारकी पोहतो कुजस बाध्यौ प्राणी ॥ ५६ ॥
विषया-रस तो विष जाण नै सद गुर सेवा कीजो ।
मणरथ राजा री वात सुणी नै पर नारी त्यागी जो ॥ ५७ ॥

(मेड़ता मध्यै)

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४६) महिपाल नरेन्द्र चरित । रचयिता-विनयचंद्र । आकार-
१०'२" x ४'६" । पत्र-संख्या १८७ । पद्य-संख्या ३६२७ ।

आदि भाग-

श्री नामेय युगाजि जिन, प्रथम नरेश्वर पाय ।
प्रणमुं मन वच काय सुं, संसेवित सुरसाय ॥ १ ॥
मारु देव मनमथ मथन, कथन गुणां की राशि ।
सूशंभो तुंथे सरस, पोहचे नाहि प्रयासि ॥ २ ॥
ऋषभदेव असरण सरण, पूरण सकल जगीस ।
केवलदरसण ज्ञानमय, तीन भुवन के ईश ॥ ३ ॥
शासन नायक सुखकरण, सुर गिरि सम प्रभू धीर ।
प्रणमूं जगनायक सदा, मति दायक महावीर ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

जयो जगत जीवराज गुरवर केवली धर्म प्रकासियो ।
धनराज धन सुभ राय ऋषिवर स्याम आगम भासियो ॥
तास चंद्र अतुं प मुनिवर शिष्य विनय या भणी ।
चोपई महिपाल मुनि नी श्री संघ रंग वधामणी ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५०) मानतुंग मानवती रास । रचयिता-मोहनविजय । आकार-
६" x ४" । पत्र-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में
३४ अक्षर हैं । लिपिकाल-मंवन १८५१ वर्षे पोष वदी ४ दिने श्री ।

आदि भाग-

ऋषभ जिणंद पदांजूजे, मन मधुकर करि लीन ।
आगम गुण सौरभ वर अति आदर थी लीन ॥ १ ॥
यान पात्र सम जिन वरूं, तारण भवनिधि तोय ।
आप तरथां तारे अवर, तेन प्रणमति होय ॥ २ ॥
भावे प्रणमूं भारती, वरदाता सुविलास ।
बावन अक्षर थी भरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥

शुक्र करथा के शनि थकी, एहवी जेहनी शक्ति ।

किम मुकामें तेहनइ, पदनी कोविद शक्ति ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

राज ऋद्धि गृहदास तणां सुख ते सुहिणे न विचारे हैं ।

जिम अहि कंचुकी विरमी अलगी जिम सफरी नैन तिहारे हैं ॥

मानतुंग जिमि ऋषि मानवती तिमि कोहादिक ने गो हे हैं ।

करे विहार जिन कल्पी भविगण ने पडि बोहे हैं ॥

अनुक्रमे सासतणी संलेखण करीने बेहू गह गहता हैं ।

सय रे तेतीसमे आयु समये सर्वार्थ सिद्धे बूहता हैं ॥

तिहा थी पिणतें बिहूँ न चव सें महा विदेहे अवतरस्ये हैं ।

..... ॥

पुष्पिका-

श्रीविजयसेन सूराय सेवक कीर्तिविज उवकाया है ।

तत्सीस संजम गुण लीला मानविजय वधुराया हैं ॥

तास सीस पंडित मुंगटा मणि रूप विजय कविराया हैं ।

तास चरण करुणा थी करी नें अक्षर गुण में गाया हैं ॥

अणहिलपुर पट्टन में रहिने मानवती गुण गाया हैं ।

दुर्गादास राठोड़ ने राज्ये आनंद अधिक उपाया हैं ॥

सड़तालीस ढाले करी ने कीधीरास रसाला हो ।

मोहन विजय कहे नित होज्यो घरि घरि मंगलमाला हो ॥

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(५१) मुनियति चरित्र कथा । रचयिता-सांखभद्र । आकार-१०" × ४"

पत्र-संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३८-४०

अक्षर हैं । पद्य-संख्या ५७३ । रचनाकाल-संवत् १५५० वैशाख कृष्ण सप्तमी

रविवार ।

आदि भाग-

गागाय मग धर पाय पणमेवि नामि नवनिधिसंपजइ ।

..... सयल सिद्धि सेवकह थापइ ॥

एक मना जे उलगि धरइ ध्यान तस्स लचधि आपई ।

..... ॥ १ ॥

बेकर जोड़ी वीनविउ, देउ मभ वाणि विशेष ।

बोलेस राउ मुनिपति वरी, कथा बंध सुविशेष ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

करइ सवि अति पश्चाताप । दीधू आलसहुस्यइ मुभ पाप ।

लाजिउ घणु हीया माहि तेह । भव बंधन सं नहि संदेह ॥ २ ॥

धयो वैगग सेविनइ घणु । कसुं काज हवइ आपणु ।

घणुं महोच्छव तिणि कीधी । रिषि मुनिपति नइ दत्ता दीधी ॥ ३ ॥

बेहू मुनिवर करइ विहार । पालइ पंच महाव्रत भार ।

धर्म ध्यानि तपि सोसीदेह देव लोक नइ गया बेह ॥ ४ ॥

तेहनु ध्यान हीया माहि आण । बेहुए एकावतारी जाण ।

मृगति पंथि ते जाइ वही । सणउ कथा साखभद्र कही ॥ ५ ॥

[वद्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५२) मेतारज मुनि चरित्र कथा । रचयिता-चौथमल । आकार-

६'६" × ४'४" । पत्र-संख्या ६ । रचनाकाल-संवत् १८६२ असाढ़ विद १३ ।

पद्य-संख्या २०१ ।

आदि भाग-

समरू सासण रा धणी, पो उगंते सूर ।

अनंत चौवीसी वादतां, जन्म-मर्ण जाय दूर ॥ १ ॥

श्री श्रीमंदर आदि दे, जेवंता जगदीस ।

केवल ग्यानी साधने, सदा नमाउ सीस ॥ २ ॥

चोखो चारित्र पालतां, करे दुगंछा कोय ।

मेतारज मुनी नी परे, नीच गत फल होय ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप जप कर सुध गत गयो, नेट जासी नीरवाण ।

आवागमन मेटायने, जनम मरण कर हाण ॥ ६ ॥

बध परीस(?) सही करी, मेता रज रिष राय ।
सिव सुख पांम्या सासता, रिष चोथमल गुण गाय ॥१०॥
ऊमा दे पन दूसरो, अधे न मेरा भाव ।
ग्यानी देवी दीखीयो, चित धरीयां तिण रो डाव ॥११॥
समत १८६२ आसाट वदि १३ जोय ।
सहर मेड़ता मे करया तणीया गुणीयो सुख होय ॥१२॥
कथा अनुसारे दाखीयो, केवली मील जोय ।
इधके उछो ज्यो करयो; तो मिछा मडकड(?) मोय ॥१३॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५३) मोहमरद राजा की कथा । रचयिता--जगन्नाथ । इसकी कई
प्रतियां देखी गईं जिनमें से चार का उल्लेख यहाँ दिया जाता है :—
प्रति १: आकार ४'५" × ३'१" । पत्र संख्या २५ । पद्य संख्या-१२५ ।

[श्री रोशनलाल सामर, वकील, उदयपुर]

प्रति २: आकार ६'२" × ४" । पत्र संख्या- १६ । पद्य संख्या-२७२ ।

[रामद्वारा, धोलीबावड़ी, उदयपुर]

प्रति ३: आकार ३' × २'४" । पत्र संख्या- २७ । पद्य संख्या-२७२ ।

प्रति ४: देखो: - जन सूरतराम वाणी संग्रह ग्रंथ १५ ।

विशेष- प्रति २ और तीन में रचनाकाल इस प्रकार दिया गया है-

‘संवत् सत्रेहसौ छयोत्रे बरष’ ।

अतः मिलाओ भाग १, १०२ । (६६) में उल्लिखित लिपिकाल ।

(५४) रत्नपाल रत्नावती रास । रचयिता- सूरविजय । आकार-
६'४" × ६" । पत्र-संख्या ३८ । पद्य-संख्या ७८१ । रचनाकाल-संवत् १७३२ ।
लिपिकाल संवत् १६३२ ।

आदि भाग-

दूहा

श्री ऋमादिक जिन नमं, वर्त्तमान चौबीस ।

सीमंधर प्रमुख नमं, विरहमान बलिबीस ॥ १ ॥

पुंढरीक गो तम प्रमुख, गणधर हुआ गुणवंत ।
 चउदैसै भावन नमुं, मोटा महिमावंत ॥ २ ॥
 समएं हुं श्रीसारदा, त्रिण जग मां जस ख्यात ।
 वीणा पुस्तक धारिणी, शुभ मति आपो मात ॥ ३ ॥
 निज गुरुनाम जपुं सदा, रिद्धि सिद्धि दातार ।
 मूरख नइं पंडित करइ, ए मोटो उपगार ॥ ४ ॥
 तास तणै सुपसाउ लै, रचस्युं रास रसाल ।
 रतनपाल गुण गायवा, मुभ्भ मन थयो उजमाल ॥ ५ ॥

(५५) राजनीति-हितोपदेश । रचयिता-भैरवप्रसाद । लिपिकाल-संवत्-
 १६२१, भाद्रपद वदि १३ चन्द्र । यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है- इसकी सूचना इसके निम्न-
 लिखित अंशों से ज्ञात हो जाती है—

प्रादि भाग—

“किसी समय श्रीनारायण पंडित ने नीतिशास्त्रों से कथाओं का संग्रह कर संस्कृत में एक
 ग्रन्थ बनाया और उसका नाम हितोपदेश रखा सो संवत् १८६६ में ललूलाल कवि
 ब्राह्मण गुजराती आगरे वाले ने उसका आशय ले त्रिजभाखा कर नाम राजनीति रखा ।
 सो अब उसे भैरवप्रसाद इंदोर के हिंदी मंदरसे के गुरु ने हिन्दी बोली में रचा ।

दोहा

पंडित हे ते जानिये, कथा प्रसंग प्रबोन ।
 मूरख मन मे मानि हे, लाल कहाय हकीन” ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

“बांदर सैं यह उपदेश सुन मगर अपणै घर गया और उसने नया विवाह किया, ओ घर
 बसाया, सब दुख छोड़ा आनंद से रहने लगा ।”

उदाहरण—

“कहा है— जिस सभा में वृध न होय सो सभा न पावे । और ओ वृध नहीं जो धर्म नहीं
 पहिचानता हो । और वह धर्म नहीं जो सत्य न होय । वह सत्य नहीं जहां दया न होय ।
 ऐसे समझाय मंत्री ने राजा का क्रोध सांत किया ।”

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(५६) राजा चार बकचूलजी की कथा । रचयिता-खेम । आकार—
 ४'५" x ३'१" । पत्र-संख्या ४० । प्रति पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६

अक्षर हैं । पद्य-संख्या १७१ । इसमें किसी चोर बरूचूल नाम के राजा के यहाँ चार साधुओं के ठहरने, उनका राजा द्वारा पहले सम्मान न होना, फिर इसके लिये राजा द्वारा क्षमा याचना आदि का वर्णन है । रचना सामान्य कोटि की है ।

रचनाकाल - १७५० के उत्तरार्द्ध की अनुमानित ।

आदि भाग-

गुरु प्रमेस्वर कौं श्रु प्रनाम । बरनौ कथा धरम सुख धाम ॥
 करौ चौपाई कहि समझाऊं । सब को मन आनंद बढ़ाऊँ ॥ १ ॥
 सिब बिरंचि नारद सनकादिक । बंदौ कल्प जुदत सुकादिक ॥
 सकल साध जे है निज संत । नमो तास को भगति अनंत ॥ २ ॥
 एक प्रसंग कहूं अब सोई । साध संगति को सो फल होई ॥
 राजा एक चोर बरूचूल । ताके विनिध मांति की मूल ॥ ३ ॥
 चारि साध पुनि आर्ये जहाँ । उतर आइ बाग में तहाँ ॥
 बरिषा चतुर भास रूति आई । साध रहे यह मति ठह राई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

राजा चोर बरूचूल की बरनो सहठ विधान ।
 साधन के सतसंग तै, पायौ पद निरवान ॥ १७० ॥
 चारि बचन साधन कहै, नृपति उधार्यो सोइ ॥
 खेम कहै धनि धनि हुवै, नित प्रति सेवे सोइ ॥ १७१ ॥

[रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(५७) . राजा भोज चरित्र पनरमी विद्या री बात । रचयिता-व्यास भवानीदास । आकार-५'५'' x ४'२'' । पत्र-संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २० अक्षर हैं । यह वार्त्ता गद्य-पद्य में है । पद्य-संख्या-३२६ । हठीमल लोढ़ा ने इसको संवत् १८२१ जेठविद् ६, सोमवार को लिपि बद्ध किया । भाषा-राजस्थानी ।

आदि भाग-

अथ राजा भोज धारा नगरी रो धणी तिणरी पनरमी विद्यारी वार्त्ता लिख्यते । व्यास भवानी-
 दाम कृत । दूहा, चन्द्रायण, रेखता, नीसाणी, रूपासंकृत लिख्यते ।

दूहा

श्री गणपत सरस्वति शिव, विसन रबी गुरदेव ।
 व्यास करै अरदास प्रभु, दीजै अक्षर भैव ॥ १ ॥
 अविरत वाणी आपिजै, दीजै सुबुध सुग्यान ।
 त्रिया चरित वरणन करूं, धर सुभ वन.....ध्यान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

छप्पय

श्री महाराजा भोज, आप मेह मांतन आयो ।
 सुर न हुआ आणंद, प्रथी नव खंड सुहायो ॥
 समिया हुआ सुगल, काल अरीया सिर कोपै ॥
 षट दरसण पोषिजै, रिधु आरोपारोपे ॥
 जग जीत वात राखण, जगत पीत रीत पारख करी ।
 सुण जो सुजाण नर नारियाँ, इल पर गलाँ ऊबरी ॥ १ ॥
 गढ जोधाण सतोल, धाम आई बिलीडै ।
 ॥
 भोज चिरत जिण सुण कह्यौ कविगण सुख पावै ।
 व्यास भवानीदास, कवित कर वात वणवै ॥
 सुणियो प्रबंध चारण प्रते, भोजराज कवि यूं कह्यौ ।
 कलियाणदास भूपाल को, धरम-धजा-धारी थयौ ॥ २ ॥

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

(५८) राठोड़ वंश की उत्पत्ति साखातेरा की ।

रचयिता-कविराव करनीदान । आकार-१५" × ६" । पत्र-संख्या १०८ ।
 इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ अक्षर हैं । ग्रन्थ, दोहे
 और छप्पयों तथा अन्य कई प्रकार के छंदों में रचित है । इस प्रति को खटाड़ी
 के खड़िया नरसिंगदास भेरूदासोत ने संवत् १६०७ और १६०८ के बीच में
 लिपिबद्ध किया । रचना डिंगल में है । पाठ बड़ा शुद्ध है ।

आदि भाग-

छंद बेअषरी

राम पाट कुस भूप विराजे । सुज कुस पाट अनत त्रप साजे ।
स भ्रम अतत त्रप सोहत । राजा नषद पाट नम राजत ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

दिवस एक जयचंद, बीर भीसलत बीचारी ।
जीय किया सह जेर, धरा हिन्द छत्र धारी ॥
अटक पारमो अगे, पतानह नमे बिलायत ।
जवन बसे जिण मांभ, आप अगुर अस पत ॥
ज्याहणु काय पकडु जीया, प्रथी बदे तण पाणरी ।
षगपां पाण डंडलु तद षत्री, षीतछ षंड पुरसांणरी ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(५६) रात्रि भोजन री चौपई । रचयिता-सुमति हंस । आकार-
६'८'' × ४'८'' । पत्र संख्या २१ । पद्य-संख्या ४०३ । लिपिकाल-संवत् १६१३ ।
रचनाकाल-संवत्- १७२३, मगसर विद ६ गाम सरसा में लिखित ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६०) वल्लभाख्यात । रचयिता-गोपालदास । आकार-७'५'' × ६'६''
पत्र-संख्या ११ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं ।
पद्य-संख्या १२६ । पुस्तक जीर्ण है ।

आदि भाग-

यज पुरुष हरि श्रुति गुण गायजी ॥ १ ॥ ढाल ॥
गाए स्तुति गुण रूप अहर्निश धरें ध्यान विचार ।
आनन्द रूप अनूप सुंदर पावे नहीं कोई पार ॥ २ ॥
प्राण पति प्रगट्या कारण काई कहूँ मति मंद ।
हर सुर विधाता नवल हैं, सो ज्ञात ब्रह्मानंद ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

सोमा यमुना कवला देवका जेहना सात बंधु सौभाग्य रै रसना ।
 एहना चरण स्मरण करी श्री विठ्ठल पद रज रति भाग्य रै रसना ॥
 पुत्र पौत्र सुख किम कहूँ जो तू मुख माँए करे रे रसना ।
 श्री विठ्ठल कल्पद्रुम फलयौ तेहनी साखा पररी अनेक रे रसना ॥ १४ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(६१) वात संग्रह । पत्र-संख्या ३६० । प्रति सजिल्द है और संवत् १७५४ में फाल्गुन वदि ५ को आदुणिगढ़ में लिखी गई है । इसके अंत में एक अपूर्ण सूची दी गई है जो महाराज बाघसिंहजी द्वारा संवत् १८३६ माह सुदी २ सोमवार को एक प्रहर दिन चढ़ते तैयार की गई । प्रति में अक्षरों की लिखावट समान नहीं हैं, कहीं अक्षर जमा कर लिखे गये हैं-कहीं नहीं । सम्पूर्ण प्रति एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई । वार्ता में राजस्थानी का परिमार्जित गद्य-पद्य मिलेगा । सब का आदि अन्त न देकर यहाँ केवल विषय सूची ही दी जाती है-

- १ विक्रमादीत री उत्पत्ती
- २ राजा गंधर्व सेन री वात
- ३ चोबोली राणी री वात
- ४ राजा सुसील री वात
- ५ राजा भोज री अर माघ पंडित री, राणी भाणवती लखीयातैं समयै री वात ।
- ६ वात राजा भोज री ४ चारणां बाबत
- ७ वात राजा भोजरी छीपण बाबत
- ८ बीरोचन (द) मौहते री वात
- ९ राजा चंद री वात
- १० हरीदास चहवाण री वार्ता
- ११ वार्ता जेसे सरवही ये री
- १२ रायधण री वार्ता
- १३ पोपा बाई री वार्ता
- १४ कोल्याइत रै साहरी वार्ता
- १५ वार्ता श्री मूर्यजी री

- १६ वार्ता राजा सालवहान री
- १७ रतनमाणक साहिजादी री वार्ता
- १८ बंग साहिजादे री वार्ता
- १९ राजा पराक्रम सेन री वार्ता
- २० वार्ता ओषाणे तणे सू भारथ हुवौ तेरी
- २१ ओषानेरी वार्ता
- २२ रजपूत आल्हण री अर सादे वाणीये री वात
- २३ दीवाली री वार्ता
- २४ भाटीयांरी नषा छुदी छुदी हुई तेरी वार्ता
- २५ वेला छुरै री वार्ता
- २६ भले बुरे री वात
- २७ राजा भोज अर बाफरै चोर री वात
- २८ मोरङ्गी हार गिलीयौ तैरी वात
- २९ दिल्ली रै हौसनाषा री वात
- ३० कुंवर चित्रसेण री वात
- ३१ पातसाह बंग रे बेटे री वात
- ३२ लुद्धवै पाटण माहे ब्राह्मण चोरी कीवी तैरी वात
- ३३ अपछरानू इन्द्र सराप दीन्हौ तैरी वात
- ३४ कुंवर भूपति सेन री वात
- ३५ झानै साह री वात
- ३६ वंसी ब्रह्ममाट री उतपत री वात
- ३७ दीन मान रा फलां री वात
- ३८ वात नरबद जी री अर नृसंघ सीघल री पियारदे बाबत
- ३९ सिधरात्र जेसंघदे री वात
- ४० राजा भोज री अर मंत्र सेन री बेटि री वात
- ४१ वात राजा भोज री बाफरे चोरा पासा चोरी सीबी तेरी
- ४२ राजा भोज अर भाणवती रे वाद री वात
- ४३ चार परधानां री वात
- ४४ वात अचलदास बीची री ऊंमादे साबतीं परणीयौ तेरी (यह प्रथम भाग में प्रकाशित रचना से भिन्न है)

- ४५ तिलोक सी जस डोट री भाटी री अर कुगंडे बलोच री वात
४६ राजा विजैपति री वात
४७ राव नरपतजी री वात
४८ रावल जामनू साह मिलीयो तेरी वात
४९ मोगल मैहंदरै री वात
५० राजा रो बेटो देसौटै नीसरीयो छै तेरी वार्ता
५१ राजा रे बेटै रै महल री वात
५२ वाघडै बछैरे री वात (बाघ और बछेरे री वात)
५३ पंच मार री वात
५४ चापि सीध री अर बीरे भायल री वात
५५ सिषरेई देउगड़ावत री वार्ता
५६ सादे मागली येरी वार्ता
५७ दामौ देवड़ो (अर) सामो सखहीये री वात (इसके अंत में सं० १७५४ लेख मिलता है।)
५८ षयौ चीते (तौ) री अर विजे देवडै री वात
५९ देवसी रबारी री बात
६० वात रत्नारी रतन ही रहे अर प्रीत ही रहे
६१ काणे रजपूत री वात
६२ भलै भलौ बुरे बुरौ री वात
६३ वार्ता राजा मंत्रसेन री
६४ तांत वाजी अर राग ब्रूभी तेरी वात
६५ रजपूत री स्त्री री सहटी बोली तेरी वार्ता
६६ बांधी बुहारी री वार्ता
६७ सो नारी री र सुतारी री वार्ता
६८ वार्ता साहुकार री अर सूवेरी
६९ वात राजा केरधनरी
७० राजा विजे राव री वार्ता
७१ सतवंती री वार्ता
७२ वात मोरड़ी मृतवाली री
७३ वात मुहतै सुमत कुरं मंगलू रुपरी

- ७४ श्री महादेव जी पार्वती की बात
७५ साहूकार की बात
७६ साहरी स्त्री के तपावस की वार्ता
७७ गांव के धणी की वार्ता
७८ राजा के बेटे की बात
७९ राजा सिंधराव जैसिंह देव की बात (हेमचन्द्राचार्य और सिद्धराज जयसिंह)
८० कुंवरपाल पाटण के धणी की वार्ता
८१ कुंवर साहिजादा की बात
८२ लालमेष कुंवर की वार्ता
८३ मदन कुंवर की वार्ता
८४ पातसाह अलावदीन की और हंमीर हठीले की बात
८५ मिहमद खान साहिजादे की बात (गजनी के पिरेशाह का बादशाह का पुत्र)
८६ सलेमखान साहिजादे की बात
८७ सावल साह के बेटे की स्त्री की बात
८८ चारण मदमै (मौ) मनोहर की बात
८९ रतन मंजरी की तृतीय वार्ता
९० नवरत्न कुंवर की वार्ता
९१ लूण साह की बेटी की वार्ता

[स्वरूपलालजी, जगदीश चोक उदयपुर]

(६२) वैष्णव वार्ता संग्रह । आकार-६" x ७" । पत्र अस्त व्यस्त है ।

इसमें ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्ताएँ सम्मिलित हैं । इसके साथ नाभादास कृत भक्तमाल की टीका भी है । प्रति, पानी से कहीं कहीं बिगड़ गई है ।

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६३) विक्रम चरित्रो चोबोली सती नी चउपई । रचयिता-
अभयसोम । आकार-१०"२" x ४"७" । पत्र-६ । पद्य-३३५ । रचनाकाल-सं० १७२४ ।
लिपिकाल-सं० १८८२ ।

आदि भाग-

वीणा पुस्तक धारिणी, हंसासन कवि-साय ।

प्रह उगंतई नित नमुं, सारद तोरा पाय ॥ १ ॥

हुइ पंचासे बाँधियो, कोई नवो भंडार ।
 बाधा भरिनइ काढ़तां, किण ही न लाधो पार ॥ २ ॥
 तो हुंती नव निद्धि हुवइ, तो हूँती सद्द सिद्धि ।
 आज अनइ आगा लगइ, मूरख पंडित किद्धि ॥ ३ ॥
 तिण तौनै समरी करी, कहि स्युं विक्रम-वात ।
 मइं तो उद्यम मांडीयो, पुरो करिस्यइ मात ॥ ४ ॥
 सोनइ किणनइ छेतरथौ, मइं जग ठग्या अनेक ।
 मो कलियुग नइ छेतरथौ, राजा विक्रम एक ॥ ५ ॥
 चउबोली राणी चतुर, शीलवंति सुखकार ।
 विक्रम परणी जिण विधइ, कथा कहिस्यु निरधार ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग—

च्यारे पुहर बोली चतुर, चारे वाट सुखकार ।
 कहे सबे ही सुंदरी, जय जय आणंदकार ॥ १ ॥
 फल्यो मणोरथ बिहुंजणा, उलसीया मन मांहीं ।
 आलसूया रै आंगणै, आयो गंग प्रवाह ॥ २ ॥
 जे मन राखै जेह सुं, तेहनै मिलै ज तेह ।
 मुंह मांग्या पसाढल्या, दूधे वूवा मेह ॥ ३ ॥
 हुंती एक पंखी धणी, ताठी गाठी प्रीति ।
 तपी विक्रम लाहोर ज्यो, जोडी करी इत चीत ॥ ४ ॥
 परतग्या पूरी थई, माहरी रही ज भाम ।
 मैं जाण्यो नांही मिलै, पूरण हारो सामि ॥ ५ ॥
 लीलावतीइं भठी नै, कंठ ठवी वरमाल ।
 रलीया तोरण बांधिजै, रच्यो वीवाह रसाल ॥ ६ ॥
 परणी बहू मंडाण करी, पुण्य तणै परमाण ।
 मन सुं विक्रम हरषियो, भाग फल्यो निरवाण ॥ ७ ॥

.....

(६४) विक्रमसेन चतुपदी । रचयिता-परमसागर । आकार-८" × ४'५" ।

पत्र संख्या-१३२ । छंद संख्या-१३०६ । लिपिकाल-संवत् १६२७, कार्तिक कृष्ण ६ शनिवार । यह प्रति उपरोक्त प्रति से भिन्न है । इसकी भाषा भी जैन शैली की है ।

अन्तिम भाग-

तप गङ्ग अंबर तणी सरीषो, विजयदेव गुणधारी ।
 तसपाटें संप्रत गुरु प्रतपे, श्री विजय प्रभ सुखकारी रे ॥ ६ ॥
 तस गघे गुण मणि आगर, जयसागर उवभाया ।
 तस पद सेवे सूर नर वृंदा, नामे नव निधि पायारे ॥ १० ॥
 तास सीस पंडित जिन नायक, लावण्य सागर गुरु राया ।
 महिपल महमा जे नो पसरयो, दिन चढ़त सवाया रे ॥ ११ ॥
 तस पद सेवक परम सागर, कवि रचियो रास रसाल ।
 भाव धरीने सुंणता रसीया, लहरयो मंगल मालरे ॥ १२ ॥
 तिहां लगे चोपी थिर थाज्यो, जिहां लगे सूरज चंदा ।
 राग धन्यासी ढाल चोसठमी, परम सागर आणंदारे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६५) विक्रमादित्य चउपई । रचयिता-अभयसोम ।

आकार-१०'३" × ४'३" । पत्र संख्या ६ । इसके प्रत्येक पत्र पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । अक्षर जैन पाटी के प्राचीन नागरी हैं । इसमें कुल २८५ छंद हैं । संवत् १७२३ जेठ मास में सिरोही में इसकी रचना हुई और संवत् १८१० आसोज सुदि ७ को यह प्रति लिपिबद्ध हुई । भाषा परिमार्जित जैन शैली की राजस्थानी है ।

आदि भाग-

दूहा

सरसति माता समरिये, नित प्रति लीजै नाम ।
 चित माहि जे चितवै, सीभै वंछित काम ॥ १ ॥
 पय जुग प्रणमी तेहना, विक्रम चरित्र कहेस ।
 सानिध करज्यो मामड़ी, हुं तुभ विनय बहेस ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) विक्रम वेलि । रचयिता-मतिसुन्दर । आकार-४.३" × ३.६" ।
पत्र संख्या-१४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं ।
पद्य संख्या-२८० । रचनाकाल-१७२४, आसाढ़ कृष्णा १० ।

आदि भाग—

दोहा

दुह पंचासे बंधियो, कोइ नवो कोठार ।
बाप भरीने कांटतां, किणही नलधो पार ॥ १ ॥
तोऊ तिन वनिध हुवे, तोहु तिसहुं सिद्ध ।
अभु अने आगा लगै, मुरिष पंडित किद्ध ॥ २ ॥
तिन तोने समरी करी, कहस्यु विक्रम वात ।
मे तो उद्यम मंडिउ, पूरो करस्यो मात ॥ ३ ॥

अंतिम भाग—

कलियुग मांहि विक्रमराय नो, सोहग सुंदर महिमां गाऊ तो ।
तेहनि सानिध सिव करै, आगा लडती आपद अपहरे ॥
अपहरे आपद चरित सुनावै, नाम थी नवनिधि मिलै ।
षरतर गछ श्री जिनचंद सद गुरु, सेविता बंछित फलै ॥
सतरे चोवीस कृष्ण दसमी, आदि आसाढ़े सही ।
वाचना चारभ अमय सोमे, मति सुंदर काजे कही ॥

[पं० उमाशंकर द्विवेदी, 'विरही' उदयपुर]

(६७) विमल साहरो सलोको । रचयिता- विनीत विमल । आकार-
६.८" × ४.२" । पत्र संख्या- ५ । छंद संख्या-१०७ । लिपिकार-हेमंत विज ।
विषय- विमल शाह ने ग्यारहवीं शती में आबू पर एक जैन मन्दिर बनवाया,
उसकी कथा इनमें दी गई है । भाषा जैन शैली की है और बोलचाल की है ।

आदि भाग—

सरसति समरु बेकर भोडि । बांह वर काणो गिरनार गौडि ।
भईण सेवुं भै संवेसर दोडि ! कवितां ने कसल 'कल्याण कोडि ॥ १ ॥

मरुधर माहि तीरथ ताभा । आबू नव कोटि तेहनो राभा ।
 गढ़ मढ़ नई देवल दरवाभा । चऊमष चंपाने ऊपर भाभा ॥ २ ॥
 असल आचारभ धर्मयोष सूरि । या कीधि पिण भायें अधूरी ।
 देवल विण मुंगरि दीसइ न नूरी । ध्यानइं तिहां छै आयद मासण पूरी ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

मन ना मनोरथ संघलाई सीधा । बारै ही पतिसाहरा बिरुध लीधा ।
 पाटण छोड़ैने चंद्रावें आयो । वडायी यामें नें छत्र धरायो ॥ ४ ॥
 पतिसाह बांधें ने डंड भरायो । आबू ने ऊपरि देवल करायो ।
 पोरवाइ प्राक्रम पांच में आरे । नाणों खरच ने न्यात वधारे ॥ ५ ॥
 पंचाणुं ए बांध्या पतिसाह, बारें । एक सपूत आवो कुल तारें ।
 कहसी वांणी तू काई वंखाणुं । धन पामें ने खरचितु नाणो ॥ ६ ॥

वि० जैन गुर्जर कविओ भा० ३ पृ० १३४३ के अनुसार इसके पद्य ११५ हैं ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६८) सतवंती री वात । रचयिता-ज्ञान कवि ।

यह 'वात संग्रह' (६१) में प्राप्त हुई है । रचना दोहा, सोरठा और चौपाई में है । इसका रचनाकाल इसके अन्तिम भाग के अनुसार संवत् १६७८ है । इसकी भाषा पिंगल है । रचना सरस और मधुर तो है ही पर भाषा भी बहुत परिमार्जित और प्रवाह पूर्ण है । रचना के आदि भाग से ज्ञात होता है कि इसका रचयिता मुसलमान है और मूफी मत का अनुयायी ज्ञात होता है । संक्षेप में रचना की कथा इस प्रकार है ।

मनसूर एक व्यौपारी है । इसकी स्त्री का नाम सतवंती है । जैसा उसका नाम है-वैसी ही वह रूपवती और पतिव्रता भी है । मनसूर अपने मित्रों के साथ व्यौपार के लिए विदेश जाता है । उसकी स्त्री विरह में दुःखी होती है । बहुत दिन बीत गये । एक धूर्त ने इसके सौंदर्य के विषय में सुन कर इसे छलने का विचार किया । अतः उसने चार दूतियों-पैनवारिन, कलाली, मालिन और छलिनी योगिन को बारी बारी से उसके यहाँ उसे छलने को भेजा । सब बारी बारी से हार कर और मारखाकर लौटी । उसका धैर्य इन चारों से विचलित न हुआ ।

तब धूर्त हताश होकर वह किसी धूर्त श्वेताम्बर के पास जाता है । जो तंत्र, मंत्र और टोना करने में सिद्ध हैं । कुछ दिनों तक वह उसकी सेवा कर के उसे प्रसन्न कर लेता है और उससे रूप पलटने की क्रिया सीख लेता है । फिर मनसूर बन कर सतवंती के साथ रहने लगता है । सतवंती को कुछ संदेह होता है । अतः वह कुछ दिन तक टालती रहती है । इतने में उसका पति भी आ जाता है । एक रूप के दो व्यक्ति राजा के पास न्याय के लिये जाते हैं । राजा दोनों से तथा सतवंती से अपने अपने विवाह की तिथि लिखवा लेता है । सतवंती और मनसूर की तिथि एक मिलने पर धूर्त को प्राण दण्ड मिलता है ।

आदि भाग-

चौपई

प्रथम समिरीं सिरजन हार । अल्प अर्गोचर एकंकार ॥
अधम उधार अधार निरंजन । मलिनरसन सुमिरन तिह मनन ॥
न्याध असाध महा अपराध । विधि सुमिरन तै-होत समाध ॥
जिह रसना सुमिरन रसरसी । प्रगट भयो ज्यों-सविता ससी ॥
सुमिरन रसना रसना पीजै । तिरसना षट रस कत दीजै ॥

मोरठा

हार हार समरारि, पारा प्यार अपार कछो ।
कंसै करै विचार, जान कबि इक रसना सौ ॥

चौपई

दूसरी सुमिरी नाम नबी कौ । सर्व रसूलन को है टीको ॥
रच्यौ महंमद सब तै आद । रचना सफल ताहि परसाद ॥

उदाहरण-

(सतवंती का विरह)

सुन सवती वरिषा आई । अब पिय बिन कैसें रह्यो जाई ॥
दादुर कोकिल मोर पुकारै । वैन वाण विरहिन कूं मारै ॥
अरध रैन बोलै है चात्रिग । मानो कामदेव के घासिग ॥
स्याम घटा बग पंत दिषावै । करि दंते ले मारन आवै ॥
घरी घरी घन वरसत फेरै । मलन वसन हूंमारी तेरै ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

सतवंती मनसूर, अमर भये या जगत मैं ।
ब्रगमगात समि सूर, तैसे प्रगटै सील तै ॥
सोलै सैजु अठतरै, सनि सहस इकतीस ।
सतवंती सत जान कवि, बांध्यो विसवा वीस ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६६) श्रीपाल चतुष्पदी । रचयिता- जिन हर्ष ।

आकार- १०'२" x ३'६" । पत्र संख्या- ५० । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ
और प्रति पंक्ति में ३६ । ४२ अक्षर हैं । लिपिकाल- सं० १८४८ । रचनाकाल-
सं० १७४० ।

विषय- जैन- जीवन चरित्र । रचना उत्तम कोटि की है । भाषा जैन शैली
की परिमार्जित राजस्थानी है ।

आदि भाग-

श्री अरिहंत अनंत गुण, धरिये हियडे ध्यान ।

केवल ग्योन प्रकास करि, दूर हरथ अगन्यान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

संवत सतरैसै चालीसै, चैत्रादिक सुंजगीसरे ।

सातिम सोमवार सुभ दिसै, पाठण विसवा वीसरे ॥ ११ ॥

×

×

×

कहे जिन हरष भाविक नर सुण ज्यो, नव पदमहिमा गुण ज्योरे ।

उगण पचासै ढाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्योरे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) श्रीपाल रास । रचयिता-विनयविजय तथा जसविजय आकार-

१०'१" x ४'४" । पत्र- ७४ । लिपिकाल-सं० १८६४ रचनाकाल-सं० १७३८ ।

आदि भाग-

कल्प वेलि कपि अणतणी, सरसति करि सुप साय ।

सिद्ध चक्र गुण गवतां, पूरि मनोरथ माय ॥ १ ॥

सूचना-इसमें चार खण्ड हैं । जिनमें प्रथम दो तो विनय विजय तथा अंतिम दो जसविजय कृत है ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७१) श्री मंधर स्वामी विज्ञप्ति स्तवन । रचयिता-अज्ञात । आकार-
१०'१" x ४'२" । पत्र-संख्या- ४ । पद्य-संख्या- १०५ । विषय- जैन धर्म ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७२) साधु (मुनिसरकी) गुण माला । रचयिता- जैमल ।

आकार- १०" x ५" । पत्र संख्या- ३ । पद्य संख्या- ६५ ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७३) सामुद्रिकइं स्त्री पुरुष शुभाशुभं । रचयिता-अज्ञात ।

आकार- ८'४" x ५'८" । पत्र संख्या- ३३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं । और प्रति पंक्ति में २७-३१ अक्षर हैं । अक्षरों की लिखावट प्राचीन जैन पाटी की है, परन्तु अक्षर जमे हुए नहीं हैं । यह प्रति सम्वत् १५७६ कार्तिक विद ६ की लिपिबद्ध है । प्रति प्राचीन है, अक्षर भी प्राचीन हैं । अक्षर घिस गये हैं, जिससे पढ़ने में कहीं कहीं कठिनाई होती है । इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह 'सहज सागर' नाम के किसी ग्रन्थकार के संस्कृत ग्रन्थ 'सामुद्रिक' की टीका है । टीकाकार का नाम घिस गया है, परन्तु उसको सामुद्रिक का ज्ञान देने वाले का नाम 'गुण सागर' दिया गया है । ग्रन्थ का विषय सामुद्रिक शास्त्र है जिसमें नायिकाभेद का भी ध्यान रक्खा गया है ।

भाष-प्राचीन जैन शैली की राजस्थानी है ।

आदि भाग-

ॐ नमो श्री सरस्वती नमः तु गक्तुं सामुद्रिक शास्त्रो नराण्यत ।

शुभाशुभं । तदहंसंप्रवक्ष्यामि । नमः केशाप्रमुसतेः ॥ १ ॥

टीका

सामुद्रिक शास्त्र जोई नइ जे पुरुष स्त्री ना गुण नष केश लगइ मस्तक तयाँ-केश पाश
अनइ वरण कमल तयाँ नष-अंत फलाफल बोलीसिइ ॥

उदाहरण-

सिंहलाघ्रेषां कादि स्वे दंतच नायकाः ।

राक्षा वानर सुल्या च कटिये पांन शोभनाः ॥ ६ ॥

टीका

येहनइ कटि सिंह व्याघ्रना सरिषी हुइ । प्रस्वेद हुइ त सुखी हुइ । राक्षस वानर नाश रीषी
हुइ तेइ दुःखी हुई जाणिवी ।

अन्तिम भाग-

पद्मिन्यः प्रेम वाञ्छन्ति । द्रव्यं वाञ्छन्ति हस्तिनी । चित्रिण्यो मान वाञ्छन्ति । फलहि वाञ्छन्ते
शखिनी ॥ १२१ ॥

टीका

पद्मिनी स्त्री प्रेम वांछई । हस्तिनी स्त्री द्रव्य वांछई । चित्रिनी स्त्री मान वांछई । शंखिनी
फलह करई ॥ ६ ॥ १२२ ॥

[स्वामी केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(७४) सारासार पच्चीसी रचयिता-शिवराम ।

आकार-६.३" × ५.२" । इस में कुल ११ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ
और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं । अक्षरों की लिखावट साधारण है । इसमें
कुल २५ पद्य हैं, इसका विषय नीति और शिक्षा है ।

आदि भाग-

कवित्त •

भाई के न बंधु के न बैन के सवस नी के

देवो नाम सनै देषत अँनेसे हैं ।

गिरवे रषाय वस्तु सबकुँ उधार देत

आपट्ट कुनाज षाय पेट भरे तेसे हैं ॥

घर के सब एक पाग पनही सों काम काढ़े

तीरथ वरत व्यात्र मोसर में भैस हैं ।

मूष धनाज्य कहे देषि के रूपैये ओरू

ऐसे जो धनाज्य तो कंगाल फेर कैसे हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

कवित्त

कंचन के नभ चुंबित अवास पाये
 जर के वितान दिये किरने रवीन की ।
 पारे हय वारे^१ गयवारे रथवारे भट—
 गनि कै सिरावै औसी मंतना प्रवीन की ॥
 मनै सिव रामद्वारे भीर रहे भूपन की
 अगंना अनूप पाई मत कर पीन की ।
 एतो सर्व पायो षर नाहक गमायो जन्म
 रसना बसायो जोपै रसना कवीन की ॥ २५ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(७५) सिंघासन बत्तीसी । रचयिता—देवीदास ।

आकार—४'३" × ३'६" । पत्र-संख्या ३४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ
 और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ७०० । रचनाकाल—संवत् १६३३
 फागुण विद ८ रविवार । इसमें अवन्ति के राजा विक्रमसेन का वर्णन है ।

आदि भाग—

गणपति नमुं दोइ कर जोड़ि । देही बुधि मति बाधे मारि ॥
 गोरी सुत मति तणो भंडार । नाग सहस्र गल सोहे हार ॥ १ ॥
 सिद्ध बुद्ध अरधंगे वस । जेहि ऊँमें तिहि बार सरेस ॥
 जोऊँ. स्वामी दया करीराय । तोऊँ कथुं अवंती राय ॥ २ ॥
 सारद माऊ ब्रह्मऊँ आरि । देहि सुमति कवि करै विचार ॥
 हंस चढ़ी कर सोहे वीण । नाद रंग सुरंगण मुनि लीन ॥ ३ ॥
 मो कविऊँ भव से भा रही । तो कथ कथा करो सार ही ॥
 गुण अणंत ऊँह सारद माय । जुंही प्रसाद मवि कथा सिर राय ॥ ४ ॥
 मात पिता गुरु वचने लाग । कहे उन सरसै लेउ बुधि मांग ॥
 सकल सभा को आयस लहो । नो सिंघासन बत्तीसी कहो ॥ ५ ॥
 सोहलसैं तेतीसो जाण । सिसीर महारव कहूं वर्षाण ॥
 फागुण वदी अष्टमी विचार । सो मन योग सकल रविदार ॥ ६ ॥

देस मालवो कंचन बाण । नगर देवास महा सुभ जाण ॥

कवि जन तहां बसे देवीदास । बुडे देवी तगो नीवास ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

ऐसो विक्रमसेण भोत्राल । तास सहाइ नवीर वेताल ॥

नारी धाम रयो संहार । जित्या ताइको मिडुहार ॥ १ ॥

पंच डंड सिर वज्र धराइ । सात उदधि लागि साके कराइ ॥

पंच जोण मंडप आवण्यो । नारी चरित तेहीतषं जाणीयो ॥ २ ॥

हरसि की सुरा करि मानियो । पर कीयो परवेस छ कीयो ॥

तीन लोक कीनो पसार । बोल्या मुष यामे संसार ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(७६) सिंहल सुत चौपई । रचयिता- समयसुन्दर ।

लिपिकाल- १८८५

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर]

(७७) हंसराज बछराज चउपी । रचयिता- जिनोदयसूरि ।

आकार- ६ $\frac{१}{२}$ " x ४" । पत्र संख्या-३८ प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३३ । ३४ अक्षर हैं । इसमें कुल ७१४ पद्य हैं ।

विषय- जैन धर्म जीवन-चरित्र है । भाषा राजस्थानी गुजराती है ।

आदि भाग-

आदिस्वर आदि करी, चउविसैं जिण चंद ।

सरसती मन समरु सदा, श्रीजयतिलक सुरिंद ॥ १ ॥

सदगुरु पाय प्रणमी करी, पायी गुरु आदेस ।

पुन्य तथा फल बोलस्युं, कहस्युं हूं लव लेस ॥ २ ॥

[वद्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७८) हरीचंद सत । रचयिता-ध्यानदास ।

यह १३७ संतों के संग्रह में है । इसमें २४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन अध्यायों में विभाजित

है। प्रथम अध्याय में १६६ पद हैं, द्वितीय में १२१ और तृतीय में १००। इस प्रकार इसमें १४ दोहे, २ सोरठे, ४ छंद और ३२० चौपाइयां हैं। जिनकी सर्व संख्या ३४० होती है। ग्रन्थ का विषय सत्य हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा है। इसका रचना-काल कवि ने इस प्रकार दिया है—

‘उदधि दोत कर लीजिये लेखन भार अठार’

४ २

१८

जिसके अनुसार संवत् १८२४ या १८४२ ठहरता है।

इसके प्रथम अध्याय में राजा का राज्य त्याग और काशी में आगमन। द्वितीय अध्याय में सुत-रानी और राजा का वियोग, सुत-रानी का अग्नि सुशर्मा के यहां निवास और राजा का डोम के घर निवास। तृतीय अध्याय में रोहिताश्व की मृत्यु आदि शेष घटनाएं।

आदि भाग—

दोहा

गोविंद गुर को नित नमौ, नमौ भक्त सब साथ।

ता प्रसाद जस ऊचलुं, हरिचंद सत अगाध ॥ १ ॥

चौपई

अबगति अलप अनाहद भारी । उपत षपत महासुधि मारी ।

नाव न गांव ठांव कहा कहिये । आगम अगाध साध संग लहिये ॥ २ ॥

अन्तिम भाग

दोहा

उदधि दोत करि लीजिये, लेखन भा अठार ।

ध्यान दास बसुधा लिषै, भगवंत भगत अपार ॥ ६६ ॥

लषा वाकाज सुरस्वति लागै, सब बुधिबंत कलि माहि ।

रोम समान न लष सके, हरि चरचा मति नाहि ॥ ६७ ॥

जो उचरे या ग्रंथ कूं, कोऊ सुनै चितलाय ।

‘ध्यान लहसो परम पद, पाप ताप त्रिय जोय ॥ ६८ ॥

हरीचंद सत कूं सुनै (कोई), औसी टेक समाय ।

‘ध्यान’ लहे सो परम पद, या मै संसे नाय ॥ ६९ ॥

ध्याय तीन या ग्रंथ की, धरम कषा बिसतार ।

हरीचंद हिरदै भरे, सो जन उतरे पार ॥ १०० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) हितोपदेश । रचयिता- नारायण- ब्राह्मण ।

आकार- ८" x ६" । इसमें ११५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ । १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ । २० अक्षर हैं । लिखावट साधारण है । ग्रन्थ पर चमड़े का जिल्द है । जिसके भीतर दोनों ओर हनुमान के रंगीन तथा सामान्य शैली के दो चित्र भी हैं, जिनका कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसमें हितोपदेश (संस्कृत) का गद्य में भाषान्तर किया गया है । यह प्रति संवत् १८७६, माह वदि ४, भौमवार को खवास बरदा द्वारा जहाजपुर (मेवाड़) में लिपि कृत हुई । भाषा अशुद्ध लिपि के कारण बड़ी अशुद्ध हो गई है ।

लल्लूनाल के गद्य की भाषा का आचार यही भाषा है—

‘पुत्र सौही भयो जानीये, जीन कै भयै बंस मै ऊंचौ होय, नतर सुयेते संसार मै कौ नाही उपत । अरु जहा गुणी जण साधुगणी यही हैं, तहा आदर सौ जाकौ नाम पहले न लखी हं । ऐसे हु पुत्र की मातां कौ पुत्रवंती होये तो को हो धो (तो) वांझ कौन सौ कहीयै ।’

अन्तिम भाग—

‘तब विसनु सरमा राजपुत्रन सों-कछो-अब तुमारे ओर सुनवे की अंछ्या होये सो कहो, सोहु सुनाऊ’ तब राज पुत्र-कछो-तुमारे प्रसाधते सब राजनीत, सब किया सीष सुख भयो । ज्ये हमारी आग्या रुपन हो । नयो जनम भयो । तब विसनु सरमा कही-तब हु ओर यह होऊ, सब राजनि सों । ओर संधी होऊ । अरु जय करि आनंद होऊ । सदा वृत प्रताप होऊ । सुकत की कीर्ती बढ़ो । नित मंत्रिन के हिरदे मो क्रीड़ा करो । दिन दिन सब राजनि सों ऊंचो होऊ । जो लुं श्रीगोविंद जी के वक्ष्यस्थल मै लक्ष्मी रहे, अरु जो लुंगोरी नाथ के माथा पर चंद्रमा, जेसे मेघ मो बिजुलता, जो लुं सुमेर दावानल सो भूमंडिल मो विराजे, तो लुं नारायेण नांमी ब्राह्मण करि कीयो येहें हेतुपदेस नामा गंध प्रणी मो चल हु—

दोहा

राजनीत नै गीत सों, बांचो चत बटाय ।

बालक कु अति सुख बधे, सबै ग्यांन सरसाय ॥ १ ॥

ननु कथा जाणो मती, सुण जो सुरत लगाय ।

(ओ) हेतों को उपदेस है, सुर पंडित गुण साय ॥ २ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(परिशिष्ट)

मीराँ के अप्रकाशित भजन

निम्न लिखित भजन विविध गुट्टों में लिखे हुऐ मिले हैं। यहाँ केवल वे ही भजन दिये गये हैं जो अब तक अप्रकाशित हैं। कुछ भजन ऐसे भी दिये गये हैं, जिनमें और प्रकाशित भजनों में पाठान्तर हैं। जिनका लिपिकाल मिला है, उसको उनके साथ नीचे कोष्ठों में दे दिया गया है।

१

जब के तुम बिछड़े मेरे प्रभुजी, कहुँ न पायों चैन ॥ १ ॥
बिह बिथा कासूँ कहूँ सजनीं, कवत आवे अैन ॥ २ ॥
ऐक टगटगी पिया पंथ निहारूँ, भई छै मासी रैण ॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनासीं, दुःष मेलण सुष देण ॥ ४ ॥

(१८७६)

२

मैं ती म्हाग रमईया नै देष बों करूली ॥ टेक ॥
तेरो ही सुमरण तेरो ही उमरण, तेरो ही ध्यान धरूली ॥ १ ॥
जिहा जिहा पांव धरे मेरे प्रभुजी, तांहां तांहां वरतक करूली ॥ २ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अबनासी, चरणां में लिपट रहूली ॥ ३ ॥

(१८७६)

३

जावो नर मौहीयाजी भीणी तेरी प्रीतड़ी ॥ टेक ॥
 लगन लगी जब और प्रीतिछी अब कछु अवली रीतड़ी ॥ १ ॥
 ईम्रत पाइ विषे क्यूं पीजिये कौण गांव की रीतड़ी ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी, जौ गायो किसकी मीतड़ी ॥ ३ ॥
 (१८७६)

४

जोगीयाज दरसण दीज्यो रा जी ।

कर जोड़षा करणी करूं म्हारी बाहा गहवा की लाज ॥ टेक ॥
 लोक लाज जब सारी डारी, छाड्यो जग उपदेश ॥
 ब्रह्म अग्नि में प्रान दाभे, झारो सुषि लांज्यो आदेश ॥ १ ॥
 साँच सुद्रा भाव कंथा, साज्यो नष सष साज ॥
 जौगणि होइ जुग दृष्ट्यूँ, झारी घर घर फेरी आस ॥ २ ॥
 दरध दिवानी तन देषि आपनूँ, मलीया परम दयाल ।
 मीरां के मनि आनन्द हुंवा, रूम रूम खुसियाल ॥ ३ ॥
 (१८७६)

५

नातो हरि नांव को माई ।
 मोसूँ तनक न बिसर्यौ पल न जाई ॥ टेक ॥
 पाना ज्यूं पीली भई, लोग कहै पिंड रोग ॥
 छाने लंगण में कोया, राम मिलण के जौग ॥ १ ॥
 बाबल बैद बुलाईया, पकड़ि बताई म्हारी बाटि ।
 मूरिष बैद न जाण हीं, म्हारे करक कलेजा माहि ॥ २ ॥
 बैद जावौ घर आपणै, म्हारो नांव न लेह ।
 मैं दादी हरि नांव की, मोहि काहै को दुष देह ॥ ३ ॥
 काढ़ि कलेजो मैं धरूँ, कागा तू ले जाइ ।
 जा देसा प्रीतम बसे, वे देषे तूँ षाइ ॥ ४ ॥
 छनि आगणि छनि मंदरा, छनि छनि ठाटी होइ ।
 छार ज्यूँ धूमत फिरूँ, म्हारौ सरम न जाणै कोइ ॥ ५ ॥

तन सुकिचि पिंजर मयौ, सूंका ब्रछ की छांहां ।
 आगणि यालीं मूंदड़ी, म्हारै आगण लागी बांहां ॥ ६ ॥
 रेरे पापी पपीवड़ा, पीव का नांव न लेह ।
 पीव मिलै तो मैं जीऊँ, नांतरि त्यागूँ म्हारो जीव ॥ ७ ॥
 कौइक हरजन सामलैरे, पीव कारण जीव देह ।
 मीराँ व्याकुल ब्रह्मों, पीव बनि कसौ सनेह ॥ ८ ॥

(१८७६)

६

जोगीयाजी आजोजी इण देस ।
 नै जस्यौ देषू नाथ नै, धाइ करूँ आदेस ॥ टेक ॥
 आया सावण भादवा, भरीया जल थल ताल ।
 साई कूँ विलमाई राख्यौ, ब्रह्मनि है बैहाल ॥ १ ॥
 बसरथाँ बौहो दनि भया, बसरथौ पलक न जाई ।
 ऐक बेरी देह फेरी नगरि, हमारै आई ॥ २ ॥
 वा मूरत माहारै मन बसै, बसरथौ पलधून जाइ ।
 मीराँ कै कौई नांही दूजौ, दरसन दीज्यौ आइ ॥ ३ ॥

(१८७६)

७

देसइलौ रूडौ रूडौ । रांणाजी थारौँ ... भगत न भाबै माहारा
 राम की ।

लोग बसै छै कूड़ौ ॥ टेक ॥
 मेवा मसरी सब ही त्याग्या, त्याग दियौ छै बुरौ ।
 तन की आस कबहुं न राखी, ज्यूं रण माहिं सूरौ ॥ १ ॥
 भाई मात कुड़बो त्याग्यौ, त्याग दिवे छे चूंडौ ।
 घूँघट को पटि दूरि कियो, सरि बांध्यौ छै जूडौ ॥ २ ॥
 यो संसार सब दुष को सागर, मैं हाकियौ दूगै ।
 मीराँ कीके प्रभू हरि अविनासी, बर पायौ छै पूरौ ॥ ३ ॥

(१८७६)

८

ग्यान कूँ बाण षसी । हो म्हारा सतगुरुजी हो ॥ टेक ॥
 बकतर फूटि होय.....अटकी, भीटर चालि पुसी ॥ १ ॥
 बाहरी घाव दीसत नहीं कोई, उचि बचि पूरि षसी ॥ २ ॥
 तत तरवारि मालिका भलका, सबदी की बरछी धसी ॥ ३ ॥
 राम दीवानी(मैं तो) पलकन बीरूँ, जणिर करावौ जग में हँसी ॥ ४ ॥
 मीरां के प्रभू हरि अबिनासी, अमरा पुर में बसी ॥ ५ ॥

(१८७६)

९

मैं तो तोरै चरन लगी गोपाल ॥ टेर ॥
 जब लागी तब कोऊ न जाने, अब जानी संसार ॥ १ ॥
 किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो ततकाल ।
 मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार ॥ २ ॥

१०

रामजी पधारे धनि आज री घरी ।
 आजरी घरी वौ भावरी भरी ॥ टेर ॥
 गुर रामानंद अर माधवाचारज, नीमानंद बिगन स्याम हरी ॥ १ ॥
 आजि मेरौ आंगणूँ सुहावणूँ, बरसण लागे पीया पेम हरी ॥ २ ॥
 अरसि परसि मिलि हरि गुण गास्यां, धनि मेरी इषी इन भाव भरी ॥ ३ ॥
 मीराँ के प्रभू हरि अबिनासी, पकडि पावौ प्याला पेम हरी ॥ ४ ॥

गुटका आकर-६"२" x ४" से—

११

राग कन्नड़ी दूजी

प्रभु बेरा बेडा पार लंघाज्यौ जी ॥ टेर ॥
 मैं लुगणी में गुण नहीं प्रभूजी, औगुण चित्त मत लाब्यौ जी ॥
 काढ षडग राणाजी कोप्या, गरड चढ्या हरि आज्यौ जी ॥
 बिस रा प्याला राणांजी मेज्या, चरणामृत कर पीज्यौ जी ॥
 काया नगर में घेरा पढ्या छै, ऊपर आयर कीज्यौ जी ॥
 मीराँ दासी जनम जनम की, कंठ लगाय'र लीज्यौ जी ॥

१२

मैं मेरो मन हरिजी सूं जोरथा । हरिजी सूं जोर सवन सूं तोरथौ ॥ टेर ॥
 नाचन लगी तब धूँघट कैसे । लोक लाज तब काज्यूं तोड़थौ ।
 जब मैं चली साध के दरसण । तब राखों मारण कूँ दौख्यौ ।
 जहर देण कूँ घात उपायौ ! निरमल जल में ले बिस घोरथौ ।
 जब चरणामृत सुण्यौ तरवणां (१) । राम भरोसे मुख दोरथौ ।
 प्रगट निसाण बजाय चल जब । राखौ राव सफल जुग जोरथौ ।
 मीरां प्रबल घणी के सरणै । का भयौ भूपति मुब मोरथौ ।

१३

सब जग रूठडा रूठड घौ । येक रांम रूठो नहीं पावै ॥ टेर ॥
 गरम कीयो रतनागर सागर । नीर खारो कर डारथौ ।
 गरम कीयो उन चकवा चकवी । रैण विछोबा पारथौ ।
 गरम कीयो उन वन की कोयल । रूप स्याम कर डारथौ ।
 गरमकियौ लंकापति रावन । टूक टूक कर डार्यौ ।
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी । हरि के चरण तन वार्यौ ।

१४

पीया कूँ बतादे मेरे, तेरा गुण मानूँजी ॥ टेर ॥
 ऐसा है कोय आण मिलावे । तन, मन, धन, कुरवानूँ जी ॥
 रक्त रत्ती मर ना रखौ तनमें, पीरी भई जैसे पानूँजी ॥
 विहा मोकूँ आन संतावै, कोयल सबद सुहानूँ जी ॥
 लाल बिना व्याकुल भई सजनी, प्रगट होत नहीं छानूँजी ॥

१५

रमईया बिन रयो न जायरी माय ॥ टेर ॥
 पान पान मोय फीकौ सो लागै, नैन रहै दोय जाय ॥
 बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाय ॥
 मीरां के प्रभु बेग मिलोगे, तरस तरस जीब जाय ॥

राग परज

१६

जोगीया तूँ मारे घर रमतो ही आव ॥ टेर ॥
 कानां बिच कुंडल गला बिच सेली ॥ अंग भभूत रमाय ॥ १ ॥
 तुज देख्यां बिन कल न परत है ॥ ग्रहै अंगणौ न सुहाय ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी ॥ दरसण घौनै मोकू आय ॥ ३ ॥

१७

मेरी कानां सुणज्यौ जी करूणां निधान ॥ टेर ॥
 रावरो बिरद मोयरो डौसो लागै ॥ परत परायै प्रान ॥ १ ॥
 सगौ सनेही मेरे और न कोई ॥ वैरी सकल जिहानां ॥ २ ॥
 ग्रह गछौ गज राज उबारयौ ॥ वूडन दीनों जान ॥ ३ ॥
 मीरां दासी अरज करत है ॥ नही जी सहारो आन ॥ ४ ॥

१८

हरि मारी सुणज्यौ अरज महाराज ॥ टेर ॥
 मैं अबला बल नाहिं गूंसाई ॥ राषो अब के लाज ॥ १ ॥
 राबरी होय कर कणी रे जाऊँ ॥ है हरि हिव राडारों साज ॥ २ ॥
 हेय कोव पूधर दैत संघा रचौ ॥ सार्यौ देवन काज ॥ ३ ॥
 मीरां के प्रभू और न कोई ॥ तुम मेरे मिर ताज ॥ ४ ॥

१९

पीयाजी थे तो कटारी मारी ॥ टेर ॥
 जिनकौ पीव परदेस बसत है ॥ सो क्यूँ सोवै नारी ॥ १ ॥
 मकनं मिन नही भावत ॥ आकूँ सदे देहारी ॥ २ ॥
 जैसे भवगत जत कांचरी ॥ सो गत भई है हमारी ॥ ३ ॥
 बिन दरसण कल नहीं परत है ॥ तुम हम दीये विसारी ॥ ४ ॥
 मीरां के प्रभू तुन्हारे मिलन कूँ ॥ चरण कवल पर-वारी ॥ ५ ॥

२०

राग पूर्वी सोरठा

गिरधर के मन भाई हो राणाजी ॥

२४.

राग पुमायची

पतीयां मै कैसे लषूँ ॥

लिप्योरी न जाय ॥ टेर ॥

कलम भरत मेरो कर कंपत है ॥ नेन-रहै भड़ लाय ॥ १ ॥
 बात कहूँ तो कहत न आवै ॥ जीवरयो डर राय ॥ २ ॥
 बिपत हमारी देष तुम चाले ॥ कहिया हरिजी सूँ जाय ॥ ३ ॥
 मीरां के प्रभू सुष के सागर ॥ चरण ही कवल रषाय ॥ ४ ॥

२५.

माइ मानै रमईयो देगया भेष ॥ टेर ॥

हम जाने हरी परम सनेही ॥ पूरब जनम को लेष ॥ १ ॥
 अंग भभूत गल म्रघ छाला ॥ घर घर जपत अलेष ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभू हरि अविनासी ॥ सांई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

२६

मेरे-घर आवौ सुन्दर स्याम ॥ टेर ॥

तुम आया बिन सुष नहीं मेरे । पीरी परी जैसे पान ॥ १ ॥
 मेरे आसा और न स्वांमी ॥ येक तिहारो प्यान ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभु बेग मिलौ अब ॥ राषो जी मेरो मान ॥ ३ ॥

राग सुलतानी सोरठ

२७

ऐरी मेरे नैनन बान परी ॥ टेर ॥

चित चडी प्यारे दी मूरत ॥ उर बीच आन अरी ॥ १ ॥
 कबकी में ठाड़ी ठाड़ी पंथ निहारूँ ॥ अपने भवन परी ॥ २ ॥
 जब देखूँ तब जीऊं मेरी सजनी ॥ जीवन मूल जरी ॥ ३ ॥
 कैसे मैं राषूँ प्रांन पिया बिन ॥ सरबस देन बरी ॥ ४ ॥
 मीरां तो प्रभु के हाथ बिकानी ॥ लोक कहे बिगरी ॥ ५ ॥

२८

गोबिंद गाढा छौजी दीलरा मित ॥ टेर ॥

बार नीहारूँ पंथ बुहारूँ ॥ ज्यूँ सुष पावे चित ॥ १ ॥

मेरा मन की तुम ही जानौं ॥ मेरो ही जीवनीचंत ॥ २ ॥

मीरा के प्रभु हरि अविनासी ॥ पूरब जनम को कंत ॥ ३ ॥

२६

मारे आज्यौजी रांमां ॥

थारै आवत आस्यां सामां ॥ टेर ॥

तुम मिलियां मै बोहो सुष पाऊं ॥ सरै मनोरथ कामां ॥ १ ॥

तुम बिच हम बिच अंतर नाही ॥ जैसे सूरज धामां ॥ २ ॥

मीरा के मन और न माने ॥ चाहे सुन्दर स्यामां ॥ ३ ॥

३०

पीया मै बैरागन हूंगी हो ॥

जां जां मेषां मारो सायब रीझै ॥ सोय सोय मेष धरूंगी हो ॥ टेर ॥

सील संतोष धरूँ घट भीतर ॥ समता पकड़ रहूंगी हो ॥

जाकौ नांव निरंजन कहीये ॥ जकौ ध्यान धरूंगी हो ॥ १ ॥

गैरु ग्यान रंगू तन मेरो ॥ मन मुदरा पहरूंगी हो ॥

प्रेम प्रीत सूँ हरि गुण गाऊँ ॥ चरणां लिपट रहूंगी हो ॥ २ ॥

या तनकी मै करूँ की गूरी ॥ रसनां रांम रटूंगी हो ॥

मीरां के प्रभु हरि अविनासी ॥ सांधां संग रहूंगी हो ॥ ३ ॥

३१

को ब्रिहन को दुख जाणै हो ॥

जा घट ब्रिहा सोय लखि है ॥ कै कोय हरी जन मानै हो ॥ टेर ॥

रोगी आतर बैद बसत है ॥ बैद हि औषद जानै हो ॥

ब्रिह कर दउर अंतर मांही ॥ हरि बिन सब सुख कानै हो ॥ १ ॥

दुग्धा आरण फरे उदासी ॥ सुरत बसी सुत मानै हो ॥

चात्रग स्वांति बूंद मन मांही ॥ पीव पीव उक लानै हो ॥ २ ॥

सब जग कूडौ कुट्टू मै दुनियां ॥ मेरोदर धन जाणै हो ॥

मीरां कै पति आप रमईया ॥ दूजो कोय नही जानै हो ॥ ३ ॥

३२

साईयां अरज बंदी की सुन हो ॥

मै दुगणी तुम सुगणां सायब ॥ औगुणगारी रा गुण हो ॥ टेर ॥

हूँ दासी तेरी जनम जनम की ॥ तुम हो हमारे बर हो ॥

दीन दयाल दया कर भोपै ॥ मोटो सब ही डर हो ॥ १ ॥

रांणाजी बिसरो प्यालो भेज्यौ ॥ मारै भगति रो पण हो ॥
 जांकू राखै रांम गुसाई ॥ तो मारण हारो कुण हो ॥ २ ॥
 आंन देव मारी दायन आवै ॥ तुम सूं लागौ मेरो मन हो ॥
 जैसै चंद चंकोर निहारै ॥ यूं सुमरूँ छिन छिन हो ॥ ३ ॥
 बेर बेर मोहि त्रिह संतवै ॥ ज्यूं काठै लागौ घूण हो ॥
 मीरां नांव पीया लै छाकी ॥ काई जाणूँ राणौजी कूण हो ॥ ४ ॥

३३

अधर नांम कुंजर लीयौ ॥ वाकी अवधि घटांणो हो ॥
 गरुड़ छांड हरी ध्याईया ॥ पसू जूँण मिटांणी हो ॥ २ ॥
 अजा मेल से उधरे ॥ जम त्रास हटांणो हो ॥
 पुत्र हेत पदवी दई ॥ जुग सारै जांणी हो ॥ ३ ॥
 नांव महातम गुरु दीयौ ॥ सोई वेद बखांणी हो ॥
 मीरां दासी वारणै ॥ अपनी करि जांणी हो ॥ ४ ॥

३४

पीया मोहि आरत तेरी हो ॥

आरत तेरी तेरी नांम की ॥ मोइ सांभ सवेरी हो ॥ टेर ॥
 पटीयां पाड़ुं ग्यांन की ॥ बुधि मांग सवारूँ हो ॥
 तो परि मेरा साईयां ॥ धन जोबन बारूँ हो ॥ १ ॥
 यातन कौ दिवलो करूँ ॥ मनसा की वाती हो ॥
 तेलज पूरुं प्रेम कौ ॥ बालूँ दिन राती हो ॥ २ ॥
 सेभ्कड़ीयां बौहो रंगीया ॥ चंगा फूल बिछाया हो ॥
 रैण घटी तारा गिणत ॥ पीव अज ऊन आया हो ॥ ३ ॥
 आयौ सांवण भादवो ॥ विरषा रत आई हो ॥
 बीज भला मल हो रही ॥ नैनं भड लगाई हो ॥ ४ ॥
 तुम पूरा तुम पुरवा ॥ पूरा सुख दीज्यो हो ॥
 मीरां व्याकुल ब्रह्मनी ॥ अपनी करि लीज्यो हो ॥ ५ ॥

३५

साजन बेगा घर आज्यो हो ॥

आदि अंत का मित हो ॥ हम कुं सुख लाज्यो हो ॥ टेर ॥
 हरी बिन सुरती कहां धरूँ ॥ जिस मारग जोऊँ हो ॥
 तेरे कारण साईयां ॥ भरि नीद न सोउं हो ॥ १ ॥
 अबिनासी आया सुणुं ॥ जब नो निधपाउं हो ॥
 साइब सुंमन मोइलौ ॥ दुष टेर सुणाउं हो ॥ २ ॥
 वा विरीयां कब होवसी ॥ कोइ कहे सनेसा हो ॥
 मीरां कहै इस बात का ॥ मोइ खरा अंदेसा हो ॥ ३ ॥

३६

अैसे जन जाणन दीजे हो ॥
 आतो मिलो सहेलज्यां ॥ बाता सुख जीजे हो ॥ टेर ॥
 नैन सलूने साईयां ॥ देष्यां सुं जीजे हो ॥
 तन धन जोवन वारि कै ॥ नख राषल कीजे हो ॥ १ ॥
 आरंत अपणी कारणै ॥ वाकै पाइ परीजे हो ॥
 चंदन केरा रूष ज्युं ॥ चरणां लपटी जे हो ॥ २ ॥
 हाथ जोरि बिनती करूँ ॥ मेरी अरज सुणीजे हो ॥
 मीरां व्याकुल ब्रैहनी ॥ जाकुं दरसण दीजै हो ॥ ३ ॥

३७

पीया मैं तेरी बंदी हो ॥
 गरक भई गुण ते रडै ॥ बिन मोल वंकदी हो ॥ टेर ॥
 मैं ब्रैहन तू बहगुनी ॥ दोउ सिंध मिलंदी हो ॥
 जो तुम की प्रीतम नां मिलौ ॥ तो मैं बह जंदी हो ॥ १ ॥
 रूप लुमांनी लोयनां ॥ मैं चलु तेरी छंदी हो ॥
 गुप्ति की बाता तुझि सुं ॥ ऊंल जूँ कहंदी हो ॥ २ ॥
 प्राण सनेही सजनां ॥ दुष टालन दंदी हो ॥
 मीरां के प्रभु रामजी ॥ तेरी चेरी कहंदी हो ॥ ३ ॥

३८

जोगीया तैं छुगत न जोगी हो ॥
 मेंतो आसिक तेरडी तोने दया न आणी हो ॥ टेर ॥
 तुंभी स्वारथ कौं सगौ ॥ पर दुष न जानी हो ॥

तो मो बीच बिछोह भौ ॥ कोई दांयां पांणी हो ॥ १ ॥
 तुम बिन कल मोइ नां पडै ॥ मछी बिन पांणी हो ॥
 तुम बिन मैं कैसें जीउं ॥ रेण तलफ बिहानी हो ॥ २ ॥
 जा दिन तें तुम बीछड़े ॥ मेरे मइ हांणी हो ॥
 तो कारण बन बन फिरूं ॥ होय प्रेम दिवांणी हो ॥ ३ ॥
 पान पान की सुध नहीं ॥ काया कुमलांणी हो ॥
 अब तो बांकी नां रही ॥ पिंड त्यागै प्रांणी हो ॥ ४ ॥
 पतित पावन तो बिउदहै ॥ याही बेद बषांणी हो ॥
 मीरां कु अब धौ दरस ॥ प्रभुजी सुष दीनी हो ॥ ५ ॥

३६

रमईया मेरे तोही सूं लागो नेह ॥

लागी प्रीत जिन तौ डैरे बोला ॥ अधिकौ कीजे नेह ॥ टेर ॥
 जैदूं औसी जानती रे वाला ॥ प्रीत कीयां दुष होइ ॥
 नगर ढंढोरो फेरती रे ॥ प्रीत करो मत कोय ॥ १ ॥
 पीर न षाजे आरो रे ॥ मूष न कीजे मित ॥
 विणता ताविण सीलवारे ॥ विण बैरी विण मित ॥ २ ॥
 प्रीत करै ते बावरां रे ॥ करि तोड़ै ते कूर ॥
 प्रीत निभावण दल के षंभण ॥ ते कोई बिरला सूर ॥ ३ ॥
 तुम गज गीरी कौ चूतरो रे ॥ हम बालू की भीत ॥
 अब तो म्यां कंमे बणै रे ॥ पूरव जनम की प्रीत ॥ ४ ॥
 एकै थाणै रोपीया रे ॥ इक आंवो यक चूल ॥
 वाकौ रसनी कौ लगै रे ॥ वाकी भागै सूल ॥ ५ ॥
 ज्यूं झूंगर का बाहला रे ॥ यूं ओझा तयां मनेह ॥
 बहता बहैजी उतावला रे ॥ वेतो भटक वतावै छेह ॥ ६ ॥
 आयो सांवण भादवों रे बाला ॥ बोलज लगा मोर ॥
 मीरां कुं हरिजन मिल्या रे ॥ लेगया पवन भकोर ॥ ७ ॥

४०

ब्रह लहर तनभांइ उठै ॥ काया कुं सीषण हारो ॥
 ओषद पुरी कोई मूल न मांगै ॥ लागत नहीं भारी ॥ १ ॥

रांम हमारे गारहू हैं ॥ जीव कौ प्रांन अधारो ॥
 उन आयां मेरी पीर हरत हैं ॥ उनकौ पतीयारो हा ॥ २ ॥
 मन हमारो प्रभू मोहि लियो तुम ॥ उलागत है धारो ॥
 दासी मीरां रांम भजि करि ॥ विष कियौ न्यारो ॥ ३ ॥

४१

सांवरा की इष्टि मांनू ॥ प्रेम री कटारी हैं ॥ टेर ॥
 लगन बेहाल भई ॥ घर द्व की सुधि नही ॥
 तनह मैं व्यापी पीर ॥ मन मतवारी हैं ॥ १ ॥
 चकोर चाहत चंद ॥ दीपक जलत पतंग ॥
 जल बिना मरै मीन ॥ अैसी प्रीत प्यारी हैं ॥ २ ॥
 सषी मिली दोय न्यारी ॥ बावरी भई हें सारी ॥
 निस दिन प्रैह लीयां ॥ आसिक अकारी हें ॥ ३ ॥
 बिन देष्या कैसें जीवै ॥ कल न पड़त हीयै ॥
 जाय वाकूँ अैसें कहियौ ॥ मीरां तो तिहारी हें ॥ ४ ॥

४२

म्हारे घर आवौ स्याम गोठड़ी कराई हैं ॥ टेर ॥
 आनंद उछाव करूँ ॥ तन मन भेट धरूँ ॥
 में तो हूं तुमारी दासी ॥ ताकूँ तो चीतारी ए ॥ १ ॥
 गिगन गरंज आयो ॥ बदरा बरस भायौ ॥
 सारंग सब दसुनि ॥ ब्रेहनी पुकारी हैं ॥ २ ॥
 घर आवौ स्याम मेरे ॥ मे तो लगूँ पाय तेरै ॥
 मीरां कूँ सरन लीजे ॥ बलिबलि हारी हें ॥ ३ ॥

४३

आव सजनियां बाट मैं जोऊं । तेरे कारण रेण न सोऊं ॥ टेर ॥
 जकन परत मन बहुत उदासी ॥ सुंदर स्याम मिलौ अविनासी ॥ १ ॥
 तेरे कारण सब हम त्यागे ॥ धान पान पै-मन नहीं लागे ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभू दरसन दीज्यौ ॥ मेरी अरज कान सुंण लीज्यौ ॥ ३ ॥

४४

आय मिलौ मोहि प्रीतम प्यारे ॥

हम कूँ छाड़ क्यूँ न्यारे ॥ टेरे ॥
 बौहोत दिनन की बाट निहारूँ ॥ तेरे उपर तन मन बारूँ ॥ १ ॥
 तुम दरसन की मो मन मांही ॥ आय मिलौ कर किपा गुसाई ॥ २ ॥
 भीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ आय दरस घौ सुख के सागर ॥ ३ ॥

४५•

काई कहीयौ रे बिनती जाय कै ॥
 म्हारा प्राण पीयारा नाथ नै ॥ टेरे ॥
 जा दिन के बिछुरे मन मोहन ॥ कल न परत दिन रात नै ॥ १ ॥
 देस विदेस संदेस न पूगै ॥ बिरहन भूरे स्याम नै ॥ २ ॥
 दिल दां भरहम दिल ही जनि ॥ और न जाणै दूजौ वात नै ॥ ३ ॥
 भीरां दरसण कारण भूरै ॥ ज्यू बालक भूरै मात नै ॥ ४ ॥

४६

म्हारा सुगण साजन बोलो भुषां । बोलो भुषां जरा बैठो नषां ॥ टेरे ॥
 कर कररा मेरी सेभ विराजौ ॥ माफ कगे जी सब भूलां चूका ॥ १ ॥
 कै तुम उपर कामण कीया ॥ कै भरमाया थाने दूजी सोकां ॥ २ ॥
 यो न पति मेरी दाय न आवै ॥ छोड़ दीयौ जी मै तो हकांधकां ॥ ३ ॥
 मे तो दासी थारी जनम जनम की ॥ तुम ठाकुर मारे सीस रषां ॥ ४ ॥
 जो ओगण तोही तुमरी बाजूं ॥ भीरां कहां जाय पीव थकां ॥ ५ ॥

४७

मारो मनझो हरि सूँ राजी ॥ टेरे ॥
 काई करोगा मारो दुरजन पुरजन ॥ भव मारो भूटा पाजी ॥ १ ॥
 काई करेगा मारो राजा राणा ॥ काई करेगा मुलां काजी ॥ २ ॥
 रंगीला प्रीतम सैं हिल मिल षेलां ॥ पर तन हारां बाजी ॥ ३ ॥

४८

गोबिदा नैं आण मिला ज्यौजी ॥
 साईयां मारी यतनी अरज पढ़वा ज्यौजी ॥ टेरे ॥
 बिनती तौ कांज्यौ मारी पायन पारिकें ॥ सारी सुध जणा ज्यौजी ॥ १ ॥
 बिरह बिधा की बेदन कीज्यौ ॥ मारी तन की तपन बुझा ज्यौजी ॥ २ ॥
 ब्रज नंद हित सुं हिय उमग्यौ है ॥ मारी अरज मत बीसरा ज्यौजी ॥ ३ ॥

४६

राम मारी लागी प्रीत निभाज्यो जी ॥ टेर ॥
 थे छोजी म्हारी सुष का सागर ॥ मारा आंगण सारूँ मत जाज्यो जी ॥ १ ॥
 लोगन धीजै मारो मत न पतीजै ॥ सुषडारा सबद सुणा ज्यो जी ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ मेरो बेड़ो पार लगा ज्यो जी ॥ ३ ॥

४७

उधोजी माधो कैंसी कीनी ॥ टेर ॥
 आज काल कुबज्या बड़ भागण ॥ मे बुध की मुत हीणी ॥ १ ॥
 आप तो जाय द्वारका छारा ॥ हम कुं पाती नही दीनी ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ बिधना, या लष दीनी ॥ ३ ॥

४८.

गिरधर रीसांणा कौन गुणां ॥ टेर ॥
 कछुक आंगण हम में कादौ ॥ मे भी कान सुषां ॥ १ ॥
 में तो दासी थारा जनम जनम की ॥ थे साइब सुगणां ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ थारोई नांम मणां ॥ ३ ॥

४९.

थे मारे घर आवोजी प्रीतम प्यारा ॥ टेर ॥
 तन मन धन सब भेंट करूंगी ॥ भजन करूंगी तुमारा ॥ १ ॥
 मो नुगणी ने गुंण नहीं प्रभूजो ॥ तुमहो बगसण हारा ॥ २ ॥
 बौ हौ गुणवंता सायब कहिये ॥ मुझ में आंगुण सारा ॥ ३ ॥
 सेभ संवारी आप नहों आये ॥ कबकी करूँजी बिचारी ॥ ४ ॥
 मीरां के प्रभू गिरधर प्रीतम ॥ थां बिन नैण दुष्यारा ॥ ५ ॥

५०.

सुणज्यो चित दे कान ॥ टेर ॥
 भगत प्रकास करो हिरदा में ॥ जाये मिटे अग्यंम ॥ १ ॥
 तुम चरणां में लीन रहै मन ॥ ज्यूंमछी जल ध्यान ॥ २ ॥
 मीरां दासी दोउ कर जोड़ां ॥ ए मांगत वरदान ॥ ३ ॥

५४

गोबिंद आवौ ने सब सुख रासी ॥

आवौजी युक्त बिलासी ॥ टेर ॥

अबकी बैर प्रभू दरसण दीजौ ॥ सषीयां करत मेरी हांसी ॥ १ ॥

सब सणगार सजे तन ऊपर ॥ हरि बिन लगत उदासी ॥ २ ॥

जाका दुषकी जेही जांयै ॥ औरा के मन हांसी ॥ ३ ॥

आबा की डाल कोइल यक बैठी ॥ बोलत सषद उदासी ॥ ४ ॥

मेरा मन में असी आवै ॥ करवत ल्यूँगी जाय कासी ॥ ५ ॥

उदिन मोकूँ कैसो होयगा ॥ हरि मेरी सेभ सिधासी ॥ ६ ॥

मीरां कहै प्रभू कबर मिलोगे ॥ सुख की रैण बिहासी ॥ ७ ॥

५५

लगन को नाव न लीजे री भोली ॥ टेर ॥

लगन लगी कौ पैडो ही न्यारौ ॥ पाव धरत तन छीजै ॥ १ ॥

जैतूँ लगन लगाई चावै ॥ तौ सीस की आसन कीजे ॥ २ ॥

लगन लगी जैसे पतंग दीपक से ॥ वारि फेर तन दीजै ॥ ३ ॥

लगन लगाई जैसे मिरघेनाद सै ॥ सनमुख होय सिर दीजै ॥ ४ ॥

लगन लगाई जैसे चकोर चंदा सै ॥ अंगनी मन्त्रण कीजै ॥ ५ ॥

लगन लगी जैसे जल मछीयन सै ॥ बिछड़त तन ही दीजै ॥ ६ ॥

लगन लगी जैसे पुसप मवर सै ॥ फूलन बीच रही जै ॥ ७ ॥

मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ चरण कवल चित दीजै ॥ ८ ॥

२. मीराँ सम्बन्धी भजन

रचयिता-जेटराम । ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं । ये एक ३'५" x २'४" आकार वाले गुटके में अन्य सन्तों के भजनों के साथ मिले हैं । इसका लिपिकाल या रचनाकाल नहीं है ।

संगत साधा की म्हैतो करस्यां प्रीति लगाइ ।

संसार समंद में डूब तरावैं, लेवै बाहि समाइ ॥ टेर ॥

हरिजन हरि तो एक है, फूल बास दोइ नाहि ।

अरसि परसि अरसै मिल रहिया, धित दूध के मांहि ॥ १ ॥
 सांचा मन सू सुमिरन कीजे, भ्रांति भरम छिटकाइ ।
 अमर लोक पद प्रापति होवै, राम मिले घट मांहि ॥ २ ॥
 हरि भज लावौ लीजे प्रांनी, साध संगति में आइ ।
 बार बार नर देहि नांहि, आयो मोसर जाइ ॥ ३ ॥
 भाभी मीरां सुणो कान दे, साच कंठू समझाइ ।
 साधां की संगति छोउर चौजी, मति कुल ने षोड लगाइ ॥ ४ ॥
 साध संगति कीनिधा ठाणै, राम कहे सुष नांहि ।
 षोड लागसी वाने बाई, पड़सी नरक के मांहि ॥ ५ ॥
 साधां को संग भलौ नहीं छे, म्हांरी न आयौ दाइ ।
 घर जावण की ऐ छै वातां, इण मारिग मति जाइ ॥ ६ ॥
 यो मारिग म्हांने नीठ मिल्यौ छै, सतगुर दियो बताइ ।
 माथा सारे धारण किन्हौं, कंयू कर छोळ्यौ जाइ ॥ ७ ॥
 साध संगति में निम दिन करस्यां, जरा जीवडो सुष पाइ ।
 प्राण हमारा हरिजन है जी, ज्यूं मीन बसै जल मांहि ॥ ८ ॥
 कछो हमारो मानौ भाभी, समझौ मन के मांहि ।
 इस्यौ कुसंगतै काई समायौ, मति म्हांनै लाछण लगाइ ॥ ९ ॥
 लाछण ज्यांनै लागसी जी, साध संगति नहीं भाइ ।

.....॥ १० ॥

जनम बडै घर पाइयोजी, आई बड़ा घर मांहि ।
 यां बाता थै भला न दीसौ, मांनों कहुँ समझाइ ॥ ११ ॥
 बुरा भलाइ म्हांनै कह्यौ, लेस्यां पलौ बिछाइ ।
 मन लागो प्रभू का चरणां, छिन भर रखो न जाइ ॥ १२ ॥
 पीहर ससरो दोन्युं लाजै, हिंदवो भाण लजाइ ।
 मति मै जी जुगता करै जगत में, कहुँपलो जी बिछाई ॥ १३ ॥
 राम नाम को मरम न जाणै, साध संगति रुचि नाहि ।
 में यों ज्यांनै लागसी, षोटे मारिग जाइ ॥ १४ ॥
 लोक दुनी सब बात करत है, चवासहर के मांहि ।
 कटंब कबीलो हांसी ठाणै, हिलमिल विद्या गाइ ॥ १५ ॥

निंथा म्हांरी भलिभलि कीज्यौ, म्हांनै घणी सुहाइ ।
 बिन सावण पाणी बिना, मैल धुपै धुप जाइ ॥ १६ ॥
 हरि मगतण तूं कै कर बैठी, लाज मरां मन माहिं ।
 बार बार मैं करूं बीनती, बुरा दिषावै काहि ॥ १७ ॥
 साध संगति मैं समझै नाहि, राम कछा जल जाइ ।
 जनम जनम मैं बुरा दीषसी, मार जमां की षाइ ॥ १८ ॥
 जिती बात मैं कही सीष की, एक न आई दाइ ।
 कुल को नातो तोझा बैठी, लोक लाज छिटकाइ ॥ १९ ॥
 भजन बीना जीव भटकत फिरीयौ, लष चौरासी माहि ।
 किर्यौ किर्यौ कुल लाज सीजी, जाकी गिणती नाहि ॥ २० ॥
 आइ बैरागण आइ कठासूं, म्हांका घर के माहि ।
 ग्यान अगम कौ कथबा लागी, देण्यौ सुण्यौ कंड़ नाहि ॥ २१ ॥
 तूं तो नणदल भई बावरी, समझ थारै मैं नाहि ।
 ग्यान तणी गम तोनै नाहि, गरभ रहि मन माहि ॥ २२ ॥
 मैं तो बात रीत की कीन्हौ, तू बाइ चटी बरछाइ ।
 मूढ मुलक की कई जाणैं, राजरीति ठुकराइ ॥ २३ ॥
 भगति बिना ठकुराइत फूटी, म्हांनै नही सुहाइ ।
 राज पाट सब धरीया रहमी, जंगल जलसी जाइ ॥ २४ ॥
 धांका कीया भैं भुगतोला, म्हांनै दोसण नाहि ।
 मारण धात बिचारी राणैं, कोष कीयो मून माहि ॥ २५ ॥
 रांणो म्हांरो कई करसी, माहि डरावै काहि ।
 साधां कै हूँ हाथ वकांणी, थासूं नातो नाहि ॥ २६ ॥
 साध हमारै कटंब कबीलो, साधू बाप'र माइ ।
 हरिजन-म्हारै सीस बिराजै और न आवै दाइ ॥ २७ ॥
 कड़वा बचन श्रवण सुंणया, रीस चटी मन माहि ।
 जाइ सिलगाई घरकां आगै, या नारी काम की नाहि ॥ २८ ॥
 धूतरा पेट सूं या धूतारी, मोसूं छानी नाहि ।
 धूतारौ इनको गोत कहीजै, जाणै जगत के माहि ॥ २९ ॥
 म्हांका घर की घरोट बोवै, लीयौ कुलछि समाइ ।
 इनकूं मारबां दोसन कोई, लाज मरां मन माहि ॥ ३० ॥

कुबधि केवलि अंतरी माहि, सब दुष्टयां मिल आइ ।
 जहर घोल प्यालौ पठवायौ, मारण करीछै आइ ॥ ३१ ॥
 नणदल प्यालौ करमें लीन्हौ, आइ म्हाल के माहि ।
 हरि सेवा में मीरां में-बैठी, भजन करै चितलाइ ॥ ३२ ॥
 चरणांमृत हूँ त्याई थांके, नेम करो मन माहि ।
 राणै प्यालौ मोकल्यौजी, रुचि रुचि पीवो अघाइ ॥ ३३ ॥
 चरणांमृत मैं सुणयो जी श्रवणां, लेस्या प्रेम बंधाइ ।
 जनम मरण का भगड़ा छूटै, चौरासी भिट जाइ ॥ ३४ ॥
 राम राम कह मुख मैं ठोस्यो, घणो हरष मन माहि ।
 दूषी कला राम जी दीनीं, संक न उपजी कांहि ॥ ३५ ॥
 इअत प्यालौ म्हाने भेज्यौ, वो गुण बिसरां नाहि ।
 जाइ राणां ने यूँ कहज्यौ जी, रोजीनां पहुँचाइ ॥ ३६ ॥
 यो तो प्यालौ अब ही पीस्यौ, फिर पीवण को नाहि ।
 म्हानै दोसण को नहीं छै, थांको षोट थां माहि ॥ ३७ ॥
 नर सब सूधा मरथा षोट सूँ, हरि सूँ छांनां नाहि ।
 राम भजन साधा संग करस्यां, जिवड़ो निर्मल होइ जाइ ॥ ३८ ॥
 हरि भगती कौ यो फल लागौ, मरजास्यौ पल माहि ।
 साधां सूँ थारै पळ्यौ आंतरौ, फेर न मलस्यौ आइ ॥ ३९ ॥
 सिर ऊपर म्हारै सबल घणी छै, काज बिगडै कांहि ।
 जीवण को म्हारै मोद नहीं छै, मरणां सूँ डरपा नांहि ॥ ४० ॥
 यो वैणारत यूँ लिषीयौ, टाल्यौ टलैज नांहि ।
 मन मैं वै सौ मांग लइज्यौ, मत उणारथ ले जाइ ॥ ४१ ॥
 वैणा हरि आछौ करसी, डरथां भगति हूँ नांहि ।
 सबल धणो को सरणौं म्हांके, कुमी काहे की नांहि ॥ ४२ ॥
 राम नाम जे छांडै, भ्रिग जीवन कलि माहि ।
 भ्रम माहि गल, क्यूँ नहों गईयौ, जननी जर्णियो कांहि ॥ ४३ ॥
 राम नाम की टेक समाई, गाठ धार मन माहि ।
 पण राण्यौ प्रभूजी जिनकौ, जहर दीयो पलटाइ ॥ ४४ ॥
 धन मीरां बड़भागन जग मैं, हरि सूँ हेत लगाइ ।
 जेतराम जस दीयो भगत नैं दृष्टी रखा पिछाताइ ॥ ४५ ॥

अब नहीं बीसरूँ म्हारै हिरदै लप्यो हरि नाव । परतिन बीसरूँ ॥ टेर ॥

मीरा बैठी महल में, ऊठत बैठत राम ।

सेवा करस्यां साध की और न दूजो काम ॥ १ ॥

राणैजी बतलाईया, काई देणो जुबाब ।

मन लागौ हरि नाम सूं, दिन दिन दूणो लाम ॥ २ ॥

सीप मर्यौ पाणी पीवै रे, टांक मर्यौ अनषाह ।

बतलायौ बोलै नहीं, राणौ गयो रिसाह ॥ ३ ॥

बिस का प्याला भेजिया, दीज्यौ मेडतणि के हाथि ।

करि चरणाम्रत पी गई, सबल धर्यौ के साथि ॥ ४ ॥

राणौ मो पर कोपीयौ, मारूँ एकण सैल ।

मार्या पराछत लागसी, दीज्यौ पीहर मेल ॥ ५ ॥

बिस का प्याला पीगइ रे, भजन करै अस ठौर ।

धारी मारी ना मरूँ, राषण हारो और ॥ ६ ॥

राणौ मो पर कोपीयौ रती न राष्यो मोद ।

ले जाती बैकुंठ में समझ्यो नहीं सी समोद ॥ ७ ॥

मीरा महल सूं ऊतरी, राणै पकर्यौ हाथ ।

हथ लेवा को साहिणौ, और न दूजी बात ॥ ८ ॥

माला हमारे दोवडौ, सील बरत सिणगार ।

अब कै किरपा कीजीयौ, तो (फिर) बांधू तरवारि ॥ ९ ॥

रण्या बैल जुपाइया रे, ऊँटां कसीया मार ।

कैसे तोइ राम सूं (म्हारौ) मो मो को मरतार ॥ १० ॥

राणै सांड्यो मोकल्यौ रे, जाज्यौ एकै दौडि ।

कुल की तारण असतरी, (यातो) मुरडि चली राठोड ॥ ११ ॥

सांड्यो पाछो फेर दे, धरतिन देस्या पाव ।

सूरापण धरी नीसरी (म्हारै) कुण राणौ कुण राव ॥ १२ ॥

संसारी नंधा करै, दुषीयौ, सब पिरवार ।

कुल सारो ही लाज्यो, मीरा हुई पुवार ॥ १३ ॥

छापा तलक बणाइया, तजीयौ सब सिणगार ।

मीरां सरणै राम कै, मलि नीदो संसार ॥ १४ ॥
 राती मांती प्रेम की, बाधि भगति को मोड ।
 राम अनल राती रहै, धनि मीरां राठोड ॥ १५ ॥

३

भामी मीरां क्यूं रै लियो बैराग ।
 क्यूं रे लियो बैराग माया धै क्यूं तजी ॥ टेर ॥
 ऊँचा थारा बैठणा, ऊँची थारी जात ।
 राणां सरीसो बर पाइयौ थारो सहंस मेवाइ मे राज ॥ १ ॥
 एतो मोती ओस का जैसे यो संसार ।
 आयौ भिकोलौ पवन को जातान लागै बार ॥ २ ॥
 बखीर षांड को भोजनि जीमता, ओढौ दिषणी चीर ।
 राणां सरीसो बर त्यागीयो, (थारो) सब भुलकामे सीर ॥ ३ ॥
 पीर षांड सा भोजन त्याग्या, त्याग्या, दिषणी चीर ।
 राणां सरीसो बर त्यागीयो (म्हारै) सब संता में सीर ॥ ४ ॥
 क्यूं पावौ ठंडा टूकड़ा, क्यूं रै पीवौ षाटि छाछि ।
 भैसूवां भूषा मरौ, कदि मिलसी दीना नाथ ॥ ५ ॥
 मीठा लागै ठंडा टूकड़ा, इम्रत लागै छाछि ।
 भैसूवां भूषा मरौ, जदी मिलसी दीना नाथ ॥ ६ ॥
 लाजै पीहर सासरो, लाजै माइ मोसाल ।
 नित का आवै श्रीलंबा, थारो भरम धरै संसार ॥ ७ ॥
 आग लगाऊं पोहर सासरै, जत जीबे मो साल ।
 मीरां सरणै राम कै, भस्म मारौ संसार ॥ ८ ॥

[धोलीबावड़ी रामद्वारा, उदयपुर]

शुद्धि-पत्र

	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	हेमा चरिज	हेमाचारिज
४	१०	ग्रथ	ग्रन्थ
६	२८	पृष्ठ	पृष्ठ
७	२१	ऊधव	ऊधव
८	६	घेरजो	घेर जो
८	१८	नसीतनामा	(१) नसीतनामो
८	१८	(१) अनेकार्थ	(२) अनेकार्थ-
६	१६	(२) 'पाण्डव ..	(३) 'पाण्डव'...
१०	२२	प्रगस्या	प्रगट्या
१२	२	प्राता	प्रातां
१५	७	फूटकर	फुटकर
१५	२६	समजन	रामजन
१६	२३	गजेन्द्र	गजेन्द्र
१८	२५	रंग	रंगीला
१८	२८	भलराम	बलराम
२१	१७, २०, २६	जन गोपाल	जनगोपाल
२५	१४	आणभै	अणभै
२६	२४	हरिद्वारा	हरि-द्वारा
२८	१३	साध	सार
२८	१६	ग्रथ	ग्रन्थ
२६	१६	(३६)	(३७)
३०	१०	बकचूरजी	बकचूलजी
३१	२०	जातिन	जाति न

३२	६	राम चरण	रामचरण
३२	११	'चा	चा'
३८	६	मेर	मेरे
३८	१६	आकार वाले	आकारवाले
४२	१४	२	३
४४	४	लू	लै.
४४	२३	कीजै रसना	रसना कीजै
४६	२६	वारा	वार
४७	२	में	में
४७	१६	अणमै वाणी	१. अणमै वाणी
४७	२२	चहूँटा ईये.	चहूँचाईये.
५७	१०-११	इस प्रति में १०६ ।	इस प्रति में १०६ कम हैं
		कम है	
५७	१६	राख	राखै
५८	२२	छीतभ	छीतम
५६	२४	चर पहनाथ	चरपटनाथ
६०	५	भीडकी पाव	मीडकीपाव
६१	८	भयो	भयो
६६	१५	कोंसो	कों सो
६८	२६	...राम तज	तज राम...
६६	१	आन	आनै
७०	५	त्रप्त राय	त्रप्तराम
७१	२१	(७५)	(७५ क)
७५	७	सुन्दरदासजी सवैया	सुन्दरदासजी का सवैया
७६	२७	आव	आवै
७७	२३	प्रमहंज जू	प्रमहंसजू
७६	२	रामभजन....दिन	राम-भजन....दिन करै
७६	८	पदपात	पद पात
७६	६	पत्र-संख्या	पत्र-संख्या-६

७६	२४	फकीरी	फकीरी
८१	६	अजेसी, 'लखमसी...	'अजेसी, लखमसी....
८२	३	कठि	कवि
८३	५	भण्डार	भण्डारकर
८३	२४	अव तरिउ	अवतरिउ
८४	२	मिलइ ।...टलइ	मिल' इ । ...टल' इ
८५	४	अथवा (लब्धोदय	(अथवा लब्धोदय
८५	५	ढाल में	ढालों में
८५	६-१०. +२) ६१८		+ १) ६१७
८७	१०	॥ १० ॥	॥ ६१०॥
८६	५	शलिभद्र	शालिभद्र
८६	२७	भटालज	भटात्मज
८४	७	(नान)	तान
८४	२४	निभरिषं	निभरयं
८४	२६	नारदयं न दयं	नारदयं न दय
८५	२३	अपभरा	अपभर
८५	२५	कनवाज्ज	कनवज्ज
८६	२७	कीनी ।....तर फे	कीनौ ।....तरफे
८६	२८	केनीचे x	जोड़ो-‘दोहा’
८७	१५	सज्जिव, अरष...सब्बड	सज्जिव अरष,....सब्बड
८७	१६	दिब्ब	दिब्बड
८८	१७	करून	करूना
८८	२१	रचनसी	रयनसी
८८	२८	प्रवत्तमाने	प्रवर्त्तमाने
१०१	१	केवार	केदार
१०४	३	आव ओरी में आरडी	आव' ओ री में आरडी
१०४	४	उमी रे रे में आरी	ऊमी रे' रे में आरी
१०४	५	जांढो	जांणे
१०४	७	मला	भला

१०४	८	ने षेडो	नै छेडो
१०४	२५	उ द्ध रें	उद्धरें
१०५	१	चुडा	चुं डा
१०५	१२	रेणसा वधाइ वधाइ	रेणसी वधाइ वधीइ
१०५	१७	भिंदिर	मिंदिर
१०५	२६	भ डमोटा	भड मोटा
१०७	८	आस्या	आस्यो
१०७	१५	डिंगल	डिंगल
१०७	२७	सन्नातह हि	सन्नाह तहि
१०८	२५	भरवदत्त	भैरवदत्त
१०६	८	चाविगेद	चाविगदे
१११	५	संपात	समपत्ति
११७	४	कुल पति	कुलपति
११७	२२	का किल	काकिल
११७	२३	धरनी	धरनी
११७	२७	कीन्ह कीलृणदे	कील्हणदे
११८	१०	चावले	चाव ले
१२०	२६	द्व	है
१२१	१	नान्हूंरांभ	नान्हूंरांम
१२१	१५	गदये	मध्ये
१२२	२२	हैसारनि	हे सारनि
१२३	६	कवि प्रियाभरन	‘कवि-प्रियाभरन’
१२५	१	पगो	-पयो-
१२५	६	वाज	काज
१२५	१३	स	सीखि
१२६	२६	भांडर	भींडर
१२७	६	पर बंद	परबंद
१२८	२	दंहो	दोहो
१२८	२४	सुख माधरी	सुखमा धरी

१२८	२५	कोम	कौन
१३०	१२	करहुं	कर
१३२	११	स्स	रस
१३३	१३	पंक्ति में और प्रतिपंक्ति	अक्षर और प्रतिपंक्ति में
१३३	१६	देसही	दे सही
१३३	२०	अंत	अंत
१३४	२२	हरा	हरो
१३५	४	जय साहि	जयसाहि
१३५	२७	काट....भ	काट...भी
१३६	१२	सषो	सषी
१३६	१४	नन	मन
१३६	२१	ढांव	ठांव
१३६	२३	महंत	महंत
१३६	२४	ताततें	तात तें
१३६	२५	आननं	आनन
१३६	८	रस वंत....थरी	रसवंत...धरी
१३६	१६	अवरथा	अवस्था
१४०	१	रह्योन	रह्यो न
१४१	२६	कुंदन रंग	कुंदन को रंग
१४२	३	अनयिष	अनमिष
१४३	१७	प्रो षत पति का	प्रोषितपतिका
१४४	४	प्रवसित पतिकाये	प्रवसितपतिका ये
१४७	८	श्रृंगारा	श्रृंगारी
१४७	१६	क रत	करत
१४७	२३	ह्यावरने	ह्यां वरने
१४८	५	पे	के
१४६	३	परदेत	परदतें
१४६	२२	नहीं	नहीं
१५०	२२	अनेकार थो	(६२) अनेकारथी

१५२	१४	पर भावथी	परभाव थी
१५५	२१	कविज न	कवि जन
१५६	१६	धवनी म, प्रथम	धरनीम प्रथम,
१५६	२०	ना भेय	नाभेय
१५६	२६	उवभावाजी	उवभायाजी
१५७	२	प्रतिष्ठ	-प्रतिष्ठ
१५७	१०	मोहन विजयें वर्ण	मोहनविजये वर्णव्यां गुण
		व्यांगुण	
१५८	६	क्रिया वंत	क्रियावंत
१५८	२६	मति कुशल	मतिकुशल
१५८	२७	चंद्र लेहा	चंद्रलेहा
१५९	५	छरित्र	चरित्र
१५९	२५	नामेंजे, महिमा	नामें जे महिमा हि महंता जी
		हिमहंताजी	
१६०	१ से ८	————	अंतिम शब्दों में 'जी' अलग करें
१६०	३	व्रत आचारोजी	व्रत आचारो'जी
१६०	१०	हंस कुमार	हंस कवि
१६१	८	नदी)	नदी ।
१६१	६	त्यौहार	त्यौहार ।
१६१	१०	छोड़ा	छोड़ा
१६१	११	अमरेस	अमरेस ।
१६०	२३	समकं	समरू'
१६१	२६	सिक	सिक्त
१६३	१४	कर कंडुनी,	करकंडुनी, सामलिज्यो
		सामील ज्यो	
१६३	१७	समय सुन्दर	समयसुन्दर
१६४	६	नारि सूँ	नारि सूँ
१६४	१६	वर्ण व्यो	वर्णव्यो
१६४	२३	। १६१४	१८१४ ।

१६५	२	सुणाथो	सुणायो
१६५	७	बहेते	बहंते
१६६	११	तर वर हारवै	तरवर हारव
१६६	१२	साखै	सारवै
१६६	१५	उतरा ... प्रलैवन खंड	उत्तरा .. प्रलै-वन खंड
१६६	१६	समारै	समाऽरे
१६६	२०	निवारै	निवाऽरै
१६७	१	हला हलै	हला' हलै
१६७	३	कायाभरै	काया भरै
१६७	२६	जोतानवरस	जोता नव रस
१६८	११	ढोला	ढोला
१६८	१२	ससने ही	ससनेही
१६९	३	आगस्वार	आगरवार
१६९	२७	उपाडीर्यो	उपाडीयो
१७०	८	नवीसरसी	न वीसरसी
१७०	२०	कुरभा, सो मारू जोवनलागी	कुरभा सामामारू जोवण लागी
१७१	२०	ऊमउ	ऊभउ
१७२	१	ससर्ग	संसर्ग
१७२	२४	आयभिउ	आथमियउ
१७३	५	देवो	देवी
१७३	२८	करै	करे
१७४	६	सालिद्रजी	सालिभद्रजी
१७७	१८	भक्त	भक्त
१७८	१४	सुर्णे	सुर्णे
१७९	२८	संयखा	संख्या
१८१	१७	नामकेत	नासकेत

१८१	२३	सुख देव	सुखदेव
१८२	११	दूसरी और	दूसर ओर
१८२	१२	चित्र पर !	पर चित्र
१८३	६	आम्या	आग्या
१८५	१८	वर दाअनी	वरदाअन
१८६	१३	सुण	सुणे
१८७	१०	रसालकृत	रसालंकृत
१८८	८	काभिनी	कामिनी
१८९	२३	करुण	करुण
१९०	४	चोबसमा	चोबीसमा
१९२	१३	पलागा	पलाणा
१९२	२४	जेस लमेर	जेसलमेर
१९५	९	केवलदरसण	केवल दरसण
१९७	११	सोसीदेह	सो सीदेह
१९८	१	मेता रज	मेत रज
१९९	१	गो तम	गोतम
२००	१	बरूचूल	बकचूल
२०१	२६	शुद्ध	अशुद्ध
२०२	४	स भ्रम अतत	सभ्रम अंततः
२०४	६	ओषानेरी	ओषाणेरी
२०४	१४	हौसराषा	हौसनषां
२०४	२९	साबतीं	सांषली
२०५	१३	सरवहीये	सर वहीये
२०६	१९	स्वरूपलालजी	कविराव मोहनसिंह
		जदीश चोक	
२०६	२२	भक्तमाल की टीका	भक्तमाल
२०६	१८	वाचना चारभ	वाचनाचारभ अभयसोमे, मतिसुंदर
		अभय सोमे, मति सुंदर	
२०६	२१	हेमंत विज	हेमंतविजय

२०६	२५	वर काणो	वरकाणो
२११	१२	मलिनरसन	मलिन रसन
२१२	५	सोलै सैजु	सोलैसै जु
२१२	२०	जिन हरष	जिनहरष
२१२	२१	उगण पचासै	उगणपचासै
२१३	१	कल्प वेलि कपि	कल्पवेलि कविअणतणी...
		अणतणी...सुष साय	सुपसाय
२१४	५	सिंहत्याग्रेषां कादि	सिंह व्याग्रेषांकादि स्येदं त च
		स्वे दंतच	
२१४	६	सुल्या	तुल्या
२१४	२६	ओरु	ओरु
२१७	२०	लषा वकाज	लषाव काज
२१८	६	वदि	वदि
२१८	६	आचार	आधार
२१६	३	निम्न लिखित	निम्नलिखित
२१६	६	क्रव्रत...अैन	कहत...अै न
२१६	१०	छै मासी	छैमासी
२२०	२	नर मोहीयाजी	नरमौहियाजी
२२०	११	सुषि	सुणि
२२१	२	आगणि याली	आगणियाली
२२१	५	सामलैरे	सामलै रे
२२१	१२	बैहाल	बैहाल
२२१	२२	बुरौ	बूरो
२२१	२७	करिके	के
२२२	३	भीटर	भीतर
२२३	३	तव काज्यू	तणका ज्यू
२२३	७	चल	चली
२२३	८	घणी...।...मुब...	धणी...।...मुष ..
२२३	१०	घौ	घौ

२२४	१०	जिहानां	जिहान
२२४	१६	होय कर...।...हिव राडारौ	होयकर...।...हिवरा डारौ
२२४	१७	हेय कोव पूधर... संघा रचौ	हेय को वपू धर...संघारघौ
२२४	२२	आकूँ सदे देहारी	आकूँ स दे दे हारी
२२४	२३	भवगत जत	भवंग तजत
२२४	२५	तुन्हारे	तुम्हारे
२२६	१	जीवनीचंत	जीव नीचंत
२२६	२	मीरा	मीरां
२२६	२२	कर दउर	करद उर
२२६	२४	उक लानैँ	उकलानैँ
२२६	२५	मेरोदर धन	मेरो दरध न
२२७	१०	अजा मेल	अजामेल
२२७	२२	अज ऊन	अजऊन
२२७	२४	भल्ला मल	भल्लामल
२२७	२५	पुरवा	पूरवा
२२८	४	निधपाउं	निध पाउं
२२८	१२	नछ राषल	नछरावल
२२६	८	बिउदहै	बिरूद है
२२६	१६	षिणता ताषिण सीलवारे	षिण ताता षिण सीलवा रे
२२६	२६	भारी	भारौ
२३१	४	भीरां	मीरां
२३२	३	म्हारी	म्हारा
२३२	५	०	५०
२३३	६	उदिन	ऊ दिन
२३४	६	कीनिधा	की विधी
२३४	२६	कहूँपलो	कहूँ पलो

२३४	२६	चवासहर	चवासहर
२३५	१०	लाज सीजी	लाजसी जी
२३५	३०	दोसन	दोस न
२३८	१०	जातांन	जातां न
२३८	१२	बरत्यागीयो.....	बर त्यागीयो.....मुलकां
		भुलकामे	में
